Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी अप्रैल १९५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Arya Samaj Foundation Chennai and

Domain. Gurukul Kangri Collectio

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

077690

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

~~10 AM 4/6~~
10 AM 4/6/86
4865
3/6/86

Stock Verification-20

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED
07769
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीदी

प्रधान सम्पादिका
श्रीमती यशोवती तिवारी

सम्पादिका-समिति
महा माननीया श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित
रानी लक्ष्मीकुमारी रावतसर
श्रीमती रत्नकुमारी एम० ए०
श्रीमती कमला शिवपुरी बी० ए०, बी० टी०
श्रीमती चन्द्रकान्ता जेरथ बी० ए०
श्रीमती रजनी पनिकर एम० ए०
कुमारी विद्यावती साहित्य रत्न

प्रबन्ध सम्पादक—श्री श्रीनाथसिंह

पत्र व्यवहार का पता—
प्रेमलता देवी संचालिका 'दीदी' कार्यालय
इलाहाबाद नं० २

विषय-सूची

कहानियाँ

१—रानी घृतकुल्या [श्री श्रीनाथसिंह] १७८
२—मारण मन्त्र १८४
३—स्वतन्त्र भारत [श्री भीमशङ्कर 'परवाना'] १८७
४—होटल में हत्या [श्री निशीथकुमार राय, बी० ए० एल०-एल० बी०] ... १९१
५—अध्यापिका [अनु० 'पराड़कर बन्धु'] १९५
६—दस लगावे सौ पावे [पंडित मोहनलाल नेहरू] २०५
७—समाज का चक्रव्यूह [श्री प्रेमस्वरूप श्रीवास्तव एम० ए०] ... २१०
८—बोझ [श्री एस० चडा] ... २१४
९—सन्देह [कुमारी विद्यावती 'विशारद'] २१८
१०—संयोग [श्री खगेन्द्र प्रसाद ठाकुर] २२०

लेख

१—घर और गृहणी [श्रीमती कमला दीक्षित] १८३
२—'ब्रश' और सौंदर्य [श्रीयुत चन्द्रबलीसिंह बी० ए०] १८५
३—चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा [श्री श्रीनाथसिंह] २२५

कविताएँ

१—गीत [तारा पांडे] ... १९४
२—गीत [कु० पुष्पलता अस्थाना एम० ए०] २०६
३—अन्तिम दहेज [कु० शशि गुप्ता आगरा] २२४

फुटकर

१—गद्यगीत [श्रीमती चन्द्रकान्ता त्रिपाठी] १८२
२—भविष्यवाणी [स्वामी शिवानन्द] १९०
३—पुरुष स्त्री बना २१६
४—लोक गीत २१७

स्तम्भ

१—अपने विचार १७७
२—प्रश्न पिटारी २१३
३—रसोंई २२३
४—बाल साहित्य २२६
५—विविध विषय २२८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलाहाबाद
अप्रैल, १९५४

दीदी

वर्ष १५
संख्या ४

COMPILED

महिलाओं की पत्रिका

'दीदी' के इस अङ्क में रानी घृतकुल्या की कहानी प्रकाशित की जा रही है। इस कहानी में कुछ ऐसी बातें हैं जिनको आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि कोण कदापि स्वीकार नहीं कर सकता। जैसे योगी का अपना शरीर छोड़ कर मृतक राजा के शव में प्रवेश करना और उसके भीतर से बोलना या उसके शाप से झूँसी नगर का ध्वंस हो जाना। तथापि इस कहानी से तत्कालीन भारतीय समाज और उसमें प्रचलित विश्वासों का अच्छा परिचय मिलता है।

तत्कालीन समाज में जब पुरुषों में बहु विवाह प्रचलित था, सपत्नियों में इस प्रकार की प्रति स्पर्धा स्वाभाविक थी कि पति को वे अपने वश में करके रखें। इसके लिए वे वशीकरण मन्त्र या वशीकरण औषधियों का प्रयोग करती थीं और कभी-कभी तो ऐसे प्रयोगों से बजाय लाभ के हानि होती थी। प्रयाग मोक्ष में एक कथा और है जिसमें इस विषय पर काफी प्रकाश डाला गया है। 'दीदी' की पाठिकाओं के लाभार्थ उसे हम 'दीदी' के आगामी अङ्क में प्रस्तुत करेंगे।

आधुनिक माता-पिता अपने घर के बच्चों को आधुनिक प्रेम और विवाह की समस्याओं से दूर रखते हैं। वे सोचते हैं कि शायद इससे उनके चरित्र का अच्छा विकास होगा। परन्तु इस सम्बन्ध में अपने से बचाकर की गयी पारिवारिक चर्चाओं के रहस्य भेद के लिए बच्चे इतने उत्सुक हो उठते हैं कि वे अपनी बुद्धि और अन्वेषक शक्ति से सब कुछ जहाँ जान लेते हैं वहीं अपने गुरुजनों का अविश्वास भी करने लगते हैं। इस बात को सुप्रसिद्ध अँग्रेजी कथाकार श्री स्टीफेन ज्विग ने अपनी अध्यापिका नामक कहानी में बड़े ही सुन्दर ढङ्ग से दर्शाया है। यह कहानी 'दीदी' के इसी अङ्क में प्रकाशित है।

'दीदी' के आत्म कथाङ्क के सम्बन्ध में अभी भी प्रशंसा भरे पत्र हमारे पास आ रहे हैं। अनेक पाठिकाओं ने अपनी सहेलियों को उपहार स्वरूप देने के लिए यह अङ्क अलग से भी मँगवाया है। कई पाठिकाओं ने यह इच्छा प्रकट की है कि हम 'दीदी' में नारी जीवन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डालने वाली एक न एक आत्म कथा प्रति मास प्रकाशित करें। 'दीदी' के इस अङ्क में बोझ शीर्षक एक कहानी हम प्रकाशित कर रहे हैं। वह एक शरणार्थी परिवार की आत्म कथा ही है।

'दीदी' की स्थिति क्रमशः सम्भलती जा रही है परन्तु तो भी अभी इतना नहीं सम्भली कि कर्ज की रकमें अदा की जा सकें। ग्राहक संख्या में वृद्धि होने से ही सब सम्भव हो सकता है पर जहाँ सौ नये ग्राहक बनते हैं व हाँ उतने ही पुराने ग्राहक टूट जाते हैं। इस तरह हालत फिर ज्यों की त्यों हो जाती है। मध्यम वर्ग के प्रायः सभी परिवारों में खर्च की हाय-हाय पड़ गई है और यही वर्ग 'दीदी' का सबसे बड़ा पोशक था। इस तरह देश व्यापी अर्थ सङ्कट 'दीदी' को सम्भलने नहीं देता। तथापि इस वर्ष हम अपनी सम्पूर्ण शक्ति से 'दीदी' की नाव खेने में लगे हैं और पाठक-पाठिकाओं से प्रार्थना करते हैं कि वे संरक्षक बन कर, नये ग्राहक बनाकर या जिस प्रकार भी हो हमें सहारा देते रहें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रानी घृतकुल्या

'प्रयाग मोक्ष' में वर्णित प्राचीन कहानी

लेखक, श्री श्रीनाथसिंह

यह उस समय की कथा है जब प्रयाग में अक्षयवट से कूद कर लोग आत्मघात करते थे और इस प्रकार सहज ही मोक्ष प्राप्त करते थे। इसी विश्वास के वशीभूत होकर प्रतिष्ठानपुर (वर्तमान भूँसी) के महाराज धर्मपाल देव ने कुम्भ के पुनीत पर्व पर अक्षयवट से कूद कर आत्मघात किया।

महाराज धर्मपाल देव का शव भूमि पर पड़ा था और उसमें से विचित्र प्रकाश फैल रहा था। चारों तरफ से लोग उनके दर्शनों को टूटे पड़ रहे थे। जो पास पहुँच गये थे वे उनके चरणों के नीचे की मिट्टी अपने नाखूनों से खुरच कर ले रहे थे। जो दूर थे, वे दूर ही से उनके ऊपर पुष्प फेंक रहे थे। महाराज का शव पुष्पों से ढँक गया था। अक्षयवट के पुजारी प्रयाग-वाल अपनी बलिष्ट बाहों से दर्शनार्थियों को पीछे को ढकेल रहे थे जिससे शव की रक्षा हो।

तभी भीड़ में यह स्वर गूँज उठा—'हटो! हटो!! रास्ता दो!!! रानी घृतकुल्या आ रही हैं।'

देखते ही देखते भीड़ इस प्रकार फट गई जैसे नींबू का रस पड़ने पर खौलता हुआ दूध फट जाता है, जैसे सूर्य के निकलने से कुहरा फटता है।

रानी घृतकुल्या राज्य के सेवकों और बांदियों से घिरी हुई सोलहों शृङ्गार से युक्त मन्द गति से आगे बढ़ रही थीं। उस समय वह ब्रह्मा की कन्या साक्षात् मोहिनी के समान प्रतीत हो रही थीं। जान पड़ता था जैसे अखिल विश्व का रूप सिमिट कर उसी में समा गया था। ऐसी सुन्दरी स्त्री को जो मुनियों और तपस्वियों के मन में भी राग उत्पन्न करने वाली थी, छोड़ कर राजा धर्मपाल देव ने जिस मोक्ष के लिए आत्मघात किया क्या वह पतिव्रता स्त्री के इस रूप से भी अधिक आकर्षक है? यह प्रश्न वहाँ उपस्थित हुए सभी मानवों के मन में उदित होने लगा। मानव का वेष धर कर जो देवता कुम्भ स्नान और अक्षयवट का दर्शन करने आये थे, रानी घृतकुल्या को देख कर उन सबका मन डिगने लगा। वे सब महाराज धर्मपाल देव की मन ही मन सराहना करने लगे कि जिन्हें स्त्री का यह मोहिनी रूप इस संसार में बांध कर नहीं रख सका और वे स्वर्ग प्रयाण कर गये।

रानी घृतकुल्या अपने पातिव्रत के तेज से इन सबके विलोचनों को नमित करती हुई महाराज धर्मपाल देव के शव के निकट पहुँचीं और जैसे वे जीवित हों इस प्रकार उन्हें समझ कर उन्हें रिझाने के लिए मधुर गीत गाने लगीं और नृत्य करने लगीं। इसी प्रकार वे नृत्य करती हुई कभी अक्षयवट के निकट जातीं और उसे भुज भर कर भेंटतीं और कभी महाराज धर्मपाल देव के निकट आतीं और उनके चरणों पर मस्तक नवातीं और मृत्यु-से मलिन हुए उनके मुख को चूमतीं।

क्रमशः भीड़ ने अपने आप चारों तरफ पीछे हट कर इतना स्थान दे दिया कि रानी घृतकुल्या महाराज के शव और अक्षयवट के गिर्द नृत्य करती हुई घूम सकें। जन कोलाहल रानी के इस अद्भुत करुण संगीत में विलीन हो गया। सारा जन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समूह जैसे एक दृष्टि से रानी का संगीत सुनने और उनका नृत्य देखने लगा।

संगीत समाप्त करने के पश्चात् रानी अक्षयवट की परिक्रमा करने लगीं और उससे इस प्रकार प्रार्थना करने लगीं :—

जगत पूज्ये जगन्मातः
सावित्रि पति दैवते
पत्या सहावियोगं में
वटस्थे कुरु ते नमः

अर्थात् हे सावित्री तुम संसार के लिए पूज्य हो, तुम संसार की माता हो, तुम पति को ही अपना देवता मानने वाली हो। हे वट वृक्ष में निवास करने वाली देवि तुम कुछ ऐसी कृपा करो कि जिससे मेरे पति का मुझसे कभी वियोग न हो। हे देवि ! तुम्हें मैं नमन करती हूँ।

उच्च करुण स्वर से बार-बार यह प्रार्थना करती हुई वट वृक्ष को पग-पग पर भेंटती हुई रानी घृतकुल्या उसके गिर्द घूमने लगीं।

उस समय लोगों का यह विश्वास था कि पतिव्रता सती नारी की इच्छा शक्ति के सम्मुख किसी की नहीं चलती और बड़े-बड़े दैवी नियम तक बदल जाते हैं। सो वहाँ उपस्थित समस्त जन सोचने लगे कि अब कोई न कोई अघटित घटना अवश्य घटेगी। तभी शूल टकेश्वर महादेव का मन्दिर लोगों को काँपता हुआ प्रतीत हुआ जैसे भूचाल आने पर महल और शिवालय कांपते हुए दिखाई पड़ते हैं। सब लोग भयभीत से हो उठे और मन ही मन शूल टंकेश्वर भगवान से रक्षा की प्रार्थना करने लगे।

इसी बीच में रानी घृतकुल्या अक्षयवट को अन्तिम बार भेंट कर अपने पति के शव की ओर बढ़ने लगीं। उनका एक एक पग भूमि पर इस प्रकार पड़ता जैसे मस्त हाथी का पग किसी पुल पर पड़ता है और वह डोल उठता है। इसी प्रकार उनके प्रत्येक पग पर पृथ्वी कांपने-सी लगी। इस प्रकार जब वे शव के पास पहुँचीं, लोगों ने देखा कि शव में अद्भुत कम्पन हो उठा है। देखते ही देखते शव सजीव सा होता प्रतीत हुआ और राजा धर्मपाल देव उठ कर बैठ गये। जैसे सोते से जागे हों।

रानी घृतकुल्या ने जैसे ही आगे बढ़ कर चाहा कि उनके चरणों का स्पर्श करें, उन्हें जैसे सुनायी पड़ा—'ठहरो।' यह उनके अन्तःकरण का स्वर था।

वे जहाँ की तहाँ खड़ी रह गयीं और अपलक दृष्टि से उठ कर बैठे हुए महाराज धर्मपाल देव के शव को देखने लगीं। उन्हें लगा कि जैसे उस शव के भीतर महाराज धर्मपाल देव नहीं हैं बल्कि कोई और आत्मा समा गई है। वे विसूरने लगीं कि यह कौन हो सकता है—देवता या पिशाच?

वट में स्थित सावित्री का स्मरण करती हुई वे बोलीं—'मेरे पति के शरीर में प्रवेश करने वाले आप कौन हैं?'

'वरानने ! मैं हूँ वारणावत का राजकुमार' अतिप्रिय ! तुम्हारा चिर प्रेमी।'

'तुम मेरे पति के शरीर में किस प्रकार प्रविष्ट हुए, पहले यह कथा कहो।'

तब महाराज धर्मपाल देव के शरीर से वह राजकुमार बोला—'वरानने ! तीनों लोकों में कोई भी ऐसा पुरुष नहीं है जो तुम्हें देख कर लुब्ध न हो जाय। सुन्दरी, तुम यह जानती हो कि मैंने धर्म को साक्षी बना कर तुम्हें अपनी पत्नी बनाने की प्रतिज्ञा की थी परन्तु केवल अपने स्वार्थ साधन के लिये मैंने काशिराज से युद्ध करना और उसमें अकारण प्रजाजनों की आहुति देना उचित न समझा था। इसीसे मैंने तुम्हें सलाह दी थी कि तुम महाराज धर्मपाल देव से विवाह कर लो क्योंकि मैं जानता था कि इसी प्रकार हमारे तुम्हारे पवित्र प्रेम की रक्षा हो सकती है और हमारे तुम्हारे कारण भीषण नरसंहार भी रुक सकता है। तुमने वही किया और इस प्रकार हमारे तुम्हारे धर्म की रक्षा हुई। परन्तु मैं तुम्हारे वियोग को सहन न कर सका और तुम्हारे पीछे ही मैं भी अपना राजपाट छोड़ कर प्रतिष्ठानपुर चला आया। यहाँ मैं भिखारी ब्राह्मण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का वेष धारण करके राजमहल का चक्कर लगाने लगा और यदाकदा तुम्हारे दर्शनों से अपने नेत्रों को तृप्त करने लगा। इसी अवस्था में मुझे यहाँ इस तीर्थ में एक महान् हठ योगी के दर्शनों का लाभ मिला। उनसे मैंने अपनी व्यथा कही तब मुझे उन्होंने योगिक अभ्यास करने की सलाह दी। कहा, इससे क्रमशः तुम अपने मन पर विजय प्राप्त कर सकोगे और स्त्री का प्रेम क्या ब्रह्माण्ड में तुम्हारे लिये कुछ भी पाना शेष न रह जायगा। सो मैंने उन्हें गुरु मान कर हठ योग आरम्भ कर दिया, उनकी सहायता से यहाँ मैंने सहस्र दल कमल की स्थापना की। षटचक्र के सहारे सुषुम्ना की साधना की। अब मैं इस योग्य हो गया हूँ कि मेरी कुण्डलिनी षटचक्रों और त्रिकुटी का भेदन करती हुई 'सत दल दमल' तक पहुँच जाती है। इस प्रकार मैं क्रमशः अभ्यास से मन को एकाग्र करके गहन अन्धकार और पर्वतों के परे का भी ज्ञान प्राप्त कर सकता हूँ और एक शरीर छोड़ कर दूसरे में प्रवेश कर सकता हूँ। वरानने! तन से तुम महाराज धर्मपाल देव की पत्नी हो परन्तु मन से तुम मेरी पत्नी हो। उनके तन में अब मेरा मन प्रवृष्ट है। इस प्रकार अब तुम चाहो तो तुम्हारे हमारे दोनों के इष्ट की सिद्धि हो सकती है। सुन्दरी! जन्म से लेकर अब तक मैंने कभी असत्य का आचरण नहीं किया है। कभी कोई पाप नहीं किया है। चन्द्रवदने! स्वर्ग की प्राप्ति भी मुझे वह सुख नहीं दे सकती जो यहाँ अक्षयवट के तले महाराज धर्मपाल देव के चक्षुओं से तुम्हें देखने में मिल रहा है। अब तुम मेरे ऊपर कृपा दृष्टि रखते हुए मेरी प्रार्थना का उत्तर दो।'

यह सुन कर रानी घृतकुल्या बोलीं—'आपने तो धर्मशास्त्र का भी अध्ययन किया होगा। क्या आप नहीं जानते कि जो योगी रागयुक्त मन और आसक्ति पूर्ण दृष्टि से स्त्री की ओर देखता है या उस का चिन्तन करता है वह नरक में पड़ता है। आप को तो दिव्य दृष्टि प्राप्त है। तनिक सूक्ष्म दृष्टि से मेरी ओर देखिये। मेरे जिस मुख की सुन्दरता पर मुग्ध होकर मुझे चन्द्रवदने कहते हो वह हड्डियों का ढांचा मात्र ही तो है, जो चर्म और मांस से ढका हुआ है। मेरे नेत्र जिन्हें तुम सुन्दर कहकर कमल से उपमा देते हो वे वसा और मेद के सिवा और क्या हैं? स्तनों में मांस के सिवाय और क्या है? जघन देश भी तो मांस और हड्डी का ही बना हुआ है। जिस योनि पर तुम अपने इतने बड़े जीवन की साधना निछावर करने को उद्यत हो वह मूत्र का द्वार ही तो है। रक्त, मांस, हड्डी से बना और चर्म से ढका यह शरीर तुम्हें जो योगी और त्रिकाल दर्शी हो कैसे सुन्दर प्रतीत होता है? मांस मेद और चर्बी ही जिसका सार-सम्बल है, देह धारियों के उस शरीर में भला सार तत्व क्या है? कुछ भी तो नहीं। तुम्हीं बताओ! विष्ठा, मूत्र और मल से भरे शरीर में सिवाय अज्ञानी के और कौन अनुरक्त होना चाहेगा?'

यह सुन कर महाराज धर्मपाल देव के शव के भीतर से योगी राजकुमार अति प्रिय कहने लगा—'सुन्दरी यह तो ब्रह्मा से पूछो जिसने तुम-सी श्रेष्ठ वर्ण वाली नारी की रचना की है कि उन्होंने तुम्हारे मल-मूत्र मज्जा मेद से निर्मित इस शरीर में क्या आकर्षण भर दिया है। योगियों सहित सकल चराचर जगत जिस रूप पर मोहित है वह ब्रह्मा का नारी रूप ही तो है। वरानने यदि कहीं कोई दोष है तो वह मेरा नहीं है ब्रह्मा का है जिसने तुम जैसी नारी की सृष्टि की है।'

यह सुन कर रानी घृतकुल्या बोलीं—'योगिराज मोह छोड़ो और मेरे पति के शव को अपनी कलुषित आत्मा से अपवित्र न करो। यदि इतनी बड़ी साधना के पश्चात् भी तुम नारी पर मोहित होकर संसार के माया-मल में सने रहना चाहते हो तो जाओ ऐसी नारी की खोज करो जो तुम्हारा आदर के साथ स्वागत करे। मेरे पास तुम्हारे लिये सिवाय घृणा के और कुछ नहीं है।'

तब कुछ क्रोध प्रदर्शित करते हुए अति प्रिय बोला—'और कोई युवती मुझे इस प्रकार का उप-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

027690

देश देती तो क्षम्य होता परन्तु तुम जिसने अपने रूप से मेरे मन को विकार युक्त बनाया कैसे इस प्रकार मुझे तिरस्कृत करने का साहस करती हो।'

रानी ने कहा—'यह सत्य है, जब मैं कुमारी थी, तुम्हारे प्रति अनुरक्त हुई थी। परन्तु तुम इतने बाहु-बली नहीं थे कि मुझे अपनी बांहों में आबद्ध करके रख सकते थे। तब मुझे दूसरे पुरुष का सहारा लेना पड़ा। मैं राजा धर्मपाल देव की रानी बनी। उनको तन सौंपा तब मन भी सौंपना पड़ा। तुम जाओ! मेरे मन में तुम्हारे लिये अब स्थान नहीं है।'

'परन्तु राजा धर्मपाल देव ने तुम्हें कभी पत्नी रूप में ग्रहण नहीं किया।'

'न किया हो, इससे मेरी मान्यता में कोई अन्तर नहीं पड़ता। मैंने, राजा धर्मपाल देव को जिस दिन वरण किया उसी दिन तुम्हें ही क्या संसार के समस्त पुरुषों को अपना पुत्र मान लिया। परम धाम को गये उस आदर्श राजा की रानी से तुम अन्यथा आचरण की कदापि आशा न करो। जाओ! उनके शव से निकलो।'

'और न जाऊँ तो?'

'तो अपने स्वर्गीय स्वामी के इस शव पर मेरा पूर्ण अधिकार है। मैं इसे भस्मीभूत करा दूंगी।'

रानी घृतकुल्या ने तत्काल अपने पौत्र सत्यपाल देव को जिन्हें प्रतिष्ठानपुर का राज्य सौंप कर राजा धर्मपाल देव स्वर्गवासी हुए थे बुला कर आदेश दिया—'इसी दस संगम पर चिता बनाई जाय और स्वर्गीय राजा का शरीर उसमें भस्म कर दिया जाय।'

पौत्र ने रानी की आज्ञा का तत्काल पालन किया और जब राज्य परिवार के लोग उस बोलते हुए शव को लेकर चलने लगे तब उसके भीतर से अति-प्रिय बोला—'अच्छा, रानी मेरे एक प्रश्न का उत्तर और देने की कृपा करो।'

'पूछो जल्दी पूछो।'

'आपने अक्षयवट से कूद कर प्राण क्यों न दिया?'

'मेरा मन भीरु निकला। मेरे अन्तः करण ने कहा—'आत्मघात करने का तुम्हारे पास पर्याप्त कारण नहीं है। कुछ इसलिए और कुछ इसलिए कि मैं स्त्रियों के लिए भी अक्षयवट से कूद कर आत्म-घात का मार्ग न खोलूँ।'

'यह कुछ नहीं, तुम्हारे मन में मेरी स्मृति थी। उसी ने तुम्हें मरने नहीं दिया।'

'हो सकता है, तुम्हारा यह कथन सत्य हो पर यदि मेरे मन में तुम्हारी स्मृति है जैसा कि तुम कहते हो तो उसे जीवन पर्यन्त संयम की शिला के नीचे दबी ही रहना पड़ेगा। वह मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकती।'

यह कहने के पश्चात् रानी बोलीं—'और कुछ पूछना है?'

'हाँ, एक बात और! आपने सावित्री से पति के साथ अनन्त संयोग का बर माँगा था तो क्या आप मृत राजा को पुनः जीवित करना चाहती थीं।'

'कदापि नहीं। पति के साथ नित्य संयोग का मेरा तात्पर्य इतना ही था कि मेरा मन उनके स्मरण में सदैव लीन रहे। और कुछ पूछना है?'

'रानी, सुनो! तुमने मेरे मन को मोहित कर लिया है। अतएव मैं राजा धर्मपाल देव के शरीर को छोड़ना नहीं चाहता और उनके शरीर का स्वामी होने से अब मैं तुम्हारा भी स्वामी हूँ। मेरी आज्ञा का पालन करो नहीं तो मैं अभिशाप दूंगा। मेरे अभिशाप के परिणाम स्वरूप प्रतिष्ठानपुर की सुन्दर नगरी अपने समस्त ऐश्वर्य के साथ झुलस जायगी।'

शव के मुख से यह सुन कर समस्त उपस्थित जन प्रकम्पित हो उठे और महाराज सत्यपाल समेत सब रानी के मुख की ओर देखने लगे।

रानी घृतकुल्या बोलीं—'मेरे पति का शव ऐसे नराधम के निवास योग्य नहीं है जो अपने स्वार्थ के लिए दूसरों की साधना बिगाड़े। धर्म रहे, बाकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब चाहे ध्वस्त हो जाय यह मैं चाहती हूँ। मेरा आदेश है कि मेरे स्वामी का शव भस्म कर दिया जाय।'

तुरन्त ही महाराज सत्यपाल देव ने राज्य परिवार के लोगों और ब्राह्मणों की सहायता से बलपूर्वक राजा के उस बोलते शव को ले जाकर चिता पर रख दिया।

जैसे ही चिता में आग लगाई गई लोगों ने देखा कि एक भूचाल-सा आया और प्रतिष्ठानपुर की नगरी ढहने लगी। मन्दिरों के स्वर्ण कलश और महलों के उच्च शिखर ढह कर नीचे आ गये और नींव के पत्थर जैसे बन्धन मुक्त होकर ऊपर आ गये इधर राजा धर्मपाल देव का शव भस्म हुआ उधर प्रतिष्ठानपुर उलट-पुलट गया। झुलस-सा गया। उसी क्षण से उसका नाम झूँसी पड़ गया।

नगर की यह अवस्था देख कर महाराज सत्यपाल देव अपने पुत्र विजयपाल को झूँसी का राज सौंप कर बन में तपस्या करने चले गये।

प्रयाग मोक्ष में झूँसी के 'नष्ट होने की कथा विस्तार से वर्णित है जिसका हमने यहां संक्षेप में उल्लेख किया है। रानी घृतकुल्या के बारे में यह लिखा है कि वे फिर झूँसी लौट कर नहीं गई। उन्होंने कहा—'मनुष्य के सब पाप केशों की जड़ में आश्रय लेकर टिके रहते हैं अतएव पहले मैं केशों का मुण्डन कराऊँगी।'

उन्होंने संगम पर अपने केशों का मुण्डन कराया। उनके साथ ही कुम्भ स्नान को जो लोग भी आए थे, सबने प्रयाग में मुण्डन कराया। कहते हैं उसी दिन से प्रयाग में मुण्डन की प्रथा चली जो अब तक है। फिर रानी गया गईं! वहां उन्होंने पिण्डदान दिया। फिर भारत के समस्त तीर्थों में धर्म का उपदेश देती हुई काशी पहुँच कर शरीर त्याग किया।

नोट—प्रयाग मोक्ष में अनेक उपदेश भरे आख्यान हैं। जिन्हें रानी घृतकुल्या ने तीर्थों में जा जाकर पतिव्रता स्त्रियों को सुनाया है। उनमें एक है—'पत्नी द्वारा पति का वशीकरण' यह कहानी हम 'दीदी' के आगामी अङ्क में प्रकाशित करेंगे।

गद्यगीत

लेखिका, श्रीमती चन्द्रकान्ता त्रिपाठी

मेरे मन मोहन, बता दो मैं कौन-सी होली खेलूँ? और कौन-सी सुन्दर होगी कौन सत्य है? कौन शिव है? यौवन क्षणिक है। रूप क्षणिक है। जीवन क्षणिक धन अस्थिर है। मन चञ्चल है। पवन-सा गतिवान है। मानव पतित है। तुम भगवान हो। बसंत बीत रागी है। केवल चिन्ता की होली चिर-साथिन है। विश्व की बयार में धूलि कण, गुलाल की तरह सुख और दुख नेत्रों में पड़ कर, पीड़ा बन कर, स्नेह वारि नष्ट करके, विलीन हो जाते हैं। बीते दिन, बीता समय, स्मशान की ठण्ढी चिता की राख-सी उड़-उड़ कर श्वास को अवरुद्ध करती है, मन को मसोसती है। आओ मोहन! तुम फूल चुनो, मैं शृङ्गार करूँ। तुम राग भरो, मैं अनुराग करूँ। माली सेज रचे मैं शयन करूँ। जब मेरे रूप राशि की ज्वाल जले, तब तुम अपने हाथ माली के साथ मेरे माथ पर, सिंदूर मय सौभाग्य सुमन का पराग बिखेर दो, बस नव जीवन नव वर्ष शुभ हो जाय, मैं जीतूँ, तुम हार जाओ। ठण्ढी चिता की राख, लज्जा की विभूति, होली की अबीर और गुलाल-सी तुम्हारे मस्तक की श्री बन जाय। मानव जीवन में नारी का अपमान तुम्हारी वंशी बन जाय।

मेरे मोहन, जाओ, मेरे चिता की लपटें, विश्व को प्रकाश देंगी। तुम मुस्काना। मैं मान करूँगी। सुमन खिलेंगे, कलियाँ सिसक उठेंगी। ओ मेरे जीवन के पुष्पोद्यान की होली, तुम्हीं सत्य, शिव और सुन्दर हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर और गृहणी

लेखिका, श्रीमती कमला दीक्षित

जी हाँ ?

वह, मुझे रानी कहते हैं ? और रानी सुनते ही कितनी शान-शौकत, रोब-दाब, शान-गुमान सब साथ आ जाते हैं ? है ना ? महल और दुर्ग न जाने क्या ?

लेकिन कल की ही बात लीजिये ? कितनी हसरतों से वे, चार मित्रों को डिनर पर बुला आये ? और यहाँ था—क्या ? महीने के आखिरी दिन—उन्हें याद न रहा। पर अफसोस तो इस बात का है कि हमें भी सम्हलना न आया। हम भी बड़े बे फिकरे ही रहे।

काश ! हम सम्हाल कर तरतीब से गृहस्थी चलाना याद रखते ? देखिये ना कितनी बड़ी बेवकूफी हो गई। एक तो कमबख्त यह ८ बजे तक की सोने की आदत, सबेरे ६ पर उठ जाते, ज़रा-सा व्यायाम कर, नहाने के बाद। सारी चीजें कतार-से लगा दी होतीं ? सब फर्श धो-धुला कर, करीने से गृह का सब सामान सजा दिया होता। बच्चों का अलग मसलन—उनके कपड़े, उनकी किताबें, उनके जूते, उनके खिलौने, वे जब चाहें उठा लें और फिर वहीं रख दें। फिर बच्चों को नहला-धुला कर जलपान। और जल्दी से भोजन की तैयारी ?

अरे लेकिन यहाँ तो घड़ी भागती ही चली जा रही है। उफ ! यह लीजिये कोट में बटन ही नहीं है। और कमीज़ का यह कंधा ? धोबी साहब फाड़ लाये हैं ? क्यामत है साहब क्यामत क्या घर है ?

चार दिन से सोच रहे हैं कि सियेंगे–सियेंगे ! पर दोपहर में आलस छा जाता है और गप-शप में ही दिन गायब ? ओह ! अगर फुरसत में फटे कपड़े की तरफ सिर्फ एक नजर डाली होती ? तो अभी रुकना न पड़ता। और उनका कलम भी खुदा जाने कहाँ खो गया। अब क्या-क्या करूँ। अगर उनका टेबल कल ही सजा दिया होता ? रोज एक नजर उनके सामान पर डाली होती ? तो आज ? उफ !

क्या-क्या परेशानियाँ ? सब सिर्फ इस आलस की बदौलत। और तो और खाने के टेबल पर भी नौ इञ्च धूल और यह बे तरतीब साजो-सामान ! सब है, पर वक्त पर.....

न प्लेट हैं न चम्मच है न टेबल क्लाथ का पता और यह परदे तो जैसे मुझे चिढ़ा रहे हैं। फूलदानी गायब। अब क्या-क्या करूँ मैं ? काश रोज-रोज सब देखा होता ?

शुरू से ही अगर सम्हाल-सम्हाल कर राशन ही निकालती तो चार क्या ? ६ आदमी आ जाते तो क्या बिगड़ता ? अब वक्त पर कमबख्त पड़ोसिन कुछ उधार भी देगी तो जैसे महारानी ! जी !! उपकार कर रही हों ? और रोब आखिर क्यों न जमाये ? फूहड़ पने की भी दाद कौन देगा भला ? और तो और हाथ में दमड़ी भी नहीं। कान पकड़े आज से। आलस्य महाराज को नमस्कार। फिजूल खर्चियों से दूर। सुन्दर गृह, करीने से जिन्दगी, स्वास्थ-सौंदर्य, ताजगी, मेहनत यह सब मेरे गुलाम होने ही चाहिये। आखिर मैं रानी हूँ ना ? फिर

077610

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारण मन्त्र

लङ्का की एक कहानी

लङ्का में आज भी तान्त्रित विद्या का बड़ा प्रचार है। कहते हैं तान्त्रिक लोग गुबरैला, उल्लू और कभी-कभी मनुष्यों के शव पर भी प्रयोग करके प्रेत प्रकट करते हैं और उसके द्वारा चाहे जिसका वध करा सकते हैं। परन्तु यदि वह भी तान्त्रिक कवचों या काटों से रक्षित हुआ तो प्रेत मारण करने वाले को ही मार डालते हैं। इसकी एक कहानी यहाँ दी जाती है—

एक उच्च राजकर्मचारी समुद्र के किनारे के एक नगर में कर वसूल करने गया। नगर के लोगों ने उसके स्वागत में अपने घर और द्वार सजाये। जब एक सड़क से उसकी सवारी निकल रही थी, उसकी दृष्टि एक धनी सौदागर की पत्नी पर पड़ी जो अपनी दासियों से घिरी यह दृश्य देख रही थी। उसके सौंदर्य से वह इतना प्रभावित हुआ कि उसके पास उसने बहुमूल्य उपहार भेजे और उसे अपने घर पर आमन्त्रित किया।

स्त्री ने घृणा पूर्वक उसका उपहार अस्वीकृति कर दिया और कहला भेजा कि वह पतिव्रता नारी है। उसका पति जहाज पर बैठ कर दूसरे देश को जा रहा है।

राजकर्मचारी इस उत्तर से विचलित नहीं हुआ उसने उसके पति की हत्या करवाने का निश्चय किया। वह एक तान्त्रिक के पास गया और उसे अपनी व्यथा सुनाई। तान्त्रित उसको लेकर एक कब्रिस्तान में गया, एक कब्र से उसने एक ताजी लाश खोद कर निकाली और उस पर तान्त्रिक प्रयोग आरम्भ किया। तब लाश का प्रेत प्रकट हुआ जिसे उसने एक तलवार देकर आज्ञा दी कि इसी दम सौदागर का वध कर आवे।

प्रेत को आता देख कर जहाज के लोग भयभीत हो उठे, परन्तु सौदागर जो ऐसे प्रयोगों की काट जानता था मन्त्र पाठ में लीन हो गया। प्रेत वापस लौट गया। तान्त्रिक ने इस तरह तीन बार प्रेत को सौदागर का वध करने को भेजा पर प्रेत तीनों बार वापस लौट आया। तीसरी बार उसने तान्त्रिक और उस राज्य कर्मचारी दोनों को मार डाला।

ऐश्वर्य को मेरा पानी भरना ही चाहिए। लीजिये साहब? हमें तो आपका हँसता खिले गुलाब-सा मुखड़ा चाहिए? फिर हमें कितनी भी तकलीफ क्यों न सहनी पड़े कितनी मेहनत क्यों न हो।

जलने को शमा बनें, मिटने को परवाना बनें,
इश्क में तेरे लिये क्या बने, क्या-क्या न बनें?

हमारे विशेषज्ञों से पूछिये

प्यारी बहनों! यदि आपके सामने कोई चिन्ता या समस्या हो तो निःसंकोच हमारे विशेषज्ञों से पूछिये। वे आपको उत्तर देंगी। कुछ के नाम ये हैं:—

शिशु पालन—श्रीमती चन्द्रकान्ता जेरथ बी० ए०
दाम्पत्य और पारिवारिक—श्रीमती कमला शिवपुरी, बी० ए० बी० टी०
स्वास्थ्य और सौंदर्य—श्रीमती श्यामा बाई
रसोई—श्रीमती लाजवन्ती
सिलाई बुनाई—कुमारी सुशीला

जिसको चाहें मार्फत 'दीदी' इलाहाबाद-२ के पते पर लिखें, पर हाँ उत्तर के लिए =) के टिकट से युक्त अपने पते का लिफाफा अवश्य भेजें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ब्रश' और सौंदर्य

लेखक, श्रीयुत चन्द्रबलीसिंह बी० ए०

ब्रश की उपयोगिता और व्यापकता से 'दीदी' की पाठिकायें परिचित होंगी। वर्तमान समय में सुन्दरता के अनेक साधनों में ब्रश अपनी अलग विशेषता रखता है। हम देखेंगे कि कितने ढंगों से ब्रश काम में लाये जा सकते हैं।

बालों के लिए

बालों की सफाई के लिये सबसे अच्छी चीज ब्रश होता है। इसके उपयोग से बाल चिकने, मुलायम और घने हो जाते हैं। सदा दो ब्रश रखने चाहिए और दोनों को एक साथ उपयोग करना चाहिए। एक बार एक ब्रश फेरा जाय तो दूसरी बार दूसरा। इसके परिणाम स्वरूप बाल अच्छे होंगे और आनन्द भी आयेगा। साथ ही साथ थकावट भी नहीं प्रतीत होगी। ये ब्रश खूब साफ होने चाहिए और इन्हें प्रति दिन धो लेना चाहिए। अच्छे बाल के ब्रश खरीदने चाहिए और इनके बाल इतने कड़े हों जितना प्रत्येक व्यक्ति सह सकता है। एक अच्छा ब्रश तीन काम करता है—यह सारे सिर में प्राकृतिक तैल को फैलाता है, खोपड़ी को इतना साफ रगड़ता है कि ताजा खून ऊपर आ जाता है और ग्रन्थियों से तैल प्रवाह को कायम रखता है।

ब्रश से बालों को झाड़ते समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि ब्रश केवल बालों के घुमाव की ओर न फेरा जाय बल्कि इसके उलटा भी फेरा जाय बालों के उलटा होने से कोई हानि नहीं होगी। बल्कि ऐसा करने में जितने जल्दी-जल्दी ब्रश घुमाया जायेगा, उतनी जल्दी-जल्दी बाल भी झुक कर अपनी असली दशा में जायेंगे। ऊपर के बालों को दबाकर झाड़ना चाहिये और प्रति दिन नये-नये ढङ्ग से बालों को संवारना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालों को कंघी करते समय भी सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए। सदा उसके कांटों को साफ कर देना चाहिए नहीं तो वह बालों में उलझ जायेगी और लाभ के स्थान पर हानि पहुँचायेगी। बाल सँवारने का अच्छा तरीका यह है कि पहले थोड़े-थोड़े से बालों को साफ करना चाहिए। फिर जड़ से थोड़ा ऊपर से कंघी लगाना चाहिए। इसी प्रकार आगे बढ़ते जाना चाहिए। कभी भी कंघी को बालों की जड़ से न लगाना चाहिए और ऊपर न खींचना चाहिए। ऐसा करने से बाल उखड़ जाते हैं।

ब्रशों को साफ करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि गरम पानी में उन्हें साफ कर लिया जाय, सफाई करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि ब्रश की पीठ पानी के ऊपर रहे क्योंकि भीग जाने पर सम्भव है कि बाल उखड़ जायेंगे। सफाई करने के बाद उन्हें सूर्य की रोशनी में सुखा लेना चाहिए।

चेहरा

चेहरा की सुन्दरता बनाने के लिये दो प्रकार के ब्रश रखने चाहिए। पहला तो नाखून पेन्ट करने वाला मुलायम ब्रश होना चाहिए। इससे चेहरे पर काफी रगड़ पड़ती है। चिकने चेहरे पर साबुन के फेन या सूखे चेहरे पर क्रीम लगा लेना चाहिए। इसके बाद ब्रश को उस पर घुमाना चाहिए। मुँह के किनारे से शुरू करके ब्रश ऊपर की ओर नाक के पास तक ले जाना चाहिए और फिर कपोलों पर होता हुआ कनपटी तक ले जाना चाहिए। दूसरे तरफ भी ऐसा ही करना चाहिए। तत्पश्चात् ऊपर से नीचे और दायें से बायें रगड़ना चाहिए। केवल दो-तीन मिनट ऐसा करने से चेहरे पर लाली दौड़ जायेगी क्योंकि खून का दौरा तेज हो जायगा। फिर चेहरे को धोकर सुखा लेना चाहिए। और फिर देखिये। चेहरा कितना चिकना और सुन्दर प्रतीत होता है।

दूसरा ब्रश जो चेहरा के लिये अच्छा होता है पाउडर लगाने वाला ब्रश है। ये ब्रश बहुत ही मुलायम होते हैं और अन्दर पाउडर लगा लेने के बाद अधिक पाउडर को उठाने या बराबर करने के लिये इनका उपयोग किया जाता है। इस ब्रश के प्रयोग से चेहरा चीनी के बर्तन के समान चिकना और सुन्दर हो जाता है।

होंठ

लिपस्टिक लगाने में यदि ऊँट के बालों से बने हुए ब्रश का प्रयोग किया जाये तो होठों पर काफी सफाई का पेन्ट हो जायेगा और इससे होठों की सुन्दरता भी बढ़ जायगी क्योंकि इन ब्रशों से जितना बारीक किनारा बनाया जा सकता है उतना शायद सिर्फ लिपस्टिक लगाने से नहीं।

बरौनी

होंठ ही क्यों बरौनी भी ब्रशों की सहायता से सुन्दर बनाई जा सकती है। बरौनी झारने वाले ब्रश पर लेकर रेंड़ी के तेल को रात और दिन में लगाने से कुछ ही दिनों में बरौनी के बाल लम्बे और घने हो जायगे। लम्बी, काली और घनी बरौनियों की सुन्दरता तो निराली ही होती है। यदि भौंहें भी घनी नहीं हैं तो इसी उपाय से काम लेना चाहिए।

पीठ

रबड़ के ब्रशों से पीठ की सफाई की जा सकती है। पीठ पर कुछ ऐसे स्थान होते हैं जहाँ तक हाथ आसानी से नहीं पहुच सकते। अतः उनकी सफाई के लिये ये ब्रश काम में लाये जा सकते हैं। ब्रश में एक लम्बी मुठिया लगाने से सारा काम ठीक हो सकता है। एक अच्छे साबुन को काम में लाना चाहिए और उसकी मदद से पीठ को सदा ब्रश करना चाहिए। इससे पीठ साफ और सुडौल हो जायगी।

दाँत

दाँतों की सफाई के लिये ब्रश होते ही हैं। यदि मसूड़े बहुत मुलायम हों और कड़े बाल वाला ब्रश काम में न आ सके तो वैसा ही ब्रश रखना चाहिए जिससे हानि न हो। नमक और गरम पानी

[शेष २०४ पृष्ठ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकांकी नाटक

स्वतन्त्र भारत*

लेखक, श्री भीमशङ्कर 'परवाना'

पात्र :—

भारत माता।

स्वतन्त्रता देवी।

मुन्शी जी—एक शराबी व्यक्ति।

घूँसखोर खाँ—घूँस खाने वाला सरकारी मुलाजिम।

मंगतेराम—पार्टी के नाम पर चन्दा हड़प जाने वाला।

सेठ जी—ब्लैक मारकटिंग तथा पूँजीवाद के साक्षात् औतार।

मुनीम जी—सेठ जी के लिए सब कुछ करने वाला एक व्यक्ति।

किसान ! मजदूर—भंगी, नर्स, डाक्टर बाबू, रोगी इत्यादि।

चतुर्थ दृश्य

[एक बहुत बड़ा हरा-भरा आजाद पार्क नाम का पार्क है, एक किसान कन्धे पर हल रख कर आता है, हल को पटक कर बैठ जाता है।]

किसान—भइया हो ! बहुत दिन बाद आजादी पायन, देश आजाद भा ! कन्धवा पर यह हलवा लादे-लादे कार-कार दगवा पड़ गये, अब कुछ तो आराम करो ! आजादी के जमाने माँ अब काम करै का ना होई ! घर बैठे भगवान देई ! और मजे के ठाट !!

[हल के ऊपर सिर रख कर लेट जाता है, एक मजदूर का प्रवेश।]

मजदूर—यह आजादी का हरा-भरा बाग है, काम करते-करते थक गये, अब जरूरत है कुछ दिन चैन की वंशी बजाई जाये। (पास ही फावड़ा रख लेट जाता है।)

[मंगतेराम का प्रवेश]

मंगतेराम—किसान और मजदूर दोनों थककर आराम से सो रहे हैं। इनको जगाने की आवश्यकता नहीं है। किसान का हल और मजदूर का फावड़ा ये दोनों मेरे काम आयेंगे।

[हल तथा हथौड़ा उठा लेता है। लाओ इनकी जेबें टटोल कर भी देखें शायद कुछ और मिल जाये। (जेब टटोल कर) दोनों की जेबें खाली हैं, कुछ भी तो नहीं है इनमें। इस आजादी के जमाने में भी दोनों नंगे भूखे सो रहे हैं, खैर इनका यह हल और फावड़ा हमारे बड़े काम का है (लेकर) चला जाता है।]

[भंगी का प्रवेश, झाडू-पंजा लिये हुए, टोकरी पटक कर झाडू पञ्जा बजा कर नाचता है।]

भंगी—सैंया भये कोतवाल अब डर काहे का !

[जमादार का प्रवेश]

जमादार—अरे कलुआ ! तू यहाँ क्या कर रहा है। यहाँ झाडू लगाने आया है कि भालू का नाच नाचने !

कलुआ—वाह जमादार वाह ! तुमार जमादारी न चली ! बहुत दिन झाडू लगवाय लिहो, अब जमनवा आजादी का हवै, हमहूँ आजाद, तुमहूँ आजाद ! अपन राज्य ! अपन देश।

[जमादार की पीठ पर झाडू पटकता और नाचता है। जमादार चला जाता है।]

*इसका पूर्वार्द्ध मार्च के अङ्क में प्रकाशित हो चुका है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भंगी—अब इस आजादी के जमाने मां सड़क की सफइया देखै को आई. जी चाही काम करब जी चाही न करब ! अँग्रेजी जमाना तो बाटै न कि जमादरवा सार मार हन्टर के खाल, खींच लेई, लावौ तनिक भांग खाय कै सोय रही।

[जेब से भांग निकाल कर, मल कर खाता है और झाड़ू पञ्जा सिरहाने रख कर सो रहता है। कोट-पैन्ट पहने एक बाबू का प्रवेश।]

बाबू—मिलने का वादा इसी जगह का था, कहीं धोखा तो नहीं हुआ ! दफ्तर से फ्रेञ्च लीव लेकर बन्दा आजाद पार्क की हवा खाने आया, जब सारी दुनियाँ आजादी का मजा लूट रही है तो फिर हम भी क्यों न कलम रख कर, बाबू से साहब बन कर, क्लर्क से अफसर बन कर दम भर को मजा कर लें। जमाना आजादी ! हिन्दू कोड बिल के अनुसार हर हिन्दू मर्द व औरत को एक दूसरे को तलाक देने का अधिकार है, इसीलिये मैंने अपनी पैसन्जर को छोड़ कर एक्सप्रेस से भिड़ने का इरादा किया है, वह देखिये सामने से शायद वही चली आ रही हो।

[मुन्शी जी की स्त्री का प्रवेश]

स्त्री—क्यों जी ? तुमने मुझे आजाद पार्क में किस लिये बुलाया ?

बाबू—अरर र-र यह तो एक्सप्रेस नहीं मेल मालूम पड़ती है, कोई इसे समझाये भाई; मैं इसे क्या समझाऊं ?

स्त्री—बोलो जी बोलो ! मैं अपने पति को छोड़ कर आई हूँ, तुम्हें मुझसे विवाह करना पड़ेगा।

बाबू—यह विवाह की रट कैसी लगाई, जब एक बन्धन छोड़ कर आयी हो तो फिर दूसरे बन्धन में क्यों पड़ना चाहती हो ?

स्त्री—यह सब कुछ मैं नहीं जानती, तुम्हें मुझ से विवाह करना ही पड़ेगा।

बाबू—जबरदस्ती !

स्त्री—जो कुछ भी समझो ! जमाना आजादी का है, हम जिससे चाहें विवाह करने को आजाद हैं, अब तक पुरुष, स्त्रियाँ पसन्द करते थे, अब स्त्रियाँ पुरुष को पसन्द करेंगी।

बाबू—अरे बाबा ! यह कैसा उलट-फेर ! कहाँ मैं पच्चीस वर्ष का युवक और कहाँ यह पैंतालीस वर्ष की मेरी खाला। मैंने तो इसे केवल तफरीह के लिये आजाद पार्क में हवाखोरी के वास्ते बुला भेजा था, यह तो बुरी तरह गले पड़ गयी।

स्त्री—बोलो जी बोलो ! जल्दी बोलो।

बाबू—यह ब्राडगेज पर चलने वाली ट्रेन मीटर गेज पर भला कैसे चल सकेगी ?

[स्त्री उसका कोट पकड़ लेती है और घसीटती हुई लिये चली जाती है। एक आदमी का प्रवेश।]

प्रथम मनुष्य—बोलो महात्मा गांधी की जाय ! देश का उद्धार महात्मा गांधी की जय बोल कर ही हुआ, हम गांधीवादी पार्टी बनायेंगे।

[दूसरे मनुष्य का प्रवेश]

दूसरा मनुष्य—हमारी पार्टी का नाम तोड़-फोड़ गर्दन मरोड़ नाम होगा, हम इस पार्क को बिलकुल तहस-नहस कर देंगे, एक-एक पेड़ उखाड़ कर फेंक देंगे और तब बिलायती बीज मँगा कर लगायेंगे।

तीसरा मनुष्य—बिलायती फूलों में खुशबू कुछ भी नहीं होती, देखने में खुशनुमा, बूये वफा कुछ भी नहीं, हम इस पार्क में हल चलाकर गेहूँ बोयेंगे।

[चौथे मनुष्य का प्रवेश]

चौथा मनुष्य—तुम सब बेईमान हो, तुम्हारी नियत खराब है, हम इस आजाद पार्क का नाम बदल कर स्वतन्त्रम् सुन्दरम् उपवनम् रक्खेंगे। फारसी शब्दों को निकाल कर इस उपवन के परिन्दों को संस्कृत भाषा पढ़ायेंगे।

पहला मनुष्य—क्यां जी होश की बातें करो। हम सब को बेईमान कहने वाले तुम कौन ?

दूसरा मनुष्य—अभी हाथ पैर तोड़ दूंगा गर्दन मरोड़ दूँगा।

तीसरा मनुष्य—अभी विलायत तार देके चक्कू मँगा कर नाक-कान काट लूँगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौथा आदमी—तुम सब हमारी संस्कृति की नाश करते हो। भविष्य के नेता हम होंगे।

पहला मनुष्य—नहीं, हम होंगे।

दूसरा मनुष्य—नहीं, हम होंगे।

तीसरा मनुष्य—नहीं, हम होंगे।

[सब आपस में लड़ते हैं। किसान, मजदूर, भंगी हड़बड़ा कर उठ कर इधर-उधर आपस में छिपते फिरते हैं। पर्दा गिरता है।]

पाचवाँ दृश्य

[सब प्रथम दृश्य की भांति]

स्वतन्त्रता देवी—माता! तुमने देखा, इस समय देश की क्या हालत हो रही है। मेरा असली रूप देखने वाला इस समय कोई नहीं है, मेरा हृदय टटोलने वाला कोई नहीं। सब आपस में नेतागीरी के लिये लड़ रहे हैं। जितने व्यक्ति उतनी ही व्यक्तिगत पार्टियाँ और उधर बहुत दूर दो गिद्ध उनकी बोटियाँ नोंच-नोंच कर खाने के लिये व्यग्र हो रहे हैं। माता! तुम्हीं बताओ ऐसी अवस्था में मैं कैसे प्रफुल्लित होकर अपने स्वाभाविक रूप में आ सकती हूँ।

भारत माता—देवी! तुम्हारा बहुत कुछ कहना सत्य है परन्तु फिर भी माता के कुछ लाल और कुछ देवियाँ ऐसी हैं जिन पर मुझे भरोसा है और मुझे विश्वास है कि उन्होंने तुम्हारा असली रूप पहचान लिया है और वह माता का मुख उज्ज्वल करने के लिये तत्पर हैं।

स्वतन्त्रता देवी—मैं उनका दर्शन करना चाहती हूँ क्या मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हो सकेगा?

भारत माता—अवश्य।

[भारत माता का ताली बजाना, पर्दा पलटना]

षष्ठम दृश्य

[रोगी की शय्या, एक रोगी शय्या पर पड़ा है, एक नर्स उसे दवा पिला रही है। डाक्टर का प्रवेश। डाक्टर रोगी की नाड़ी देखता है।]

डाक्टर—सिस्टर! तुम्हारी सेवा ने इस रोगी की जान बचा ली, नहीं तो मुझे इसकी कोई आशा न थी।

नर्स—डाक्टर साहब! यह मेरा कर्तव्य था। देश स्वतन्त्र हो गया है, विलायती नर्सें चली गयी हैं। अब हमीं को अपने अस्पतालों के रोगियों की देख-भाल करनी है।

सप्तम दृश्य

[क्लास लगा हुआ है। बच्चे पढ़ रहे हैं। बच्चों के बनाये हुए कुछ छोटे-छोटे खिलौने रखे हैं। अध्यापिका पढ़ा रही हैं। इन्स्पेक्टर साहब पास की कुर्सी पर बैठे हैं।]

इन्स्पेक्टर साहब—(खिलौने देखते हुए) मैंने स्कूल का निरीक्षण किया। मैं सन्तुष्ट हूँ कि हमारे बच्चे बेसिक एजुकेशन पर भली-भांति चल रहे हैं। अँग्रेज चले गये। उनकी पढ़ाई ने हमें केवल दफ्तर के बाबू बनना सिखाया। हमें अपने बच्चों को बाबू न बना कर उद्योगकारी बनाना है।

अध्यापिका—हमारे बच्चे संसार में किसी भी देश के बच्चों से कम न निकलेंगे, उन्हें केवल उचित शिक्षा की आवश्यकता है।

आठवाँ दृश्य

[कुछ श्रोतागण बैठे हैं। एक नेता लेक्चर दे रहे हैं।]

नेता—हमारी पञ्चवर्षीय योजना तैयार हो गई है। हर एक व्यक्ति से आग्रह करेंगे कि वह सब पीढ़ियों का मतभेद भूल कर देश का उद्धार करने के लिये आगे कदम बढ़ायें।

नवाँ दृश्य

[पन्द्रह बीस लड़के लड़कियाँ हाथ में फावड़ा लिये खड़े हैं।]

उनकी अध्यापिका—देश के निर्माण के लिये हम लोग निकले हैं। हमें अपने गांवों में स्वयम्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहर खोदना है। सरकार से हमें पैसा नहीं मांगना है।

सब लोग—हमें भारत माता का मुख उज्ज्वल करना है, हमें अपने हाथ-पैरों पर विश्वास करना होगा। हम अपना काम स्वयम् अपने हाथ में लेंगे। हम अपने सोये हुए किसान मजदूर भाइयों को जगा देंगे। बोलो भारत माता की जय !

दसवाँ दृश्य

[प्रथम दृश्य की भांति सब कुछ]

स्वतन्त्रता देवी—माता ! मुझे नहीं मालूम था कि तुम्हारे कुछ सच्चे सपूत भी हैं। अब मेरे हृदय में भी आशा की ज्योति जगमगाने लगी है, हृदय एक बार उत्साहित होकर चाहता है कि मैं भी बोल उठूँ—'भारत माता की जय !'

सब लोग—भारत माता की जय ! स्वतन्त्रता देवी की जय !!

भारत माता—मेरी जयजयकार के साथ मेरे सच्चे सपूतों की भी जयजयकार हो। बोलो महात्मा गांधी की जय ! बोलो जवाहर लाल नेहरू की जय !

गाना

जन गण मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता।

!! पटाक्षेप !!

भविष्य वाणी

स्वामी शिवानन्द से प्रश्नोत्तर

प्रश्न—क्या तीसरा महायुद्ध होगा ?

उत्तर—हाँ, सन् १६५४ में यह आरम्भ हो जाना चाहिए। नहीं तो इसका बीजारोपण अवश्य ही हो जाना चाहिए।

प्रश्न—क्या पाकिस्तान काश्मीर पर हमला करेगा ?

उत्तर—सन् ५४ में तो पाकिस्तान इस लायक होता नजर नहीं आता।

प्रश्न—क्या अमरीकी सहायता पाकर पाकिस्तान भारतवर्ष से बली हो जायगा।

उत्तर—कदापि नहीं।

प्रश्न—अमरीकी सहायता का पाकिस्तान पर और भारत पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

उत्तर—मैं तो ग्रहों का प्रभाव बता सकता हूँ। सन् ५४ में पाकिस्तान में आन्तरिक उथल-पुथल का योग है। वहाँ के राजनैतिक दल राजसत्ता प्राप्त करने के लिए विदेशी शक्तियों से सांट-गांठ करते हुए आपस में लड़ेंगे।

प्रश्न—भारतवर्ष में क्या नेहरू की नीति सफल होगी ?

उत्तर—नेहरू इस वर्ष बीच-बीच में शरीर से कुछ निर्बल और क्षीण प्रतीत होंगे; परन्तु उनका मन अद्भुत बल और पराक्रम का परिचय देगा और इसी वर्ष सितम्बर के अन्त तक में वे विश्व के सबसे बड़े महापुरुष मान लिये जायेंगे।

प्रश्न—तीसरा महायुद्ध कहाँ आरम्भ होगा ?

उत्तर—भारतवर्ष के पच्छिम, टर्की और पाकिस्तान के बीच में कहीं भी आरम्भ हो सकता है ?

प्रश्न—क्या कुम्भ में जो मृत्युएँ हुईं वे मेले में सुव्यवस्था से बचाई जा सकती थीं।

उत्तर—कदापि नहीं। सन् ५४ में ऐसी और भी कई एक अनहोनी घटनाओं का योग है, चाहे महामारी से हो, चाहे भूचाल के कारण हो चाहे बलवा और युद्ध के कारण हो।

[स्वामी शिवानन्द जी वृहत संहिता के आधार पर भविष्य बताते हैं। 'दीदी' के पाठकों को उन्होंने एक बार में एक प्रश्न निःशुल्क बताने की घोषणा की है। जो पूछना चाहें 'दीदी' की मार्फत पूछ सकते हैं।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होटल में हत्या

जासूसी कहानी

लेखक, श्री निशीथकुमार राय, बी० ए० एल०-एल० बी०

बड़ी सख्त सर्दी पड़ रही थी। इलाहाबाद में इससे ज्यादा सर्दी कभी नहीं पड़ी थी। ट्रीरोज होटल वालों ने अपने ६ बेयरा तथा एक जमादार को गरम कोट बनवा कर होटल के ठाट-बाट को और भी बढ़ा लिया था। मगर उन्हें क्या मालूम था कि उनके होटल में ऐसी घटना होने वाली थी जिससे गरम कोटों के नीचे भी उनके कलेजों का खून ठण्डा हो जायेगा। होटल के सुइट (बैठने का, सोने का तथा नहाने का और पाखाना मिला कर एक सुइट होता है।) नम्बर ४ में हाल में ही ईरान के जो सज्जन पधारे थे, यानी मिस्टर मक्सूद अली उनका किसी ने सुबह १०--११ बजे के करीब कत्ल कर डाला था। मक्सूद अली ईरान में मिट्टी के तेल के कारखाने में काम करते थे। ईरान जाने से पहिले उन्होंने हिन्दुस्तान में एक शादी की थी, मगर उसे ईरान जाने से पहिले ही तलाक दे दिया था। उसकी बदनामी यह थी कि अपनी खूब सूरत शक्ल के सहारे औरतों को फसा कर अपना उल्लू सीधा कर लेता है। इसी तरह ईरान जाने से पहिले उसने एक बड़े घराने की पढ़ी-लिखी लड़की को जो पर्दा वगैरः नहीं करती थी; फंसा रक्खा था। मगर जब सब लोग शादी की दावत की उम्मीद में थे तो एक दिन चुपके से वह ईरान खसक गया था। हाल ही में ईरान-तेल कम्पनी के बन्द हो जाने से जो हिन्दुस्तानी बरखास्त हुए थे और हिन्दुस्तान वापस आ रहे थे उनमें इनका नाम छपा था और बेचारा कल ही रात को यहाँ पहुँचा था।

जिस समय उदय और मानसिंह होटल पर पहुँचे तो देखा वहाँ दारोगा जगन्नाथ सिंह और खुफिया विभाग के इन्सपेक्टर हिमांशू भी मौजूद थे। जगन्नाथ सिंह दरवाजे पर ही खड़े जिन लोगों को अपने प्रश्न जाल में फांस रहे थे, वे थे छः खानसामा। काला बन्द गले का कोट पहिने, कमर पर पेटी बांधे, सुफेद साफे पर होटल का मोनोग्राम लगाये बेचारे डर के मारे सोंठ हो गये थे। उनका हेड खानसामा एक काले रङ्ग का ओवर कोट पहिने खड़ा था। उसका मुँह फाँसी पर चढ़ाये जाने वाले मुल्जिम जैसा फक था। दारोगा जी से मालूम हुआ कि खानसामा बेचारे होटल में रहने वाले सज्जनों से मिलने वालों का नाम न बता सकने के कारण दारोगा जी की 'मुश्तबा' वाली लिस्ट में दर्ज होते जा रहे हैं। खानसामा रफीक ने बताया कि एक मेम साहब को उसने बहुत ही तड़के मृतक के कमरे की ओर जाते देखा था, मगर उसे लौटते नहीं देखा। दारोगा जगन्नाथ सिंह गुर्राये, मेम साहब क्यों बे? क्या बिलायती थी।

'नहीं हुजूर सलवार कुर्ता पहिने थी।'

'सलवार कुर्ता क्या बिलायती नहीं पहनतीं?'

'नहीं हुजूर वे तो देसी थीं।'

उदय इस अपूर्व बाद विवाद में वक्त खराब न करके मृतक के कमरे में जा घुसा। देखा हिमांशू मृतक के शव को बड़े गौर से देख रहा था। उसने मानसिंह से कहा—'तुम जिस बात को जरूरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझो नोट करते जाओ। देखूं तुम्हारा दिमाग कैसा काम करता है।

मानसिंह ने अपनी डायरी में नोट किया नं० (१) मृतक के शरीर की अकड़न (राइगर मार-टिस) की हालत में, प्रतीत होता है कि मौत ११ बजे से पहिले नहीं हुई। नं० (२) मृतक के हाथ की घड़ी जो कि गिरने के कारण शीशा टूट कर चलने से रुक गई है ठीक १० का वक्त बता रही थी। यानी मौत १० बजे के दो-चार मिनट बाद हुई थी। नं० (३) घड़ी के बैन्ड के छेद नं० २ में बैन्ड के बकलस को काटा था हालांकि छेद नं० १ के पास बैन्ड पर दरारें व शिकन नजर आ रही थीं। नं० (४) मृतक ने मरने से थोड़ी देर पहिले ही दाढ़ी बनाई थी। नं० (५) मृतक की दाहिनी हथेली देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि उसने किसी चीज को पकड़ा था जिससे हथेली के खून का धब्बा काफी पुछ गया था। कमरे के चारों तरफ निगाहें दौड़ा कर देखा वहाँ सामान ज्यादा नहीं था। एक लोहे का सन्दूक बन्द पड़ा था। कोने में फेल्ट कैप टँगी थी। पलंग पर गरम सूट रक्खा था। सिलाई करने वाले थे तेह-रान के मशहूर 'हुसेन एण्ड कम्पनी।' एक कमीज व टाई व दस्ताना भी पलंग पर पड़े थे। हर चीज एक ही कम्पनी की सिली हुई थी। गुसलखाने में कोई खास चीज नहीं मिली, अलावा साबुन, तौलिया, मन्जन, दाढ़ी बनाने का सामान के। कुल देखने के बाद उदय ने मानसिंह से कहा, 'तुमने राख नहीं देखी?'

कमरे के कोने में अलग आग जलने की चिमनी थी। उसमें उस वक्त भी कुछ आग थी, मानसिंह को कोई खास चीज नजर नहीं आई। मगर उदय ने उसी राख में से खोज कर आठ बड़े-बड़े बटन निकाले और छः छोटे-छोटे बटन। अलावा इसके एक पीतल का त्रिकोण तथा एक हुक भी बरामद किया। इन चीजों को जब वह जेब में रख रहा था तो हिमांशू का श्लेषात्मक स्वर सुनाई पड़ा, कुछ राख भी लेते जाओ उदय।

'यदि राख न पहिचान सका होता तो अवश्य लेता जाता।'

जगन्नाथसिंह उन सातों अभागे खानसामाओं तथा हेड खानसामा को नीचे कमरे में बाहर से बन्द करके सिपाही पहरे पर लगा आये थे। गनीमत थी कि होटल के और बाशिन्दे खाना खा-पीकर अपने-अपने काम से गये थे। उदय ने देखा, होटल में बारह कमरे बोडरों के और तीन कमरे खान-सामों के थे। हेड खानसामा होटल के बाहर कहीं बाल बच्चे लेकर रहता था। रफीक से पूछने पर मालूम हुआ कि रोज की तरह आज सुबह भी वह नम्बर ४ की आग जलाने वाली चिमनी में से राख वगैरह बिलकुल साफ कर आया था।

[२]

कातवाली पर बहसें हो रही थीं, हिमांशू की राय यह थी कि कातिल ने मृतक की घड़ी जान-बूझ कर बदल दी थी और उसमें ११ के बजाय १० का वक्त दिखा कर उसे तोड़ कर रोक दिया था। और मृतक की कलाई पर इस इरादे से बांध दी थी ताकि पुलिस वकूआ को १० बजे के करीब समझे। और कातिल १० बजे अपनी हाजिरी किसी और जगह प्रमाणित करके इस जुर्म से बरी होना चाहता था। बैन्ड देखने से पता चलता है कि जिसके हाथ पर यह घड़ी अधिकतर बंधी रहा करती थी उसकी कलाई काफी पतली है और उसी के दरारें व शिकन बैन्ड के छेद नम्बर एक पर दिखाई देती हैं और मुझे पूरा विश्वास है कि यह उनकी तलाक दी हुई बीबी श्रीमती रजिया की करतूत है। मैंने पता लगाया है कि वे ही सुबह मृतक से मिलने भी आई थीं। हालां कि वे कहती हैं कि उनकी वहाँ मृतक से मुलाकात हो ही नहीं पाई क्योंकि उस समय मक्सूद गुसल में था और वे इन्तजार किये बिना ही लौट आयी थीं।

'माफ कीजिये घड़ी की बात तो मैं भी तस्लीम करता हूँ मगर मेरा ख्याल है कि कातिल मिस देहना हैं। क्योंकि उस घड़ी की पुस्त की ढकनी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्दर ऐसा दाग है जिससे लगता है मानो वहाँ किसी की छोटी सी तस्वीर चिपकाई हुई थी जिसे हाल ही में निकाल लिया गया हो। मैंने सुराग-रसी से पता लगाया तो मालूम हुआ कि मुस्मात रेहाना के फोटू एलबम पर सब से आखिर के पन्ने पर जो फोटू है वह बिलकुल उतना ही बड़ा है जितना कि घड़ी पर का दाग है। लिहाजा मेरी राय में तो उसी ने कत्ल किया होगा।' बोला जगन्नाथसिंह।

आखिरकार मरती तो वह मक्सूद पर थी ही। मानसिंह अब तक चुप बैठा था। उदय का इशारा पाकर अब वह बोला—'मेरी समझ में तो दोनों साहबान की रायें गलत हैं। घड़ी बदलने का सवाल पैदा नहीं होता, क्योंकि तेहरान के समय के अनुसार घड़ी बिलकुल सही समय बतला रही थी। यानी ठीक ११ बजे वह घड़ी रुकी थी जो कि तेहरान के समय के हिसाब के एक घन्टा पिछड़ कर होगा। दूसरी बात यह है कि घड़ी के अन्दर मुझे जो धूल मिली है उसमें ऐसे पाउडर के सूक्ष्म कण मिले हैं जिसे औरतें इस्तेमाल किया करती हैं। मैंने पता लगाया तो मालूम हुआ कि इनकी तलाक की हुई बीवी या रेहाना दोनों में से कोई उस किस्म का पाउडर इस्तेमाल नहीं करतीं, यह पाउडर अधिकतर ईरान में ही इस्तेमाल होता है। पता लगाने पर मालूम हुआ कि ईरान में जिस लड़की को शादी की उम्मीद देकर इन्होंने निराश किया था वह इनसे एक सप्ताह पहिले हिन्दुस्तान आयी थी। मैंने जब उसके मकान की तलाशी चुपके से ली तो मुझे वह रसीद मिली जिससे मालूम हुआ कि यह घड़ी पार साल उन श्रीमती जी ने खरीदी थी। और उनका पाउडर भी घड़ी के अन्दर वाली धूल में पाये गये पाउडर के कणों से बिलकुल मिलत-जुलता है। लिहाजा कत्ल उन्हीं ने किया होगा।'

इसका क्या प्रमाण कि उस महिला को यह मालूम था कि मक्सूद इलाहाबाद आवेगा और इस होटल में रहेगा और घड़ी की रसीद से कुछ पता नहीं लग सकता। क्योंकि तेहरान में उनसे

इस घड़ी का मृतक के कब्जे में आ जाना कोई बड़ी बात न थी। और इसके अलावा तुम यह कैसे समझते हो कि घड़ी मृतक के मरने के बाद ही बदली गयी। मेरे ख्याल से तुम तीनों की रायें गलत हैं। बोला उदय—'तुम लोगों ने बहुत-सी बातें छोड़ दी हैं, मसलन राख का ढेर, जले हुए बटन, पीतल का त्रिकोण और हुक तुम लोगों की थियोरी में इन चीजों का खपाना सम्भव नहीं है और इन्हीं में रहस्य की चाबी छुपी है। यदि इन चीजों को इस बात के साथ सोच कर देखते कि मृतक ने खून लगे हाथ से जिस किसी चीज को पकड़ा था वह कमरे से गायब थी तो तुम लोगों का काम आसान हो गया होता। मेरी थियोरी यह है कि हत्यारे के कपड़े को मृतक ने अपने खून आलूदा हाथ में पकड़ा था। इसलिए उस पर खून के धब्बे अवश्य पड़ गये होंगे। हत्यारा या तो कोई बाहरी आदमी था या होटल में रहने वालों में से था। यदि बाहरी होता तो उस के लिये अपना खून आलूदा कोट उस कमरे में जला डालने की कोई आवश्यकता न थी। यह काम तो वह कहीं बाहर कर सकता था। यदि होटल में रहने वालों में से कोई होता तो हत्या १० बजे से पहिले होनी चाहिए थी। क्योंकि १० बजे सब लोग अपने-अपने काम पर चले गये थे। रह गये होटल के खानसामे। यदि इन में से किसी ने यह जुर्म किया होता तो वह आसानी से कपड़े को किसी दूसरे कमरे में या रसोई के चूल्हे में जला सकता था और उसकी वर्दी का कोट गायब रहता। मगर हमने देखा कि वे बावर्ची थे। इसके माने किसी ऐसे आदमी ने हत्या की है जो होटल पर ही मुलाजिम है जिसके लिये होटल छोड़ कर जाना सम्भव न था। और साथ ही साथ यह भी मुसीबत थी कि यहां उसके रहने का कमरा न था। कोट उसे बदलना था ही वरना ड्यूटी पर खून के धब्बे छुपाये रहना सम्भव न था। लिहाजा उसने कोट को डाला आग में, कोट के अभाव को मृतक के ओवर कोट से पूरा कर लिया। मैंने देखा है मृतक के बक्स में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी ओवर कोट न था और मेरी समझ में नहीं आया कि जब उसने सर्दी के मारे गर्म दस्ताने तक निकाल रक्खे थे तो केवल सर्ज के सूट बिला ओवर कोट या किसी और गर्म कपड़े के क्यों निकाले होता। लिहाजा मेरी राय तो यह है कि कातिल हेड खानसामा है। उसके ओवर कोट को कब्जे में लेकर देखिये। उस पर हुसेन एण्ड कम्पनी दर्जी का लेबिल अवश्य लगा होगा। आप लोगों में से किसी ने यह बात मालूम करने की कोशिश नहीं की थी कि होटल किसका है। होटल के मालिक मिस्टर रियाजउद्दीन हैं, मिस रेहाना के वालिद।

इसके बाद मृदु हँस कर बोला—'निराश न हो मानसिंह, तुमने इस सिलसिले में विश्लेषण शक्ति का अच्छा परिचय दिया है एक बात ध्यान में और रक्खा करो। कोई भी थियोरी जो तुम बनाओ वह तभी ठीक समझो जब उसमें प्रत्येक बात सही-सही खप जाये। कभी किसी को पहिले से हत्यारा सन्देह करके थियोरी बनाने न बैठना, वरना अपने अनजान में ही तुम्हारा मन सबूत के सहारे मुल्जिम नहीं पकड़ेगा बल्कि कल्पित मुल्जिम के सहारे सबूत गढ़ लेगा।'

जगन्नाथसिंह कुर्सी से उछल पड़े, आपने अब तक क्यों नहीं बताया? मुल्जिम अवश्य फरार हो गया होगा।

जी नहीं उसको स्वयम् कोतवाल साहब सिटी मजिस्ट्रेट की अदालत में इकबाल जुर्म कलम बन्द करवाने ले गये हैं।

हेड खानसामा के साथ रेहाना के बाप की साजिस कैसे साबित करोगे।

उसकी कोई आवश्यकता नहीं है। हेड खानसामा का निशान अँगूठा प्रोफिसियन्ट द्वारा जँचवाइयेगा तो आपको मालूम हो जायेगा कि वह मशहूर कातिल अजीज हुसेन है जो किराये पर कत्ल करता है और जिसका इतिहास आपके पास मौजूद है।

'यह आपको कैसे मालूम हुआ।'

गीत

कोयल पञ्चम स्वर से गाती!

बौराई आमों की डाली,
बन-उपवन में छाई लाली,
किसकी अमर कथा कहती है
किसका क्या सन्देशा लाती?
कोयल पञ्चम स्वर से गाती!

बीत गई स्वप्नों की बेला,
जीवन में सुख-दुख का मेला,
प्राणों में किसकी सुधि रह-रह
जीवन का नव दीप जलाती?
कोयल पञ्चम स्वर से गाती!

जली दीप-सी मैं नित तिल-तिल,
मिटी मेघ-सी घिर-घिर प्रति पल,
अन्तर की अनुभूति जगाने
फिर-फिर मधुऋतु गीत सुनाती!
कोयल पञ्चम स्वर से गाती!

—तारा पांडे

'अरे भाई यह क्यों भूले जाते हो कि मेरी जिन्दगी में यही एक ऐसा कातिल था जो शिवनाथ शर्मा का कत्ल करके मेरे चंगुल से निकल भागा था और जिसकी तलाश मेरी निगाहें पिछले तीन साल से कर रही थीं।'

—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

077690

अध्यापिका

मूल अंग्रेजी लेखक, स्टीफेन ज्विग

अनुवादक, 'पराड़कर बन्धु'

[१]

दोनों बालिकायें अपने शयन कक्ष में निश्चल लेटी हुई थीं। बत्तियाँ बुझा दी जा चुकी थीं एवम् उन दोनों का श्वासोच्छ्वास इतने धीमे-धीमे हो रहा था कि उनकी ओर देखने वाले को स्वाभाविक ही यह भ्रम होना सम्भव था कि वे दोनों सो गई हैं।

'सुनती हो···' एक दुलाई में से गम्भीर, अवरुद्ध स्वर सुनाई दिया। अनुमानतः उस कन्या की आयु बारह वर्ष की रही होगी।

'हाँ, कहो···' उससे सम्भवतः एकाध वर्ष बड़ी उसकी बहन ने पूछा। देर से तुम्हें वह बात सुनाने की सोच रही थी मैं।

इस पर बड़ी बहिन यद्यपि मौन रही आयी, किन्तु दुलाई के अन्दर ही अन्दर हुई अविकल हलचल ने उस बाल-हृदय की आन्तरिक उत्सुकता को मूर्त स्वरूप दे दिया था। वह अकस्मात उठ बैठी एवम् कान देकर सुनने लगी। उस घटाटोप अन्धकार में उसकी आँखें अब किंचित् स्पष्ट रूप से चमकने लगीं थीं।

'क्या दीदी! हमारी अध्यापिका के विषय में तुम्हें कोई विशेष···'नवीन' बात मालूम हुई है?'

'कुछ-कुछ अनुमान तो अवश्य ही हो गया है मुझे, किन्तु वह 'विशेष' और 'नवीन' क्या हो सकता है, यह मैं ठीक-ठीक नहीं कह सकती। आजकल वे हमसे उतनी सख्ती से पेश भी नहीं आतीं। पिछले दो-तीन दिनों से मैंने पुस्तकों को छुआ भी हो, तो कसम है...किन्तु जाने क्यों, इन कुछ दिनों के उनके नीरव व्यवहारों से प्रतीत तो यही होता है कि जैसे उन्हें हमारी अब विशेष पर्वाह नहीं रह गई है। जब देखो, आजकल वे अपने ही सुख-दुःख से सम्बन्धित किन्हीं विचारों में खोयी-सी रहती हैं। पहिले जैसी खेलने भी कहाँ आती हैं वे आजकल हमारे साथ?' अपनी छोटी बहन की शङ्का को तूल देते हुए बड़ी बहन ने कहा—

'मैं जहाँ तक सोचती हूँ कि मन ही मन वे आज कल किसी बात से अत्यन्त दुःखी-सी प्रतीत होती हैं और अब पियानो भी कहाँ बजाती हैं वे...नहीं?'

किंचित् क्षण मौन रहने के उपरान्त बड़ी बहन ने कुछ अधीर हो, अपनी छोटी बहन से पूछा—

'तू मुझे कोई विशेष बात बताने वाली थी न? बता न तो फिर जल्दी से...क्या है वह...।'

'बताती हूँ। परन्तु किसी से बताओगी तो नहीं तुम? माँ से भी नहीं···और तुम्हारी सखी, वह लीना...उससे भी मत बताना।'

'किसी से भी नहीं बताऊँगी मैं...' उसे आश्वासन देते हुए बड़ी बहन ने कहा।

'ठीक है, सुनो तो फिर। आज जब हम पढ़कर लौटे, तब एकाएक मुझे स्मरण हो आया कि उनसे पढ़कर लौटते समय आज नित्य की तरह नमस्ते करना हम बिलकुल ही भूल गये...। 'भला क्या कहेंगी वे' इस बात का स्मरण हो आते ही, पैरों में जूतियाँ पहिनने की भी पर्वाह न कर मैं भागी-भागी उनके कमरे की ओर गई...कमरे में अन्धेरा था। सम्भवतः किवाड़ बन्द होंगे यह सोच कर तथा उन्हें आश्चर्य-चकित करने के विचार से, दबे पाँव चोर की तरह उनके कमरे का भिड़ा हुआ दरवाजा मैंने खोला। परन्तु आश्चर्य···जो अन्दर झाँक कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखती हूँ, तो वहाँ कोई भी नहीं था। जाने क्यों मैं एकाएक सहम-सी गई। किन्तु अचानक मुझे सिसकियों की अस्पष्ट-सी आवाज सुनाई दी।...वे रो रही थीं। हक्की-बक्की सी हो मैं उनकी ओर देखती ही रह गई। अपने कपड़े भी उन्होंने नहीं बदले थे। तकियों में मुँह छिपाये वे सुबक-सुबक कर सिसक रही थीं। उनके सम्पूर्ण शरीर को झकझोर कर निकलने वाली उन हिचकियों को देख कर मुझे तो, सच जानो दीदी...एकाएक रोना आ गया।...और मेरी आँखें भी छलछला आयीं और जोर से, गला फाड़ कर रो भी दिया होता मैंने, किन्तु गनीमत थी कि अपने ही दुःख से फुरसत न होने के कारण उन का मेरी ओर ध्यान ही नहीं गया। किवाड़ पुनः पूर्ववत् भेड़ कर मैं धीरे से चुपचाप लौट आयी।' और एक दीर्घ निश्वास उसके मुँह से निकल पड़ा।

कुछ क्षण दोनों मौन रही आयीं—कोई कुछ न बोला...पश्चात् एक दीर्घ निश्वास लेती हुई बड़ी बहन बोली—

'गरीब बेचारी मिस मान......'

'परन्तु दीदी, भला रो क्यों रही थी वे?...... माता जी भी तो आजकल उनसे डाँट-डपट नहीं करतीं और हम भी उनकी आज्ञा-पालन करने में कोई त्रुटि नहीं करतीं। फिर वे रो क्यों रही थीं इस प्रकार?'

'उनके रोने का कुछ थोड़ा-सा कारण जानती हूँ मैं।'

'तो फिर मुझे भी बताओ न......'

'सम्भवतः उन्हें प्रेम हो गया है...।'

'प्रेम! किससे हो गया है प्रेम...?'

'तुम्हारे ध्यान में नहीं आयी बात?'

'कहीं ओटो की तो बात नहीं कह रही हो तुम?'

'हाँ, वही तो,...वह भी उन्हें चाहने लगा है।'

'आज तीन वर्ष से वह हमारे यहाँ रह रहा है किन्तु तुम्हें कभी याद है कि वह हमारे साथ कभी घूमने गया हो? परन्तु पिछले इन दो-तीन महीनों से वह प्रति दिन हमारे साथ आ रहा है...एक दिन भी नहीं चूका वह। मिस मान के अपने घर आने के पूर्व तो वह हमसे इस तरह पेश आता, मानो हमारा उससे कोई सम्बन्ध ही न हो। किन्तु उनके यहाँ आने के बाद से आठों प्रहर अब वह हमारे आस-पास ही चक्कर काटता रहता है...मैं सोचती थी कि तुमने भी गौर किया होगा इस बात पर।'

'तुम ठीक कहती हो दीदी! मुझे भी रह-रह कर कुछ शङ्का होती अवश्य थी, परन्तु मैं सोचती थी कि.....'

और अपना वह वाक्य उसने अधूरा ही रहने दिया।

'शुरू शुरू में मैंने कोई विशेष ध्यान नहीं दिया उसकी इन हरकतों की ओर, किन्तु थोड़े ही दिनों के बाद मैं ताड़ गई कि वह मिस मान के कारण ही चौबीसों घन्टे हमारे आस-पास बना रहता है।'

'यह सब तो ठीक है दीदी, किन्तु वे रो क्यों रही थीं...कुछ समझ में नहीं आयी यह बात।' और अलक्षित ही उसके मुँह से सहानुभूति प्रदर्शक एक निकल पड़ा—'गरीब बेचारी मिस मान'।

दूसरे दिन यद्यपि इस विषय को लेकर उन्होंने प्रत्यक्ष कोई चर्चा नहीं की किन्तु फिर भी मिस मान विषयक विचार तीव्रता से उनके मन में चालू थे। जब-जब भी वे चोरी-चोरी उनकी ओर देखतीं... उनकी भावप्रवण आँखों को पढ़ने का प्रयत्न करतीं तब-तब अलक्षित ही उनकी आँखें एक दूसरी की आँखों से मिल जातीं...।'

[२]

ओटो उनका चचेरा भाई था। आज अनेक वर्षों से वह उनके यहाँ रह रहा था। किन्तु आज दोपहर को वे दोनों अत्यन्त बारीकी से उसका निरीक्षण कर रही थीं, मानो वह उन्हें एक दम ही अपरिचित हो। उसे लेकर मिस मान विषयक रहस्य को जानने के लिए वे अत्यन्त अधीर हो उठी थीं।

किसी भी बात में आज उनका मन नहीं लग रहा था और इस रहस्य का आकलन हुए बिना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें चैन पड़ना सम्भव भी न था। शाम होते ही एक ने दूसरी से पूछा—

'आज और भी कुछ गौर किया तुमने ?'

'अहूँ···।'

उस विषय पर अधिक चर्चा करने में अब उन्हें भय-सा मालूम हो रहा था। वे अब खुल कर चर्चा न करतीं। इस प्रकार विमनस्क स्थिति में कुछ दिन और व्यतीत हो गये। इन दो शान्त मूर्तियों को देख कर बाह्यतः यद्यपि यही प्रतीत होता कि उनके कार्य पूर्ववत् ही शान्त रूप से चालू हैं परन्तु उनके कोमल अन्तःकरण में कौतूहल पूर्ण चपल जिज्ञासा से प्रदीप्त एक अति प्रचण्ड तूफान हिलोरे ले रहा था।

अन्त में एक दिन संध्या को भोजन करते समय छोटी बहन ने प्रत्यक्ष अपनी आँखों से जब मिस मान को ओटो को आँखों से कुछ इशारा करते हुए एवम् प्रत्युत्तर में उसे भी मुस्करा कर सिर हिलाते हुए देख लिया, तब तुरन्त ही उसने समीप बैठी हुई अपनी बड़ी बहन को धीरे से चिकोटी काटते हुए, उसे भी सतर्क कर सचेत रहने का इशारा किया। बड़ी बहन ने केवल प्रश्नार्थक मुद्रा से अपनी छोटी बहन की ओर देखा और तुरन्त ही परिस्थिति भांप कर आँखों से ही उसे उतावली न करने का आदेश देते हुए 'चुप' रहने का संकेत किया। अब भला खाने में उसका मन कहाँ लग सकता था।

भोजन के उपरांत मिस मान ने उन्हें आदेश देते हुए कहा—

'देखो,···आज मेरी तबीयत कुछ ठीक नहीं मालूम हो रही है, सो तुम लोग अपने कमरे में ही चुपचाप बिना शोर गुल किये पढ़ाई करो तो अच्छा हो।' और वे वहाँ से चली गयीं।

उनके जाते ही छोटी ने कहा—'तुम देख लेना, ओटो अब जरूर ही उनके कमरे में जायगा।'

'अच्छा, यह बात है! तभी उन्होंने हमसे यह बात कही है।'

'चलो, हम चुपचाप बाहर से ही सुनें, वे क्या कहते हैं।'

'और जो कोई देख ले तो···?'

'कौन देखेगा···?'

'मान लो माता जी ही आ जायें...?'

'तब तो फिर खैर नहीं है...।'

'ऐसा करो, मैं बाहर से कान लगा कर चुपचाप सब सुनती हूँ और तुम वहाँ कोने पर खड़ी रह कर देखती रहना और जो कोई आये तो...?'

'परन्तु फिर तुम बताओगी नहीं मुझे ..।'

'बताऊँगी री!'

'भगवान की कसम ?'

'हाँ, भगवान की कसम! लेकिन जो कोई आये तो तुम खाँस कर मुझे सूचित कर देना, ह!'

थोड़ी देर वे दोनों वहीं दुबक कर खड़ी रहीं··· उत्सुकता से उनके अन्तः करण अधीर हुए जा रहे थे कि अब आगे क्या होगा ?

अचानक समीप ही किसी के पैरों की चाप सुनाई दी। दोनों अत्यन्त चपलता से दरवाजे की ओट में छिप गयीं और कनखियों से देखती रहीं।

'हाँ! ओटो ही तो है वह! वह देखो···मिस मान के कमरे में चला गया वह; और आश्चर्य! दरवाजा भी लगा लिया उसने।'

बड़ी बहन दरवाजे पर कान लगा कर सुनने का प्रयत्न करने लगी। जोर से साँस लेने में भी उसे भय मालूम हो रहा था। छोटी उत्सुकता पूर्वक अत्यन्त अधीर हो ईर्ष्यालु नेत्रों से उसकी ओर देख रही थी। आखिर जब उससे न रहा गया तब वह भी चुपके से उसके समीप ही दरवाजे पर पहुँच गई। किन्तु बड़ी बहन ने धीरे से उसे पीछे ठेल कर कोने पर खड़ी रह कर सतर्कता से पहरा देने के लिए इशारा किया।

एक-एक पल छोटी बहन को युगवत प्रतीत हो रहा था। 'दीदी सब कुछ सुने ले रही है और मुझे है सो कुछ भी सुनने को नहीं मिल रहा है।' इस नैराश्य-पूर्ण भावना से उसकी आँखें छलछला आई थीं। कुछ क्षण उपरांत सुदूर किसी के पैरों की ध्वनि सुनाई देते ही उसने धीरे से खाँस दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीर की तरह दौड़ती हुई दोनों अपने कमरे में लौट आयीं। हृदय की धड़कन कुछ कम होते ही छोटी बहन ने पूछा—

'हाँ अब बताओ मुझे, क्या-क्या सुना तुमने।'

इस पर क्षणिक मौन रह, मानो वह स्वयम् से ही कह रही हो इस तरह बुदबुदाई—'मेरी अक्ल ही कुछ काम नहीं कर रही है।...सब कुछ एक दम विचित्र-सा मालूम होता है।'

'लेकिन आखिर बात क्या है...कुछ कहोगी भी?'

'बहुत ही विचित्र बात है। मैं सोचती हूँ कि कमरे में जाने के उपरान्त ओटो ने उन्हें अपने समीप...बिलकुल समीप खींचने का प्रयत्न किया होगा। वे बोलीं—'अभी नहीं! मुझे तुमसे एक गम्भीर विषय पर बातें करनी हैं।' अन्दर क्या हो रहा था, मैं ठीक-ठीक देख तो नहीं सकी, किन्तु सुना सब मैंने। ओटो ने पूछा—

'किस विषय पर बातें करनी हैं?'

'उसका उस समय का वह स्वर सुन कर जाने क्यों मैं एक दम सिहर उठी। उसका वह स्वर मुझे एक दम विचित्र मालूम हुआ। वैसे उसका स्वर कितना मधुर है, नहीं?'

'ओटो का प्रश्न सम्भवतः निरर्थक है, यह वे शायद जानती थीं और इसीलिए उन्होंने कहा—'तुम वह सब जानते हो।'

'इस पर ओटो ने कहा—'मैं सचमुच कुछ भी नहीं जानता।'

'तब फिर आजकल तुम मुझसे खिंचे-खिंचे क्यों रहते हो?' अत्यन्त आर्त था उनका स्वर। पिछले सप्ताह में तुमने मुझसे एक दिन भी बोलने का प्रयत्न किया हो तो कसम है। जब भी मैंने तुमसे बातें करने का प्रयत्न किया तुमने मुझे टाल दिया बच्चियों के साथ नित्य की तरह बाग में भी तुम नहीं आये। क्या एकाएक इतनी जल्दी तुम्हारे हृदय में मेरे प्रति प्रेम नहीं रह गया? परन्तु तुम एकाएक मुझसे इस तरह क्यों खिंच रहे हो, यह तुम अच्छी तरह जानते हो।

कुछ क्षण दोनों निस्तब्ध रहे आये; पश्चात् ओटो ने शांतता भंग की—

'तुम तो जानती हो, प्रिय! कि मेरी परीक्षा कितनी समीप आ चुकी है? पढ़ाई में आजकल इतना अधिक व्यस्त रहता हूँ कि ठीक से साँस लेने की भी फुरसत नहीं मिल पाती। भला मैं भी क्या कर सकता हूँ?'

उसकी यह बातें सुन कर वे रोने लगीं। सिसकती हुई ही वे बोलीं—'तुम्हीं बताओ मैंने तुम्हारा ऐसा क्या बिगाड़ा है, जो तुम मेरे साथ इतनी निर्दयता का व्यवहार कर रहे हो? आज तक मैंने तुमसे कुछ भी नहीं मांगा। मैं चाहती हूँ कि आज इस विषय पर हम कुछ अधिक स्पष्ट रूप में बातें कर लें। तुम कितना भी क्यों न छिपाने का प्रयत्न करो, परन्तु तुम्हारी यह आँखें ही मुझसे कह रही हैं कि तुम सब जानते हो।'

'किस विषय में?' अत्यन्त अधीरता से छोटी ने पूछा।

'अपने बच्चे के विषय में।' वे बोलीं।

'बच्चे के विषय में? असम्भव!' न जाने क्यों दीदी की बातों पर एकाएक उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था।

'क्या जानें, कहा अवश्य था उन्होंने यह।'

'तुमने ठीक से सुना नहीं होगा।'

'बहुत ध्यान से सुना है मैंने; कारण कि उन्होंने दूसरी बार भी यही कहा था—'अपना बच्चा?'

'खैर कहा होगा—आगे?'

'आगे क्या? इतने में तुम खाँस पड़ीं और हम दोनों भाग कर अपने कमरे में चली आयीं।'

छोटी बहन को कुछ अजीब-सा मालूम हुआ—

'लेकिन उनके बच्चा हो यह सम्भव नहीं है! भला कहाँ होगा उनका बच्चा?'

'तेरे ही समान मुझे भी आश्चर्य हो रहा है।'

'सम्भव है, घर में हो उनके! माँ उन्हें उनके बच्चे को यहाँ नहीं लाने देती होंगी इसलिये तो कहीं उन्हें दुःख न होता होगा?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'नहीं री पगली ! और यहाँ आने से पूर्व ओटो से उनका परिचय भी कहाँ था ? अभी शादी ही कहाँ हुई है उनकी ?'

'शायद हो गया हो और हमें मालूम न हो ?'

'चल, पागल की तरह बक नहीं कुछ भी ! और ओटो से तो उनकी शादी निश्चित ही नहीं हुई है ।'

'तब फिर...?'

और विस्फारित नेत्रों से वे एक दूसरी की ओर देखती रहीं । वह प्रश्न उनके लिये समस्या ही बना रहा । उसका हल वे न ढूँढ़ सकीं ।

'गरीब बेचारी मिस मान ! बड़ी ने एक दीर्घ निःश्वास लिया ।' कुछ क्षण निस्तब्धता छाई रही । पश्चात् छोटी ने पूछा—'लेकिन दीदी, उनका बच्चा याना लड़का होगा या लड़की ?'

'भला मैं क्या कह सकती हूँ ?'

'और जो मैं हँसी-हंसी में ही उनसे पूछ लूँ ?'

'चल पगली ! कहीं ऐसी भूल न कर बैठना ।'

'लेकिन आखिर इसमें हानि क्या है ? हमसे कितनी हिल-मिलकर रहती हैं वे ?'

'पर इससे क्या ? ऐसी बातें वे हमसे कभी भी नहीं कहतीं । इस विषय पर यदि चर्चा चल भी रही हो और हम जो वहाँ पहुँच जायें, तो यह बड़े लोग एक दम विषय ही बदल देते हैं । न मालूम वे अब भी हमें शायद दो-चार साल की बच्चियाँ ही समझते हैं । उनसे पूछने से आखिर कुछ लाभ न होगा, टाल देंगी वे हमें ।'

'तब फिर सही बात हमें किस प्रकार मालूम हो सकेगी ?'

'वह तो ठीक है री, लेकिन—! ओटो ने जो यह बहाना किया था न कि 'मैं कुछ भी नहीं जानता' उसी का मुझे डर लग रहा है ।'

'मजाक में कह गया होगा वह ।'

'नहीं ! वे तो किसी गम्भीर विषय पर बातें करना चाह रही थीं । फिर हर बार कोई मजाक थोड़े ही करता है ।'

और अचानक उसी समय मिस मान अन्दर आ गयीं । उन्हें देखते ही वे गुमसुम हो पढ़ने का स्वांग करने लगीं । उनकी अध्यापिका की आँखें रोने के कारण ही लाल हो गई थीं, यह बात उनसे छिपी न रह सकी । उनके कातर स्वर से वे यह भी जान गई कि अवश्य ही उनके अन्तःकरण में कोई भीषण तूफान मचा हुआ है । दोनों निस्तब्ध थीं । आज अपनी अध्यापिका के प्रति उनके बाल-हृदय में एक नवीन आदर-भाव निर्माण हो चुका था ।

[३]

'उनके बच्चा है और इसी कारण वे दुःखी हैं' इस विचार मात्र से वे दोनों अत्यन्त प्रभावित हो उठी थीं । अपनी अध्यापिका के दुःख में अलक्षित ही वे स्वयम् को भी सहभागी समझने लगी थीं ।

दूसरे दिन खाना खाते समय उन्हें पता चला कि ओटो आज से अब बोर्डिङ्ग में रहने जाने वाला है । परीक्षा समीप होने के कारण उसे जोरों से पढ़ाई करना नितांत आवश्यक था । घर में रह कर उसकी सन्तोष-जनक पढ़ाई न हो सकेगी ।

इस नयी खबर से उनकी उत्सुकता अब अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी । ओटो का आज का यह निर्णय अवश्य ही कल की उसकी बातों से सम्बन्धित है यह सोच कर उसकी इस पलायन वृत्ति की उन्हें चिढ़-सी हो आयी ।

जाते समय ओटो उनसे मिलने आया था किन्तु उससे शिष्टाचार पूर्वक न मिलकर अपना मुँह मोड़ते हुए उन्होंने अपनी नाखुशी स्पष्ट व्यक्त की । लेकिन अब ओटो मिस मान से किस प्रकार बिदा लेता है, यह वे बारीकी से निहारती रहीं । उससे बिदा लेते समय मिस मान का निर्विकार (?) चेहरा यद्यपि बाह्यतः शांत ही प्रतीत हो रहा था किन्तु फिर भी आन्तरिक भावनाओं का कहीं विस्फोट न हो जाये इसलिए प्रयत्न-पूर्वक एक पर एक कसे हुए, परन्तु फिर भी प्रकम्पित ओठों की हलचल से अपनी अध्यापिका के हृदय में मची हुई खलबली का वे अनुभव कर रही थीं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजकल इन दोनों के स्वभाव में काफी परिवर्तन हो चुका था। हँसना इठलाना तो वे लगभग भूल चुकी थीं। किसी भी बात में अब उनका मन न लगता। हमेशा किसी अज्ञात दुःख की अस्पष्ट आभा उनके क्लांत चेहरे पर छायी रहती और विमनस्क स्थिति में वे यहाँ से वहाँ विचरती रहतीं। घर के बड़े-बूढ़ों की सीधी-सादी बातों को भी संशयास्पद दृष्टि से देखने का उन्हें अभ्यास-सा हो गया था। एक अज्ञात शङ्का आठों प्रहर उन्हें परेशान किये रहती कि उन्हें ठगने के लिए ही यह नाटकीय वातावरण निर्माण किया जा रहा है। फलतः रहस्य का आकलन करने के लिए वे लुक-छिप कर उनकी बातें सुना करतीं। किवाड़ बन्द होने पर वे कान देकर उनकी बातें सुनतीं। अगम्य दुर्बोध वातावरण में निर्मित उस गूढ़ रहस्य से उन्हें प्रयत्न पूर्वक परावृत करने के लिये जो अदृश्य जाल बुना जा रहा था, उसे तो ने, की वे पराकाष्ठा कर रही थीं—प्राणप्रण से सचेष्ट थीं। उनकी बाल-सुलभ अन्ध-बुद्ध अब समाप्त हो चुकी थी।

उनके आस पास के फरेबी ·मायावी वातावरण ने उन्हें भी पूर्ण रूप से छल-कपट करने में सिद्ध-हस्त कर दिया था। अब आठों प्रहर उनके मन में यही शङ्का समाई रहती कि 'कहीं इस अद्भुत वातावरण में ऐसी तो कोई घटना नहीं हो जायगी जिसकी रूप-रेखा ही बाद में हमारी समझ में न आये···' अतः वे और भी सतर्क रहने लगीं।

माता-पिता की उपस्थिति में वे उन्हें इसी भ्रम में रखने का प्रयत्न करतीं कि मानों उनकी विचित्र दुनिया से यह दोनों बिलकुल बेखबर हैं। माता-पिता के वासना-मय जगत के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा होने के कारण दोनों बहिनें एक दूसरी के अत्यन्त निकट आ चुकी थीं।

'बेचारी मिस मान···सचमुच बहुत दुःखी हैं वे! अब हम उन्हें जरा भी न सताएँगी।' इस तरह आपस में सलाह कर वे अत्यन्त आज्ञाकारी बालिकाएँ हो चुकी थीं। पढ़ाई में भी वे अब पहिले की अपेक्षा एक दूसरी की अधिक सहायता करतीं और सदा शांत रह कर स्नेह की साक्षात् प्रतिमा ही बनती जा रही थीं। आठों प्रहर अब वे इसी चिंता में रत रहतीं कि किस प्रकार वे अपनी अध्यापिका की सेवा कर उन्हें सहायता पहुँचाएँ। उन्हें किसी भी वस्तु की आवश्यकता होने पर वे ही सबसे पहले उसे पूरी करें···इस बात की ओर उनका विशेष कटाक्ष रहता। किन्तु मिस मान इस नवीन परिवर्तन से एक दम अपरिचित थीं। अपने ही दुख में चूर होने के कारण इस ओर उनका ध्यान ही नहीं था। बस, इसी एक बात का उन बालिकाओं को विशेष दुःख होता।

उनकी अध्यापिका के स्वभाव में अत्यधिक परिवर्तन हो चुका था। वे हमेशा विचारों में खोई-खोई-सी रहतीं। उनसे कोई प्रश्न पूछते ही वे एकाएक चौंक पड़तीं···मानो स्वप्न तन्द्रा से बलात उन्हें सत्य सृष्टि में लाया गया हो। घन्टों वे अपने ही विचारों में खोई रहतीं···बाह्य जगत् की उन्हें पूर्ण विस्मृति हो जाती। उनकी विचार धारा कहीं टूट न जाये इसी उदात्त भावना से प्रेरित हो दोनों बालिकाएँ दबे पाँव कमरे में इतस्ततः विचरतीं..पैरों के चापों की आहट न होने देने का वे भरसक प्रयत्न करतीं। वे सोचतीं—'बेचारी अपने बच्चे के विचारों में डूबी हुई हैं। उन्हें नाहक ही क्यों सताया जाय।'

मिस मान भी उनसे अत्यन्त सौजन्यता से पेश आतीं। फलतः उन बालिकाओं के मन में भी स्वाभाविक ही उनके प्रति आत्मीयता के भाव जाग्रत हो वे दिनों दिन अधिक गहरे होते जा रहे थे।

तारुण्य सुलभ चञ्चलता का लोप होकर वे क्रमशः अधिक प्रगल्भ एवम् विचार-मग्न होती जा रही थीं। आठों-प्रहर उनके चेहरे पर दुःख की एक अस्पष्ट छाया विद्यमान रहती। यद्यपि उन्हें प्रत्यक्ष रोते हुए इन बच्चियों ने नहीं देखा था, किन्तु फिर भी उनकी फूली हुई आरक्त आँख उनकी नजरों से न छूट पाई थीं। वे हमसे खुल कर बातें नहीं कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पातीं और हम भी उन्हें किसी प्रकार मदद नहीं कर पातीं, रह-रहकर इसी एक बात का उन दोनों को विशेष दुःख होता।

एक दिन उन्होंने दुःख से कातर अपने उमड़ते हुए अश्रुओं को चुपचाप मुँह फेर कर रूमाल से पोंछ लिया। यह देख कर छोटी बालिका साहस बटोर कर पूछ बैठी—'आजकल आप कुछ चिंतित-सी दिखाई देती हैं। कहीं हम में से अलक्षित ही किसी ने आपका दिल तो नहीं दुखा दिया ?'

स्नेह स्निग्ध दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए उन्होंने उसे प्रेमावेश में अपने समीप खींच लिया और उसका सिर अपने वक्ष से चिपका कर उसे सहलाती हुई वे बोलीं—'नहीं पगली ! तुम्हारी इस में कोई गलती नहीं है।' और उन्होंने एकाएक उस के माथे को चूम लिया।

बालिकाएँ पूर्ववत् सतर्क रहतीं। अवसर प्राप्त होते ही उनमें से एक बैठक के कमरे में प्रवेश कर चोरी-चोरी उनकी काना-फूसी के कुछ शब्द सुन लेतीं। उसे कमरे में उपस्थित देख कर विषय परिवर्तन कर दिया जाता। किन्तु इन चाणाक्ष बालिकाओं के बाल-सुलभ विचारों को गति देने के लिए चोरी-चोरी सुने हुए वे कुछ शब्द ही पर्याप्त होते।

'जी हाँ, मेरे भी ध्यान में आ चुकी है यह बात और एक बार उससे साफ-साफ पूछने की सोच रही हूँ मैं...' यह माँ का स्वर था।

और यह सुनते ही तीर की तरह भाग कर उस ने अपनी बहिन से जाकर पूछा था—'भला क्या बात हो सकती है ? माँ क्या पूछेगी उनसे ?'

दोपहर को खाना खाते समय माँ और पिता जी मिस मान की ओर बारीकी से देख रहे हैं और एक दूसरे को आँखों ही आँखों में कुछ इशारे कर रहे हैं, यह उन्होंने तुरन्त ही ताड़ लिया।

भोजन के उपरान्त माता जी ने मिस मान को अपने पास बुला कर धीमे शब्दों में कहा था—'समय मिलने पर थोड़ी देर के लिये मुझसे मेरे कमरे में मिल लेना। कुछ बातें करनी हैं तुमसे।'

यह सुन वे अत्यन्त उत्सुक हो उठीं। अवश्य ही आज कोई न कोई विशेष बात होने वाली है यह ताड़ते उन्हें देर न लगी। इस विशेष बात को जानने के लिये उनका उत्सुक हृदय छटपटाने लगा।

[४]

चोरी-चोरी बड़ों की बातें सुनना, यह उनके स्वभाव की एक विशेषता बनती जा रही थी। अतः मिस मान के माँ के कमरे में जाते ही उनकी अपेक्षा के अनुसार जब दरवाजे बन्द कर दिये गये, तब वे लुक-छिप कर कान लगाकर अन्दर की बातें सुनने लगीं—

शुरू-शुरू में तो उन्हें काना-फूसी की तरह अन्दर चली हुई बातों की फुसफुसाहट के अतिरिक्त मतलब की कोई भी बात स्पष्ट सुनाई नहीं दी। वे पूर्ण रूप से निराश हो चुकी थीं कि आज अब उन्हें कुछ भी सुनाई न देगा। किन्तु उसी समय उन्हें उनकी माँ का तीव्र स्वर सुनाई दिया—

'तुम क्या सोचती हो कि हम सब अन्धे हैं ? तुम्हारी इस स्थिति का हमें कभी पता ही न लग सकेगा ? एक अध्यापिका का कार्य करते हुए तुमने कितना लान्छनास्पद काम किया है, तुम्हारी यह हालत ही स्पष्ट बता रही है। मैंने अपनी बच्चियों को एक ऐसी स्त्री के हाथों में सौंप दिया, इसी का अब मुझे रह-रह कर दुःख होता है। बेहया...निर्लज !'

इस पर सम्भवतः उन्होंने भी उबल कर कुछ प्रत्युत्तर दिया होता—किन्तु बाहर किसी को वह सुनाई न दे जाये, इसलिये वे मन ही मन बुदबुदा कर रह गयीं।

उन्हें बुदबुदाते देख माँ ने कहा—'बोलो-बोलो, जो भी तुम्हारे जी में आये बोल सकती हो। बहाना हर कोई बता सकता है। भावी परिणामों की जरा भी चिन्ता न करके पुरुष के प्रथम दर्शन में ही तुम आत्म-समर्पण के लिये उत्सुक हो उठीं...भगवान अवश्य ही दण्ड देंगे तुम्हें ! किन्तु क्या तुमने यह सोच लिया था कि बात इतनी बढ़ जाने पर भी मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हें अपने यहाँ आश्रय दे सकूँगी ? तुम पूर्ववत् अध्यापिका का कार्य कर सकोगी ?'

बाहर बच्चियाँ अज्ञात भय से काँप उठीं। माँ की वे बातें, उनमें तारतम्य न होने से यद्यपि उन्हें समझ में नहीं आ रही थीं किन्तु न जाने क्यों उन्हें भय सा लग रहा था। अध्यापिका की आँखों से अविरल अश्रु-धाराएँ प्रवाहित हो रही थीं। वह देख कर माँ और भी अधिक चिढ़ पड़ी—

'बस करो यह तमाशे। मैं जानती ही थी कि अश्रु बहाने के अतिरिक्त तुम और कुछ भी नहीं कर सकोगी। किन्तु मुझे दुःख है कि तुम्हारे इन अश्रुओं का मुझ पर कोई भी प्रभाव न हो सकेगा। अपनी इस परिस्थिति के लिए तुम स्वयम् जवाबदार हो। अब इस घर में एक क्षण भी तुम्हें रखना उचित नहीं है, यह मैं भली भाँति जान चुकी हूँ...।'

वे अब और भी अधिक जोर से सिसक-सिसक कर रो रही थीं। इसके पहले बालिकाओं ने किसी भी बड़े व्यक्ति को इस प्रकार जोर-जोर से सिसक-सिसक कर रोते हुए नहीं देखा था। इस प्रकार रोने वाले व्यक्ति से कभी भूल हो ही नहीं सकती है, उन की यह धारणा दृढ़ हो चुकी थी।

कुछ क्षण रुकने के उपरांत माँ का पुनः तीव्र स्वर उन्हें सुनाई दिया—'अब जा सकती हो तुम। यही सब कहना चाहती थी मैं तुमसे। दोपहर को अपना सब सामान ठीक-ठाक कर लो और सुबह अपना वेतन लेकर जहाँ तुम्हारा मन चाहे, तुम जा सकती हो।'

वह अन्तिम वाक्य सुनते ही बालिकाएँ तीर की तरह अपने कमरे में वापस चली आयीं।

'भला इस तरह एकाएक क्या हो गया होगा ? और माँ को भी उनसे इस तरह निष्ठुरता से पेश नहीं आना चाहिये था।'

माता-पिता के विरुद्ध उनका बाल-मन पहिले ही से बगावत कर उठा था।

'मिस मान से कभी कोई अपराध हो ही नहीं सकता ! माँ की अपेक्षा हम लोग उन्हें अच्छी तरह जानती हैं।' अवरुद्ध कण्ठ से बड़ी बालिका ने कहा।

'जैसे ही माँ ने उन्हें तीव्र स्वर में धमकाया, जाने क्यों एकाएक मुझे रोना आ गया।' छोटी बहन बोली।

इसी समय मिस मान उनके कमरे में जा पहुँचीं और नित्य की तरह स्नेह-मधुर स्वर में बोलीं—'आज मुझे बहुत सारे काम करने हैं.. तुम दोनों चुपचाप अपने कमरे में ही पढ़ो। शाम को हम लोग यदि तुम चाहो तो घूमने चलेंगे।'

हार्दिक सहानुभूति व्यक्त करने वाली बालिकाओं की निष्पाप सुन्दर आँखों की ओर बिना देखे ही वे वहाँ से चली गयीं।

'गरीब बेचारी मिस मान'...बड़ी बहन के मुँह से हठात् एक दीर्घ निश्वास निकल पड़ा।

और इसी समय उनकी माँ ने कमरे में प्रवेश करते हुए उनसे कहा—'तुम में से कोई मेरे साथ चलना चाहता है ? मैं घूमने जा रही हूँ ?'

दोनों ने एक साथ सिर हिला कर अपनी अस्वीकृति व्यक्त की। न जाने क्यों अपनी माँ का आज उन्हें भय-सा लग रहा था ? कुछ-कुछ क्रोध भी आ रहा था उन्हें उस पर। कारण कि मिस मान को घर से बाहर निकाल देने की बाबत उन्होंने उनसे कुछ भी नहीं कहा था।

इस अनपेक्षित रीति से निर्मित वातावरण में वे पिंजड़े में बन्द पक्षी की भाँति फड़फड़ा रही थीं... छटपटा रही थीं। उनका व्याकुल मन बार-बार उन्हें प्रेरित कर रहा था कि वे तुरन्त ही जाकर मिस मान से पूछें—'कि यह सब क्या गड़बड़-घुटाला है ? आप हमसे क्यों नहीं कहतीं। हमारी बहुत इच्छा है कि आप यहीं रहें।' किन्तु न जाने क्यों उन्हें उनके समीप जाते भय मालूम हो रहा था। किस मुँह से भला वे कह सकी होतीं कि उन्होंने चोरी-चोरी उनकी बातें सुनी हैं ? दोपहर का उनका वह समय अत्यन्त विमनस्क स्थिति में व्यतीत हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाम होते ही मिस मान उनके कमरे में आयीं किन्तु घूमने चलने के विषय में कुछ भी न कह कर वे लौट गयीं। किसी तरह उन्हें वापस बुलाकर उन से बातें करने के लिए उनका बाल-मन छटपटा रहा था। उनके इस मौन निमन्त्रण के फल-स्वरूप ही शायद वे लौट आयीं। आते ही स्नेह से उन्होंने दोनों बालिकाओं को अपने हृदय से लगा लिया। मूक हृदय की नीरव भाषा का आदान-प्रदान होते ही अपनी अध्यापिका की मनोव्यथा की अनुभूति से वे दोनों रो पड़ीं। अब तक रुका हुआ उनका अश्रुओं का बांध तीव्रता से उमड़ पड़ा। अध्यापिका ने प्रेम पूर्ण शब्दों में उनकी सांत्वना की तथा वे चुपचाप वहाँ से चली गयीं।

उनके जाते ही थोड़ी देर के उपरांत दोनों में पुनः बातें होने लगीं—'अब क्या वे हमसे कभी भी नहीं मिलेंगी ?'

'मैं भी यही सोचती हूँ! शायद कल हमारे स्कूल से लौटने के पूर्व ही वे जा चुकेंगी।'

'तो फिर थोड़ी देर के बाद हम दोनों उनसे मिल लेंगी ? यानी उनका बच्चा देख सकेंगी हम...'

'ठीक है···।'

'लेकिन उनके जाने के बाद हमारी पढ़ाई का क्या हाल होगा ?'

'मैं तो अब किसी दूसरी अध्यापिका के पास न पढ़ सकूँगी।'

'और मैं भी...।'

'उनके जैसी अध्यापिका अब हमें अपने जीवन में कभी भी न मिल सकेगी।'

'वह तो ठीक है, लेकिन मैं क्या कह रही हूँ ?'

'हाँ कहो।'

'हम लोग ऐसा कुछ क्यों न करें कि जिससे उनके प्रति हमारा प्रेम उन्हें मालूम हो जाय। तब वे सोचेंगी कि हम माँ के समान कठोर नहीं हैं। क्या ख्याल है तुम्हारा ?'

'ठीक है···मैं भी ऐसा ही कुछ सोच रही थी।'

'सफेद गुलाब के फूल उन्हें बहुत पसन्द हैं। कल स्कूल से लौटने पर हम बहुत से फूल उनके कमरे में रख आयेंगी।'

'स्कूल बन्द होने पर ? तब क्या फायदा ? तब तक तो वे जा चुकेंगी। इसकी बजाय सुबह चाय पीने के पहले ही मैं चुपचाप बाहर चली जाऊँगी, और फिर हम दोनों मिल कर वे फूल उन्हें देंगी।'

'यह भी ठीक है। तब फिर कल सुबह हमें जल्दी उठना होगा।'

[५]

सुबह होते ही हाथों में फूलों के गुच्छे लिये वे मिस मान के कमरे के समीप जा पहुँची। किवाड़ भिड़े हुए थे...आहिस्ता से उन्होंने दरवाजा खोला और आश्चर्य ! कमरे में कोई भी नहीं था। उनके बिस्तर पर एक भी सिकन न होने से वह उन्हें तीव्रता से अपना उपहास करता हुआ-सा जान पड़ा। समीप ही टेबिल पर दो बन्द लिफाफे पड़े हुए थे।

माँ के क्रोध की जरा भी पर्वाह न करते हुए उस ने पूछा—'मिस मान कहाँ हैं, माँ ?'

'क्यों ? अपने कमरे में ही होंगी वे।'

'कमरे में नहीं हैं ! और शायद रात भर बिस्तर पर सोई भी नहीं हैं वे.. तुमने भी आज तक उनके विषय में हमसे कुछ भी नहीं बताया ?'

माँ निरुत्तर थी। उन्होंने बालिकाओं के पिता की ओर देखा वे मिस मान के कमरे की ओर जाने के लिये उद्यत थे। प्रश्नार्थक मुद्रा से बालिकाएँ माँ की ओर देख रही थीं। सात्विक सन्ताप से उद्दीप्त बालिकाओं की उस मुद्रा की ओर देखने का माँ को साहस न हो सका। पिता जी जब लौट आये तब उनके हाथ में एक पत्र था, माँ और पिता जी समीप के कमरे में जाकर धीरे-धीरे कुछ काना-फूसी करने लगे। किन्तु बालिकाएँ इस समय उनकी वह काना-फूसी सुनने की मनःस्थिति में नहीं थीं।

माँ जब लौट कर उनके पास आयीं तब उनकी आँखें कुछ लाल-सी दिखाई दे रही थीं। बालिकाओं को कुछ भी कहने का अवकाश न देकर वे बोलीं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अब तुम लोग जल्दी से स्कूल जाने की तैयारी करो। काफी देर हो गयी है आज।'

कक्षा में आज पढ़ाई में उनका जरा भी मन नहीं लग रहा था। घर लौटते समय उनके मन में मिस मान विषयक विचार ही चालू थे। नौकरों के चेहरे भी आज कुछ उदास से दिखाई दे रहे थे।

उनके घर आते ही माँ ने उनसे कहा—'बच्चियो अब मिस मान तुमसे कभी भी न मिल सकेंगी। वे...'

बालिकाओं के चेहरे के भाव इतने कटु थे कि उनके समक्ष माँ से झूठ न बोला गया। वह वाक्य फिर वे पूर्ण न कर सकीं।

दोपहर को आटो उनके घर आया। मिस मान के लिखे हुए उन दो पत्रों में से एक पत्र उसके लिए लिखा हुआ था। चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं उसके। सब मौन थे, कोई भी उससे बातें करने के लिये खाली नहीं था।

दोनों बहिनें भी आज एक दम मौन थीं। बोलने का प्रयत्न करते ही उनकी आँखें छलछला आतीं। वे पूर्ण रीति से जान चुकी थीं कि उनके साथ छल किया जा रहा है। यह बड़े लोग कितनी क्षुद्र मनोवृत्ति के होते हैं यह प्रत्यक्ष अनुभव से वे भली-भांति जान चुकी थीं। माता-पिता के प्रति उनका प्रेम-भाव तिरोहित हो चुका था। वे मन-ही-मन विचार कर रही थीं कि सम्भव है अब अपने सम्पूर्ण आयुष्य में वे अपने माता-पिता पर कभी भी विश्वास न कर सकेंगी।

जीवन का समस्त भार मानो सिमट कर उनके कन्धों पर आ टिका था। उनका निष्कलंक बाल-जीवन, सम्पूर्ण सुख एवम् बाल-सुलभ चांचल्य अब नष्ट हो चुका था।

यह सब जो कुछ हो रहा था उसका यथार्थ अर्थ अब भी पूर्ण रीति से उनकी समझ में नहीं आ रहा था। उस गूढ़तम शांतता का अवगुन्ठन दूर करने में वे अपने को पूर्णतया असमर्थ पा रही थीं। किन्तु इस आकस्मिक घटना से उनके अन्तःकरण के द्वारा जगत् के अन्य व्यक्तियों के लिए बन्द से हो चुके थे। अपने आस-पास के छल एवम् कपट से परिपूर्ण जगत से प्रतिकार लेने के लिये वे कटिबद्ध हो चुकी थीं...कारण कि केवल एक दिन में ही वे प्रौढ़ हो चुकी थीं।

अब उन्हें मिस मान के जाने का विशेष दुःख नहीं था और न इस बात का विषाद ही था कि अपनी माँ से वे विरक्त होती जा रही हैं। बाह्य जगत का कटु अनुभव प्राप्त होने से वे अपने भावी जीवन के विषय में चिंतित हो उठी थीं।

सत्य वस्तुस्थिति से टक्कर लेने के लिए वे अपने मन को तैयार कर रही थीं। उनकी हिचकियाँ अब बन्द हो चुकी थीं और श्वासोच्छ्वास भी किंचित मन्द होता जा रहा था। निद्रा देवी ने उन पर कृपा कर कुछ समय के लिए तो भी उन्हें चिन्ताओं से मुक्त कर दिया था।

—ब्रश और सौंदर्य—

[पृष्ठ १८६ का शेषांश]

से मलने से मसूड़े मजबूत पड़ जाते हैं। कोई दाँत का पाउडर आदि लगाते समय ध्यान रहे कि वह बहुत साफ हो। सदा ब्रश करते समय दाँतों को दायें बायें और ऊपर नीचे भी रगड़ना चाहिए। भीतर बाहर भी रगड़ना चाहिए, ऐसा करने से दाँत मोती की तरह चमकीले बने रहेंगे और ब्रश के प्रयोग से कोई हानि भी नहीं होगी।

नाखून

नाखूनों को 'गने के लिये भी ब्रश की आवश्यकता होती है। नाखून की सफाई के लिये बहुत कड़े बाल वाला ब्रश नहीं काम में लाना चाहिए। इससे हानि होती है। नाखून साफ करते समय गरम पानी और साबुन काम में लाना चाहिए। हाथ को साफ करते समय नाखून को भी साफ कर लेना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दस लगावे सौ पावे

लेखक, पंडित मोहनलाल नेहरू

[१]

मेरे घनिष्ठ मित्र चिरंजीतसिंह बहुत उदास बैठे थे। मैं जब उनके बिलकुल पास पहुँच गया तब उन्हें मेरे आने की खबर हुई। उन्होंने हँसने का यत्न किया, किन्तु उनकी हंसी से भी उन की चिन्ता ही प्रकट हुई।

मेरी और उनकी मित्रता स्कूल के जमाने से चली आ रही थी। मेरा ख्याल तो यह था कि वे मुझसे कोई बात छिपा नहीं रखते थे। कम-से-कम मैंने तो उनसे कोई अपना भेद नहीं छिपाया था।

'क्यों, आज कैसे उदास बैठे हो? खैरियत तो है!' मैंने घबरा कर पूछा।

'हाँ, सब कुशल-मंगल है। यों ही कुछ उदासी-सी आ गई है।' उन्होंने कहा।

मुझे कुछ शक हो गया कि कोई ऐसी बात है जो वे मुझसे बता नहीं रहे हैं। मैंने फिर कहा—'नहीं कोई बात जरूर है। तुम्हें बतानी होगी। मेरे और तुम्हारे बीच कभी भेद-भाव नहीं रहा। अब क्या कोई नई बात हो गई है?'

उन्होंने कुछ मुसकराते कुछ लजाते हुए कहा—'अपनी बेवकूफी का क्या बखान करूँ? जैसा किया वैसा पाया।

हाँ, रंज जरूर है।'

'आखिर मैं भी तो सुनूँ। वह कौन-सी बात है? शायद कुछ सहायता कर सकूँ। कम-से-कम तुमसे सहानुभूति तो कर सकूँगा ही।' मैंने बड़े प्रेम से कहा।

'अच्छा तो फिर सुनो। तुम हँसोगे जैसे दुनिया मुझ पर हँसेगी। मगर सच तो यह है कि अपने वक्त में सभी उल्लू बन जाते हैं।' उन्होंने कहा।

मैं ध्यान से उनकी कहानी सुनने लगा। मुझे गत मास की उनकी यह कहानी मालूम न थी। मैं महीने भर से बाहर भ्रमण कर रहा था। बाहर न जाता तो शायद उन्हें बचा लेता। कम-से-कम बचाने की कोशिश तो अवश्य करता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[२]

उन्होंने कहना आरम्भ किया—'तुम्हें यह तो मालूम ही है कि मेरे पिता मेरे वास्ते बहुत कुछ धन छोड़ कर मरे थे। तुमसे यह भी छिपा नहीं है कि वे कई कोठियाँ भी बनवा गये हैं जो मेरे कब्जे में आज तक हैं। उनमें से एक कोठी तो बहुत पुरानी है जो कभी किराये पर नहीं उठती। वह कभी-कभी मँगनी पर उठा करती है और दो-एक गरीब आदमी उसकी बाहर की कोठरियों में पड़े रहते हैं। मैं उन से किराया नहीं लेता, किराये के बदले में वे उसकी चौकीदारी कर देते हैं। मेरा मुन्शी अयोध्या प्रसाद कभी-कभी कोठी को खुलवा कर सफाई करवा दिया करता है।

'बीस-पचीस दिन की बात है कि मेरे पास अयोध्या प्रसाद ने आकर कहा—हुजूर, मेरी लड़की सयानी हो चुकी है, धनाभाव से मैं उसका विवाह नहीं कर सकता। बिरादरी मुझ पर थूकती है। हजार रुपया कहाँ से लाऊँ जो उसका ब्याह करूँ? इस वक्त मेरी खुशकिस्मती से एक शाह साहब आ गये हैं। वे कहते हैं, सौ रुपये लाओ तो दस गुना कर दें। सौ भी मेरे पास नहीं हैं। अगर हुजूर इनायत कर दें तो मेरा बेड़ा पार हो सकता है। मेरी तनख्वाह में १०) हुजूर हर महीने काटते जायँ। 'मैंने हँस कर कहा—अगर वे एक के दस बना सकते हैं तो रुपया ही क्यों माँगते हैं?' मुन्शी ने उत्तर दिया—हुजूर, उन्हें किसी बात की कमी नहीं है। वे तो पहुँचे हुए फकीर हैं, परोपकार करते हैं। मगर जो लाभ उठाना चाहेगा उसे कुछ खर्च करना ही पड़ेगा। मैंने फिर कहा—कोई लुटेरा होगा। मुफ्त में फँसोगे।' मगर अयोध्या प्रसाद न माना वह कहने लगा—कल उन्हें हुजूर के पास लाऊँगा। बड़ी ख़ुशामद से वे कहीं आते-जाते हैं। मगर मैं लाऊँगा। हुजूर ख़ुद ही जान लेंगे।

'अपने वादे के अनुसार वह दूसरे दिन मेरे पास उन्हें लाया। उनका कद लम्बा और माथा चौड़ा था। चाँद गंजी थी, मगर कनपटियों पर बड़े-बड़े बाल थे, जो गर्दन तक लम्बे लटक रहे थे। गुठनों से नीचे तक एक कुर्ता पहने थे, टखनों तक पायजामा था। लम्बी दाढ़ी उनकी छाती तक लटक रही थी। मगर मूँछें मुड़ी हुई थीं। सिर के बाल और दाढ़ी मेंहदी से रंगे हुए थे। हाथ में एक टेढ़ी-मेढ़ी मोटी छड़ी लिये थे। पीठ और गर्दन को जरा झुका कर वे अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से मुझे घूरते हुए मेरे पास आ बैठे। मैं भी उनके रोब में कुछ आ गया। उन्होंने अपनी तुर्की टोपी सिर से उतार कर मेज पर रख दी और अयोध्या प्रसाद की तरफ देख कर बोले—यही तुम्हारे मालिक हैं? अयोध्या ने मुझसे कहा—बड़ी मुश्किल से मैं शाह साहब को यहाँ तक ला सका। इनके पीछे सेठ छन्नामल पड़े थे। मगर आपने जाने से इनकार कर दिया। शाह साहब ने मुझसे कहा—किसी गृहस्थ के घर आम तौर पर मैं नहीं जाता हूँ। मगर ख़ुदावन्द करीम की इस वक्त यही मर्जी थी कि मैं आपकी दरख्वास्त को नामंजूर न करूँ। इसके पश्चात् वे मुझसे इधर-उधर की बातें करते रहे। उस दिन की बातों का रङ्ग मुझ पर बहुत जमा। जब वे उठ कर जाने लगे तब मैंने उनसे सविनय प्रार्थना की कि कल फिर आवें। उन्होंने मुसकरा कर स्वीकार किया, चलते समय बोले, अब आप मेरे मुरीद हैं। मैं आपको कुछ भेंट देता हूँ। इतना कह कर हाथ ऊपर उठाया। 'आव' ! कह कर एक छोटा-सा अनन्नास मेरे हाथ में धर दिया। तुम्हीं सोचो, बेफस्ल की चीज मेरी आँखों के सामने कोई बैठे-बैठे मँगा दे तो मैं कैसे उल्लू न बन जाऊँगा। उस वक्त मैं उनका सचमुच पूरा मुरीद हो गया। वे दो-तीन दिन तक बराबर आये और रोज ही कोई न कोई चीज मुझे भेंट दे गये। चीजें मेरे सामने किसी ऐसी शक्ति से मँगा देते जो मैं समझ न सकता और मुझे उन पर पूरी श्रद्धा हो गई। शायद इससे भी ज्यादा जितनी अयोध्या प्रसाद की उन पर थी।

'एक दिन शाह जी ने कहा—मैं तुमसे बहुत खुश हूँ। इससे तुम्हें यह बता देना चाहता हूँ कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे अमुक मकान में खजाना गड़ा हुआ है। मगर उसके मिलने के वास्ते खर्च करना पड़ेगा। मैं फकीर आदमी हूँ। मुझे तुम्हारे पैसे की जरूरत नहीं, मगर गरीबों को बहुत-कुछ देना होगा। शायद कुछ गङ्गा जी के भी भेंट करना पड़े। 'मैंने पूछा–कितना खर्च होगा और कितनी प्राप्ति होगी?' उन्होंने कहा 'यही दो-चार हजार खर्च होगा। मिलने को लाखों मिल सकते हैं। इस वक्त तो उस खजाने पर साँप बैठे हैं।'

'मेरे मुँह में पानी आने लगा। परमेश्वर ने मुझे बहुत-कुछ दे रक्खा था, मगर जब मेरे ही घर में लाखों और गड़े पड़े हैं तब उन्हें क्यों छोड़ूँ।' शाह जी ने कहा—'तो कल जुमेरात है। मुझे अपने उस्ताद की कब्र पर हलवा चढ़ाना पड़ेगा। कंगालों को बांटना होगा। आप अयोध्या प्रसाद को भेज दें कि वे अपने सामने बँटवा दें, खुद आपको तकलीफ करने की जरूरत नहीं, जब जरूरत होगी, मैं बता दूँगा।'

'जुमेरात और मंगल को हलवा बँटने लगा। इसमें मेरे ५००) खर्च हुए। मगर पाँच सौ या पाँच हजार की लाखों के आगे क्या हकीकत है? एक दफा कुछ देर को मैं भी गया। बड़ी-बड़ी देगों में हलवा रक्खा था। कँगले जमा हो रहे थे। इतना मैंने भी देखा।'

'तीन हफ्ते तक वे कुछ पूजा-पाठ भी कराते रहे। मेरे पूछने पर बोले कि जो साँप उस धन के ऊपर बैठे हैं उनके भगाने को पूजा करा रहे हैं। पिछली जुमेरात को वे मुझे उसी मकान में ले गये और एक अन्धेरी-सी कोठरी में ले जाकर बोले कि इसी में खजाना है। अयोध्या प्रसाद ने उनकी आज्ञा पाकर खोदना शुरू किया। चिराग जल रहा था। उसके प्रकाश से कमरे का अन्धेरा कम हो गया था, कुछ दूर खोद कर वह चिल्ला उठा कि एक देग तो दिख रही है। मैंने भी कोई चमकती हुई चीज देखी। अपनी असा शाह साहब ने मुझे दी कि ठोंक कर देखूँ। ज्यों ही मैंने उस लकड़ी से देग को ठोंका कि फुफकार मार कर एक साँप फन उठा कर खड़ा हो गया।

शाह साहब चिल्ला उठे। बस! बस! अभी वक्त नहीं है। गङ्गा जी की भेंट बाकी है। इतना कह कर उन्होंने मेरे हाथ से असा ले ली और साँपों का खयाल न करते हुए देग का ढँकना थोड़ा-सा उठाया। मुझे उसमें चमकती हुई अशरफियाँ-सी दिखाई दीं। वे अरबी में कुछ पढ़ते जा रहे थे। शायद साँपों को शान्त रखने का मन्त्र था।

उस कोठरी को यों ही छोड़कर बाहर से ताला डाल मैं चला आया। शाह जी ने कहा कि ताले की कोई जरूरत नहीं। उसे कोई छू नहीं सकता। मगर मेरा दिल कब मानने लगा।

दूसरे दिन अयोध्या प्रसाद ने मुझसे शाह जी के तरफ से कहा कि सौ तोले की सोने की गङ्गा जी की मूर्त्ति बीच सङ्गम में मुझे डालनी होगी। फौरन बननी चाहिए। मैंने सुनार को बुला कर उसे मूर्त्ति बनाने की आज्ञा दी। वह हँसने लगा। मेरे ऐसे नास्तिक से उसे कभी ऐसी आशा न थी। मगर उस का क्या जाता था? वह दो-तीन दिन में बना लाया और ३,०००) के नोट लेकर चला गया।

शाह जी ने मुझसे कहला भेजा कि मैं हर दम उनका इन्तजार करूँ। इन्हीं चार-छः दिन में वे किसी घड़ी मेरे पास आवेंगे और तब मुझे तुरन्त उनके साथ जाना होगा। अभी वे पूजा-पाठ में लगे हुए हैं और समय आते ही आ पहुँचेंगे।

चार दिन, सच कहता हूँ, बड़ी ही बेचैनी से कटे। इतनी दौलत मेरे घर में और मैं छू नहीं सकता! यह कम्बख्त शाह जी आता ही नहीं, मैं घर में कैदी था। न कहीं आने का, न जाने का, कमरे में इधर से उधर टहलता रहता, न बैठे चैन, न लेटे। टहलते-टहलते जब टांगें थक जातीं, लेट जाता। फिर अन्दर से हूक उठती, उठ खड़ा होता और टहलने लगता। मेरी स्त्री मेरी यह दशा देख कर घबराती, डाक्टर को बुलाने को कहती, मगर मैं डाँट-फटकार देता। असल में मैं अपने आपे में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न था और वह ठीक समझती थी कि मैं पागल होने वाला हूँ। फिर भी मैंने उससे शाह जी का हाल नहीं बताया। मैं यह सोचता था कि जब अशरफियों का देग वह देखेगी, मेरी ही तरह फूल कर कुप्पा हो जायगी। थोड़ी-सी फिक्र के बाद खुशी भी अच्छी लगती है।

परसों की बात है। रात को बड़े जोर की आँधी उठी थी। शायद आठ बजे होंगे कि शाह साहब आ पहुँचे। अयोध्या प्रसाद उनके साथ था। वे बोले—चलो यही वक्त है। जल्दी करो। सामान साथ ले लो। हम लोग पाँच मिनट के अन्दर घर से चल खड़े हुए। मैं और शाह जी तो खाली हाथ थे और मुन्शी के हाथों में कपड़े में लिपटी गंगा जी की मूर्त्ति थी। भाई ठाकुरसिंह! तुम मेरी उस वक्त की खुशी का अन्दाज नहीं कर सकते। थोड़ी-सी देर में मैं लाखों का मालिक होने वाला था। मेरी अर्धाङ्गिनी मना भी करती रही कि कहाँ आँधी में जाओगे, मगर मैं क्यों मानने लगा। मुझ पर तो जादू सवार था। यह मुझे पीछे मालूम हुआ कि उन्होंने ड्राइवर से चुपके से कह दिया था कि 'सरकार' का मिजाज ठीक नहीं है। जरा खयाल रखना वह बेचारा क्या खयाल रख सकता था।

गङ्गा जी पहुँचे तब तक आँधी में कुछ कमी हो गई थी, मगर दरिया उछल-कूद रहा था। शाह जी ने नाव वाले को आवाज दी। एक नाव दौड़ आई। अन्धेरी रात और हवा का जोर! मैं तैरना जानता नहीं था। नाव पर चढ़ते ही डर मालूम हुआ। मगर शाह साहब कड़क कर बोले कि क्या तीन हफ्ते की मेहनत खो देना चाहते हो। मुझे हिम्मत आ गई और मैं नाव पर जा बैठा। ड्राइवर को शाह जी ने नहीं चढ़ने दिया और मैं कुछ कह भी न सका।

सङ्गम तक जाते-जाते शाह जी ने कहा, कहाँ है वह मूर्त्ति? लाओ, जल-प्रवाह के पहले आखिरी पूजा कर लूँ। अयोध्या प्रसाद ने मूर्त्ति उन्हें दे दी। व पूजा कर ही रहे थे कि सङ्गम आ पहुँचा। उन्होंने मूर्त्ति मुझे दी और कहा, 'लो गङ्गा जी का ध्यान करके उन्हीं की मूर्त्ति उन्हीं को चढ़ा दो।

मैंने बड़ी श्रद्धा से मूर्त्ति को जल में डाल दिया। वह गड़ाप से गायब हो गई। शाह साहब ने कहा, 'मैं कल शाम को तुम्हारे साथ चल कर खजाने का कब्जा तुम्हें दिला दूँगा। उस रात और दूसरे दिन किस मुश्किल से कटे, मैं तुमसे नहीं कह सकता। शाम को अयोध्या प्रसाद बहुत घबराया हुआ आया और बोला, 'हुजूर, मैं शाह साहब के घर गया था। वहाँ मालूम हुआ कि वे तो कल से ही नहीं लौटे हैं। बस, काटो तो बदन में खून नहीं, मैं मुन्शी को साथ लेकर खजाने की कोठरी में पहुँचा। वह खुदी पड़ी थी। न देग थी, न साँप। उस शाह साहब ने मुझको हाँ-हाँ राय साहब चिरञ्जीतसिंह एम० ए०, एल० बी० जमींदार आनरेरी मजिस्ट्रेट को उल्लू बना दिया।'

[३]

यह हाल सुनकर मैं अपनी हँसी न रोक सका और मैं इतना हँसा कि मेरी आँखों में पानी आ गया। आखिर में वे भी हँसने लगे, मानो दिल के फफोले फूट जाने पर उन्हें शान्ति आ गई हो। उस बेईमान को सात साल के वास्ते जेल न भिजवाया तो सही। वे कहने लगे—'मेरे तो दो-चार हजार रुपये ले भागा तो ले भागा, उस बेचारे अयोध्या-प्रसाद के भी सौ ले गया।'

मुझे उसकी इस सरलता पर और भी हँसी आई। मैंने कहा–'भाई साहब, आप निरे बूदम हैं जो यह समझते हैं कि मुन्शी की साजिश इसमें न थी। वह बिना उससे मिले आपको चरका नहीं दे सकता था।'

उन्हें कुछ शंका होने लगा और हम दोनों इस मामले की जाँच करने निकल खड़े हुए।

उस कोठी के फाटक पर जो दो चमार रहते थे, उन्होंने बताया—'मुन्शी जी और शाह जी कई दफे साथ-साथ उस कोठी में गये थे। दो-चार दफे एक ठेला भी आता-जाता उन्होंने देखा था, मगर कोठरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में कुछ खोदने या गाड़ने की उन्हें कोई खबर नहीं हुई। जिस रात को आँधी आई थी, शाह जी और मुन्शी जी उस कोठरी से कोई चीज ले गये थे। ठेला साथ आया था।

मुन्शी पुराना आदमी था। इस शहादत के आगे गर्दन झुकाये खड़ा रहा। आखिर में बोला—'हुजूर, मैं खतावार जरूर हूँ, मगर अपने बच्चों की कसम खाता हूँ कि मुझ पर उसने बड़ा ही रोब गाँठा था। मैं बिलकुल अपने आपे में नहीं था। वह जो चाहता था मुझसे करा लेता थ ।'

मैंने उसे कुछ धमकाया, कु डराया, कुछ दिलासा दिया कि सच-सच हाल बता दे कि वह मूर्ति पानी में फेंकी भी गई या कोई नजरबन्दी थी। अयोध्या ने कहा—'मूर्ति फेकी अवश्य गई, किन्तु वह नहीं। पूजा करने के बहाने जब उसने मूर्ति ली तब वही मूर्ति सरकार को नहीं दी। एक दूसरी पीतल की मूर्ति चद्दर के भीतर सीसा भर कर नाव पर रक्खी थी। वही फेकी गयी।

जिस सुनार ने वह दूसरी मूर्ति बनाई थी उसने उसका बनाना स्वीकार किया, मगर यह भी कहा कि बनवाया था अयोध्या प्रसाद ने ही।

मुझे तो था ही नहीं, चिरजीतसिंह को भी अयोध्या प्रसाद के दोषी होने में अब कोई सन्देह नहीं रहा और वे उसे पुलीस में देने को तैयार हो गये। मगर मैंने ही इस खयाल से पुलीस के सुपुर्द नहीं करने दिया कि मुफ्त में मेरा मित्र बेवकूफ बनेगा। पीछे पता चला कि शाह साहब ने मुन्शी को भी चरका दिया। आधे का साझीदार उसे ठहराया था, मगर आँधी वाली रात को ही वे गायब हो गये। अयोध्या प्रसाद इसी से दूसरे दिन घबराया हुआ आया था। उसकी वह घबराहट बनावटी न थी।

गीत

लेखिका, कु० पुष्पलता अस्थाना एम० ए०

आज मन उदास है
जिन्दगी की राह में
विफल हर प्रयास है
खो गया मधुमय सवेरा
मिट गई सुख यामिनी भी
सांध्य-जीवन की डगर पर
बन गई दुख दामिनी भी
बादलों की छाँह में
सुप्त अब प्रकाश है
आज मन उदास है
देख कर लौटे गगन के
श्याम-घन मेरी उदासी
सजल पलकें परश मेरी
हो गई राका रुआँसी
आँसुओं की बाँह में
भावना हताश है
आज मन उदास है
एक दिन जीवन तिमिर में
चाँद सुख का जगमगाया
एक दिन मधुमास आया
हर दिशा ने गुनगुनाया
सुलग रहा फूल - पात
अब न वह सुवास है
आज मन उदास है
सोचती थी स्नेह सागर
ढाँप लेगा रेत सा मन
मधुर मलयानिल कभी तो
बांट लेगा नेत्र का जल
किन्तु दूभर हो गयी
आज निज उसांस है
आज मन उदास है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दहेज प्रथा पर आधारित

कहानी

समाज का चक्रव्यूह

लेखक, श्री प्रेमस्वरूप श्रीवास्तव एम० ए०

[१]

सुन कर चुप रह जाना रणधीर की आदत नहीं। उसने मेरी बात का जवाब भर ही नहीं दिया बल्कि आवेश में भी आ गया। उसकी मजबूत मुट्ठी का आघात पा बेचारी पुरानी मेज सर से पैर तक काँप उठी। गिरते हुए प्याले को मैंने सम्भाल लिया। फिर भी चाय छलक कर खुली हुई पुस्तक के पृष्ठ पर जा पड़ी।

'भाई जान, दोस्ती का हक होता है और मैं उसकी कीमत पाई-पाई चुका सकता हूँ।' रणधीर ने कहा। मैंने उसके चेहरे को देखा। पाया कि उस ने केवल कह भर दिया है, वास्तव में वह उतनी गहरायी में है नहीं। मैं बोला—'तुम्हारा कहना किसी हद तक सही हो सकता है। मगर जब बात कीमत चुकाने की नहीं बल्कि चुकवाने की हो तब...।'

'ओह!' रणधीर बीच ही में मेरी बात काट कर बोला—'हर एक आदमी विवशता के सामने झुकता है। फिर मैं ही दोषी क्यों?'

'दोषी इसलिए कि तुम्हारे सामने विवशता नहीं स्वेच्छा है। विश्वास न हो तो अपने हृदय से पूछ देखो। डाक्टर श्रीवास्तव के घर से तुम्हारा पिछले दो वर्षों से चला आ रहा सम्बन्ध दुनिया की आँखों से छिपा नहीं है।' मैं बिना रुके कहता गया, 'वैसे तो कोई भी भला आदमी घर आये को चाय-पानी के लिए पूछता है मगर रोज-रोज वही पलक पाँवड़े बिछाता है जिसे कुछ आशा रहती है। डा० श्रीवास्तव भी उन्हीं में से एक हैं। और रणधीर, जितना मैं तुम्हें जानता हूँ उतना बल्कि कुछ अधिक सुशीला को भी जानता हूँ। मुहब्बत उठती है, गिरना नहीं जानती। मगर जिस दिन गिरती है तो दो ही बातें होती हैं—आत्म-हत्या अथवा संसार से घोर वैराग्य। दुर्भाग्यवश भारतीय अबला पहले को चुनती है। तुम्हारी विवशता तुम्हें मुबारक हो मगर वह किसी दुर्घटना की जिम्मेदार न बने, इसका ध्यान रखना।' मैं कुछ आवेश में आकर कह गया।

रणधीर दो मिनट तक चुप रहा, शायद जवाब के शब्दों की तलाश में था। फिर बोला—'सुशीला से मैं प्यार करता हूँ, जहाँ तक विश्वास है वह भी मुझे श्रद्धा की दृष्टि से देखती है। मगर इसके यह मतलब नहीं कि मैं उसके ऊपर अपने माँ बाप की तमाम आशा अभिलाषाओं को बलिदान कर दूँ। सुरेश तुम जानते हो कि मैं तीन बेटियों के बीच अकेला बेटा हूँ। रीता और दुर्गा की शादी में पैतृक सम्पत्ति पानी के मोल बिक गयी। कल कञ्चन के लिए भी दरवाजे झांकने हैं।'

मेरे दिल में एक तड़प उठी मगर बैठ गयी, आगे न बढ़ सकी। बोला—'तो तुम उस खाली हो गये गड्ढे की पूर्ति के साधन हो, यही न? यहाँ आकर तुम यह भी भूल गये कि कल को डाक्टर श्रीवास्तव के दिल पर क्या गुजरेगी। उनके पास पैसों का भले अभाव हो मगर समाज में उनका एक स्थान है। उन्हें फिर मुँह दिखाना कठिन हो जायगा। असम्भव नहीं कि इस मामले को लेकर ही जाति-बिरादरी वाले उनका हुक्का पानी भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन्द कर दें—इस ओर भूल कर भी ध्यान न दिया होगा। प्रेम का सौदा बिकता नहीं, न किसी में उसे खरीदने की शक्ति ही है। इस अन्धेर नगरी में तुम्हारी बोली चार-पाँच हजार तक भी लग जाना मुश्किल नहीं। अगर उसके बदले में तुम्हारी जिन्दगी की गाड़ी का एक पहिया अलग हो जायगा और दुनिया की कोई भी गाड़ी एक पहिये पर नहीं चलती।'

जवाब में रणधीर खड़ा हो गया। उसका चेहरा कह रहा था कि बात उसे कुछ अधिक जँची नहीं। न जँचाने की कोई दवा विशेष ही मेरे पास थी। अन्तिम रूप में जो कुछ कहना चाहता था कह दिया। उसने दोस्ती के हक की बात कही, मैंने कहा मात्र नहीं बल्कि पूरा भी कर दिया।

दूसरे दिन सुना कि रणधीर की शादी बनारस के किसी प्रतिष्ठित वकील की लड़की के साथ ठीक हो गयी। सौदे की अच्छी कीमत लगी, यह भी ज्ञात हुआ।

[२]

मुझे शाम का भोजन विशेष रुचिकर नहीं लगा, बिस्तर पर भी पुस्तक के काले अक्षर आँखों के सामने से हट जाते। उनकी जगह जो तस्वीरें आतीं वे विशेष अच्छी नहीं कही जा सकतीं। मन में एक उत्तेजना, हृदय में एक जलन—इतना ही भर तो वे एक दर्शक को दे सकती थीं। अचानक किसी ने दरवाजे को खटखटाया। उठ कर खोल दिया। डाक्टर श्रीवास्तव थे। भीतर आकर मुँह से एक भी शब्द बोले बिना वे कुर्सी पर बैठ गये। प्रकाश की ओर रुख होने पर मैंने उनका चेहरा देखा—देखा क्या कि एड़ी से चोटी तक काँप उठा। क्या यह डाक्टर का वही चेहरा है जिसके उन्मुक्त निश्छल हास्य से अभी कल तक क्लब का हाल कमरा गूँज उठता था। हमेशा की मुस्कराहट निर्जीव हो गयी थी, आँखों में चमकने वाले खुशी के प्रकाश का स्थान राख जैसी सफेदी ने ले लिया था। लगता था कि आज दिन भर के कुछ ही घन्टों ने उनके जीवन के बीस वर्षों को और कम कर दिया। मेरी समझ से परे हो गया कि मैं उस अभागे बाप से किन शब्दों में बात आरम्भ करूँ।

कुछ मिनटों का अवकाश देकर डा० श्रीवास्तव ने ही शान्ति भंग की—'तुमने तो सब कुछ सुन ही लिया होगा।' ओह, मैं सिहर उठा। उनकी आवाज में फाँसी पर चढ़ रहे कैदी के दया की भीख मांगते कण्ठ स्वर से अधिक बल नहीं था।

'सुना।' मैंने पूरी शक्ति व्यय करके उत्तर दिया।

'रणधीर तुम्हारा मित्र है। मुझे इस तरह की स्थिति का सामना होने की सम्भावना पहले से ही थी किन्तु तुम्हारे कारण मैं निश्चिन्त था।' डाक्टर ने लड़खड़ाते कण्ठ से कहा।

मैं चुप न रह सका। बोला—'रणधीर मेरा मित्र था। अब उसने धीरता के स्थान पर कायरता से मित्रता कर ली और इस दूसरी वस्तु से मुझे नफरत है।'

'तो दो वर्ष तक मैं धोखे में क्यों रखा गया?'

'क्योंकि उसने आपको छोड़ दिया।' मैंने शान्त स्वर में कहा।

डा० श्रीवास्तव कुछ देर तक चुप रहे। मैंने उन की ओर देखा तो उन्हें अपना रूमाल आँखों पर रखते पाया। जब वे बोले तो उनकी आवाज काफी गिरी हुई थी—'उसने मेरी प्रैक्टिस की ओर तो देखा मगर खर्चे की ओर नहीं और न मेरी बच्ची...।' कण्ठावरोध हो जाने से डाक्टर को चुप हो जाना पड़ा। उन्होंने जेब से एक मुड़ा हुआ कागज कांपते हाथों मेरी ओर बढ़ाया। मैंने उसे खोला और पढ़ा। यह कल रात सुशीला का डा० के नाम लिखा गया पत्र था। इस घटना का उसके कोमल हृदय पर जो प्रभाव पड़ा था उसकी कहानी पत्र का एक-एक शब्द कह रहा था। पत्र समाप्त करते हुए उसने लिखा था—'...आपका चिन्तित और दुःखी होना स्वाभाविक है मगर आप किसी भी तरह की परेशानी मत अनुभव कीजिये। आपको इस हालत में देख कर मैं एक क्षण भी नहीं जीवित रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकूँगी। अब तक मैंने केवल इतना जाना था कि किसी पूर्व जन्म के पाप वश इस गरीब देश में पिता बनना पड़ता है, उस पर किसी लड़की का पिता होना तो घोर पाप का फल होता है। अब इतने का ज्ञान और हो गया कि जन्म के साथ नारी अधिकार, कर्तव्य जिस किसी भी वस्तु के नाम पर कहिये, केवल एक भावना लेकर आती है—अपना सब कुछ समर्पण कर देना किन्तु बदले में कोई इच्छा न रखना। शायद यह भावना न हो, शाप हो, जिसे देने वाला तो जन्मा, मगर वापस लेने वाला कोई नहीं पैदा हुआ। असन्तोष है तो केवल इतना कि मैं अकेली ही उसे भुगतने वाली नहीं हूँ। इस भयङ्करी दरार में जितनी समाती चलें, कम है।'

पढ़ कर कई मिनटों तक मैं शून्य में खोया-सा रहा। अन्तर में एक आग जल रही थी। उसे छिपाये क्यों रहूँ, क्यों न प्रकट कर दूँ।

मैंने कहा—'मैं रणधीर के इस विवाह को रोक सकता हूँ। आपकी कृपा से इतनी शक्ति है।'

'न···न!' डाक्टर जैसे कब्र में से उछल कर चिहुँकते हुए बोले—'ऐसी बात मन में न ले आओ। रणधीर की होने वाली बहू भी तो किसी बाप की बेटी है। बेटा, माँ बाप का हृदय सब कहीं एक-सा होता है। ये सिक्के दुनिया की हर चीज का मूल्य निर्धारित कर सकने में समर्थ हो सकते हैं मगर हृदय का एक निश्चित माप दण्ड होता है—देश, काल, चार हजार और पाँच हजार, इन सबकी सीमा से परे।'

खिसियाया-सा मैं नीचे देखने लगा। जिस प्रतिक्रिया की मैं अपेक्षा करता था उसके स्थान पर यह निष्कलुष उत्तर! विश्व मानवता की दुहाई देने वालों की पंक्ति से कितना आगे इस विवश पिता का स्थान होगा? शायद हर किसी के लिए सोचना सरल नहीं।

इसके बाद वही हुआ जो साधारणतया होता है। रणधीर ने अपने माँ बाप की आशा अभिलाषाओं की पूर्ति की। मगर उसका खामियाजा भरने के लिये उसे अधिक कीमत चुकानी पड़ी है। अक्सर भेंट होने पर उसके मुँह से यही सुनता हूँ कि वह अपने वर्तमान जीवन से असन्तुष्ट है—इतना असन्तुष्ट कि कभी-कभी आत्म हत्या कर लेने की इच्छा होने लगती है।

[३]

सुशीला का ब्याह भी हो गया, रुका नहीं। डाक्टर ने वही किया जो बाप करता है—जिसमें 'करना चाहिए' को गुञ्जायश नहीं। सुशीला का अनागत जीवन सुखी होगा, इसमें मुझे सन्देह है। उसका पति चालीस वर्ष की अवस्था में ही वृद्ध हो गया मरीज है। डाक्टर ऊपर से मुस्कराते हुए मिलते हैं मगर उनके हृदय में जो ज्वालामुखी लावा पत्थर उगल रहा है, मैं उसे पहचानता हूँ। सुशीला से भी एक दिन भेंट हुई। स्ट्रेचर नुमा रबड़ के पहियों वाली गाड़ी पर अपने पति को घुमाने ले जा रही थी। मैंने उसके शव जैसे पीले चेहरे को देखा और तुरन्त मुझे उसके पत्र का ख्याल हो आया। सचमुच उसने सब कुछ समर्पित कर दिया था। किन्तु समर्पण का अधिकारी? मैंने देखा कि यदि मैं वहाँ मिनट भर भी खड़ा रहा तो मुझे चक्कर आ जायगा। अतः मैंने शीघ्रता से हाथ जोड़े और बिदा मांगे बिना ही आगे निकल आया। उसने मर्माहत होकर मुझे देखा—शायद पुरुष की कठोरता को अधिक नजदीक से जानने का प्रयत्न किया। फिर उसके नेत्रों से आँसू की दो बूँदें नीचे की ओर तीव्र गति से ढुलकीं मगर उन्हें पति की देह पर गिरने देने से पहले उसने आँचल में बटोर लिया। वह भारतीय नारी थी, जिसके लिए अपनी परवशता पर रोना भी अपराध ही नहीं घोर पाप है।

तभी मुझे इस दरार का ख्याल हो आया—लम्बी-चौड़ी गहरी दरार कि जिसके किनारे धक्का खाकर गिरने के लिये तैयार खड़ीं हजारों नहीं; बल्कि लाखों सुशीला। पता नहीं उस राक्षसी की रक्तपान से कभी तृप्ति होगी भी या नहीं!

—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

? प्रश्न-पिटारी ?

ससुराल या जेलखाना

गत वर्ष मैंने अपनी कन्या की धूम-धाम से शादी की। दिल खोल कर दिया और उसे ससुराल बिदा किया। उसके ससुर वादा कर गये थे कि १० दिन बाद उसे वापस आने देंगे, परन्तु आज साल भर हो गया किसी प्रकार भेजते ही नहीं हैं। कन्या के पत्र आ रहे हैं जिससे मालूम होता है कि वह बीमार है और जीवन से निराश हो चुकी है। उसे सता रहे हैं और इस प्रकार मानों हमसे बदला ले रहे हैं कि उन्हें ठग लिया, दहेज कम दिया। और हम सोचते हैं कि जो कुछ हमारे पास था सब दे दिया कुछ बाकी नहीं लगा रखा? क्या आप हमें कोई सलाह दे सकते हैं?

जान यह पड़ता है कि आपकी कन्या के ससुराल वालों को अनुमान से कम दहेज मिला। आज के युग में ऐसे लोग बहुत हैं जो ऊपर से बड़े सुधारक बनते हैं और दहेज कुछ नहीं माँगते परन्तु जब आप अपनी ओर से देने लगिये तब उन्हें जितना भी दीजिये कम ही प्रतीत होता है। सम्भवतः आपके समधी ऐसे ही लोगों में हैं। उनका ध्येय आपको मानसिक कष्ट पहुँचाना है। परन्तु यदि आप अपनी कन्या को न बुला सकने के कारण दुःखी होना छोड़ दें तो शायद वे और उपाय सोचें आपका ध्येय अब यह होना चाहिए कि आपकी कन्या ससुराल में सुख से रहे और अपने आचरण से ससुराल वालों को सुखी रखे। यदि आपका स्मरण करके वह उन्हें दुखी बनाती है तो उसे यही उपदेश दें कि वह आपको भूल जाय। प्रारम्भ में ससुरालें कन्याओं को जेलखाना प्रतीत होती ही हैं। परन्तु क्रमशः सब ठीक हो जाता है। आप धैर्य रखें।

शिक्षिता कन्याएँ

मैं एक अध्यापिका हूँ। वेतन से परिवार का भरण-पोषण भी कठिनाई से होता रहा। कुछ धन बचा सकने में कभी समर्थ नहीं हो सकी। इस कारण मेरी तीनों कन्याएँ जो विवाह योग्य हो चुकी हैं अभी तक अविवाहिता बैठी हैं। पास-पड़ोस में जब शादी ब्याह के उत्सव होते हैं तो हमारा हृदय रोने लगता है कि हाय हमें भगवान ने कन्याएँ क्यों दीं जब कि दहेज के लिये कुछ धन न दिया, सन्तोष की बात यही है कि मैंने कन्याओं को यथा शक्ति पढ़ाया-लिखाया। तीनों हाई स्कूल पास करके बैठी हैं। कहीं उन्हें नौकरी भी नहीं मिलती।

यह समस्या आपकी ही नहीं है, अनेक मध्यम परिवारों की है। कन्याओं को सुयोग्य वर मिलने में दहेज की प्रथा तो बाधक है ही जात-पांत का बन्धन भी बहुत बड़ी बाधा है। आप तो सुशिक्षिता नारी हैं जहाँ तक सम्भव हो दहेज के बिना और नहीं तो जात-पांत भी तोड़ कर कन्याओं की शादी कर और दूसरों के लिए नमूना बनें। लड़कियों को अभी भी स्कूलों में जो शिक्षा मिलती है उसके बल पर वे सिवाय अध्यापिका बनने के और नौकरी कर ही क्या सकती हैं। पर स्थान-स्थान पर कन्या पाठशालाएँ खुल रही हैं और आप धैर्य से खोज करें तो उन्हें ऐसी नौकरी दिला सकेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोझ

सुख के वे सुनहले दिन और
दुख की यह बदली.........

लेखक, श्री एस० चड्डा

[१]

मैं कन्या पाठशाला में काम करता था। वेतन कम होने के कारण मैं एक दो टियूशन भी करता था। मेरी प्रिंसिपल को इस चीज का पता था।

क्योंकि शुरू से ही मुझे छोटे बच्चे अच्छे लगते थे। इसलिए मैं जिन बच्चों को भी पढ़ाता, उनके साथ घुल-मिल जाता। मैं उन्हें बेटा या बेटी कह कर बुलाता। इस तरह बुलाने में मुझे आनन्द अनुभव होता। यद्यपि मैं स्वयम् ही अभी बेटों की आयु का था।

एक दिन प्रिंसिपल ने कहा—'मेरी छः वर्ष की गुड्डो को भी पढ़ा दिया करें। बड़ी ही नटखट है। मैं आपको ३०) रुपये मासिक दे दिया करूँगी।

'बहन जी, पढ़ा तो दिया करूँगा किन्तु मैं पैसे बिलकुल नहीं......।'

'नहीं, पैसे अवश्य लेने होंगे। हाँ तो आज से ही पढ़ाना शुरू कर दें।'

२]

शाम को पढ़ाने गया गुड्डो को, बहन जी ने गुड्डो की तरफ इशारा करते हुए कहा—'यह है गुड्डो। इसे पढ़ाना है आपको।'

मैंने गुड्डो को देखा। नटखट ही तो दिखाई दी मुझे। मैंने गुड्डो से कहा—'बेटी, नमस्ते नहीं करती, अच्छा न करो। मैं ही किये देता हूँ, गुड्डो जी नमस्ते।' और गुड्डो ने भी मटक कर उत्तर दिया—'नमस्ते जी।'

गुड्डो मेरे साथ घुल-मिल गयी। जिस दिन मैं पढ़ाने न जाता, तो दूसरे दिन कुछ इस प्रकार बात चीत होती—'एक आना फाइन दीजिये।'

'फाइन कैसा ?'

'बिना अर्जी के गैर हाजिर रहने का।' मैं आप की आठ बजे तक राह देखती रही।

'अच्छा तो यह बात है गुड्डो! भई गुड्डो, मुझ से गलती हो गई। यह लो एक आना। और मैं इकन्नी निकाल कर मेज पर रख देता।'

इस प्रकार चार वर्ष बीत गये। गुड्डो ५वीं में पढ़ने लगी। एक दिन जब मैं पढ़ाने गया तो बहन जी ने मुझसे कहा—'गुड्डो कुछ कहना चाहती है।'

'हाँ-हाँ, कहो गुड्डो, क्या कहना है।'

'मास्टर जी, आज से मैं आपको 'भैया' कहकर बुलाऊँगी और आप मुझे 'दीदी' कह कर बुलाना। मुझे 'गुड्डो' शब्द अच्छा नहीं लगता।'

यह सुन मैं हँस पड़ा। और कहा—'बस यही बात थी। यह तो बहुत अच्छी बात है। किन्तु मैं तुम्हें 'दीदी' बनाऊँ इतना बड़ा होकर। वाह भई गुड्डो...नहीं दीदी। क्या खूब कही तूने।'

'इसी क्षण से आप मेरे भैया और मैं आपकी दीदी। यह सम्बन्ध मृत्यु पर्यन्त...।'

'हाँ भई हाँ। किन्तु एक बात कह दूँ। मैं तुम्हे दीदी तो बुलाया करूँगा, किन्तु रोब के साथ।'

'वह कैसे, सुनूँ तो ?'

'जैसे दीदी पानी लाना, दीदी तूने पाठ क्यों नहीं याद किया आदि।'

'बेशक, बेशक।'

[३]

छठी, सातवीं, आठवीं, नवीं और लो, दसवीं का परीक्षाफल भी निकल आया। दीदी फर्स्ट डिवीजन में पास हुई। दीदी के पिता मि० बलदेव राज की इच्छानुसार कि दीदी एक अच्छी गृहिणी बने, सिलाई वाले स्कूल में दाखिल करा दी गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन मि० बलदेव राज ने मुझसे कहा—'आपकी दीदी के लिए लड़के की खोज की जा रही है। आप भी जरा ध्यान...।'

'अवश्य-अवश्य। भला मैं अपनी दीदी के लिए इतना सा काम भी न करूँगा।'

[४]

एकाएक समय ने पलटा खाया। लोग घर-बार छोड़ कर भारत आने लगे। मैं भी भारत की राजधानी दिल्ली आ पहुँचा। किन्तु भारत आने वाले जन-समुदाय के अथाह समुद्र में मेरी दीदी तथा उस के घर वाले मेरे से जुदा हो गये। बहुत ढूँढ़ा किन्तु कोई पता न चला।

मुझे दिल्ली की कन्या पाठशाला में नौकरी मिल गयी। अब मैं कुछ उदास रहने लगा। रह-रह कर दीदी तथा उसके घर वालों का ध्यान लगा रहता। न जाने किस अवस्था में होंगे वे?

एक दिन मैं करौल बाग से होता हुआ घर जा रहा था कि सामने क्या देखता हूँ, मि० बलदेव-राज सब्जी बेच रहे हैं। पहले तो मुझे विश्वास ही न हुआ किन्तु मुझे विश्वास करना ही पड़ा। यह देख मेरी आँखों में से दो आंसू निकल पड़े।

मैं बलदेव राज के पास जाकर खड़ा हो गया। मुझे देख कर पहले तो कुछ लजा गये किन्तु दूसरे ही क्षण सम्भल कर बोले—'आओ चडा जी, कैसा हाल-चाल है।'

'ठीक है।'...आपने यह क्या किया, सब्जी बेचनी...।'

'एँ, कुछ नहीं, कुछ नहीं...आप इस बात को छोड़ दें।'

'मेरी दीदी तो ठीक है।'

'हाँ।'

'कहाँ रहते हैं आप?'

'यहीं पास ही। चलो घर चलें।' इतना कह, सब्जी इकट्ठी कर हम घर की ओर चल पड़े। थोड़ी दूर पर ही घर था। घर क्या था, फकीरों के घरों से भी गया बीता। घर पहुँच कर देखा, बहन जी रोटी बना रही थीं। मुझे देख कर बहुत प्रसन्न हुईं दीदी की प्रसन्नता का तो ठिकाना ही न था।

उनके बहुत आग्रह करने पर मुझे रात वहीं रहना पड़ा। रोटी खाकर मैं और बलदेव राज सैर को चल दिये। रास्ते में बलदेव राज ने कहना शुरू किया—

'लड़की सयानी हो गई है। लड़के तो कई देखे, लेकिन क्या करूँ, कोई कुछ मांग करता है, तो कोई कुछ, चडा जी! सच पूछो तो मेरे में अब जरा हिम्मत नहीं रही। जब मांग सुनता हूँ तो जी चाहता है कि लड़की को जहर दे दूँ। या यूँ कहो कि लड़की को पैदा होते ही जहर दे देना चाहिए।'

'आप चिन्ता किस बात की करते हैं। जब तक मैं हूँ, आपको किसी प्रकार का कष्ट न होने दूँगा। हाँ, आपने सब्जी बेचनी क्यों शुरू कर दी? क्या आप कुछ...।'

'बस-बस कुछ न पूछो। समय सब कुछ करने पर विवश कर देता है। विपत्ति में अपने सगे भी मुँह फेर लिया करते हैं। जो कुछ थोड़ी बहुत नकदी आदि लाये थे, वे चोरी हो गये। इसके बाद जो कुछ करना पड़ा, वह आपके सम्मुख ही है।'

'क्या बहन जी को कोई नौकरी नहीं मिलती।'

'नहीं...हाँ तो एक लड़का देखा है। लड़के वालों की भी मांग कोई अधिक नहीं है। मैं चाहता हूँ कि मैं अपनी आँखों के सामने ही अपनी बेटी के हाथ पीले होते देख लूँ। क्योंकि मैं अब कुछ दिनों का मेहमान हूँ, डाक्टर ने कहा है मेरे फेफड़े खराब हैं। बस इसी मास में सगाई तथा ब्याह दोनों काम हो जायंगे।'

'जैसा आप उचित समझें, करें।'

[५]

सगाई के बाद ही ब्याह होता है। दीदी के साथ भी ऐसा ही हुआ। मेरे से जो कुछ सहायता हो सकती थी, की। दीदी को बिदा करते समय मैं केवल मात्र कह सका—'सुखी रहो।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पता ही न लगा कि कब एक वर्ष बीत गया। दीदी घर आयी हुई थी। एक दिन मैंने उसे उदास देखा। पूछ ही तो बैठा—'दीदी क्या बात है, आज कुछ उदास दिखाई दे रही हो।'

'नहीं तो।'

'अपने भैया को भी न बताओगी।'

दीदी ने अपने मुँह की ओर इशारा करते हुए कहा—'यह देखो।'

मुँह पर पाँचों उँगलियों के निशान पड़े हुए थे। वह देख मैं चीख पड़ा—'दीदी किस धूर्त ने मेरी दीदी को मारा है। जल्दी बता—दीदी···।'

'क्या शाम बाबू (दीदी के पति) ने मारा है। वे दिखाई तो सज्जन पुरुष देते हैं।...तूने इतने मोटे कपड़े क्यों पहन रखे हैं। क्या वे तुम्हें पहनने को कुछ नहीं देते। और पहले से तू कमजोर दिखाई देती है।'...मैंने एक सांस में इतने सारे प्रश्न पूछ डाले।

'देखो भैया, मैं तुम्हें सब कुछ बताती हूँ। यद्यपि मुझे यह सब बताना नहीं चाहिए। क्योंकि लड़कियां ऐसी बातें अधिकतर मां को बताना ही उचित समझती हैं। किन्तु माँ पहले से ही चिन्ताओं से, दुखों से, घिरी हुई हैं। इसलिए मैंने मां से कहना उचित नहीं समझा।

'...थोड़े दिन तो मेरे सुख से बीते। इसके बाद आहिस्ते-आहिस्ते मेरे विषय में बातें होने लगीं।... बहुत थोड़ा दिया है आदि। माता-पिता के विषय में काफी कुछ बातें होने लगीं। मेरे विवाह वाले कपड़े आदि सास जी ने सम्हाल लिये और मुझे मोटे कपड़े पहनने को दे दिये गये। मैंने कभी मोटे कपड़े पहने न थे। नारी होने के नाते मुझ में धैर्य होना आवश्यक है। एक दिन काफी कहा-सुनी हुई। मैंने रोटी नहीं खायी। 'वे' आये और आते ही मारना शुरू कर दिया। भैया, सच पूछो तो मैं बहुत 'सुखी' हूँ। यदि माँ मेरी पीठ देखें, तो वेहोश हो जाएँ। इसलिए मैं माँ से कुछ भी नहीं कहती।'

दीदी और मैं कमरे में जा रहे थे कि जैसे मेरे कानों में किसी ने गरम-गरम सीसा डाल दिया हो। बलदेव राज अपनी पत्नी से कह रहे थे—'निर्मल को कब जाना है। राशन पूरा नहीं होता। मुफ्त का बोझ आ पड़ा है।'

'यह मैं क्या सुन रहा हूँ, हे प्रभु।' दीदी ने सुन कर भी अनसुना कर दिया।

[६]

एक दिन शाम बाबू दीदी के साथ आये। माँ बहुत प्रसन्न हुईं। किन्तु शाम बाबू ने वे खरी-खोटी सुनाईं कि माँ रो पड़ीं। खरी-खोटी सुनाने के बाद जाते समय शाम बाबू कह गये—'रखो अपनी लाडली को अपने पास, सदा के लिए।'

शाम बाबू के चले जाने के बाद माँ ने सिर फोड़ लिया। दीदी सोचने लगी—'पिता जी की हालत खराब है। क्या करूँ, रहूँ या जाऊँ? यदि आज नहीं जाती तो फिर सदा यहीं रहना पड़ेगा। इतना सोच दीदी अकेली चली गयी।'

इसके बाद दीदी के साथ क्या बीती, कुछ पता न लगा।

पुरुष स्त्री बना

लन्दन। ब्रिटेन का एक युद्धकालीन विमान-चालक पुरुष बहुत सुन्दर स्त्री बन गया है। पुरुष जीवन में वह दो बालिकाओं का पिता बन चुका था। डाक्टरों का विश्वास है कि इतिहास में पूर्ण लिंग परिवर्तन की यह प्रथम घटना है।

यह भूतपूर्व विमान चालक अब राबर्टा एलिजाबेथ कावेल नामक महिला बन गया है। जिसके मित्र उसे अब 'बैटी' पुकारते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निबिया के नीचे डोली धइदे कहरवा

निबिया के नीचे डोली धइदे कहरवा,
देखबै मैं गउआँ क लोग हो।

माई त दिहीं मोर नउ मन सोनवाँ,
बाबा त लहर पटोर हो।
भइया त दीहें मोर तुरुकी क घोड़वा,
सखिया त सेन्दुरा लिलार हो।

निबिया के नीचे डोली धइदे कहरवा,
देखबै मैं गउआँ क लोग हो।

नउ मन सोनवाँ नवै दिन चलि हैं,
फटि जइहैं लहर पटोर हो।
तुरुकी क घोड़ मोर सैयाँ दवड़इहैं,
सेन्दुरा त सोहिहैं माँग हो।

निबिया के नीचे डोली धइदे कहरवा,
देखबै मैं गउआँ क लोग हो।

माई के रोये मोर नदिया बहतु है,
बाबा के रोअले तलाउ हो।
भइया के रोये मोर छतिया फटतु है,
सखिया रोवैं अच्छी धार हो।

निबिया के नीचे डोली धइदे कहरवा,
देखबै मैं गउआँ क लोग हो।

फटतै धरतिया मैं भीतरा समातिउँ,
डुबतिउँ नदिया कै धार हो।
सैयाँ क मोहिया मरै नाहीं देतइ,
दुविधा में जियरा हमार हो।

निबिया के नीचे डोली धइदे कहरवा,
देखबै मैं गउआँ क लोग हो।

नोट—यह सुन्दर लोक गीत बनारस के सुप्रसिद्ध साप्ताहिक संसार में श्री चन्द्रशेखर मिश्र ने प्रकाशित कराया है।

इसमें एक ग्राम वधू का प्रथम बार बिदा के समय के मनोभावों का मार्मिक चित्रण है।

गीत में उस समय का वर्णन है जब कहार उस नववधू की डोली लिए गांव के बाहर उस नीम के पेड़ के नीचे पहुँचते हैं जहाँ वह अपनी सहेलियों के साथ अब तक घूमा-फिरा करती थी। वह कहती है:—

हे कहारो! डोली को नीम के नीचे रख दो। मैं अपने गाँव के लोगों को देखूँगी।

मेरी माता ने ९ मन स्वर्ण दिया है, पिता ने लहरिया लहँगा चुनरी दिया है, भाई ने तुरकी

[शेष पृष्ठ २२२ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामाजिक कहानी

स न्दे ह

लेखिका, कुमारी विद्यावती, 'विशारद'

[१]

'नीलम ! तुम जीतीं मैं हारा।'

'सच ! जीजा जी !! हलकी नीली रेशमी साड़ी के बीच वह हँस पड़ी और हँस पड़े नीरद-माला के मध्य मंजुल मयंक। उसकी शोभा में एक नव मधुरिमा भर गई। समीप बैठे हुए युवक उसी ओर झुकते हुए बोले—'कुछ दिन और रहो नीलू।'

'नहीं, अवकाश के दिन समाप्त हो चले हैं।' कैरम की गोटियों को समेटती हुई वह अन्यमनस्कता के साथ बोली।

'तुम कालेज जाकर भूल तो न जाओगी। ओह! तुम्हारी जीजी के विवाह के पश्चात् दो वर्ष का लम्बा समय बीत गया, तब कहीं तुम आयीं।' युवक के स्वर में एक सिहरन थी। युवती इसे सुन कर कुछ चकित-सी हुई किन्तु उपेक्षा की भावना को दबाती हुई परिहास भरे स्वर में कहा—'जीजा जी! जब आप बुलायें तभी मैं आ जाऊंगी।' निर्विकार बदन में उल्लास लहरा उठा। युवक के मुँह से सहर्ष निकल पड़ा—'सच, नीलम !'

'खाना-पीना है? या बातों से काम निकल जायेगा।' आगन्तुक रमणी का कुछ तीव्र स्वर था क्षण भर के लिये निस्तब्धता-सी छा गयी। पर नीलम स्वयम् भी उठती हुई बोली—'हाँ जीजी! आज बड़ी देर हो गई। अच्छा रहा आप बुला भी लीं। चलिये।'

[२]

बड़ी-बड़ी घटनायें जीवन में होती हैं और उन की स्मृति धीरे-धीरे धुँधली हो जाती है किन्तु फिर ठेस लगते ही हृदय चूर-चूर हो जाता है। धीरे-धीरे पाँच वर्ष बीत गये। प्रतिभा रानी अब नीलम को भूल चुकी थी। पहले नीलम के पत्र आते रहे पर प्रतिभा के उत्तर न पा उसे मौन हो जाना पड़ा। प्रतिभा रानी की गोद में उसका अंचलधन चाँद-सा नन्हा अशोक नव उल्लास भरने के लिये पर्याप्त था। अपने माता-पिता की मृत्यु के पश्चात् उस पैतृक सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी प्रतिभा ने अपनी छोटी बहिन नीलम को अपने स्नेह से सींचा था। भोली-भाली नीलम यौवन की मादक घड़ियों में भी वही थी जैसी शैशव के भोले-भाले दिनों में होता है। पर उसकी जीजी का हृदय एक सन्देह से भर गया; क्या उसका पति अजीत, सुन्दरी चपला-सी चञ्चल नीलम को चाहता है? उसी के प्रेम में पली नीलम उसके जीवन में विष घोलने जा रही है।

छुट्टियों में आई हुई नीलम ने बिदाई के समय अपनी जीजी के गले में बाहें डाल कर पूछा—'क्या अपराध हुआ जीजी? यदि भूले से कुछ भूल हो गई हो तो माफ नहीं करोगी?'

प्रतिभा का रूखा-सा स्वर था—'कुछ तो नहीं, अपना-अपना भाग्य है मैं तुम्हारी तरह पढ़-लिख नहीं सकी।' नीलम कुछ समझी कुछ नहीं भी, पर निर्विकार नयनों से आँसुओं की धारा निकल पड़ी। वह उन्हें आँचल में छिपाती हुई चली गयी। अपनी प्रतिभा दीदी के लिये एक धुंधली-सी स्मृति छोड़कर।

[३]

'गाना सुनेंगे। गाना!' बच्चे को बहलाने के लिये प्रतिभा ने दिल्ली स्टेशन लगा दिया। पूर्वी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

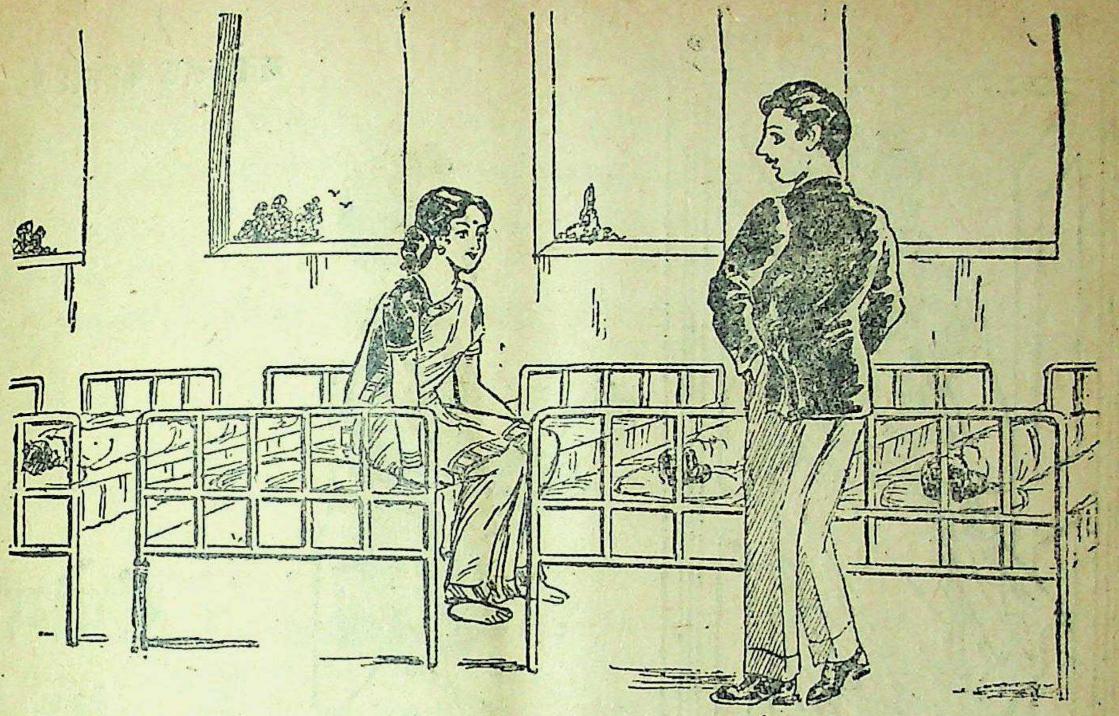

नीलम ने आंखें खोलीं तो देखा—'अजीत खड़े हैं।'

पञ्जाब और काश्मीर की खास खबरें हो रही थी।—'हिन्द सेना की डाक्टर नीलम सख्त घायल।'... समाचार को सुनते ही प्रतिभा के सामने अन्धेरा-सा छा गया। वह अचेत होकर भूमि पर गिर पड़ी। अजीत (प्रतिभा देवी के पति) ने उसे सम्हालते हुए कहा—'प्रतिभा! धैर्य से काम लो अभी श्री नगर चलते हैं।'

श्री नगर के हास्पिटल में नीलम ने आंखें खोलीं देखा तो अजीत खड़े हैं। कुछ ही क्षण बाद प्रतिभा ने भी प्रवेश किया। साथ में नव-विकसित पारिजात सा एक बालक भी। उसे एक बार विश्वास नहीं हुआ पर प्रतिभा उसकी शैया पर झुक कर बोली—'नीलम! जल्दी अच्छी हो जाओगी फिर घर चलेंगे।'

नीलम के आँसू बहने लगे। वह रुँधे हुए स्वर में बोली—'जीजी! मेरे जीवन के दो स्वप्न थे एक बचपन में शिक्षा प्राप्त करने की चाह और तुम्हारे सन्देह की घनमाला में चमकते नक्षत्र की भाँति देश की अर्चना में प्राण-प्रसून भेंट करने की आकांक्षा। मेरे जीवन की आशायें पूरी हो रही हैं दीदी! जाओ अपनी स्वर्णिम घड़ियों को न खोओ।' प्रतिभा ने अपनी सरला बहिन को पहिचान लिया वह कितनी पावन है। उसका हृदय पश्चात्ताप से भर गया। वह रुँधे हुए स्वर से बोली—'मेरा दोष था नीलम! मुझे क्षमा कर दे बहिन।' अजीत जो अब तक चुप थे प्रतिभा से बोले—'अब नीलम तुम्हारी नहीं, मेरी बहिन है तुम तो उसे सन्देह में खो चुकीं।' बहिन है मौछी (मौसी)! अशोक हर्ष के आवेग में चिल्ला पड़ा। सभी स्मिति की मधुरिमा में विभोर हो गये।

प्रतिभा के बालारुण रवि की रश्मियाँ खिल-खिला कर हँस पड़ीं। सन्देह की कालिमा सदैव के लिये लुप्त हो गई। नीलम के त्याग ने उसकी जीजी को उसके चञ्चल जीजा जी को मधुर स्नेह के सम्मुख नत कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरञ्जक कहानी

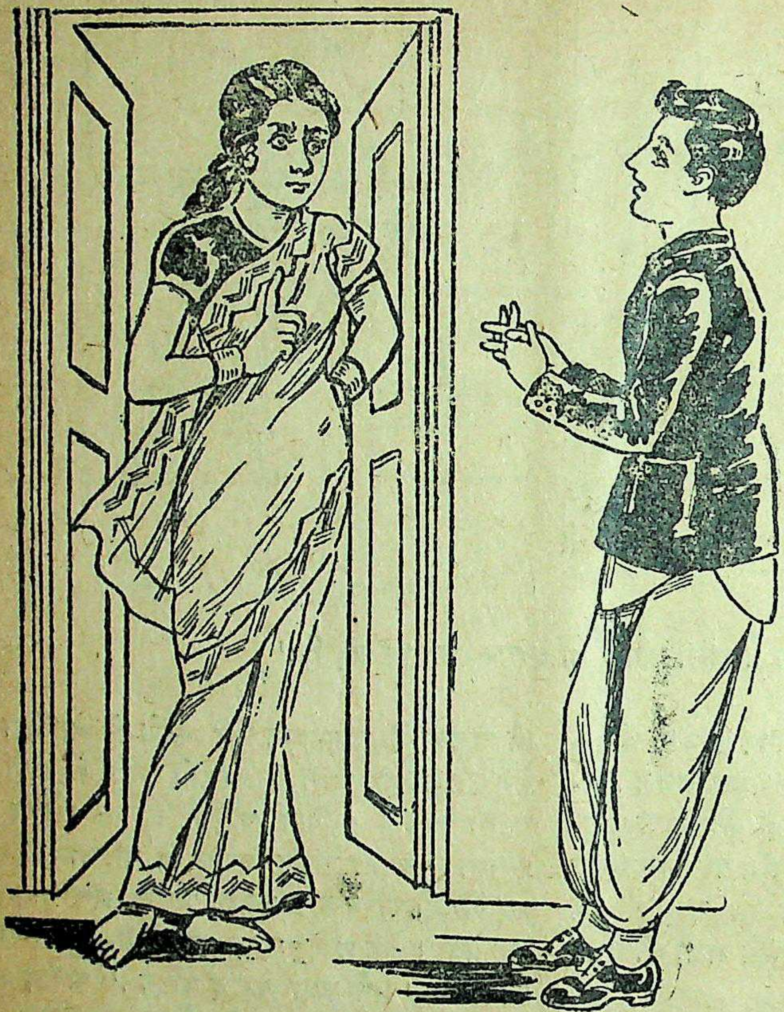

संयोग

लेखक,
श्री खगेन्द्रप्रसाद ठाकुर

'खबरदार जो और आगे बढ़े।'

[१]

कुछ वर्ष हुए मैं पटने से भागलपुर आ रहा था। पटना जंक्शन पर पहुँचा। गाड़ी खुलने ही को थी। एक मिनट की भी देर होती तो मैं गाड़ी नहीं पकड़ सकता। गाड़ी धीरे-धीरे बढ़ने लगी थी। इसी समय मैं लपक कर एक डिब्बे में घुस गया। परन्तु घुसने पर तो मेरा जी धक् से हो गया। एक शिक्षिता युवती आधुनिकता से लैश अकेली उस डिब्बे में बैठी थी। अब तो उस डिब्बे में बैठने के सिवा और कोई उपाय न था। उसी समय मेरे मुँह से निकल पड़ा—'माफ कीजियेगा, हड़बड़ में था इसीलिए दूसरे डिब्बे में न जा सका। अगले स्टेशन पर चला जाऊँगा।' यह कह मैं बैठ गया।

मैं कुछ थकावट अनुभव कर रहा था। इसीलिए आराम करना चाहता था। एक 'बर्थ' पर मैं अकेला था। मैं पैर फैलाने का विचार करने लगा। अपनी झोली को सर के नीचे रख कर मैं लेट गया और 'दीदी' के पन्ने उलटने लगा। मैं पढ़ने लगा, परन्तु बीच-बीच में यह भी देखना न भूला कि वह महिला महोदया मुझ पर नाराज तो नहीं हैं? परन्तु उनकी भाव-भंगिमा देख कर मैं समझने में असमर्थ ही रहा कि वे मुझसे नाराज थीं या प्रसन्न।

कुछ देर के बाद पढ़ना समाप्त कर उठ बैठा। इच्छा हुई कि डिब्बे के इस निस्तब्ध वातावरण को भंग किया जाय। परन्तु मैं अपने में उतना साहस नहीं पा रहा था कि मौन भंग कर सकता। परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इच्छा बलवती हो उठी। मैं पूछ बैठा—'आप कहाँ जायँगी ?' और सतृष्ण नेत्रों से उसकी ओर देखा।

परन्तु इसका उत्तर मुझे रुखाई से ही मिला—'इससे आपको मतलब ?'

'नहीं, कुछ नहीं, यों ही पूछ बैठा। क्या आप अकेली हैं ?'

'देखिये, इस तरह मुझे नाहक तंग करने की कोशिश न करें। मैं अकेली होऊँ या दुकेली इससे आपको क्या पड़ा है ?' क्रोधित होकर युवती ने कहा और मुँह फेर लिया।

तब तक एक स्टेशन पर गाड़ी जा रुकी। मुझे यहाँ उतरना नहीं था और दूसरे डिब्बे में भी नहीं जाना चाहता था। परन्तु वहाँ बैठ रहना भी जरा मुश्किल काम था। सोचा तब तक डिब्बे से उतर कर बाहर घूमा जाय। मैं उतर कर वहीं डिब्बे के दरवाजे पर टहलने लगा।

इसी समय एक ओर से एक चाय वाला लड़का आया। मैंने उस युवती की ओर देखा। वे शायद चाय वाले को बुलाना चाह रही थीं। मैंने पूछा—'क्या चाय वाले को बुलाना चाहती हैं ? बुला दूँ ?' इस बार वे कुछ क्रोधित मुद्रा में बोलीं—'तो क्या आप मेरा पीछा न छोड़ेंगे ?' मैं तो सकपका गया। मैं वहाँ से हट गया। उसने स्वयम् चाय वाले लड़के को बुलाया। उसने एक प्याला चाय खरीदी। पीने के बाद उसे पैसा देने लगीं। एक दुअन्नी नीचे गिर गयी। झट मैंने लपक कर उठा लिया और देते हुए कहा—'क्या पैसे कुछ अधिक हो गये हैं ? कुछ हमें दे दीजिये न !'

परन्तु इस बार तो मानों उनके क्रोध का बांध टूट गया और गरज ही पड़ीं—'आवारा !' अब तो मुझे वहाँ ठहरने का साहस नहीं हुआ। अपनी झोली उठायी और चला दूसरे डिब्बे में। परन्तु मेरा मन उसी डिब्बे में फँसा रहा।

गाड़ी भागलपुर जंक्शन पर आ लगी। मैं उतर पड़ा। सोचा, चलूँ एक बार 'उस' डिब्बे की ओर भी झांक लूँ। परन्तु ज्योंही आगे बढ़ा कि देखा 'वे' भी यहीं उतर रही थीं। मैं रुक गया। मन में ही खुश हुआ कि दोनों का गन्तव्य स्थान एक ही था।

मैं प्लेट फार्म से बाहर आया। बाहर आकर खड़ा-खड़ा राह देखने लगा कि वे कब निकलती हैं। बहुत देर तक ठहरने के बाद देखा कि वे आ रही थीं। वे बाहर आईं और एक रिक्शा पर बैठ कर चलीं। मैं भी एक रिक्शा पर बैठ गया और उसी के पीछे-पीछे चला। खैरियत यही थी कि उन्होंने मुझे देखा नहीं था। भागलपुर की सड़क पर रिक्शा बढ़ता जा रहा था। मेरा रिक्शा भी उसी के पीछे चल रहा था। अन्त में एक मकान के सामने वह रिक्शा रुका। मैं भी कुछ इधर ही उतर गया और रिक्शा वाले को लौटा दिया। युवती रिक्शा से उतर कर घर में घुस रही थी। मैं उस जगह पहुँच चुका था। मैंने कहा, 'जयहिन्द !' 'खबरदार जो और आगे बढ़े।' वह युवती रक्ताक्त नेत्रों से मुझे देखती हुई घर में घुस गई।

[२]

दो वर्ष बाद मैं एम० ए० कर चुका था। भागलपुर के ही कालेज में प्रोफेसर था। मैं अब तक अविवाहित था। मेरे घर में मेरी शादी की बात चल रही थी। मैं चाहता था उसी तरह की 'अप-टु-डेट' महिला से शादी करना। परन्तु पिता के सम्मुख यह कहने का साहस नहीं होता था। इसलिए विवश होकर मैंने विचार लिया कि अब जैसी भी लड़की हो, पिता जी की इच्छा के विरुद्ध न जाऊंगा। अतएव पिता जी ने अपनी इच्छा के अनुसार शादी ठीक कर ली।

शादी का दिन भी निश्चित कर लिया गया। उचित समय पर मैं घर पहुँचा। ठाट से शादी की तैयारी हो रही थी। ज्यों-ज्यों शादी का दिन निकट आता जाता, त्यों-त्यों घर में आनन्द छा रहा था मैं भी प्रफुल्लित था।

शादी का दिन आ पहुँचा। बारात के जाने की तैयारी होने लगी। बारात पास ही के एक गाँव को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाख-लाख रुपये का हुनर सिखाने वाली हिन्दी भाषा की प्रसिद्ध पुस्तकें

मोटर मिकेनिक गाइड ६)
साइकिल मरम्मत गाइड ३)
मिमारी शिक्षा (राजगीरी) १०)
गृह उद्योग—लगभग २५० घरेलू उद्योग-धन्धों का वर्णन ४)
अचार चटनी मुरब्बे बनाना ३।)
फिल्मी हार्मोनियम गाइड ३)
बूट पालिश बनाना ३।)
धुलाई ड्राई क्लीनिंग शिक्षा ३।)
सुगन्धित तेल व इत्र बनाना ३।)
पुराने छापे का असली इन्द्रजाल ३)
दक्षिण का जादू २।।)
बैट्री विज्ञान (बैट्रियाँ बनाना) २।।)
आयल इञ्जन गाइड ६)
क्रूड आयल इञ्जन गाइड ६)
घड़ी साजी शिक्षा ३।।)
फोटोग्राफी शिक्षा ३)
सरल हिन्दी इङ्गलिश टीचर २।।)

ताश के जादू तथा खेल २।।)
वशीकरण मन्त्र विद्या २।।)
वृहद् कोकशास्त्र सचित्र ४)
पहली सुहाग रात २।।)
रति रहस्य (कामकला) ४)
पति पत्नी पथ-प्रदर्शक ३)
असली तेजी मन्दी सट्टा ५)
एम्ब्रायडरी (कढ़ाई) शिक्षा ४)
बुनाई शिक्षा (स्वेटर आदि) ४)
मुँह देखने के शीशे बनाना ३।)
लव लैटर्स (प्रेम के गुप्त पत्र) २।।)
कारपेंट्री शिक्षा १०)
ज्योतिष शास्त्र ६)
पामिस्ट्री (हाथ रेखा ज्ञान) ६)
फिल्म एक्टिंग गाइड २।।।)
रेडियो गाइड ४।।)
क्रस्टल रेडियो सैट बनाना २)
वर्कशाप गाइड फिटर ट्रेनिंग ४)

खराद शिक्षा टर्नर गाइड ३)
कटाई सिलाई शिक्षा—हर प्रकार के नये-नये फैशनों के कपड़े काटना व सिलाई करना सीखिये ३)
इलैक्ट्रिक गाइड ६)
इलैक्ट्रिक वायरिंग ५)
बेकरी बिस्कुट आदि बनाना ३।)
रंग-बिरंगी आतिशबाजियाँ ३।)
आधुनिक साबुन शिक्षा ३।।)
हर प्रकार की स्याहियाँ बनाना ३।)
सरल उर्दू-हिन्दी टीचर २।।)
फिल्मी अप्सरा एलबम २।।=)
एलोपैथिक डाक्टर गाइड ५)
एलोपैथिक इन्जेक्शन बुक ५)
कम्पाउण्डरी शिक्षा ३।।)
वृहद् बूटी प्रचार (सचित्र) ३)
जर्राही प्रकाश ४।।)
आयुर्वेदिक चिकित्सा सागर ४।।)

—: प्रत्येक पुस्तक का डाक-व्यय पृथक है :—

पुस्तकें वी० पी० द्वारा मँगवाने का पता:— } काटेज इण्डस्ट्री (DA-4) पी०बी० १२६२ अंगूरी बाग, देहली—६

जाने वाली थी। उचित समय पर बारात चल पड़ी और उचित समय पर वहाँ पहुँच भी गयी।

मेरी शादी हो गई। मैं अपनी पत्नी को देखने के लिये उत्सुक था। उसी तरह, जिस तरह तीर छोड़ देने के बाद शिकारी यह देखने के लिए उत्सुकता से दौड़ता है कि निशाना ठीक बैठा या नहीं।

मैंने जब अपनी पत्नी को देखा तो हक्का-बक्का सा रह गया। साथ ही वह भी मुझे देख दंग और हैरान थी। मैंने हसते हुए कहा—'आखिर तक मैंने तुम्हारा पीछा न छोड़ा।' वह भी हँस पड़ी। यह ट्रेन वाली युवती थी।

[पृष्ठ २१७ का शेषांश]

घोड़ा दिया है और सखियों ने सेन्दुर से मेरी मांग भरी है।

नौ मन सोना ६ दिन ही चलेगा, लहँगा चुनरी फट जायँगे, तुरकी घोड़ा मेरे स्वामी दौड़ावेंगे और सेन्दुर मांग की शोभा बढ़ावेगा।

माता के रोने से नदी बह चली है, पिता के रोने से तालाब भर गया है, भाई का रोना देखा नहीं जाता। जी में आता है कि मर जाऊं पर स्वामी का मोह मरने नहीं देता। मेरा मन बड़ी दुविधा में है। कहारो! डोली धर दो। मुझे गाँव के लोगों को देख लेने दो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसोई

पोदीना का रायता

अंश—दही डेढ़ छटांक; प्याज १ छटांक, पोदीना १ छटांक, हरी मिर्च एक, बघार के लिए सरसों आधी चाय की चम्मच, घी एक चाय की चम्मच।

विधि—पोदीना धोकर काट लीजिये। एक देगची में घी गर्म कर लीजिये तथा प्याज, हरी मिर्च और सरसों के बीजों के साथ बघार तैयार कर लीजिये। कटा पोदीना तथा नमक मिला लीजिये अच्छी प्रकार मिला लीजिये तथा मुलायम होने तक पका लीजिये। ठंडा कर लीजिये, दही मिला लीजिये तथा अच्छी प्रकार मिश्रण कर लीजिये।

चने का दाल के बड़े

अंश—चने की दाल आधा सेर, प्याज आध पाव, अदरख आध इञ्च का टुकड़ा, हरी मिर्चें चार, नमक स्वाद के अनुकूल, धानये के पत्ते ६ डंठल, तेल या घी तलने के लिये।

विधि—चने की दाल को रात भर पानी में भीगने दीजिये। कुछ थोड़ पानी के साथ इसे मोटा पीस लीजिये। प्याज अदरख हरी मिर्च तथा धनिये के पत्तों को छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लीजिये, उन्हें पिसी हुई चने की दाल में मिला दीजिये, तथा स्वाद के अनुकूल नमक मिला दीजिये। अच्छी प्रकार मिला लीजिये तथा एक घंटे के लिए अलग रख दीजिये फिर उनकी छोटी-छोटी ल इयाँ बना लीजिये तथा फैला लीजिये, फिर तेल या घी में तल लीजिये जब तक सुनहरी भूरा रंग हो जाय।

आलू जलेबी

अंश—आलू एक पाव, शक्कर डेढ़ छटांक, घी एक छटांक, केसर एक रत्ती।

विधि—आलुओं को उबाल कर छील लीजिये तथा मथ लीजिये। अच्छी तरह आटे की भाँति सान लीजिये। सने हुए आटे को जलेबी के सांचे में रख दीजिये तथा जलेबियाँ निकाल कर घी में तल लीजिये। शक्कर की चिपकनी चासनी बना लीजिये, ताजे नींबू के रस से सुसज्जित कर लीजिये। जलेबियों को शक्कर की चासनी में रख दीजिये।

पपीते का मुरब्बा

अंश—पपीता आठ छटांक, शक्कर छः छटांक, पानी आधा प्याला।

विधि—पपीता छील कर छोटे टुकड़ों में काट लीजिये। शक्कर तथा पानी द्वारा हल्का शर्बत बना लीजिये। शर्बत में कटा हुआ पपीता मिला दीजिये और १० से १५ मिनट तक पका लीजिये। इसे ठंडा होने दीजिये तथा बोतल में भर दीजिये।

साबूदाना खिचड़ी

अंश—साबूदाना आध पाव, भुनी मूँगफली आध पाव, आलू आध पाव, हरा धनिया सुसज्जित करने के लिए, नमक स्वाद के अनुकूल।

विधि—आलू आधा उबाल लीजिये, छील कर टुकड़े कर लीजिये। साबूदाना धोकर आध घण्टे के लिये छोड़ दीजिये। भुनी हुई मूँगफलियों को चूर्ण कर ली जये। समस्त अंशों को मिला लीजिये तथा उन्हें नमक के साथ पका लीजिये। कटे धनिये से सुसज्जित कर लीजिये।

—अन्नपूर्णा पाकशास्त्र से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तिम दहेज

लेखिका, कुमारी शशि गुप्ता, आगरा

[१]

चाँद-सी चातुर्य-सी कुन्दन-सी
कलिका-सीयौवन की डाली पर,
पन्द्रह वर्षीय छवि रचना-सी खिल उठी।
ढूँढ़ने निकले वर, कन्या के पिता वृद्ध
इससे पूँछ, उससे कह।
अन्त में पा पता एक लड़के का,
तत्काल जा पहुँचे उसके पिता के पास।
सेठ जी बैठक में कुर्सी पर बैठे थे
बैठिये, कह कर उनको बिठाया फिर—
बोले वे सप्रेम तब—
'कहिये क्या काम है ?'
'सेठ जी ! कन्या का सम्बन्ध करना है,
आपके लड़के से।'

[२]

गम्भीर मुद्रा से रूखे से ओठों से,
सेठ जी बोले यह,
रिश्ते अनेकों ही आ रहे लड़के के,
कार वे देते हैं।
रेडियो वे देते,
देते वे दस हजार,
बीस हजार देते हैं।
वह लड़की बी० ए० है,
वह लड़की एम० ए० है।
देखिये, सम्बन्ध होता है किसके साथ।
कन्या के पिता ने एक लम्बी सांस ले
और फिर बोले वे
'जितना दहेज भी चाहोगे दूँगा मैं,
एक ही कन्या है,
शिक्षित है, सुन्दर है।'
सौदा सब होकर वह सम्बन्ध तय हुआ,

[३]

पहुँची बरात जब
सेवा-सत्कार में तत्पर थीं लक्ष्मी,
अन्नकूट उत्सव था
अन्नपूर्णा पूर्ण थी।
कन्या विदा के साथ
लादा दहेज जब—
देखने वाले सब—
कहते थे वाह ! वाह !
सोने के थाल थे,
चाँदी के थाल थे,
रेशम की साड़ियाँ,
हीरे के आभूषण,
यह भी था, वह भी था !
आखिर एक बण्डल-सा—
लड़की के बाप ने लड़की को दे दिया।
पूछा तब समधी ने—
'इसमें क्या चीज है ?'
कौतूहल छा गया,
भीड़ घिर आई थी,
लड़के के बाप ने खोला वह बन्डल।
दस गज के लगभग
कुछ कपड़ा पड़ा था मूक !
लड़की के पिता से लड़के ने पूँछा यह—
'पिता जी, यह क्या है ?'
उत्तर में तत्क्षण सुनाई पड़ा यह—
'लड़की का कफन है।
बेटी का मेरे यह अन्तिम दहेज है !!'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा

हमें यह लिखते हुए दुःख होता है कि चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा आज हमारे बीच में नहीं रहे। उनके निधन से हमारे सामने से एक आदर्श हट गया और हिन्दी का एक युग समाप्त हो गया।

उनके जैसा श्रमजीवी और स्वाभिमानी लेखक हिन्दी में दूसरा नहीं हुआ। जहाँ आज भी हिन्दी के अनेक महारथी इस बात के नमूना बने हुए हैं कि बिना सरकार या अन्य क्षेत्र से आर्थिक सहायता पाये हिन्दी लेखक जीवित नहीं रह सकता, चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा ने अब से ५० वर्ष पूर्व यह सिद्ध करके दिखा दिया कि हिन्दी लेखक अपने श्रम से जीवित रह सकता है और अपना स्वाभिमान भी कायम रख सकता है।

अपने जीवन के प्रारम्भ काल में वे स्थानीय सिविल सर्जन के आफिस में एक कर्मचारी थे। उस अवस्था में उन्होंने वारेन हेस्टिंग्स नाम की एक पुस्तक लिखी जिसमें महाराज नन्दकुमार को, जिन परिस्थितियों में उनके राजनैतिक आचरण के कारण, फांसी दी गई थी का विषद विवेचन किया और लिखा कि अँग्रेज सरकार भारत में ब्राह्मण की लाश पर कायम है। यह बहुत सख्त बात थी जो चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा ने लिखी थी। तथापि उनके अफसर उनकी कार्य व्यवस्था से इतने तुष्ट थे कि यदि वे इन पंक्तियों को वापस ले लेते तो शायद नौकरी पर कायम रह सकते थे। पर चतुर्वेदीजी जहाँ सिद्धांत का मामला था समझौता करना जानते न थे। फलतः उन्हें नौकरी छोड़नी पड़ी।

उसी घड़ी से उन्होंने लेखनी उठाई और हिन्दी भाषा और साहित्य की सेवा में लग गये। उन्होंने सैकड़ों ग्रन्थ लिखे और हिन्दी साहित्य का भण्डार भरा। उनके सरकारी नौकरी छोड़ने का दूसरा लाभ यह हुआ कि उनकी प्रबन्ध पटुता का लाभ हिन्दी साहित्य सम्मेलन को मिला। प्रबन्ध मन्त्री के रूप में उन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन में जो व्यवस्था चलाई वह आज भी कायम है और उसी का यह परिणाम है कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन अखिल भारतीय संस्था के रूप में विकसित हो सका है।

एक ऐसे समय में जब कि भारतवर्ष में महात्मा गांधी का बोल-बाला था, चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा भाषा और साहित्य के प्रश्न पर गांधी जी से भी लड़ गये। वे संस्कृत मिश्रित शुद्ध हिन्दी के पक्षपाती थे। गांधी जी का दृष्टिकोण कुछ भिन्न था। इन मतभेदों के परिणाम स्वरूप दोनों में संघर्ष हुआ और हिन्दी साहित्य सम्मेलन अखाड़ा बना।

चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा को सम्मेलन छोड़ना पड़ा। परन्तु गांधी जी से साहित्य सम्बन्धी मतभेद का जो बीज उन्होंने सम्मेलन में बोया था वह पनपा और अन्त में सम्मेलन में गांधी जी की विचार धारा का इतना विरोध हुआ कि गांधी जी को भी सम्मेलन से हट जाना पड़ा।

अँग्रेजी राज्य में और उसके बाद भी अपने आदर्शों और मंतव्यों के लिये चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा को बड़े जोखिम उठाने पड़े पर उन्होंने झुकने के बजाय उनका स्वागत करना ही श्रेयस्कर समझा।

वे कई पुत्र, पौत्र, बन्धु-बान्धव छोड़ कर अपना समस्त कार्य पूरा करके मरे हैं। उनकी जैसी मृत्यु बड़े भाग्य और तप से ही सम्भव हो सकती है। तथापि उनके निधन से हमें शोक होता है क्योंकि हमारे बीच से हिन्दी का एक बीर सेनानी उठ गया।

उनके पुत्रों में श्रद्धेय पंडित श्री नारायण चतुर्वेदी से अखिल हिन्दी जगत परिचित है। उच्च सरकारी आफिसर के अतिरिक्त वे एक श्रेष्ठ कवि और लेखक हैं। हिन्दी जगत पर उनका बड़ा प्रभाव है।

[शेष २२६ पृष्ठ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-साहित्य

खंडहर का देव

लेखक, श्री गोपलदास चौधरी

बहुत दिनों की बात है, एक खंड्हर था। वह बहुत पुराना था। उसका रंग काला तथा देखने में भयङ्कर था लोग कहा करते थे कि उसमें धन बहुत है। खंड्हर में एक देव रहता था धन की लालच में जो खंड्हर में जाता, देव उस को मार डालता। उस खण्डर के पास एक गांव था। गांव में दो मित्र रहते थे, एकका नाम था रमेश दूसरे का नाम था सुरेश। एक दिन रमेश खंड्हर में जाने के लिये तैयार हुआ। सुरेश के मना करने पर भी न माना। जब वह उस खंड्हर के अन्दर पहुँचा उसे हड्डियां दिखाई पड़ीं। सहसा एक काला हाथ बढ़ा और उसे पकड़ कर एक बड़े पत्थर से दबा दिया।

कुछ दिन बीत गये। रमेश वापस नहीं आया। सुरेश को बड़ी चिन्ता हुई। वह उस खंड्हर में जाने के लिए तैयार हुआ। जब वह खंड्हर के अन्दर पहुँचा तो हड्डियों को देखकर कांप गया। लेकिन वह आगे बढ़ता गया। सहसा एक आवाज सुनाई पड़ी—'तुम यहां क्यों आये हो।' सुरेश ने कहा—'मैं अपने मित्र की खोज में आया हूँ।'

'तब पुनः आवाज हुई। ठहर तुझे मैं मजा चखाता हूँ।'

काला हाथ आगे बढ़ा। वह हाथ सुरेश को मरोड़ने लगा।

तभी मधुर आवाज सुनाई पड़ी—'हाथ में जो अँगूठी है उसको निकाल लो।

सुरेश ने उंगली से अगूँठी निकाल ली। जिससे राक्षस मर कर गिर गया। फिर वही शब्द सुनाई पड़ा—'हमें यहां से निकालो।' सुरेश कुछ देर तक इधर उधर देखता रहा। बाद को पता चला कि उस पत्थर के नीचे से आवाज आ रही है। सुरेश ने उस पत्थर को हटाया तो देखा कि उसका मित्र रमेश पड़ा था। दोनों गले मिले। रमेश ने सुरेश से कहा—'शाबाश तुमने राक्षस को मार दिया।'

सुरेश ने कहा—'तुम्हें यह रहस्य कैसे मालूम हुआ।'

रमेश ने कहा—'मैं पत्थर के नीचे पड़ा-पड़ा सब हाल जान गया था! दोनों बहुत खुश हुए। वहां का सारा धन ले जाकर आपस में बांट लिया।'

पहेली

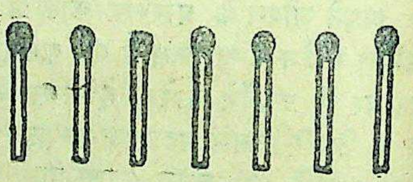

यहाँ सात दिया सलाइयाँ रखी हुई हैं। इनको फिर से इस तरह रखो कि ये नौ हो जायें। पर शर्त यह है कि न किसी को तोड़ो न इनमें कोई और जोड़ो।

उत्तर

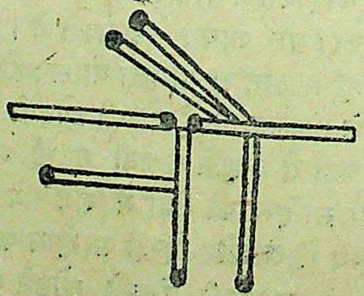

सात दियासलाइयाँ इस प्रकार नौ हो गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुन्नी की गाड़ी

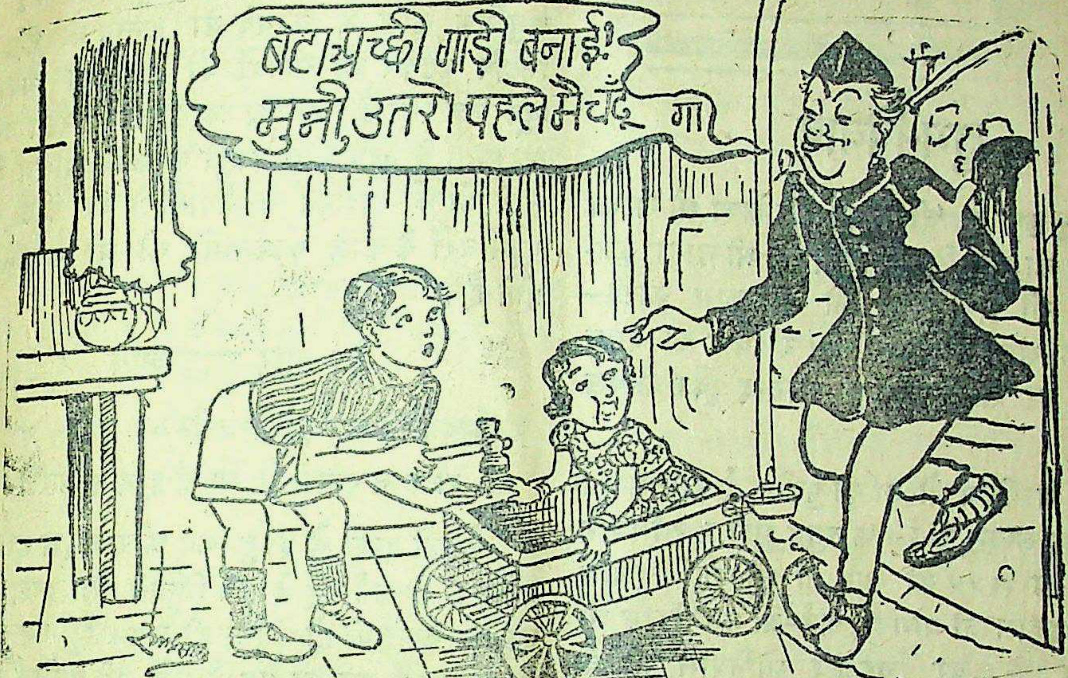

भाई ने छोटी बहन मुन्नी के लिए एक गाड़ी बना कर तैयार की। मुन्नी उस परबैठी ही थी कि पिता जी आ गये। उन्हें गाड़ी पसन्द आ गयी! बोले–'शाबाश बेटे! इस गाड़ी पर मुझे बैठाल कर घुमाओ। मैं चारों तरफ तुम्हारी तारीफ का ढिंढोरा तो पीट दूँ।'

पिता जी गाड़ी में बैठ गये। मुन्नी रोने लगी। भाई कहता ही रह गया कि अभी साइन बोर्ड लगाना बाकी है।

भाई ने कील पर जो हथौड़ा मारा तो कील पिता जी की पीठ में चुभ गई। अब तो मुन्नी मुस्कराने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध-विषय

शुभ-विवाह

❀प्रभु कृपा से 'दीदी' की संरक्षिका श्री सरला देवी पटेल का शुभ विवाह बाँदा में श्री नागर वृज-रतनदास जी छबीलदास जी बी०-काम काशी-निवासी के साथ ता० ७-३-५४ रविवार को शाम को ६-१८ पर शांति पूर्वक व आनन्द पूर्वक सम्पन्न हुआ।

❀ सेठ भागीरथ मोहता की पुत्री बाई शान्ता का शुभ-विवाह सम्वत् २०१० फाल्गुन सुदी २ शनिवार ता० ६ मार्च १९५४ को साहु जी श्री गोविन्दलाल जी नरसिंहदास जी बांगड़ (फर्म-श्री मगनीराम जी रामकुमार) के कुँवर चिरंजीव श्रीनिवास जी के साथ मोहता हाउस कलकत्ता में सम्पन्न हुआ।

❀श्री हरिप्रसाद फोगला (तिनसुकिया, आसाम) की द्वितीय पुत्री आयुष्मती मुन्नी बाई का शुभ-विवाह रतनगढ़ निवासी श्रीमान् साहु द्वारामल जी वाजोरिया काकोटीवाड़ी के सुपुत्र चि० वृजमोहन जी वाजोरिया के साथ फाल्गुन शुक्ला षष्ठी बुधवार सं० २०१० तदनुसार दिनांक १०-३-५४ ई० को सानन्द सम्पन्न हुआ।

आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ोदा

आर्य कन्या महाविद्यलय, बड़ोदा के वार्षिक उत्सव के अवसर पर अमलनेर निवासी, श्रीमंत प्रताप सेठसाहब ने जो अध्यक्षीय भाषण दिया उसका एक अंश यह है :—

पूर्वकाल में भी चोरी, डाके लूटमार इत्यादि बातें हुआ करती थीं लेकिन उनमें भी एक प्रकार की मर्यादा का पालन किया जाता था। वह यह कि इन सब बातों में भी स्त्रियों की इज्जत आबरू की पूरी पूरी रक्षा की जाती थी। पर स्त्री को माता के समान समझा जाता था। परतु आजकल के तथाकथित सुधार में युग में ये सब बातें उलट गई हैं। आधुनिक काल में कायदे या कानून की दृष्टि से निर्दोष रहकर भी गरीबों को लूटने का व्यवसाय खूब चल रहा है। अनाथ अबलाओं की रक्षा उनकी सहायता के लिये चंदा इकट्ठा करके विधवाश्रम जैसी संस्थाओं को स्थापित करनेवालों के घरों के तहखाने कुट्टनीघरों के काले कारनामों को भी लजानेवाले होते हैं।

वेद और आय-व्यय

अथर्ववेद का एक मन्त्र है—

शतहस्त समाहार सहस्र हस्त संकिर।

सैकड़ों हाथों से इकट्ठा कर और सहस्र हाथों से बखेर। तात्पर्य यह है कि जितनी तीव्र इच्छा धन एकत्रित करने की हो उतना ही उत्तम है, परन्तु उस का लालच न कर. अपितु उससे भी अधिक मात्रा में बिना उसका लोभ किये उसे जहाँ आवश्यकता हो, आँख मूँद कर दे डाल। (आय मित्र से)

अफीम से मृत्यु

मथुरा सदर अस्पताल में एक चौबे बालिका की मृत्यु हो गई। उसकी मां के पास न पहुँचने देने के लिये उसे अफीम दी गई थी ताकि वह अलग नशे में पड़ी रहे। परन्तु वह सदैव के लिये सो गयी।

(सैनिक, आगरा)

सूखा रोग

कत्था और चूना लगा हुआ बँगला पान, ५ लौंग तीन छोटी इलायचियों के दाने और मकोय की पत्ती पीस कर गरम करे और रोगी लड़के की पीठ पर लेप करे तो सूत के से सफेद कीड़े निकलेंगे। उन्हें अलग कर शुद्ध कड़ुवा तेल लगा दे। यह प्रयोग रविवार और मङ्गल को करे।

—'सुधानिधि' से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिशु के रोने का अर्थ

१—यदि बच्चा दूध पीने के बाद चुप हो जाय तो समझना चाहिए कि बच्चा भूख से रो रहा था परन्तु यदि दूध पीने के बाद भी रोवे अथवा दूध न पिये तो समझना चाहिए कि बच्चे को कोई रोग है।

२—पैदा होने के बाद तुरन्त श्वास कष्ट के साथ रोने का अर्थ है कि बच्चा कमजोर है या दम घुटता है अथवा मूर्छा की अवस्था है।

३—तेज जल्दी-जल्दी दुःख पूर्ण रुदन के साथ यदि बच्चा पैर मोड़ ले तो समझना चाहिए कि पेट में दर्द है।

४—थोड़ी-थोड़ी देर बाद रोना, सर पटकना, किसी के पास जाने से डरना यह प्रदर्शित करता है तो कान में दर्द है। इसके लिये दोनों कानों को बारी-बारी से हलके से दबाना चाहिए। जिस कान में दर्द होगा उसे छूते ही बच्चा बहुत जोर से चिल्लाने लगेगा।

५—यदि बच्चा मुँह में उँगलियाँ भरकर रोवे, काटने की कोशिश करे तो समझना चाहिए कि दाँत निकलने का दर्द है।

६—खाँसने के साथ-साथ रोने से समझना चाहिए कि सीने में दर्द है।

७—वमन करने की कोशिश के साथ रोने से समझना चाहिए कि बद-हजमी तथा पेट में दर्द है।

८—बिना कारण बच्चा रोवे और लेटना चाहे तो समझना चाहिए कि सोना चाहता है।

(संकलित)

मरते समय क्या कहा ?

नीचे हम कुछ महान् व्यक्तियों के मृत्यु-क्षण के अन्तिम बचन दे रहे हैं—

डा० विलियम हण्टर—'अगर इस वक्त कलम पकड़ने की ताकत होती तो मैं लिखता कि मरना कितना उल्लासप्रद और कितना आसान है।'

एडगर एलन पो—[प्रसिद्ध अमेरिकन कथाकार] भगवान्, मेरी आत्मा को सन्तोष दो।'

हेनरी थोरी—[अमेरिकन विचारक] 'मुझे यह संसार छोड़ने में कुछ भी पश्चाताप नहीं है।'

गेटे—[जर्मन महाकवि] प्रकाश! और अधिक प्रकाश !!'

ओ हेनरी—[प्रसिद्ध अमरिकन कहानी लेखक] 'बत्तियाँ जला दो, मैं अन्धेरे घर में नहीं जऊँगा।'

राबेलाय—'अच्छा भाई, पर्दा गिरता है। प्रहसन खत्म हुआ।'

स्वामी दयानन्द-'ईश्वर! तेरी इच्छा पूर्ण हो।'

महात्मा गाँधी—'हे राम!'

—जीवन दास गुप्त 'सिजारिया'

—चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा—

[पृष्ठ २२५ का शेषांश]

उन्होंने हिन्दी के लेखकों की बड़ी मदद की है।

पितृ-वियोग के इस दुखद अवसर पर हम पं० श्री नारायण चतुर्वेदी और परिवार के समस्त जनों के प्रति हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं। स्वर्गीय द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी तो विष्णु लोक में गये। उन की पुण्य स्मृति दुख के क्षणों में प्रत्येक हिन्दी लेखक को नित नूतन बल देती रहेगी और हिन्दी साहित्य जगत को आलोकित करती रहेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीदी की फाइल

दीदी की सन् १९५३ की बारहों मास की पूर्ण फाइल

६) रुपये में प्राप्त कीजिये। इस फाइल में 'दीदी' का गृह-प्रबन्ध अङ्क भी है, जो अलग से नहीं मिल सकता।

मैनेजर दीदी कार्यालय

इलाहाबाद—२

हर भाषा में कच्ची-पक्की दीवार पर सुन्दर विज्ञापन के लिए लिखें

विश्व-बन्धु आर्ट

पता—विश्वबन्धु—मु० धरतीपुर विरुयां
पो०—गम्भीरपुर, (जिला आजमगढ़)
यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप विलास कम्पनी कानपुर की स्त्रियों के लिये सर्वोत्तम शक्तिवर्धक औषधियाँ

नारी संजीवनी

स्त्रियों का प्रदर रोग स्त्रियों के स्वास्थ्य और सौन्दर्य का भयानक शत्रु है। इस बीमारी से पीड़ित होने वाली स्त्रियों के पेट, पीठ, कमर, रीढ़, सिर में दर्द, शरीर में जलन, मन मलीन, उठने बैठने में थकावट, भूख न लगना, बदन दुबला और कमजोर हो जाना, मासिक धर्म का ठीक समय पर न होना, सन्तान न होना, हिस्टीरिया आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं और धीरे धीरे स्त्री के यौवन का खात्मा हो जाता है। भारत के विख्यात वैद्यरत्न श्री सत्यदेव जी के ३० वर्ष में अनुभव में आई हुई नारी संजीवनी सब प्रकार के स्त्री रोगों की एक मात्र दिव्य औषधि है जिसके द्वारा आज तक सहस्रों स्त्रियों को भयानक रोगों के पंजे से छुड़ाया है।

कीमत फी शीशी ३=) तीन रुपया दो आना। दो का दाम छै रुपया। डाक खर्च अलग।

गर्भदाता रसायन

अगर विवाह को हुये कई वर्ष हो गये हैं अथवा किसी अज्ञात कारणवश सन्तान नहीं होती है तो ऐसी अवस्था में गर्भदाता रसायन सेवन करा कर संतान सुख दीजिये। जो स्त्रियाँ संतान न होने से निराश हो चुकी थीं वे अब बच्चे की माँ हैं। यदि आपके सन्तान नहीं होती अथवा खंडित हो जाती है तो इस दवा की परीक्षा अवश्य कीजिये। कीमत एक शीशी ४।=) चार रुपया छै आना। डाक व्यय अलग।

रजस्वलोना

रुके हुये मासिक धर्म को बिना कष्ट व दर्द के जारी कर देता है। गंदे खून के रुकने से अनेक बीमारियाँ तो हो जाती हैं, किन्तु सन्तान भी नहीं होती है। इससे बगैर तकलीफ के रज जारी हो जावेगा और स्त्रियां गर्भ धारण योग्य हो जाती है। गर्भवती स्त्रियाँ इसे सेवन न करें। कीमत एक शीशी ५॥) पाँच रुपया आठ आना। डाक व्यय अलग।

रूपविलास

मुँह से बदनुमा दाग, झाँई, फुन्सी, खुश्की, बदरौनकी, झुर्रियाँ, मुहाँसा, चेचक के काले २ दाग आदि दूर होते हैं। शादी के पहले वर-वधू की शोभा बढ़ाने के लिये रूप विलास भेंट कीजिये। इससे भद्दे पुराने चमड़े से छिपी हुई सुन्दरता निखर कर असली सुन्दरता चमक उठेगी। यह स्त्रियों और पुरुषों के दिल खुश करनेवाली मनमोहनी दवा है। कीमत एक डिब्बी २) दो रुपया। डाक व्यय अलग।

मँगाने का पता—रूप विलास कम्पनी नं० ४३९ धनकुट्टी, कानपुर

पत्र लिखते समय 'दीदी' का हवाला दें!

सफेद कोढ़ की पेटेंट दवा मूल्य ५) रुपया

विवरण पत्र मुफ्त मँगावें।

वैद्य बी० आर० बोरकर, आयुर्वेद भवन
मु० पोस्ट मँगरूलपीर, जिला—अकोला
(बेरार) मध्य प्रदेश

'दीदी' के संरक्षक बनिये!

१००) या अधिक भेज कर 'दीदी' के संरक्षक बनिये। ५ वर्ष बाद यह रकम आप वापस पा सकेंगे और जब तक यह रकम वापस न पायेंगे पत्रिका आपको निःशुल्क मिलती रहेगी। साथ ही 'दीदी' के पृष्ठों में उपयुक्त स्थान पर संरक्षक के रूप में आपका नाम छपता रहेगा।

—सञ्चालिका 'दीदी'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

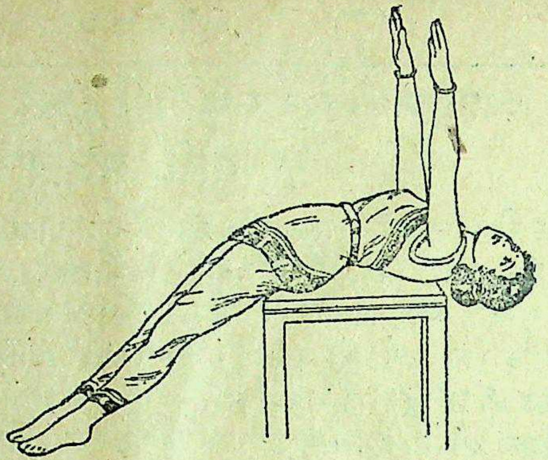

स्वास्थ्य और सौंदर्य ॥)

इस पुस्तक में चित्रों सहित वे सब व्यायाम बताए गए हैं जिनको अपने एकान्त कमरे में ५ से १५ मिनट तक रोज करके स्त्रियाँ पूर्ण स्वस्थ और सुन्दरी बन सकती हैं। इसके अलावा इसमें सौंदर्य वृद्धि की ओर भी ऐसी बहुमूल्य सलाहें दी गई हैं जो आपको अन्यत्र न मिलेंगी।

केश विन्यास ॥)

यदि कोई कहे कि बालों को धन्नी में बाँध कर झूलने से वाल बढ़ेंगे तो स्त्रियाँ अपने बालों को बढ़ाने के लिए यह कष्टकर उपाय करने को तैयार हो जायेंगी। जैसा कि नार्वे की यह स्त्री कर रही है। परन्तु यदि आप यह पुस्तक पढ़ें तो सहज ही केश रहस्य समझ जायेंगी और आपके केश सघन, सुचिक्कन और दीर्घ हो जायेंगे।

१) मनिआर्डर से भेज कर दोनों पुस्तकें घर बैठे मँगाइए। वी० पी० नहीं भेजी जायगी।

पता—'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीदी के संरक्षक

१—श्रीमती राजकुमारी ठोलिया, उज्जैन २००)
२—श्री मुकुटविहारीलाल श्रीवास्तव, बिरलापुर २००)
३—कुमारी कमल सहाय, आरा २००)
४—श्री हेमप्रभादेवी तापड़िया, जसवन्तगढ़ १५०)
५—श्री सरलादेवी मेहता, बांदा १२८)
६—श्री सेठ बल्देवदास मूँधड़ा, कलकत्ता १००)
७—श्रीमती स्नेहलता नेवाटिया, बम्बई ”
८—श्रीमती चन्द्रावती एस० कानोडिया, बम्बई ”
९—श्रीमती सरलादेवी डागा, कलकत्ता ”
१०—श्रीमती निर्मला गोबिल, आगरा ”
११—श्री रानी लक्ष्मीकुमारी चूड़ावत, रावतसर ”
१२—श्रीमती सावित्री बाँगड़, कलकत्ता ”
१३—श्री विन्दुवासिनीदेवी सकलानी, देहरादून ”
१४—श्रीमती कृष्णादेवी मन्त्री, बम्बई ”
१५—श्रीमती मोहिनी तापुड़िया, बम्बई ”
१६—कु० अरुणा कुमारी जायसवाल, हैदराबाद ”
१७—श्रीमती रतनदेवी सुखानी झुमरी तलैया २००)

'दीदी' के नियम

(१) 'दीदी' मासिक पत्रिका है। इसका वार्षिक मूल्य ६) और एक प्रति का ।|) है। वार्षिक मूल्य कार्य्यालय में पहुँचते ही ग्राहक का नाम रजिस्टर में दर्ज हो जाता है और पत्रिका जानी शुरू हो जाती है।

(२) रुपया पैसा, वार्षिक मूल्य और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र आदि प्रेमलता देवी संचालिका 'दीदी' कार्य्यालय, इलाहाबाद—२ के पते से भेजना चाहिए।

(३) पत्र-व्यवहार करते समय ग्राहकों को अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये। पत्र-व्यवहार का पता यह है—संचालिका 'दीदी' कार्य्यालय, इलाहाबाद—२।

(४) 'दीदी' हर महीने में पहली तारीख को प्रकाशित हो जाती है। पहली तारीख के आसपास यदि 'दीदी' आपको न मिले तो आपको तुरन्त अपने डाकघर से पूछना चाहिये। अगर पता न लगे तो १५ तारीख के भीतर संचालिका 'दीदी' इलाहाबाद को लिखना चाहिये।

(५) यदि एक-दो मास के लिये पता बदलवाना हो तो डाकखाने से प्रबन्ध कर लेना चाहिए। यदि साल भर या अधिक काल के लिये पता बदलवाना हो तो उसकी सूचना मय ग्राहक नम्बर के हमें देनी चाहिये।

(६) लेख, फोटो, बदले के पत्र, समालोचना के लिये पुस्तकें सम्पादक 'दीदी' इलाहाबाद के पते से भेजना चाहिये।

(७) न छपने की हालत में वे ही लेख वापस किये जायँगे जिनके साथ आवश्यक स्टाम्प होगा।

(८) 'दीदी' में विज्ञापन छपाना हो तो उसके नियम अलग से मँगावें। पर यह ध्यान रखें, 'दीदी' में अश्लील व झूठे विज्ञापन नहीं छापे जाते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

DIDI -/8/- April 1954 Regd. No. A—691

'दीदी' का आत्म-कथाङ्क

इस वर्ष जनवरी में प्रकाशित हुआ है जो अभूतपूर्व प्रकाशन है। ये आत्म-कथाएँ नारी जीवन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डालती हैं। ये तिलिस्म से भी अधिक रहस्य पूर्ण, उपन्यास से भी अधिक रोचक और धर्मोपदेश से भी अधिक शिक्षाप्रद हैं। कुछ शीर्षक ये हैं :-

१—मेरा प्रदर रोग कैसे अच्छा हुआ ?
२—मेरे सन्तान नहीं होती थी, कैसे हुई ?
३—मैंने पति को कैसे वश में किया ?
४—मैं सुन्दरी किस तरह बनी ?
५—मेरा हिस्टीरिया कैसे दूर हुआ ?
१२—पवित्र विधवा जीवन मैंने कैसे बिताया ? इत्यादि ।

यदि आप 'दीदी' के ग्राहक न बन सकें तो भी यह आत्म-कथाङ्क तो मँगा कर रख ही लें। इसका मूल्य १) रुपया है। परन्तु जनवरी सन् ५४ से ग्राहक बनने वालों से अलग से इसका मूल्य नहीं लिया जायगा।

पता—मैनेजर 'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद—२

आपका बच्चा बहुत प्रसन्न होगा ! यदि आपकी डाक में उसे

बा ल बो ध

की एक प्रति मिलेगी !

बालबोध, श्रीनाथसिंह द्वारा संस्थापित छोटे बच्चों का कहानियों आदि का मासिक पत्र है। अपने प्यारे बच्चे के नाम प्रतिमास इसे डाक से पहुँचने दीजिये।

बालबोध का वार्षिक मूल्य सिर्फ ३) रु० है। यह रकम मनिआर्डर से भेज कर आप निश्चिन्त हो जाइये और शेष काम हमको करने दीजिये। नमूने की प्रति मुफ्त मँगाइये।

मैनेजर—'बालबोध', इलाहाबाद—२

मुद्रक और प्रकाशक श्रीनाथसिंह 'दीदी' प्रेस, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

91

में किया?
बनी?
र हुआ?
मैंने कैसे
क न बन
तो मँगा
१) रुपया
े ग्राहक
ा मूल्य

३६
२-५-५४
२६८८१
२५.२.७१

महिलाओं की पत्रिका

मई, १९५४

दीदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीदी

प्रधान सम्पादिका
श्रीमती यशोवती तिवारी

सम्पादिका-समिति
महा माननीया श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित
रानी लक्ष्मीकुमारी रावतसर
श्रीमती रत्नकुमारी एम० ए०
श्रीमती कमला शिवपुरी बी० ए०, बी० टी०
श्रीमती चन्द्रकान्ता जेरथ बी० ए०
श्रीमती रजनी पनिकर एम० ए०
कुमारी विद्यावती साहित्य रत्न

प्रबन्ध सम्पादक—श्री श्रीनाथसिंह

पत्र व्यवहार का पता—
प्रेमलता देवी संचालिका 'दीदी' कार्यालय
इलाहाबाद नं० २

विषय-सूची

कहानियाँ

१—वशीकरण-विद्या ... २३४
२—चार दिनों की चाँदनी [श्री रमेश धाकर बी० ए०, बी० टी०] ... २३७
३—तमाचा [श्री श्यामनन्दन प्रसाद 'श्याम'] २४५
४—अपना घर [श्री अश्विनीकुमार सक्सेना] २५२
५—बड़ा बाबू [श्री नन्दलाल गंगोपाध्याय] २६०
६—सम्वाद दाता [डा० हरिनन्दन पांडेय] २६१
७—शायद हम तुम फिर मिलें [श्री श्रीनाथ-सिंह] २६७
८—स्मृति [श्रीमती अमिता कुमारी बोस] २७६

लेख

१—अकेली स्त्री के पीछे गुण्डे [कुमारी लज्जा-वती देवी] २४१
२—स्वास्थ्य की अग्रदूती—नर्स ... २६४
३—समय की समस्या [कुमारी सुशीला कुमारी] २६६

कविताएँ

१—गीत [श्री कृष्णकान्त श्रीवास्तव 'कन्हैया'] २४०
२—जग जननी गौ... [कुमारी वेदवती शुक्ला, वर्धा] २५६
३—दो गीत— २७६

फुटकर

१—नैपोलियन और एक वृद्धा ... २३६
२—एक सुन्दर नमूना ... २४४
३—साड़ियों के पुराने बार्डर ... २६३
४—आज के बच्चे कल के भारत हैं ! [श्री जवाहरलाल नेहरू] ... २६५
५—घरेलू नुस्खे [श्री लेखराज नन्दा एम० ए० एल० टी०] ... २७८

स्तम्भ

१—अपने विचार २३३
२—शिशु पालन के प्रयोग ... २७४
३—रसोंई २७५
४—प्रश्न पिटारी २८०
५—बाल साहित्य २८२
६—विविध विषय २८३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलाहाबाद
मई, १९५४

वर्ष १५
संख्या ५

दीदी

महिलाओं की पत्रिका

'दीदी' के पिछले दो एक अङ्कों में ऐसी बातें छपी हैं जिन पर अनेक पाठकों और 'दीदी' के शुभ चिन्तकों ने आपत्ति की है। उनका कहना है कि 'दीदी' उच्च आदर्शों से युक्त भारतीय महिलाओं की पत्रिका है। उसमें चारित्रिक दुर्बलता की बातें कदापि न छपनी चाहिए। इस तर्क में बल है और हम इसका स्वागत करते हैं।

यह होते हुए भी हम कहना चाहते हैं कि आधुनिक सामाजिक वातावरण इतना विषाक्त हो उठा है और होता जा रहा है कि भले आदमियों के लिए यह एक पहेली बन गया है कि उससे कैसे बचें। सिनेमा में जाइए तो गन्दे दृश्य देखिये और गन्दे गाने सुनिये, रेडियो खोलिए तो उसमें भी गन्दे गीत सुनाई पड़ते हैं, पत्र-पत्रिकायें उलटिये तो गन्दी कहानियों से पूर्ण मिलेंगी। तब क्या किया जाय?

निश्चय ही देश में ऐसे लोगों की एक संख्या है जो हर प्रकार की गन्दगी से दूर रहना चाहते हैं। 'दीदी' के पाठक-पाठिकाओं में ऐसे ही लोग अधिक हैं। अतएव 'दीदी' में इस प्रकार के साहित्य का विरोध भी उन्हें पसन्द नहीं आता, क्योंकि विरोध भी तो पाठक का ध्यान भ्रष्ट साहित्य की ओर आकृष्ट करता ही है।

इस दृष्टि कोण से सर्वथा सहमत होते हुए भी जनता को सावधान करने के लिए कभी-कभी गन्दे प्रसंगों की चर्चा करनी ही पड़ती है जैसा कि मार्च के अङ्क में 'कल्याण' को करनी पड़ी। 'कल्याण' में एक सच्ची कहानी छपी है जिसमें धर्म के नाम पर पाप करने वाले एक महात्मा का जिक्र है कि किस प्रकार भगवान बन कर श्रद्धा से अपने समीप आने वाली महिलाओं का वे धर्म बिगाड़ते हैं। हमारा ख्याल है कि ऐसे महात्मा का भण्डा-फोड़ करके कल्याण ने जनता की बड़ी सेवा की है। 'दीदी' में भी जो दो एक ऐसे प्रकरण छपे हैं, इसी दृष्टिकोण से छपे हैं।

संरक्षिका बनीं

श्रीमती आकाश कामिनी अग्रवाल 'दीदी' की संरक्षिका बन गयी हैं। ये श्री प्रताप नारायण अग्रवाल (आगरा) की पत्नी हैं। प्रारम्भ से ही ये 'दीदी' पर कृपालु रही हैं। 'दीदी' कर्जकोष में इन्होंने २००) रुपये की निधि दी थी। उसी को अब इन्होंने संरक्षण निधि में कर देने की आज्ञा दी है।

संरक्षक बने

श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी करहल (मैनपुरी) १००) रुपया भेज कर 'दीदी' के संरक्षक बन गये हैं। इस कृपा के लिए हम चतुर्वेदी जी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

'दीदी' के इस अङ्क में कुमारी लज्जावती ने अपने निजी अनुभवों के सहारे लिखा है कि घर से बाहर अकेली निकलने वाली स्त्रियाँ गुण्डों से अपनी रक्षा कैसे कर सकती हैं। इस लेख की ओर प्रत्येक स्त्री का ध्यान जाना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वशीकरण-विद्या

'प्रयाग मोक्ष' नामक प्राचीन ग्रन्थ में वर्णित रानी घृतकुल्या का उपदेश

उन दिनों राजाओं और अन्य सम्पन्न जनों में बहु-विवाह की प्रथा थी और उनकी सपत्नियों में परस्पर इतनी ईर्षा रहती थी कि वे सभी पति को अपने अनुकूल बनाये रखने के लिये वशीकरण का प्रयोग करती थीं। इस प्रकार वशीकरण की एक विद्या ही चल पड़ी थी जिसमें मन्त्र और औषधि प्रयोग दोनों ही था।

रानी घृतकुल्या पति पर इस प्रकार के प्रयोगों के विरुद्ध थीं। सम्भवतः वे पहली नारी थीं जिन्होंने बहु-विवाह की प्रथा का विरोध किया था। क्योंकि उनके इस प्रकार के उपदेशों से 'प्रयाग मोक्ष' भरा पड़ा है। उन्हीं उपदेशों में से एक यहाँ दिया जाता है—

एक बार रानी उपदेश करती हुई हरिद्वार पहुँचीं वहाँ उन्होंने हिमखण्डी की रानी चन्द्रावली का आतिथ्य स्वीकार किया। हिमखण्डी हिमालय प्रदेश में एक छोटा-सा राज्य था। चन्द्रावली वहाँ के राजा की पत्नी थीं। राजा ने दूसरा और फिर तीसरा विवाह कर लिया था। इन दोनों रानियों ने चन्द्रावली का अपमान किया था और राजा ने इसके लिए उनकी भर्त्सना न की थी। सो रानी चन्द्रावली रुष्ट होकर अपने पिता के घर चली आई थीं और सपत्नियों से बदला लेने के लिए वशीकरण मन्त्र का प्रयोग कर रही थीं।

जब उन्होंने रानी घृतकुल्या से बताया कि उन की मन्त्र विद्या सिद्धि की सीमा पर पहुँचने वाली है और जैसे ही मन्त्र सिद्धि हुई राजा सपत्नियों का तिरस्कार करके उनके पास दौड़े चले आवेंगे और उनके परम आज्ञाकारी होकर उनके साथ रहने लगेंगे तब रानी घृतकुल्या ने इस सफलता पर बधाई देना तो दूर रहा उल्टा उन्हीं को दोषी ठहराया और कहा—'हे रानी! पति को इस प्रकार वशीभूत करने की चेष्टा करोगी तो दूसरे जन्म में छिपकली बनोगी और अनेक कष्ट पाओगी?'

'सो कैसे?' रानी चन्द्रावली ने पूछा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सुनो !' रानी घृतकुल्या बोलीं—'तुम्हें एक आख्यान सुनाती हूँ। अति प्राचीन काल में रुक्मांगद नाम के एक राजा थे। एक बार वे विचरण करते हुए मन्दराचल पर्वत पर पहुँचे। वहाँ ब्रह्मा की कन्या मोहिनी से भेंट हुई। राजा रुक्मांगद ने उससे विवाह कर लिया और कहा—देवि ! तुम्हें अपने इस निवास को छोड़ने में कष्ट न हो इसलिए अब मैं अपने राज्य को न लौटूँगा। अब यहीं तुम्हारे साथ निवास करूँगा। तब मोहिनी बोली—राजन् ! आप यह क्या कहते हैं। पति का घर ही पत्नी का उपयुक्त निवास है। स्त्री को चाहिए कि पति के निवास में लाख दुख हों तब भी वहीं रहे और समस्त वैभवपूर्ण पिता का घर भी पति के निवास के लिये छोड़ दे। अतएव मैं आपके साथ ही चलूँगी।'

यह सुन कर राजा रुक्मांगद बहुत प्रसन्न हुए और उस चन्द्रमा के समान मुख वाली सुन्दरी ब्रह्मा की कन्या को साथ लेकर अपनी राजधानी को वापस लौटे।

पर्वत प्रदेश छोड़ने पर राजा ने अपने घोड़े को देखा जिसे वे नीचे ही छोड़ गये थे। घोड़ा राजा को देखते ही हिनहिनाने लगा और पैरों की टापों से मिट्टी कुरेदने लगा। संयोग से मिट्टी की परत में एक छिपकली रहती थी जो घोड़े की टाप से कुचल गई। राजा यह देख कर दुखी हुए। उन्होंने दौड़ कर छिपकली को उठा लिया और उसे हरी दूब पर धर दिया। मोहिनी शीतल जल ले आयी और उस कुचली हुई छिपकली पर डालने लगी क्योंकि कहा गया है कि शीतल जल के सिंचन से चोट खाये हुए व्यक्ति को बहुत लाभ पहुँचता है।

दो पुण्यात्माओं द्वारा इस प्रकार शीतल जल के सिंचन से वह छिपकली दिव्य वस्त्राभूषणों से विभूषित एक मानवीय नारी बन गयी और इस प्रकार कहने लगी—

'हे महाबाहु रुक्मांगद पहले मेरा पूर्व चरित सुनो। परम रमणीय शाकल नगर में मैं एक ब्राह्मण की पत्नी थी। मैं परम सुन्दरी और सर्व गुण सम्पन्ना यौवना नारी थी। पर तो भी मैं अपने प्रियतम की प्यारी न बन सकी। वे सदा मुझसे जलते थे और मुझे कटु बचन कहते थे। सो हे राजन् ! मैंने अत्यन्त दुःखी होकर वशीकरण औषधियों की खोज शुरू की। मुझे ज्ञात हुआ कि हरिद्वार में एक सन्यासिनी रहती हैं। उनकी दवाओं से अनेक स्त्रियाँ अपने पतियों को वश में करने में सफल हुई थीं। सो मैं भी उन सन्यासिनी के पास पहुँची और उन से अपना दुःख निवेदन किया।

सन्यासिनी ने मुझे एक प्रकार का चूरन और एक रक्षा सूत्र दिया और कहा—'यह रक्षा सूत्र अपने गले में धारण कर लो और यह चूरन अपने स्वामी को खिला दो।'

मैंने प्रदोश काल में वह चूरन स्वामी को खिला दिया और रक्षा सूत्र अपने गले में बांध लिया। जिस दिन से स्वामी ने चूरण खाया और मैंने रक्षा सूत्र बाँधा उसी दिन से मेरे स्वामी को क्षय रोग हो गया। वे दिन पर दिन दुबले होने लगे। उनका शरीर गलने लगा और वे व्याकुल हो उठे। तब सर्वथा तेजहीन होकर क्रन्दन करते हुए एक दिन वे मेरे पास आये और कातर वाणी में कहने लगे—'सुन्दरी ! मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ। अब मैं कभी पर स्त्रियों के निकट न जाऊँगा। जो तुम कहोगी वही करूँगा। तुम मेरी रक्षा करो।' राजन् पति को इस प्रकार दुःखी देख कर मैं उसी सन्यासिनी के पास गई और उससे पूछा कि अब मुझे क्या करना चाहिए। तब उसने मुझे दूसरा चूरन दिया। उसको खिलाने से मेरे पति पुनः स्वस्थ हो गये और उनके समस्त दाहों की शान्ति हो गई। तब से मेरे पति मेरे वश में हो गये और मेरी उँगली के इशारे पर सब काम करते हैं।

इस प्रकार सुख भोग करते हुए जब मेरी मृत्यु हुई तब मैं नरक यातना में पड़ी। पन्द्रह युगों तक मैं तांबे के भाड़ में जलाई गयी। जब थोड़ा-सा पातक शेष रह गया तब मैं छिपकली बना दी गई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और इस पृथ्वी पर उतार दी गयी। इस रूप में यहाँ रहते मुझे दस हजार वर्ष हो गये।

हे राजन्! मेरी इस आप-बीती से वे स्त्रियाँ जो पति पर वशीकरण का प्रयोग करती हैं शिक्षा लें तो कितना अच्छा हो। मेरी यह निश्चित धारणा है कि जो स्त्री अपने पति पर वशीकरण का प्रयोग करेगी वह कभी सुखी नहीं रह सकती।

आपकी पतीव्रता रानी के हाथों द्वारा शीतल जल के सिंचन से मैं पाप मुक्त हुई। भगवान आप का मङ्गल करे। अब मैं देवलोक को जाती हूँ।

यह कथा सुनाकर रानी घृतकुल्या ने रानी चन्द्रावली से कहा—'बरानने! मेरी बात मानो! पति पर वशीकरण का प्रयोग मत करो।'

तब रानी चन्द्रावली ने कहा—'हे महा तपस्विनी साक्षात् लक्ष्मी स्वरूपा! तुम्हीं बताओ जिन सपत्नियों ने मेरा तिरस्कार किया है उनको अपने पति के साथ सुख से विहँसते देख कर मैं धैर्य धारण कैसे कर सकती हूँ। क्रोध से मेरा शरीर झुलसा जा रहा है। उनसे बदला लेने के लिए मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ। भले मुझे नरक में जाना पड़े, भले मुझे सात जन्म छिपकली बनकर रहना पड़े।'

'परन्तु रानी! सोचो, यह तो उन्हीं की जीत हुई। वे तो यह चाहती ही हैं कि तुम क्रोध में झुलसो और ईर्षा की अग्नि में जलो। तुम अपना जीवन उन दुष्टाओं को क्यों सौंपती हो।'

रानी घृतकुल्या के इस कथन से रानी चन्द्रावली को बड़ी शान्ति मिली और वे बोलीं—'तो देवि बताओ! मुझे क्या करना चाहिए।'

'हाँ, सुनो।' रानी घृतकुल्या बोलीं—पतिव्रता स्त्री का धर्म यह है कि जब उसका पति दूसरा विवाह कर ले तब वह उसे पति नहीं पुत्र मान ले और इस रूप में उसकी सेवा-सहायता करे। सो तुम अपने पति को जिसने तुम्हें छोड़ कर दूसरा विवाह कर लिया है, पुत्र मान लो और तब देखोगी कि तुम्हारा क्रोध अपने आप शान्त हो गया है। इसी में तुम्हारा और तुम्हारे पति का कल्याण है।

लघु-कथा

नैपोलियन और एक वृद्धा

नैपोलियन अपनी सेना को लेकर किले से बाहर निकला! सामने गगन-चुम्बी एल्प्स पर्वत ऊँचा सिर किये खड़ा था। मानो घोषणा कर रहा था—आज तक कोई मुझे पार न कर सका। केवल आकाश ही मुझ से ऊपर है। किसी मनुष्य की क्या ताकत कि मेरे सिर पर अपना पग रख सके। नैपोलियन ने अपनी सेना को आज्ञा दी—ऊपर चढ़ जाओ! ऊपर चढ़ जाओ!! एक वृद्धा अपनी झोंपड़ी के आंगन में बैठी लकड़ियाँ काट रही थी। नैपोलियन की आज्ञा सुन कर कहने लगी—व्यर्थ जान क्यों गंवाते हो। तुम्हारे जैसे सैकड़ों व्यक्ति यहाँ आये और मुँह की खाकर वापस चले गये। उनकी सेनाएँ और उनके घोड़े मेरे देखते-देखते विनाश के गर्भ में समा गये। उनकी अस्थियाँ तक आज कहीं शेष नहीं मिलतीं। नैपोलियन ने हीरों का एक हार वृद्धा को भेंट किया और कहा—मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ। तुमने मेरे उत्साह में नव न जीवन का सञ्चार किया है। मैं पर्वत की ऊँचाई देख कर घबरा रहा था परन्तु तुम्हारी बातों ने अब मेरा साहस बढ़ा दिया है। मैं भी दूसरों की तरह मर जाना चाहता हूँ। यदि जीवित दूसरी ओर चला गया तो मेरे नाम का डंका बजाना तुम्हारा कर्तव्य होगा।

वृद्धा ने कहा—तुम प्रथम व्यक्ति हो जिसने मेरी बात सुन कर वापस जाने से इनकार किया। मुझे निश्चय है तुम अवश्य सफल होगे। और नैपोलियन वास्तव में सफल हुआ।

रानी चन्द्रावली को रानी घृतकुल्या के इस उपदेश से बड़ी शान्ति मिली और वे वशीकरण के प्रयोगों को अधूरा ही छोड़ कर अपने पति के घर वापस चली गईं और उसे पुत्र मान कर प्रेम-पूर्वक रहने लगीं।

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

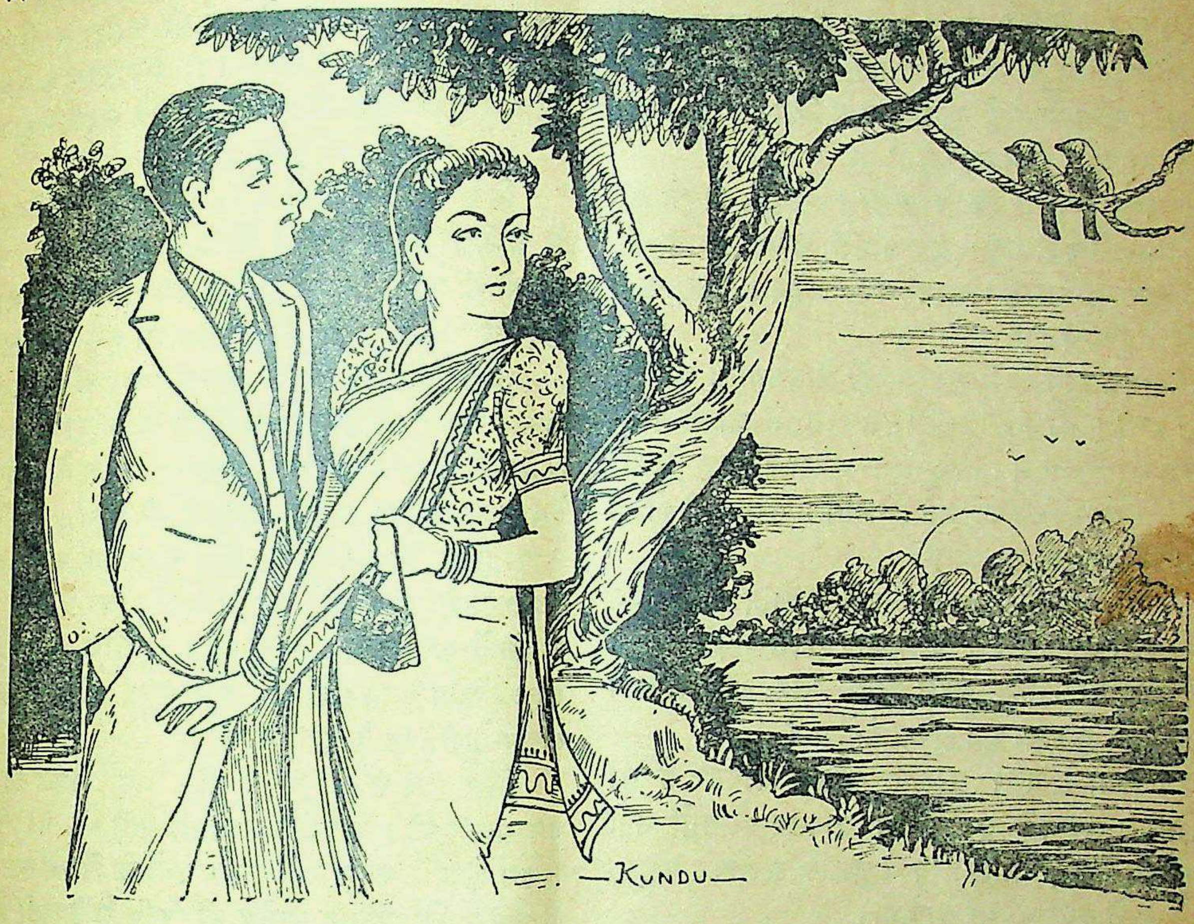

चार दिनों की चाँदनी

लेखक, श्री रमेश धाकर बी० ए०, बी० टी०

[१]

चार घण्टे की अवधि में जब सुरेश की देह तवे की तरह तप गयी, तब सावित्री का धैर्य्य जाता रहा। वह सुरेश के सिरहाने पर बैठ कर उसके सिर को सहलाती और घड़ी की ओर दृष्टिपात करती। आखिर घड़ी ने साढ़े चार बजा दिये। अब स्कूल बन्द होगा और सुरेश के पिता आते होंगे।

पर बनमाली नहीं आया। स्कूल के चपरासी ने, जो कुछ कागजात घर पर रखने आया था, बतलाया कि स्कूल में एक पार्टी है और मास्टर साहब देरी से घर लौटेंगे। सावित्री ने कहा—'रामअधीन मास्टर साहब से कहना कि सुरेश को तेजी से बुखार चढ़ रहा है। हो सके तो मास्टर साहब तुरन्त घर लौटें।'

रामअधीन ने बनमाली को सावित्री का सन्देश सुनाया। बनमाली आग बबूला हो गया सन्देश सुन कर। कहने लगा—'देखो न तुमने उसकी हरकत! वह डायन मुझे श्मशान में भी चैन न लेने देगी। सुरेश को बुखार चढ़ रहा है, तो वह खुद किस मर्ज की दवा है? वह किसी डाक्टर को क्यों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं बुलवा लेती ? मिस राय, मैं तो तंग आ गया उस चुड़ैल से। न सूरत की, न शक्ल की। मैंने पिछले जन्म में कोई जघन्य पाप किया होगा, जिस का फल अब भोग रहा हूँ।'

मिस राय ने रेशमी रूमाल से मुँह पोछते हुए कहा—'मैं क्यों दखल दूँ आपके घरेलू मामले में, मिस्टर बनमाली! आप घर जाइये। फिर कभी देखेंगे पिक्चर।'

मिस राय के निराश शब्दों से बनमाली मर्माहत हो गया। बोला—'नहीं मिस राय, मैं आपके कार्य-क्रम को 'फेल' न होने दूँगा। सुरेश को वह देखती रहेगी। हम पिक्चर जरूर चलेंगे। समय भी तो हो रहा है, पहिले शो का।'

वे दोनों पिक्चर-हाउस के लिये प्रस्थान करने वाले ही थे, कि एक विद्यार्थी दौड़ते-दौड़ते आया और हाँफते-हाँफते कहने लगा—'सर, बाई ने आप को जल्द बुलाया है। सुरेश बेहोश है।'

'क्यों रे, क्या मास्टर साहब डाक्टर हैं या सिविल सर्जन ? बाई किसी डाक्टर को क्यों नहीं बुलवा लेती ?' मिस राय ने कुछ क्रुद्ध होकर कहा।

'तो क्या कहूँगा बाई से।'

'कह देना कि मास्टर साहब स्कूल में मिले नहीं, चलिये मिस राय, हमें देरी न हो जाय।' कह कर बनमाली ने मिस राय को बैग, छाता, पुस्तक आदि सम्भालने में मदद दी और दोनों रिजेण्ट सिनेमा की ओर तेजी से बढ़ने लगे।

रिजेण्ट में बनमाली ने बाक्स की टिकट खरीदी और गेट में घुस ही रहा था कि पड़ोसी नन्दलाल से उसकी मुठभेड़ हो गयी। नन्दलाल बोला—'मास्टर साहब, मैं आपको ही खोज रहा था। सुरेश को चल कर देख लीजिये। बाई रो रही हैं।'

'चलिये आप घर। मैं मिस राय को टिकट दे-कर अभी ही घर पहुँचता हूँ।' कहकर बनमाली सिनेमा-घर में घुस गया।

सावित्री ने पड़ोसियों की सहायता से डा० चौबे को बुलवा लिया था, पर बनमाली दस बजे तक भी घर न लौटा। सावित्री को यह भी आशा न थी कि बनमाली रात में घर लौटेगा। मिस राय के मोह-जाल से मुक्ति पाना बनमाली के लिये सहज नहीं।

[२]

मिस राय बनमाली के साथ स्थानीय हाई स्कूल में अध्यापिका थी। उम्र तीस के लगभग थी, पर दिखने में वह पच्चीस से अधिक की नहीं जँचती थी। सदर के 'ब्यूटी स्पाट' से उसके पास हर माह लग-भग तीस-पैंतीस का बिल जाता था और साड़ी, चप्पल आदि की दूकानों के बिल मिस राय या तो बनमाली के पास भिजवा देती या स्कूल के वाइस-प्रेसीडेण्ट जमुना प्रसाद पटेरिया के पास। यों तो सारा शहर मिस राय के बिल चुका कर अपने को भाग्यशाली समझता, पर मिस राय उन दो ही व्यक्तियों का एहसान लेती थी। क्योंकि बनमाली का व्यक्तित्व आकर्षक था और स्कूल की व्यवस्था वाइस-प्रेसीडेण्ट के हाथ में थी।

मिस राय बहुत सुन्दर थीं। वह फिल्म-स्टार बन सकती थी। उसकी तमन्ना तो यही थी, पर उस ने इस क्षेत्र में कदम नहीं रखा, क्योंकि फिल्म-स्टारों के चरित्र को दुनिया सन्देह की दृष्टि से देखती है। फिल्म-लाइन में भी वह एक या दो व्यक्तियों की विशेष कृपा पात्र बन सकती थी। स्कूल में भी उसने अपने क्षेत्र को बहुत ही सीमित रखा, क्योंकि उम्र और रूप का पूरा उपभोग करने के अलावा वह कुछ मात्रा में अपनी प्रतिष्ठा को बनाये रखना चाहती थी।

कहते हैं, मिस राय किसी शासक घराने की लड़की है। उसके पिता उत्तर प्रदेश में कलेक्टर हैं उसकी मँगनी भी हो गयी थी, पर उसे भावी पति पसन्द न आया। वह काला था, बदसूरत था। इस लिये मिस राय घर से भाग गयी। वह बी० ए० कर चुकी थी। कुछ समय बाद उसने बी० टी० की डिग्री भी ले ली। अब वह मजे में है।

मिस राय सुन्दर हैं और सौन्दर्य की उपासिका भी। इसीलिये तो वह बनमाली पर जान देती है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यद्यपि वाइस-प्रेसीडेण्ट के मुकाबले में बनमाली से उसे बहुत कम आर्थिक लाभ होता है। वह सोचा करती है कि दुनिया में पैसा ही सब कुछ नहीं है। उसके ऐसे विचारों को सुन कर बनमाली की छाती गर्व से चौड़ी हो जाती है कि उसका भी कोई कद्रदां है।

जब ग्यारह बजे भी बनमाली नहीं लौटा, तब सावित्री से न रहा गया। उसने पड़ोस की एक वृद्ध महिला को सुरेश का भार सौंप कर मिस राय के मकान का रास्ता पकड़ा। उसने दूर से देखा कि कमरे में रोशनी है और उसे रेडियो ग्राम का संगीत भी सुन पड़ा।

मकान पर पहुँचने पर उसने शेरनी की तरह दहाड़ा—'मिस राय, दरवाजा खोलो। मैं सावित्री हूँ।'

जब तक दरवाजा न खुला, वह जोर से दरवाजा खटखटाती रही।

मिस राय ने दरवाजा खोल कर पिशाचिनी की तरह कहा—'यह पागलखाना नहीं है।'

'गलती हुई। मुझे जोर से दरवाजा नहीं खटखटाना चाहिए था, क्योंकि यह पागलखाना नहीं। माफ करना, मैं कसाई खाना को पागलखाना समझ बैठी थी। पर यह बता जल्लाद औरत, कि क्या तू मेरा सब कुछ लूट कर ही रहेगी?'

'सावित्री, मैं तुम्हारी तरह गँवार नहीं हूँ। मैं शिष्ट भाषा का उपयोग कर रही हूँ। मैंने तुम्हारा कुछ नहीं लूटा। मैं लुटेरिन नहीं, आई० सी० एस० की लड़की हूँ। तुम्हारा पति स्वयम् कुत्ते की तरह मेरी देहरी पर पड़ा रहता है। तुम सम्भालो उसे! मुझे उसकी क्या परवाह!'

'तुमने उसे अपना दीवाना बना रखा है। वह तुम्हारे रहते मुझे फूटी आँख से भी नहीं देखेगा।'

'यह तो अपनी-अपनी किस्मत है। तुम्हें भी भगवान से इस भोंडी सूरत के बदले चाँद का मुखड़ा मांग लेना था। भगवान तुम्हारे भी तो हैं।'

'तो तुमको नाज है खूबसूरती पर! पर यह चन्दरोजा है।'

'दुनिया ही चार दिनों का मेला है, सावित्री! मेरी खूबसूरती से तुम्हें नहीं चिढ़ना चाहिए।'

'मैं थूँकती हूँ इस खूबसूरत चमड़ी पर। खैर, मेरे थूँकने से क्या होगा? जब तक तुम्हारा यह चेहरा सलामत रहेगा और जवानी रहेगी, भौंरे मँडराया ही करेंगे। भगवान करे, तुम्हारे प्रशंसकों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो। अच्छा, अब सुरेश के पिता को घर भेज दो।'

'बनमाली सो रहा है। 'बार' में पी ली थी उसने। मैं उसे जगा नहीं सकती। वह अभी जागेगा नहीं। हाँ, नींद खुलते ही मैं उसे भेज दूंगी।'

बहस करना फिजूल था। सावित्री लौट आयी। सुरेश का ज्वर अब कम हो चला था।

कुछ समय बाद बनमाली राय प्रकरण शहर की जबान पर छा गया। मिस राय पर सारा शहर थूँकने लगा और उसका स्कूल जाना मुश्किल हो गया।

[३]

मिस राय में आत्म-बल कहाँ था कि वह लोगों का विरोध करती! सतीत्व ही स्त्री का वह अमोघ अस्त्र है, जिसके सहारे वह दुनिया तो क्या, स्वयम् भगवान से लोहा ले सकती है। सतीत्व खोकर स्त्री कांच की भाँति जरा-सी ठोकर में नष्ट हो जाती है।

मिस राय को अन्त में शहर छोड़ कर भाग जाना पड़ा।

महीने और वर्ष बीत गये। मिस राय को अब शहर भूल गया था, पर सावित्री उसे न भुला सकी थी। सावित्री ने बनमाली को अब अपना बना लिया था, पर बनमाली की लोलुप आँखें अब भी कभी-कभी मिस राय के लिये तड़प उठती थीं।

मिस राय को स्मरण करते एक दिन बनमाली ने कहा—'वह मर गयी होगी शायद।'

'कौन जाने, पर क्यों, आप उसे भूले नहीं।'

'बहुत मात्रा में भूल चुका हूँ, पर पूरी तरह भूलना मुश्किल है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तो चलो, काशी चलें ! कमच्छा में उसके पिता के मकान का पता लेंगे। तुम राय को देख लेना, मैं विश्वनाथ जी का दर्शन कर लूँगी।'

दोनों ने काशी-यात्रा की। विश्वनाथ जी के दर्शन के बाद बनमाली बोला—'तुम्हें पण्डा के घर अकेली छोड़ने में खतरा है। तुम्हारी यह सांवली सूरत पण्डे को धर्म-भ्रष्ट कर देंगी। चलो, हम दोनों कमच्छा में मिस राय का पता लगायें।'

बड़ी मुश्किल से कालीचरण राय आई० सी० एस० के मकान का पता लगा। दरवान ने पूछा—'किस से मिलना है ?'

'कौन-कौन हैं घर में ?' बनमाली ने जानना चाहा।

'साहब तो नहीं हैं, माता जी भी नहीं हैं। बाबा लोग हैं और बहिन जी हैं।'

बनमाली ने बहिन जी से मिलने की इच्छा प्रकट की।

दरवान बनमाली और सावित्री को सम्मान-पूर्वक भीतर ले गया। वे दीवानखाने में बैठे थे कि दरवान एक अन्धी औरत के साथ वहाँ प्रविष्ट हुआ दरवान ने उसे सोफे पर बिठा दिया।

उस अन्धी औरत ने कहा—'मैं आप लोगों का परिचय प्राप्त करना चाहूँगी।'

'हम बनमाली हैं और सावित्री।' बनमाली ने कहा।

'ओ हो ! मास्टर साहब और सुरेश की अम्मा ! बड़ी दया की आप लोगों ने। सावित्री बहिन, अब तो मैं तुम्हारा कुछ नहीं लूट सकूँगी। इसीलिए भगवान ने मेरी यह हालत कर दी। उसकी लीला का, दया का और चमत्कारों का कोई अन्त नहीं। मैंने आप लोगों के शहर से भाग कर नागपुर में नौकरी की। वहाँ मुझे चेचक निकल आया। मेरी आँखें जाती रहीं। ईश्वरेच्छा ! हाँ बहिन, खूबसूरती चन्दरोजा है। उस पर कोई घमण्ड न करे।'

गीत

लेखक, श्री कृष्णकान्त श्रीवास्तव 'कन्हैया'

जग मुझको पहचान न पाया !

मैंने कितनी बार उषा के
अरुण कपोलों को है चूमा
सन्ध्या की अलकावलियों का
बन्दी बनकर कुछ क्षण घूमा
मौन सितारों के सँग जलने
को जग में दीपक बन आया।
जग मुझको पहचान न पाया !

मैंने यौवन से आलिङ्गन कर
ली है अलसित अँगड़ाई
मैंने ही दृग-नीर लुटाकर
त्रसित उरों की प्यास बुझाई
विधि से होड़ लगा कर मैंने
स्वप्नों का संसार बसाया।
जग मुझको पहचान न पाया !

मैंने ही मनसिज रति का है
मनहर अनुपम चित्र बनाया
दीर्घ दृगों की प्रत्यञ्चा तक
पंच सरों का व्यूह रचाया।
जल न उठे जग ईर्षानल में
मैं जग पर हिमकण बन छाया
जग मुझको पहचान न पाया !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकेली स्त्री के पीछे गुण्डे

लेखिका, कुमारी लज्जावती देवी

हिन्दोस्तान अब स्वाधीन देश है। अब यहाँ सार्वजनिक स्थानों और राज्य मार्गों पर पुरुषों की भाँति स्त्रियों को भी घूमने-फिरने की स्वतन्त्रता है और स्त्रियां स्वच्छन्द विचरण करती हुई दिखाई भी पड़ती हैं। परन्तु मुझे दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि इस देश में अभी वह समय नहीं आया है जब अकेली स्त्री स्वच्छन्द होकर कहीं आ-जा सके। गुण्डे उसके पीछे लग ही जाते हैं। प्रश्न है कि स्त्री इनसे बचने के लिए क्या करे?

इस लेख में मैं अपने अनुभव के बल पर कुछ उपाय बताना चाहती हूँ। जिन स्त्रियों को अकेले दुकेले घर से निकलना पड़ता है, वे आशा है इससे लाभ उठावेंगी।

मैं एक नर्स हूँ। घर से दूर एक बड़े अस्पताल में काम करना पड़ता है। कभी दिन में कभी रात में ड्यूटी लगती है। अस्पताल में काटर है। परन्तु घर में माता-पिता हैं वे मुझे ड्यूटी के अतिरिक्त बाकी समय में अपने साथ ही रखना चाहते हैं अतएव घर ही पर रहती हूँ और रोज यथा समय अस्पताल जाती हूँ। पिछले ४ वर्षों से मैं ड्यूटी दे रही हूँ और इन वर्षों में मार्ग में मिलने वाले गुण्डा मनोवृत्ति के पुरुषों ने मुझे इतना तंग किया है कि मार्ग में मुझे जो भी पुरुष मिलता है वह कितना ही नेकनीयत क्यों न हो, मैं सोचती हूँ वह अवश्य गुण्डा होगा?

अब मेरा एक अनुभव सुनिये।

एक दिन एक पंडित जी मिले। गौर वर्ण, बड़ी-बड़ी आँखें, चौड़े मस्तक पर त्रिपुण्ड अवस्था लगभग ४५, साक्षात् धर्म के अवतार। मुझे देखा तो दूर ही से चिल्लाये—'अरी! ओ अस्पताल वाली छोरी।'

मैंने उनकी ओर देखा?

'मुझे पहचाना।' वे बोले?

मैं उनकी ओर आश्चर्य से देखती ही रह गई।

उन्होंने वर्णन शुरू किया कि किस प्रकार वे अपनी गर्भवती पत्नी को लेकर अस्पताल पहुँचे थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किस प्रकार मैंने उनकी पत्नी की सेवा की थी ? कितने खुश वे मुझसे हैं।

उन्होंने तत्काल एक रिक्शे वाले को बुलाकर I) आने पैसे उसे दिये—'मिस साहब को अस्पताल पहुँचा दो।'

मैं न ! न ! करती ही रह गई। पर वे न माने। कितने अच्छे हैं ये पंडित देवता। फिर तो वे रोज ही मुझे मिलने लगे। कभी रिक्शा पर बैठाल देते कभी कोई छोटा-मोटा उपहार देते। कभी पैदल ही मेरे साथ गपशप करते मुझे अस्पताल तक पहुँचा आते। मैं उनसे इस तरह घुल-मिल कर बातें करने लगी और अपने मन के भेद उन्हें बताने लगी जैसे वे मेरे पिता हों। और इसका परिणाम हुआ, एक दिन मैं भारी मुसीबत में पड़ गई। वे मुझे कौशल से एक मकान में लिवा ले गये जो वास्तव में एक कुटनी का मकान था। उस कुटनी को उन्होंने अपनी विधवा बहन बताया। वह मेरे साथ इतना अच्छा बरताव करती कि मैं कभी-कभी अस्पताल से छुट्टी लेकर उसके घर आने लगी।

एक दिन उसने स्नेह पूर्वक पूछा—'तुम ब्याह क्यों नहीं कर लेती हो ?'

मैंने कहा—'एक तो गरीब हूँ। पिता के पास इतना धन नहीं है कि यथेष्ट दहेज दे सकें, दूसरे स्वाधीनता का आनन्द मिल गया है।'

'यह कुछ नहीं। तुम्हें ब्याह करना होगा।' वह स्नेह पूर्वक बोली—'मैं ऐसा बर खोज दूंगी जो दहेज भी न लेगा और पूरी स्वतन्त्रता भी तुम्हें देगा।'

मैं चुप रही। क्रमशः उसने मुझे एक युवक से परिचय कराया। मेरा उस युवक का स्नेह इस सीमा तक पहुँचा कि मैं उसके साथ विवाह करने को तैयार हो गयी और पिता को सूचित किया। वे बोले—'बेटी, मैं तेरे मार्ग में बाधक न बनूँगा पर पहले मैं पता लगा लूँ कि वह कौन है, कैसा है ?'

मैंने पता दिया। मैं दंग रह गई जब पिता जी ने घर लौट कर मुझसे कहा—'तुमे क्या हो गया है ? वह विवाहित है और उसके तीन बच्चे हैं ? और जात भी कुछ अच्छी नहीं है।'

'विवाहित और तीन बच्चे ! वह तो कहता था मैं क्वारा हूँ और ब्याह करूँगा तो तुम्हीं से नहीं तो आजन्म क्वारा रहूँगा।'

'उसे चाय पर बुलाओ। मैं तुम्हारे सामने उस से सही बात कबुलवा दूंगा।' मैंने उसे निमन्त्रण दिया। मुश्किल से उसने स्वीकार किया। साथ में उस कुटनी को भी लाया। इस बीच में पिता जी ने सब मालूम कर लिया था। पर किसी से कुछ बताया न था।

चाय पर जब हम सब बैठे तब पिता जी ने उस कुटनी से पूछा—'तुम पर गत वर्ष एक स्त्री को उस के घर से बहका कर बेचने का मुकदमा चला था ?'

'यह आप अपने घर पर बुला कर मेरा अपमान कर रहे हैं ?'

पिता जी अपने क्रोध को सम्भाल न सके। गुस्से से होंठ फड़फड़ाते हुए बोले—'चुड़ैल ! तेरी पूरी हिस्ट्री मैंने मालूम कर ली है ! कि भले घरों की लड़कियों को बरगला कर उन्हें पथ-भ्रष्ट करती है ?'

'अपनी लड़की से पूछिये, इसे कितना भ्रष्ट किया है ?'

'इसे, इस गुण्डे के साथ मिलाने वाली तू ही है जो विवाहित है और तीन बच्चे हैं।'

'पिता जी आप क्या कहते हैं ? ये तो आदर्श पुरुष हैं ?'

'चुप रह। मैं इन दोनों को इसी क्षण पुलिस के हवाले करता हूँ। दारोगा साहब !'

पिता जी ने एक मजिस्ट्रेट से, जिनसे उनका परिचय था, अपना दुखड़ा रोया था और इसीलिए उन्होंने विवाह के नाम पर मेरे घर आने वाले इन चार सौ बीसियों को गिरफ्तार करने का वारन्ट दिया था। दारोगा साहब ने जो कई सिपाहियों के साथ बंगल के कमरे में छिपे बैठे थे, आकर उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब वह युवक मेरी ओर देखता हुआ बोला—'लज्जावती मुझे बचाओ ?'

'मैं आपके लिए सब कुछ करने को तैयार हूँ। आप आज्ञा भर दें।'

'तुम कह दो कि मैं इनके साथ विवाह करना चाहती हूँ ?'

'मैं इनके साथ विवाह करना चाहता हूँ।' मैंने कहा।

'यह जानते हुए कि ये विवाहित हैं और इनके तीन बच्चे हैं ?'

'नहीं, ये क्वारे हैं ?' मैं बोली।

'लज्जावती ! मेरी रक्षा करो। तुम कहो कि तुम यह जानते हुए कि मैं विवाहित हूँ और मेरे तीन बच्चे हैं तुम मेरे साथ विवाह कर रही हो।'

एक दिन मार्ग में मिल गये और मेरे साथ-साथ चलने लगे। मैंने बहुत मना किया पर किसी तरह न माने। मेरे घर तक आये। जब मैं घर के अन्दर घुस गई तब वे लौट गये। इस तरह उन्होंने मेरा घर देख लिया। अब तो वे प्रायः मार्ग में मिलने और मुझे घर तक पहुँचाने आने लगे। पर मैं इनसे बिलकुल न बोलती। मार्ग में इनके किसी बात का उत्तर न देती। तब ये मुझे पत्र लिखने लगे। अस्पताल के चपरासियों को देते कि फलां नर्स को दे देना और पत्र मेरे पास पहुँच जाते। एक दिन मैंने सब पत्र पिता जी के सामने रख दिये। वे उन्हें लेकर [illegible] रखने की चेष्टा [illegible] के [illegible] उपस्थित हुए।

[illegible] लेखक, श्री श्यामनन्दन प्रसाद 'श्याम'

सीढ़ी के नीचे पाँव रक्खा ही था कि—

'सुनिये तो।'

मुड़ कर देखा, अपने फटे वस्त्र को किसी प्रकार सम्हालती हुई गिरजा किवाड़ पकड़े खड़ी है। आँखों में एक प्रकार से व्यग्रता-सी कुछ—

'यदि आपके कोई मित्र चाहें तो···।'

'अच्छी बात है मैं कहूँगा।'

और वह एक शब्द न बोली, सिर्फ देखती रही। मैं भी खड़ा न रह सका, चल पड़ा।

आवाज उसकी धीमी थी पर कातर भी कम न थी। आँखों की वह भाषा कितनी अजीबोगरीब थी जैसे आप ही लोगों की आशा है।

कई बार मन में आया कि उसे कुछ दे दूँ किन्तु न जाने क्यों—आज कुछ जी चाह रहा था इसका साहस नहीं हुआ। एक प्रकार से संकोच का अनुभव करता हूँ। पुरस्कार स्वरूप भी तो कुछ देता था किन्तु हृदय की बात कौन समझे !

स्वेटर अच्छा बुना गया था। इस वर्षा ऋतु में अब बुनवाने की बात अवश्य अखर सकती है। पाय भी तो कुछ···इसी स्वेटर बुनवाने के बहाने उसको कुछ मदद करने का रास्ता सूझ पड़ा था और आठ रुपये उसे पेशगी मेहनताना देकर एक प्रकार की हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव किया था। किन्तु ऊपरी बखशीश देने में कितना संकोच होता है, सो मैं ही जानता हूँ। जिस रोज मैंने उसे रुपये दिये थे, उसकी स्याह आँखें प्रदीप्त हो उठी थीं—'छः रोज में ही तैयार कर दूँगी इसे।'

और आज छठे दिन आ पहुँचा था। सोचता हूँ यदि इसी प्रकार मोजा, मफलर आदि बनवा कर उसे मदद कर दिया करूँ तो कितना अच्छा हो। स्वेटर पसन्द के लायक हुआ था, कितना महीन काम किया गया था।

डेरा पर आया तो वहाँ की हालत देख कर दंग रह जाना पड़ा। अपनी चौकी पर देखता हूँ कि तीन-चार नये पुराने बक्स रक्खे हैं। वे प्रायः भींग गये थे, क्योंकि अच्छी तरह पोंछे जाने पर भी कोई नहीं सूख पाया था।

मेरे बगल की कोठरी में पंडित जी की दूकान थी। मेरी ओर का द्वार वे खुला रखते थे। पूछा—

'यह किसका बक्स है ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१—दूर जाना हो तो सवारी पर जाओ या किसी को साथ ले लो।

२—जब घर से बाहर निकलो, पोशाक सर्वथा साधारण रखो।

३—ऐसे रास्तों से निकलो जिन पर काफी आवागमन हो और आगे चलने वाले पुरुष या स्त्री के पीछे इस तरह रहो कि लोग समझें कि ये इसी के साथ है।

४—मार्ग में मिलने वाले किसी अपरिचित की बात का उत्तर न दो।

५—कोई परिचित पुरुष जो अपनी मोटर या अन्य सवारी पर हो और आपको उसमें बैठा कर गन्तव्य स्थान तक पहुँचा देने की कृपा करना चाहे तो नम्रता पूर्वक उसे अस्वीकार कर दो।

६—यदि यह अनुभव हो कि कोई गुण्डा पीछे लग गया है तो जहाँ काफी लोग हों वहाँ रुक जाओ, पीछे लौट जाओ, या सवारी करके उसमें जाओ।

७—साधारण उपायों से काम न चले तो तत्काल पुलिस या पास-पड़ोस के भद्र लोगों से सहायता लो।

...गी और अपने मन के भेद उन्हें बताने लगी। वे मेरे पिता हों। और इसका परिणाम हुआ, एक दिन मैं भारी मुसीबत में पड़ गई। वे मुझे कौशल से एक मकान में लिवा ले गये जो वास्तव में एक कुटनी का मकान था। उस कुटनी को उन्होंने अपनी विधवा बहन बताया। वह मेरे साथ इतना अच्छा बरताव करती कि मैं कभी-कभी अस्पताल से छुट्टी लेकर उसके घर आने लगी।

एक दिन उसने स्नेह पूर्वक पूछा—'तुम ब्याह क्यों नहीं कर लेती हो?'

मैंने कहा—'एक तो गरीब हूँ। पिता के पास इतना धन नहीं है कि यथेष्ट दहेज दे सकें, दूसरे स्वाधीनता का आनन्द मिल गया है।'

'यह कुछ नहीं। तुम्हें ब्याह करना होगा।' वह स्नेह पूर्वक बोली—'मैं ऐसा बर खोज दूंगी जो दहेज भी न लेगा और पूरी स्वतन्त्रता भी तुम्हें देगा।'

मैं चुप रही। क्रमशः उसने मुझे एक युवक से परिचय कराया। मेरा उस युवक का स्नेह इस सीमा तक पहुँचा कि मैं उसके साथ विवाह करने को तैयार हो गयी और पिता को सूचित किया। वे बोले—'बेटी, मैं तेरे मार्ग में बाधक न बनूँगा पर पहले मैं पता लगा लूँ कि वह कौन है, कैसा है?'

मैंने पता दिया। मैं दंग रह गई जब पिता जी ने घर लौट कर मुझसे कहा—'तुझे क्या हो गया

के घर स ... ?'

'यह आप अपने घर पर बुला कर मेरा अपमान कर रहे हैं?'

पिता जी अपने क्रोध को सम्भाल न सके। गुस्से से होंठ फड़फड़ाते हुए बोले—'चुड़ैल! तेरी पूरी हिस्ट्री मैंने मालूम कर ली है! कि भले घरों की लड़कियों को बरगला कर उन्हें पथ-भ्रष्ट करती है?

'अपनी लड़की से पूछिये, इसे कितना ... किया है?'

'इसे, इस गुण्डे के साथ मिलाने वाली तू ... जो विवाहित है और तीन बच्चे हैं।' ...श पर

'पिता जी आप क्या कहते हैं? ये तो ... ँ गहरे पुरुष हैं?' ...थई रंग

...ा रंग से

'चुप रह। मैं इन दोनों को इसी क्षण पु... हवाले करता हूँ। दारोगा साहब...'

पिता जी ने एक मजिस्ट्रेट से, जिनसे ... परिचय था, अपना दुखड़ा रोया था और उन्होंने विवाह के नाम पर मेरे घर आने ... चार सौ बीसियों को गिरफ्तार करने ... दिया था। दारोगा साहब ने जो कई ... साथ बंगले के कमरे में छिपे बैठे थे, गिरफ्तार कर लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त मा चा

एक पति की कहानी जिसने अपनी पत्नी को ताले में बन्द करके रखने की चेष्टा की।

लेखक, श्री श्यामनन्दन प्रसाद 'श्याम'

सीढ़ी के नीचे पाँव रक्खा ही था कि—

'सुनिये तो।'

मुड़ कर देखा, अपने फटे वस्त्र को किसी प्रकार सम्हालती हुई गिरजा किवाड़ पकड़े खड़ी है। आँखों में एक प्रकार से व्यग्रता-सी कुछ—

'यदि आपके कोई मित्र चाहें तो···।'

'अच्छी बात है मैं कहूँगा।'

और वह एक शब्द न बोली, सिर्फ देखती रही। मैं भी खड़ा न रह सका, चल पड़ा।

आवाज उसकी धीमी थी पर कातर भी कम नहीं। आँखों की वह भाषा कितनी अजीबोगरीब थी! जैसे आप ही लोगों की आशा है।

कई बार मन में आया कि उसे कुछ दे दूँ किन्तु मन न जाने क्यों—आज कुछ जी चाह रहा था पर साहस नहीं हुआ। एक प्रकार से संकोच का भाव अनुभव करता हूँ। पुरस्कार स्वरूप भी तो कुछ दे सकता था किन्तु हृदय की बात कौन समझे!

स्वेटर अच्छा बुना गया था। इस वर्षा ऋतु में स्वेटर बुनवाने की बात अवश्य अखर सकती है। किन्तु उपाय भी तो कुछ··इसी स्वेटर बुनवाने के बहाने उसको कुछ मदद करने का रास्ता सूझ पड़ा था और आठ रुपये उसे पेशगी मेहनताना देकर एक प्रकार की हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव किया था। किन्तु ऊपरी बखशीश देने में कितना संकोच होता है, सो मैं ही जानता हूँ। जिस रोज मैंने उसे रुपये दिये थे, उसकी स्याह आँखें प्रदीप्त हो उठी थीं—'छः रोज में ही तैयार कर दूँगी इसे।'

और आज छठे दिन आ पहुँचा था। सोचता हूँ यदि इसी प्रकार मोजा, मफलर आदि बनवा कर उसे मदद कर दिया करूँ तो कितना अच्छा हो। स्वेटर पसन्द के लायक हुआ था, कितना महीन काम किया गया था।

डेरा पर आया तो वहाँ की हालत देख कर दंग रह जाना पड़ा। अपनी चौकी पर देखता हूँ कि तीन-चार नये पुराने बक्स रक्खे हैं। वे प्रायः भींग गये थे, क्योंकि अच्छी तरह पोंछे जाने पर भी कोई नहीं सूख पाया था।

मेरे बगल की कोठरी में पंडित जी की दूकान थी। मेरी ओर का द्वार वे खुला रखते थे। पूछा—

'यह किसका बक्स है?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडित जी हँस कर बोले—'वह आ रहे हैं, पहचान लीजिये।'

देखा, करीब छत्तीस-सैंतीस के लगभग उम्र होगी, गौरवर्ण, उतना तन्दुरुस्त नहीं, मन ही मन कुछ हिसाब करते हुए आ रहे हैं। ऐसा मालूम हुआ, कहीं देखा है पर कहाँ, यही याद नहीं।

एक बार गौर से उन्होंने मेरा निरीक्षण किया, और पंडित जी से कुछ मन मनाएँ फिर मेरी ओर ताका मानो मेरा अध्ययन कर रहे हों।

पंडित जी हँसे, बोले—'देखते क्या हैं, उन्हीं का कमरा है।'

'इन्हीं का कमरा है, ओ—' और गौर से फिर मेरी ओर देखा।

पंडित जी उठ कर आये और बोले—'दो-तीन दिन तक इनके सामान को एक कोने में रहने दीजिये इनका घर चू रहा है।'

'आप क्यों नहीं अपने घर में रहने देते?' मैं बोला।

वे बोले—'हम तो रहने देते जरूर पर यह दूकान है, न मालूम कितने तरह के आदमी आयेंगे-जायेंगे, चीज-वस्तु की बात है, कहिये सुबोध बाबू!'

उनका नाम सुबोध बाबू था। एक बार बक्से की ताली को गौर से देख कर उन्होंने फिर मेरी ओर देखा, और ठोर पटपटा कर, रेघा कर बोले—'ठीक तो कहते हैं पंडित जी, दो-चार रोज के लिये क्या हर्ज है, हम लोग अपने ही आदमी हैं। एक ही जात हैं।'

फिर ठोर पटपटा कर बोले—'बड़े मुश्किल में आ पड़ा हूँ। मकान देखिये गिर रहा है उसकी भी मरम्मत कराना है।' और वह मेरी ओर देखने लगे।

कुछ देर सोच कर बोला—'दो-चार दिन के लिये मैं कुछ नहीं कह सकता, आप रहिये।'

वे चौकी पर बैठ गये। छाता को कहीं रक्खा नहीं, हाथ में ही पकड़े रहे।

पूछ-ताछ करने पर मालूम हुआ, नौकरी नहीं मिलती, सब जगह छान डाली। कितनी जगह घूस भी दिये पर सब व्यर्थ। घोर बेकारी है, नौकरी कहीं मिलेगी नहीं। अपना कोई नहीं, ट्यूशन कर के जीवन चला रहे हैं। सन् ४४ में ही आई० ए० में नाम लिखाया था, नौ वर्ष हो गये, तैयारी कर रहे हैं पर मौका नहीं मिलता, कम-से-कम बी० ए० पास करना जरूरी है, इत्यादि।

मेरे रूम में एक ही वेडिंग था। सुबोध बाबू ने जमीन पर ही बिछावन बिछा लिया, एक छोटा-सा तकिया भी है। बड़ा अजीब-सा लग रहा था। संकोच हो रहा था, कि किस प्रकार वे भूमि पर सोयेंगे। बोला—'इसी पर चले आइये न?'

'नहीं, रहने दीजिये मैं साथ नहीं सोता।'

क्या कहता, अपना काम करने लगा। कमीज में न मालूम क्या सब भरा पड़ा था, कभी बटन खोलने की चेष्टा करते, फिर कभी जेब टटोल कर मेरी तरफ गौर से देखते, फिर खूँटी की तरफ।

बोला—'टांग दीजिये न उसमें।'

अच्छा, अभी हड़बड़ी ही क्या है।' उन्होंने खूँटी की तरफ फिर देखा। लेकिन उन्होंने कमीज नहीं टांगी। उसे उतार, समेट कर चादर के अन्दर रख दिया फिर ऊपर से तकिया रख दिये। मेरी ओर देख कर ठोर पटपटाते हुए बोले—'और कोई आवेगा यहाँ?'

'नहीं।'

'तो किवाड़ बन्द कर दूँ।' पंडित जी की तरफ वाले किवाड़ की तरफ देख कर बोले।

'रहने दीजिये, अभी तो मैं जगा हूँ।'

और मैं स्वेटर निकाल कर उसकी बुनाई पर गौर करने लगा। वे प्रायः अध लेटे-से बोले—'अब की बुनवाया है क्या?'

'हाँ।'

वह उठ आये और स्वेटर को अँगुली से टटोल कर सूक्ष्म निरीक्षण कर बोले—'अच्छा है।'

यह सुन मेरा मन प्रसन्न हो उठा।

'श्रीमती जी ने तैयार किया है मालूम?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हठात् मन न मालूम कैसा कर उठा। श्रीमती जी का अभी सौभाग्य कहाँ! बोला—'मेरी शादी नहीं हुई है अभी।'

ठोर पटपटा कर, आँखें कुछ मटका कर बोले—'तब कहाँ बनवाया?'

असल बात बता दी। एक बार फिर उन्होंने स्वेटर का सूक्ष्म निरीक्षण किया।

'कितने में तैयार हुआ?'

'आठ और आठ सोलह, मैंने जोड़ कर बता दिया।' आठ रुपये में आधा पौंड ऊन हुआ और आठ रुपये बुनाई।

स्वेटर की बुनाई पर फिर गौर करते हुए बोले—'बुनाई का चार्ज ज्यादा ले लिया।'

कुछ क्षुब्ध-सा हो गया। कितनी मेहनत का काम है, ये लोग क्या समझेंगे। पंडित जी ने खेद प्रकट किया कि वे साढ़े तीन रुपये में ही इससे अच्छा बुनवा देते। खैर, मैं चुप रहा।

सुबोध बाबू बोले—'मैं भी बुनवाता।'—ठोर एक बार फिर पटपटा गया—'पर आज कल हाथ खाली है।' फिर पंडित जी की ओर मुड़ कर बोले—'बीस रुपये का तो बिक गया होगा सौदा?'

पंडित जी कुछ खिन्न होकर बोले—'यह लीजिये रुपये की तो आपको कल सबेरे न जरूरत है? सुबह होते ही दे दूँगा।'

मालूम हुआ सुबोध बाबू के घर मरम्मत करवाने के बीस रुपये लेकर पंडित जी ने अपनी दूकान का सौदा मंगवा लिया है। कल वे खुद मजदूर लगवा देंगे।

सोते वक्त सुबोध बाबू ने छाता हिफाजत से रक्खा, ठीक से किवाड़ बन्द किये और बक्से की तरफ एक बार सरसरी निगाह फेंक कर लेट रहे।

मैं भी न मालूम कब सो गया।

[२]

सुबह अजीब बात हुई। पंडित जी के खजाने में रुपया नहीं, वे कहाँ से सुबोध बाबू को रुपये दें। वे मजदूर लगावें, मजदूरी में चावल-दाल, आटा, मशाला आदि जिस चीज की जरूरत पड़ेगी, वे देंगे।

पर सुबोध बाबू क्रोधित हो रहे थे कि वे बाँस किस रुपये का मँगावेंगे? किन्तु पंडित जी के पास इसका जवाब नहीं। मुझे कुछ क्रोध हो आया, बोला—'आप इस तरह क्यों करते हैं। इस बेचारे का घर गिर रहा है और आप रुपये हड़प कर बैठे हैं। रात में आपने मेरे सामने कहा था कि सुबह रुपये देंगे।'

'रुपया नहीं है मैं सौदा देने को तैयार हूँ।'

'छोड़िये सुबोध बाबू, देखें रुपया कैसे नहीं देते हैं।'

इतने में मोहन आया और खड़ा होकर माथा नोचने लगा।

'क्या है?'

'दीदी बुलाती है।'

मोहन गिरजा का भाई है। बच्चे से ही बताह है। उम्र करीब चौदह-पन्द्रह के होगी।

गया, कुछ नहीं स्वेटर मँगा पठाया था। कोई एक सज्जन उसकी बुनाई का नमूना देखना चाहते थे। स्वेटर भेज दिया।

सुबोध बाबू उदास बैठे थे। मैंने कहा—'घबड़ाइये मत मैं सब ठीक कर दूँगा।'

मुझ पर आँखें गड़ा कर वे बोले—'लेकिन किसी को इस तरह धोखा नहीं देना चाहिए। घर का हाल चल कर देख लीजिये।' ठोर फिर पटपटा कर बोले—'आपको विश्वास नहीं होगा, कर्जा कर लाया था रुपया।'

उनके घर गया, देखा सचमुच घर की हालत रद्दी है, छप्पर धँस रहा है, दो-तीन सौ रुपये खर्च किये बिना उतने बड़े मकान की मरम्मत होना मुश्किल है।

गिरे हुए बांस के टुकड़े और खपड़े चुनते हुए वे बोले—'क्या करूँ बीस रुपये खर्च कर कुछ काम निकालने लायक बना लेना चाहता हूँ।'...फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठोर पटपटा कर मुझ पर दृष्टि गड़ा कर बोले—'रुपये तो देगा न वह ?'

'उसका बाप देगा !'

'बड़ा शैतान आदमी मालूम पड़ता है। किसी तरह रुपया दिला दीजिये, आप ही से होगा।'

'आप बे फिक्र रहिये।' फिर बोला—'आपकी पत्नी को क्या हो गया था ?'

'डेलेवरी केस में मर गई। आठ वर्ष हो गये उसको मरे। तब से अकेला हूँ।'

उनकी वाणी करुणा से आर्द्र हो गई थी।

पंडित जी ने आखिर एक बार में रुपये नहीं दिये। एक रुपया आठ आने करके और कुछ सौदा देकर सधा दिये। आखिर घर मरम्मत नहीं हो सका। सुबोध बाबू मेरे साथ ही रहने लगे, बोले—'आधा किराया दे दूंगा।'

गिरजा के यहाँ गया तो वह न मालूम किसका स्वेटर बुन रही थी। मुझे देखते ही उठ खड़ी हुई।

'आइये बैठिये।'

आज वह कुछ खुश नजर आ रही थी। आलना पर एक नयी साड़ी रक्खी हुई थी, उसे उतार कर लाती हुई बोली—'देखिये तो कैसी है।'

साड़ी मामूली ही थी। पर उसके लायक अच्छी ही थी। बोली—'आपके रुपये से ही मँगवाई हूँ। एक साड़ी और खरीद लेने के बाद कुछ दिनों का ठाहर हो जायगा।' फिर छोटी-सी तश्तरी में कुछ लाकर दिया, 'खाइये प्रसाद है।'

देखा पेड़ा आदि क्या-क्या था। गिरजा वहीं जमीन पर स्वेटर बुनने बैठ गई।

कुछ देर तक निस्तब्धता छाई रही। गम्भीर हो वह बोली—'अब आप यहाँ मत आया कीजिये।'

'क्यों ?'

'लोग बदनाम करते हैं।'

गिरजा का स्वर बहुत निरीह और करुण था। मैंने दृढ़ स्वर में कहा—'इन लोगों को तमाचा लगाना पड़ेगा।'

'सो क्या ?'

'तुम ब्याह करोगी ?'

'मैं......मुझे कौन पूछेगा।'

'जिसे जरूरत होगी, पहले तुम 'हाँ' तो कहो।'

'आप क्या अपने बारे में कह रहे हैं ?'

'नहीं मेरा एक साथी है।'

'मैं विवाह नहीं करूँगी।'

'बदनामी से अच्छा है विवाह कर लो।'

'मैं बदनामी से नहीं डरती। दिल साफ रहना चाहिए। फिर दुनिया कुछ कहे मुझे परवाह नहीं।'

मैंने समझाया, अपना दिल साफ रखने से क्या होगा। समाज में प्रतिष्ठा समाज के मुँह से मिलती है।

'मेरा भाई मोहन का भार भला लेगा कोई ?'

'मैं सब ठीक कर दूँगा।'

डेरा आया, खा-पीकर बैठा ही हूँ कि सुबोध बाबू एक अखबार लेकर मेरे पास आये। पंडित जी की तरफ का किवाड़ बन्द कर बोले—'आप मेरे बड़े हितैशी हैं इसलिये आपसे एक बात कहता हूँ।' फिर ठोर पटपटा कर बोले—'किसी को मालूम नहीं होना चाहिए और अखबार की एक कालम की ओर मेरा ध्यान आकर्षित कर बोले—'इसके पास आप अपनी तरफ से एक पत्र दे दीजिये, शर्त के मुताबिक मैं ठीक हूँ।'

मुझे कुछ हँसी आ गई! कालम में एक विवाह-विज्ञापन था।

बोला—'आप शादी कीजियेगा ?'

आँखें मिचमिचा कर ठोर पटपटाते हुए बोले—'देखिये न बहुत दिक्कत होती है एक आदमी के बिना।'

'अब तक शादी क्यों नहीं की ?'

'कहाँ, लड़की ही नहीं मिलती, मिलती भी है तो लोग सब झूठ-मूठ भड़का देते हैं।'

'मैं एक लड़की दूं ?'

सहसा उनकी आँखें चमक उठीं! 'कहाँ है ?'

'वही जिसका बुना स्वेटर आपने देखा था।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ ! फिर ठोर पटपटाकर बोले—'कैरेक्टर की अच्छी तो है ?'

मुझे हँसी आ गयी, बोला—'अखबार में वर्णित लड़की का विज्ञापन देख कर शादी करने के लिये तैयार हो उठे। वहाँ कैरेक्टर की क्या गारंटी है। यह लड़की बिलकुल पवित्र है।'

उन्होंने मेरे हाथ पकड़ लिये। आग्रह पूर्वक बोले—'मैं तैयार हूँ।'

गिरजा को उन्हें दिखा दिया और सब स्थिति खोल कर समझा दिया। बोले—'अच्छी है, पर जैसा हार्ड दिन जा रहा है कि जीना मुश्किल है।' बीच में ठोर पटपटा गया—'भाई का कहीं इन्तजाम नहीं कर दीजियेगा ?'

मैं कुछ खिन्न-सा हो उठा—'आप तो अजीब आदमी मालूम पड़ते हैं। एक भाई का पेट आप को भारी मालूम पड़ता है पर काम कितना करेगा मालूम है ? पानी वगैरह सब भर लेगा।'

'सो तो ठीक है लेकिन···।'

'लेकिन-वेकिन कुछ नहीं यदि शादी करना चाहते हैं तो साफ कहिये नहीं तो हजार लड़के मिल जायगे।'

वे हँस कर बोले—'आप तो रञ्ज हो जाते हैं, अभी हाथ जरा खाली है···।'

'खैर, जाने दीजिये मैं अब बात नहीं करूँगा।'

रात दस बज रहे थे, आराम करने लेट रहा था कि वे बोले—'तीस रुपये में शादी हो जायगी ?'

'हाँ साहब, तीस क्या दस में हो जायगी। शान-गुमान थोड़े ही करना है। किसी प्रकार अबला उद्धार होना चाहिए।'

शुभ-शुभ विवाह हो गया। कुछ रुपये गिरजा को भी खर्च करने पड़े और मुझे भी। मुहल्ले वाले एक टक ताकते रह गये।

बीस रुपये और खर्च कर सुबोध बाबू ने दो कोठरी मरम्मत करा ली।

[३]

गिरजा सुख से है। उसे पढ़ने की इच्छा बहुत थी। मैंने कहा, ईश्वर की कृपा से अब पढ़ाने वाले तुमको खुद हो गये।

मुझे फुर्सत कम रहती है अतः उनके यहाँ मेरा आना-जाना बहुत कम रहता है।

सुबोध बाबू ने कहा कि वे सन्तुष्ट ही हैं। किन्तु भाई लेकर झंझट है। खाता बहुत है। कम आमदनी में इतना खुराक कहाँ से जुटे। चालीस-पैंतालीस से क्या होने वाला है।

मैंने उन्हें अपना एक ट्यूशन देकर कहा—'और दूँगा पर आप उसको बोझ मत समझो। अपनी माँ का बहुत दुलारा था पर भाग्य ही जब खोटा हो गया तो...।'

एक दिन गिरजा के यहाँ गया। सुबोध बाबू नहीं थे। हँस कर वह बोली—'अच्छा बेड़ी-बन्धन में डाल दिया है मुझे। मैं अपने घर नहीं जा सकती, किसी का स्वेटर वगैरह नहीं बुन सकती, कहीं घूमने फिरने भी नहीं जा सकती—सब में मनाही है। पढ़ाने के बारे में कहते हैं, पढ़ कर क्या करोगी, नौकरी थोड़े ही करनी है।...बताइये नौकरी करने के लिये ही लड़कियाँ पढ़ती हैं। आपके बारे में पूछते थे, कि आपसे मेरा क्या सम्बन्ध है, आप क्यों मेरा उतना ख्याल रखते हैं। भला आप ही बताइये, जिसने इस अबला का उद्धार किया उससे क्या सम्बन्ध हो सकता है। कभी-कभी बे समझ की बातें बोलते हैं तो जी गुस्सा जाता है। मोहन के बारे में कहते थे कि इस पर तुम्हारा क्या मोह है। बेकार-बेकार की हुज्जत..बताइये उसे हटा दें ?'

सुबोध बाबू के बारे में सुन कर आश्चर्य हुआ। वह ऐसे आदमी निकलेंगे इसका मुझे तनिक भी पता न था। उसी समय सुबोध बाबू आ पहुँचे, बोले—'आप यहाँ हैं, मैं आपके घर गया था।'

'मैं तो आपका ही इन्तजार कर रहा था।'

'अच्छा ! ठहरिये, ज़रा मैं निश्चिन्त हो लूँ और छाता को कोने में रख, किताब-कापी को झरोखे पर रख कर एक बार मेरी ओर झांक कर देखा, फिर ताला खोल कर अन्दर घुसे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने गिरजा से पूछा—'ताला लगा कर बाहर जाते हैं ?'

'हाँ, सभी घर में ताला लगा रहता है, केवल यह कोठरी मेरे लिये खुली रखते हैं।'

'चाभी तो तुम्हें दे देना चाहिए।'

'उनकी खुशी।' उसने एक लम्बी निःश्वास ली।

सोचा, गिरजा पर सुबोध बाबू का विश्वास नहीं, यह कैसी विडम्बना है।

किवाड़ में ताला लगा कर सुबोध बाबू आये और ठोर पटपटा कर बोले—'आप कब से यहाँ बैठे हैं ?'

'यही थोड़ी देर होती है, आपको क्या हमसे कोई काम था ?'

नहीं यों ही, सोचा मुलाकात करता चलूँ।'

कुछ देर तक बात होने के बाद बाहर आया तो सुबोध बाबू साथ आये। बोले—'क्या कहती थी ?'

'क्या कहेगी बेचारी!'

कुछ देर तक चुपचाप चलने के बाद बोले—'आस-पास के आदमी बड़े गुण्डे सब हैं, कहता हूँ, झरोखे पर खड़ी मत होना तो मानती ही नहीं उल्टे मुझ पर गुस्सा हो जाती है। बताइये, इसमें मेरा क्या दोष है ?'

मैं खिन्न-सा हो उठा—'आप भी अजीब आदमी हैं ? झरोखे पर खड़ा रहने से कोई क्या कर लेगा। गिरजा वैसी नहीं है।'

ठोर पटपटा कर बोले—'सो तो है, पर जमाना ठीक नहीं।'

'सब ठीक है, आप अपना मन स्वच्छ रखिये, उस पर विश्वास कीजिये, उसे अपना आदमी समझिये।'

'तो क्या मैं उसे पराया समझता हूँ ?' और व्यग्रता से उनके ठोर पटपटा उठे। गौर से मेरी ओर देखा।

मैं चुप रह गया। ठोर पटपटा कर कुछ रेघा कर वे बोले—'आप भी उसी का पक्ष लेते हैं! न मालूम क्यों ?'

मेरा मन क्षुब्ध हो उठा—'आपका दिमाग कुछ खराब हो गया है। जाइये, मैं आपसे बात करना नहीं चाहता।' और मैं तेजी से बढ़ गया। गिरजा का मैंने यह क्या किया, उसे उद्धार करने के बदले तो और कीचड़ में फँसा दिया।

आकर बैठा ही था कि सुबोध बाबू भी आकर बैठ गये। बोले—'आप मेरी तरफ तो देखते ही नहीं, कितने मुश्किल से रुपये कमाता हूँ, क्या कम बोझ आ पड़ा है मुझ पर।'

'पत्नी बोझ होती है ?'

'बोझ नहीं होती है ?' उनकी आँखें मिटमिटा उठीं, ठोर पटपटा गये—'आपका विवाह नहीं हुआ है इसलिये...।'

'तो कौन-सा उपकार करते हैं उसका ? कुछ पैसे तक नहीं देते हैं उसके हाथ में!'

'पैसे से उसे क्या जरूरत, जो जरूरत होगी मैं ला दूँगा। खाना-पीना तो सब मिल ही जाता है।'

'वही जब आते हैं तो घर से ताला खोल कर रसोई का सामान देते हैं तो खाना बनाती है। तेल तक आप कमरे में बन्द रखते हैं, क्या यही आप उसे अपना समझते हैं ? ऐसा कि आपको उस पर विश्वास तक नहीं, छिः...।'

सुबोध बाबू चुप रहे, फिर गौर से मुझे देखकर ठोर पटपटा कर बोले—'सब तो उसी का है, पर डरता हूँ कि खर्च ठीक से नहीं चला सके तो भूखों मरना पड़े...।'

'मैं खूब समझता हूँ कि क्या बात है, दलील देने की जरूरत नहीं। छिः आप समझ सकते कि आप को वह मोती मिला है जिसके लिये दुनिया तरसती है।' और मैं उनसे पिंड छुड़ाने के लिये किवाड़ बन्द कर चला गया।

गिरजा की गृहस्थी को तो किसी प्रकार व्यवस्थित ही करनी पड़ेगी। नारी का जो अधिकार है उसे दिलाना ही पड़ेगा।

चार रोज बाद जब सुबोध बाबू के यहाँ गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो ताला लगा देखा। निराश हो लौट ही रहा था कि झरोखे से गिरजा को झांकते देखा।

'यह क्या, बाहर ताला लगा है ?'

'हाँ कैद हूँ। डर है कि कोई मुझे लेकर भाग न जाय। तीन रोज से ताला लगा देते हैं, झरोखे में भी कांटी ठोक दिये थे पर आज मैंने तोड़ कर खोल दिया।'

'अजीब आदमी हैं।' मन क्रोधित हो उठा।

वह बोली—'मोहन को देखा है उधर कहीं ?'

'नहीं तो।'

'उसे बाहर कर ताला लगा देते हैं। न मालूम कहाँ भटक रहा होगा। उससे भी बातें करने का मौका नहीं देते, भूत की तरह अकेली रहती हूँ।'

कुछ देर तक बात-चीत कर उसे ढाढ़स बँधाया फिर उसके लिये अपने पसन्द की जो साड़ी लायी थी, उसकी ओर बढ़ा दिया।

साड़ी के पार को स्पर्श कर वह बोली, 'इसे अपने पास ही रख दीजिये, जब जरूरत होगी तो मँगा लूँगी।'

न मालूम क्यों मैं उससे अधिक जिद न कर सका और चला आया। गिरजा की प्रत्येक बात हृदय में चुभ रही थी। सुबोध से मिल कर मैं उसे खूब खरी-खोटी सुना देना चाहता था।

[४]

कुछ दिन बाद सुबोध बाबू के यहाँ गया। वे आंगन में बैठे कनैल के पेड़ के नीचे का चबूतरा साफ कर रहे थे। सोचा, पहले हंस कर ही बात करनी चाहिए। बोला—'देखता हूँ, बड़ा जुट गये हैं काम में ?'

उन्होंने मुझे बड़ी तीक्ष्ण दृष्टि से देखा, फिर बोलने के प्रयास में एक पल आँखें मूँद गयीं, ठोर पटपटा कर बोले—'शर्म नहीं आती आपको ?'

मैं भौंचक्का-सा उनका मुँह देखने लगा—'क्यों क्या हुआ ?'

'आपको और कोई नहीं मिला था फोर ट्वेंटी करने के लिये ?'

'पहले बताइये तो बात क्या है ?'

'भाग गई, तभी तो मैं उतना सतर्क रहता था।'

'ऐसा कभी नहीं हो सकता।'

'यह सब ड्रामा अपने पास ही रखिये और फौरन चले जाइये यहाँ से, नहीं तो ऐसा कुदाल मारूँगा कि भेजा फूट जायगा...।'

जानवर से कौन मुँह लगाये, चला आया। सीधे गिरजा के घर पर आया, मुझे विश्वास था कि वह ऐसा नहीं करेगी। दरवाजे में ताला नहीं लगा था, भीतर घुस गया। गिरजा झाड़ू दे रही थी। मुझे देखते ही रो पड़ी।...क्या-क्या न हालत हुई उसकी, चोर, लुच्ची, आवारी सब बनी। कभी चैन नहीं आया, मार भी लगी, विवाह का सब हौसला पूरा हो गया...।'

मोहन बाहर से जब आया तो मुझे देखकर गरज उठा—'उस साले का मैं भेजा फोड़ दूँगा, मैं उसकी जान लेकर दम लूँगा, उसने मुझे क्या समझ लिया और न मालूम क्या-क्या बकता हुआ चला गया।

मेरा हृदय विदीर्ण हो रहा था। उसकी विडम्बना का कारण मैं ही तो था। उसके आंसू पोंछते हुए उसे सांत्वना देने लगा।

वह फूट पड़ी। मैं जानती थी कि मुझे कोई नहीं पूछेगा, दुनिया में मेरे लिये कहीं जगह नहीं, पर एक खेल होना था, सो हो गया।'

हृदय चीत्कार कर उठा, उफ! तुमने इसे बरबाद कर दिया। दृढ़ता-से मैं बोल उठा—'एक तमाचा मुझे और लगाने दो।'

'अब किसे, मुझे ?'

मैं उसे कहने जा रहा था, कि मैं उसका दूसरा विवाह कर दूंगा किन्तु उसके करुण प्रश्न सुन कर मैं अवाक् रह गया।

नोट—पाठक कृपया यह पूछने की चेष्टा न करें कि मैं किससे उसका विवाह करना चाहता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना घर

लेखक, श्री अश्विनीकुमार सक्सेना

पात्र—

पुरुष

१—रमेश, ३० वर्षीय युवक। २—डा० सिन्हा, वयस ६० वर्ष। ३—चुन्नू, रमेश का पुत्र वयस पाँच वर्ष।

स्त्री

१—उषा, रमेश की पत्नी वयस २५ वर्ष। २–विमला, उषा की सहपाठिनी।......

दृश्य पहला

[स्थान–रमेश का शयनागार, समय–सुबह के सात]

[गहरी नींद में सोये हुए रमेश के खर्राटों की आवाज आती है,......फिर बिल्लियों के गुर्राने और क्रमशः लड़ने की आवाज तीव्रतर होती जाती है,......उषा के भारी और तेज कदमों की आहट और ललकार कर बिल्लियों को भगाने का प्रयत्न, खुर्राटों की आवाज सहसा बन्द हो जाती है।]

रमेश—(जाग कर क्रोध में) अरे, यह सुबह-सुबह क्या तमाशा मचा रखा है? जरा चैन से सोने तो दो!

उषा—ये बिल्लियाँ लड़ रही थीं, इससे...।'

रमेश—तो कौन भूकम्प आ गया?

उषा—इनका घर में लड़ना अच्छा नहीं होता।

रमेश—रोज ही, कारण तो कुछ न कुछ मिल ही जाता है, लो! मत सोने दो।......(सिगरेट का डिब्बा खुलने की आवाज) उह, लो आज सिगरेट ही नहीं है। (जोर से डिब्बा फेंक देता है) इन घरेलू झगड़ों में कुछ याद नहीं रह पाता।

[बरतनों के खड़कने और स्टोव्ह जलने की आवाज होती है, उषा नाश्ता तैयार करने लगती है, रमेश के कुल्ला करने और पानी गिरने की आहट]

रमेश—हूँ! आज भी तौलिया जगह पर नहीं है। अब यहाँ टपकते हाथ-मुँह लेकर खड़ा रहूँ, घंटे भर!

उषा—(भारी कदमों में चल कर) अभी लाती हूँ। आप शायद उसे बाहर छोड़ आये थे।

रमेश—और क्या? मैं ही तो सब कुछ भूलता हूँ।...हूँ, तुम उधर तौलिया ही ढूँढ़ती रहो, तब तक चाय का हवन हुआ जाता है।

[उषा भाग कर आती है।]

उषा—ये लीजिये। (फिर भाग कर स्टोव्ह के पास जाती है, गर्म बर्तन हाथ से गिरता है। वह जल कर चीख उठती है।)

रमेश—क्या हुआ? जल गयीं! और क्या करोगी? तुम्हारा काम ही ऐसा होता है। मुँह क्या देख रही हो? जाकर मलहम लगा लो नहीं तो फफोले पड़ जायंगे। चाय तो आज तकदीर में है ही नहीं।

उषा—कोई ज्यादा नहीं जली हूँ। जरा ठहरिये मैं अभी दूसरा गर्म किये देती हूँ।

रमेश—बेकार बैठा हूँ न?

उषा—आज थोड़ी देर ही हो जायगी, तो क्या होगा?

रमेश—(झुँझला कर) नहीं, मैं नहीं रुक सकता।

[पदचाप–रमेश जाता है।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उषा—(बड़बड़ाती है।) वैसे तो आप अभी तक सोकर भी नहीं उठते थे, लेकिन आज पांच मिनट के लिए भी नहीं रुक सकते।

[कुछ क्षण स्तब्धता, घड़ी टन्-टन् नौ बजाती है।]

चुन्नू—(आकर) अम्मा; बाबू जी ने कहा है कि आज साढ़े नौ बजे खाना खायगे।

उषा—साढ़े नौ बजे! लेकिन नौ तो बज चुके। आधे घंटे में क्या-क्या कर सकूँगी। (बरतनों के खड़कने की आवाज) बुलाओ खाना तैयार है।

रमेश—(सी-सी फू-फू करते हुए) हजार बार कहा कि खाने के पहले जरा दाल-तरकारी ठंडी कर दिया करो।...और आज दाल में नमक तो शायद दो-चार दिन का इकट्ठा ही डाल दिया है।...और ये अधपकी रोटियाँ...अरे! (क्रोध में) ये क्या है?

उषा—(सहम कर) कहाँ?

रमेश—यह! साढ़े चार हाथ लम्बा यह बाल नहीं दिखाई देता। (थाली फेंक देता है।) इस घर में एक दिन भी चैन की रोटी खाना हराम है।

उषा—आज कसूर हो गया है। जरा माफ कीजिये, अभी दूसरा......।

रमेश—यह बात क्या सिर्फ आज की है। कुछ नहीं बस चुप रहो। (कुल्ला करता है।)...(पद-चाप)...अब यह मैले कपड़े और कितने दिन पहनने पड़ेंगे?

उषा—धुले कपड़े उधर दूसरी खूँटी पर टँगे हैं।

रमेश—(खीझ कर) जी,...लेकिन इनमें बटन कौन फरिश्ता आकर लगा जायगा?

उषा—अभी लीजिये।

रमेश—बस रहने दीजिये। अपना काम अब मैं खुद किया करूँगा।

[दूर से चुन्नू की आवाज, 'बाबू जी-बाबू जी' क्रमशः पास आती-जाती है, साथ ही पदचाप।]

चुन्नू—(आकर) बाबू जी श्याम पतंग उड़ा रहा है। हम भी पतंग लेंगे। बाबू जी...।'

उषा—इधर आ-इधर आ। मैं तुझे पतंग ले दूंगी। बाबू जी अभी दफ्तर जा रहे हैं।

चुन्नू—(मचल कर) हम नहीं! हम अभी लेंगे।...बाबू जी, बाबू जी...।

रमेश—(चाँटा मार कर) ले पतंग, मर! (चुन्नू चीखता है) रोयेगा? (घूँसा मार कर) ले, और रो! ले-ले (धमाधम पीटता है। चुन्नू चीखता है।)

उषा—अरे-अरे! यह क्या करते हो! कसूर तो सब मेरा है। वह बिचारा क्या समझता है?

रमेश—(क्रोध में) नहीं,...ब कसूर मेरा है जो अपना काम खुद नहीं करता। आप तो बच्चे तक नहीं सम्भाल सकतीं। (खट्-खट् जाता है।)

[तीस सेकेन्ड तक स्तब्धता रहती है, फिर उषा धीमी और करुण आवाज में पत्र पढ़ती है।]

उषा—प्रिय रेखा,

सुखी रहो! पत्र तुम्हारा मिला, जवाब देर से दे रही हूँ, क्योंकि फुरसत नहीं मिलती। आज समय मिल गया है, क्योंकि वे गुस्से में थाली फेंक कर चले गये हैं और मैं भी भूखी बैठी हूँ। सुबह से शाम तक ऐसी ही किटकिट है। जीवन कितना कड़वा हो गया है। इन दिनों से जब मैं उन सुनहरे दिनों का मिलान करती हूँ, जब कि मैं अर-मान भरी दुलहिन बनी थी...।

उषा—(करुणा से) और...और आज सात साल के बाद शायद ही कोई दिन ऐसा जाता होगा, जब मेरी आँखें न बरसती हों। यह है, मेरे आत्म-समर्पण का प्रतिदान; मेरी सहनशीलता का पारि-तोषिक! (विह्वल होकर) मैं क्या करूँ?...कुछ समझ में नहीं आता। (उदासीनता से) किस्मत है। शायद वे आ गये। (पदचाप) बस अब फिर।

—तुम्हारी उषा!

रमेश—अरे सुनती हो? मुझे आज अभी आठ की गाड़ी से दौड़े पर जाना है। उसका इन्तजाम जरा जल्दी कर दो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उषा—लेकिन···लेकिन आज आप न जायें तो ठीक रहे। क्योंकि...।

रमेश—नहीं! मुझे आज जरूर जाना है, सरकारी काम नहीं रुक सकते।

उषा—लेकिन बात तो सुन लीजिये। फिर आप जैसा ठीक समझें कीजिये।

रमेश—(कठोरता से) जी, ..कहिये।

उषा—चुन्नू को तेज बुखार है। मुझे अकेले डर लगेगा।

रमेश—हूँ...पानी में खेलता रहा होगा।

उषा—कहाँ?···दो रोज से तो मैं उसके हाथ-मुँह तक नहीं धुलाती।

रमेश—तो एक कमीज पहने बाहर हवा में फिरता रहा होगा। सब तुम्हारी लापरवाही है।

उषा—नहीं, आज आपके आफिस जाने के बाद वह बड़ी देर तक रोता रहा और शायद इसी से......।

रमेश—बेशक! कसूर तो सब मेरे ही होते हैं, कहाँ है? टैम्परेचर ले आओ?

उषा—जी, १०२'५ डिग्री है।

रमेश—उह बच्चों के लिए यह मामूली बुखार है।···लेकिन देखो, मैं नहीं रुक सकूँगा। डाक्टर सिन्हा से कहता जाऊँगा। वह देख जायगा।

उषा—मगर यदि आप आज न ही जायें तो क्या हो जायगा?

रमेश—(झुँझला कर) फालतू बहस मत करो सरकारी काम नहीं रुक सकते।

उषा—अगर आप सरकारी काम में मेरी और बच्चों की देख-भाल नहीं कर सकते, तो मुझे मैके भेज दीजिये।

रमेश—देखो तुम फिजूल मेरा गुस्सा बढ़ा रही हो।

उषा—नहीं, मैं खूब सोच-समझ कर कह रही हूँ।

रमेश—(क्रोधावेश में) ऐसा!..तो तुम जब जी चाहे जा सकती हो। मुझे तुम से कोई आराम नहीं। लच्छू बिस्तर बाँधो, इस घर में शान्ति तो नाम को भी नहीं है।

[बाक्स बन्द करता है, पदचाप और तांगा जाने की आहट..कुछ देर स्तब्धता रहती है। उषा सिसकती है।]

उषा—(विलख कर) चुन्ने बेटा—ऽऽऽ।

चुन्नू—ऊँ-ऊँ-ऊँ, नहीं-नहीं, हम तुमसे नहीं बोलते। तुम हमको मारते हो।

उषा—नहीं बेटा, आँखें खोलो। देखो मैं हूँ, तेरी अम्मा।

चुन्नू—अम्मा! अम्मा हम बाबू जी से कभी नहीं बोलेंगे। वे हमें मारते हैं।

उषा—हाँ बेटा, मत बोलना।

चुन्नू—हम अब बाबू जी को घर में नहीं आने देंगे।

उषा—(सहसा गम्भीर होकर) घर में कैसे नहीं आने दोगे बेटा? ये घर तो उनका ही है।

चुन्नू—उनका घर है? तो हमारा घर कहाँ है?

उषा—तुम बड़े होकर अपना घर बनवाना।

चुन्नू—अच्छा! हम खूब अच्छा घर बनवाएंगे। तुमको ले चलेंगे। बाबू जी को नहीं ले चलेंगे।

उषा—(सहम कर) नहीं बेटा, ऐसा नहीं। बाबू जी तुम्हें प्यार भी तो करते हैं।

चुन्नू—कहाँ करते हैं? दिवाली पर किया था, तब से फिर कहाँ किया? अम्मा, तुम तो रोज प्यार करती हो।

[बाहर से किसी के आने की आहट होती है।]

उषा—कौन है?

डाक्टर—(आकर) मैं हूँ डाक्टर सिन्हा।··· क्यों चुन्ने तुम्हें क्या हो गया?···तुम बोलते क्यों नहीं? अरे! इसे तो काफी तेज बुखार है। बेटी, तुम क्या अकेली ही हो?

उषा—जी हाँ, डाक्टर साहब।

डाक्टर—अरे-रे! ऐसी हालत में रमेश को दौड़े पर नहीं जाना चाहिए था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उषा—(करुणता से) पुरुषों के हृदय कहाँ होता है, डाक्टर साहब।

डाक्टर—अरे बेटी! तुम तो आज बहुत ही उद्विग्न दिखाई देती हो। चुन्नू अच्छा हो जायगा, कोई विशेष बात नहीं है। ये दवा है, दो-दो घंटे बाद देती जाना। अगर जरूरत पड़े तो बुला भेजना पास ही तो रहता हूँ। अरे तुम रो रही हो!

उषा—(सिसकती है) नहीं डाक्टर साहब।

डाक्टर—मालूम होता है, कि आज कुछ विशेष बात हो गई है। देखो बेटी, वैसे तो किसी के दाम्पत्य जीवन में दखल देना अनुचित है, लेकिन एक बुजुर्ग की हैसियत से मैं तुम्हें सीख देता हूँ।... मैं कई आदर्श पत्नियों को जानता हूँ, जिन पर उन के पति अनुचित ज्यादती करते हैं; यद्यपि वे पुरुष आचरण से शुद्ध और स्वभाव से अच्छे ही होते हैं इसमें कारण क्या होता है? जानती हो? इसका कारण होता है, पत्नी का पूर्ण आत्म समर्पण। पति उसे क्रमशः झुकाता जाता है और वह सरला पीड़ा और अपमान सह कर भी मौन झुकती जाती है। उधर पति की आदत पड़ती जाती है और एक समय ऐसा आ पहुँचता है, जबकि वह बिना किसी कारण के बहुत ही अनुचित व्यवहार भी स्वभावतः करने लगता है। पत्नी उसके सामने एक प्राणहीन मशीन रह जाती है, जिसकी कल वह इच्छानुसार घुमाया करता है।...अब बताओ कसूर किसका है? अगर पत्नी सतर्कता से समय पर थोड़ा कठोर होकर भी अपना स्थान बनाये रखे तो पति आगे नहीं बढ़ने पाता, यह मेरा निजी अनुभव है। हो सकता है गलत भी हो। अच्छा मैं चलता हूँ। रमेश को भी समझाऊँगा। (जाता है।)

उषा—(करुणता से) और क्या ?...पत्नी का दोष ही तो बताओगे डाक्टर।...आखिर तुम भी तो पुरुष ही हो।...पत्नी समय पर कठोर होकर सुधार सकती है...क्यों नहीं ?...लेकिन वह कठोर होगी किस बूते पर? जीविका का आलम्बन उसे कब तनने देगा ?...आज ही उन्होंने तो कह दिया कि उन्हें मेरी जरूरत नहीं है। अपना काम वे खुद कर सकते हैं। लेकिन...(सिसक कर) लेकिन क्या मैं भी कह सकती हूँ कि मुझे उनकी जरूरत नहीं है? क्या मैं भी...मैं भी उन्हें ठुकरा कर त्याग सकती हूँ? तो...तो क्या शेष जीवन भी इसी तरह घुल-घुल कर काटना होगा? (फफक कर रोती है।) मेरी आँखों के सामने मेरे कलेजे के टुकड़े को बेकसूर पीटेंगे और मैं चुपचाप देखूँगी।...रोना भी अपराध होगा। (सहसा गम्भीर होकर) नहीं-नहीं! या तो मैं गृहलक्ष्मी बन कर रहूँगी, या बिलकुल नहीं।

चुन्नू—(कराह कर) अम्मा!

उषा—(कोमलता से) हाँ, बेटा?

चुन्नू—(रोकर) बाबू जी मारते हैं।

उषा—नहीं बेटा, कैसे मारेंगे? अपने लाल को अब नहीं पिटने दूंगी।

चुन्नू—नहीं-नहीं! हम बाबू जी के साथ नहीं रहेंगे।

उषा—अच्छा मत रहना।

चुन्नू—अपने घर चलो।

उषा—(चौंक कर) अपने घर? (सोचती हुई) अपने··घर! (दृढ़ता से) अच्छा बेटा, अपने ही घर ही चलेंगे। जरूर चलेंगे। तुम अच्छे हो जाओ फिर जरूर चलेंगे।

[स्तब्धता]

दृश्य दूसरा

[स्थान—कन्या पाठशाला...]

चपरासिन—हेड मिस, बाहर एक उषा देवी आपसे मिलना चाहती है।

हेड पा०—भेजो।.....

उषा—नमस्ते!

हेड पा०—नमस्ते! कहिये मैं आपकी क्या सेवा कर सकती हूँ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उषा—क्या आपकी पाठशाला में पाठिका की जरूरत है ?

हेड पा०—अफसोस अभी तो कोई नहीं। ... मुझे ऐसा लगता है कि मैंने आपको पहले भी कहीं देखा है। आपका शुभ नाम ?

उषा—उषा सक्सेना।

हेड पा०—एँ उषा सक्सेना ? क्या आप लखनऊ में पढ़ती थीं ?

उषा—जी।

हेड पा०—ओ माई डार्लिङ्ग उषा ! तुम मिस्टर विमल को इतनी जल्दी भूल गयीं ?

उषा—नहीं विमला मैं... ।

हेड पा०—(बनावटी क्रोध में) हूँ !

उषा—(हंस कर) अच्छा भाई मिस्टर विमल मैं तुझे पहचान तो गई थी; लेकिन तेरी याददास्त आजमा रही थी।

विमला—बेशक जवाब तो माकूल दिया। लेकिन तू इतनी जल्दी बूढ़ी कैसे हो गयी ?

उषा—जरा बीमार रहती हूँ।

विमला—एँ ! ..पति के स्नेह का अमृत तुझे अजर न कर सका ? तू तो कहा करती थी कि पति ही स्त्री का ईश्वर है और उसका घर स्वर्ग।

उषा—हाँ विमल, कहा तो करती थी। लेकिन अब मुझे मालूम हो गया कि पुरुषों के विषय में तेरी धारणा निर्मूल नहीं थी।

विमला—तो शायद आपके पतिदेव ने आपको निकाल दिया है और आज आप जीविका की खोज में यहाँ आयी हैं।

उषा—(क्रोध में) विमला, तुम मुसीबत में मेरी खिल्ली उड़ा रही हो। अनुमान के आधार पर कुछ भी कहती हो। उन्होंने मुझे नहीं निकाला है। मैं ही निकलना चाहती हूँ। ,

विमला—अरे उषा ! तू नाराज हो गयी। मैं तेरी नहीं एक सार्वजनिक गलत धारणा की खिल्ली उड़ा रही थी। लेकिन हुआ क्या ? यह तो बता।

उषा—मजाक उड़ाने के लिए कुछ भी न बताऊँगी। पहले यह बता कि अपने स्कूल में मेरे लिए जगह निकाल सकेगी या नहीं।

विमला—अभी मैं अकेली ही हूँ। फिलहाल तू मेरे ही क्वॉटर में आ जा। लेकिन यह तो बता कि हुआ क्या ? तेरे 'वे' कहाँ हैं।

उषा—अभी तो दौड़े पर बाहर गये हैं। शायद परसों लौटेंगे। मैं तो कल ही आ जाती हूँ उनके आने से पहले। बात यह हुई कि......।

—ड्राप—

दृश्य तीसरा

ध्वनि—[रमेश का तांगा आकर खड़ा होता है। सामान उतारा जाता है।]

रमेश—(आश्चर्य से) एँ ! घर में ताला ! शायद सवारी कहीं बाहर गयी है, यह मालूम होते भी कि मैं आज आ रहा हूँ। लेकिन कब तक बाहर खड़ा रहूँगा ? ताला तोड़ना ही पड़ेगा।

ध्वनि—[ताले पर पत्थर की चोटें पड़ती हैं। दरवाजा खुलता है, सामान घसीट कर रखने की आवाज।]

रमेश—(प्रवेश करके) अरे ! इस घर में तो जैसे कई दिनों से कोई नहीं है। आखिर बात क्या है ?...और यह पत्र ! (पत्र पढ़ता है।)

प्राणधन,

कभी तुम्हें इस प्रकार लिखते रोमांच हो आता था। लेकिन आज इस शब्द का थोथापन मेरी धारणा की खिल्ली उड़ा रहा है। मैं अपने बच्चों सहित तुम्हारा घर छोड़ कर जा रही हूँ। मेरे सहवास में आपका जीवन कड़वा हो गया है। आप को प्रसन्न रखना मेरी काबिलियत के बाहर है।... आपको मेरी जरूरत नहीं है। ऐसी हालत में मैं आप के सुख की बाधा और भार बन कर नहीं रहना चाहती, बस !

कभी थी आपकी—

'उषा'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनश्च—हाँ, मैं यह कदम खूब सोच-समझ कर ही उठा रही हूँ और मेरे इस कार्य से आपके कुल को कलंक नहीं लगेगा। मैं स्थानीय कन्याशाला में पाठिका नियुक्त हो गई हूँ।

[एक ऊँचा महल अर-रा कर गिरने की आवाज—रमेश के उन्माद के नष्ट होने की ओर इङ्गित करती है।]

रमेश—(गम्भीर होकर) तो तुम चली गयीं··· (खीज कर) चली गयीं तो जाओ। हाँ-हाँ, जाओ। लेकिन (फिर गम्भीर होकर) लेकिन उषा क्यों ?··· ऐसी कौन-सी बात हो गई ?···क्या बक डाला था उस दिन ?

[याद आती है। रिकार्ड बोलता है ?]

प्रति ध्वनि—हूँ, तुम उधर तौलिया ही ढूँढ़ती रहो उधर दूध का हवन हो जाता है। बर्तन गिरना चीख···।

रमेश—अरे, वह जल गयी थी।

प्रतिध्वनि—जनाब यह साढ़े चार हाथ लम्बा बाल! थाली गिरने की आवाज···। (चुन्नू) हम नहीं, हम पतंग अभी लेंगे। बाबू जी। (रमेश) ले पतंग। (चांटा) मर। (धमाधम पीटने की आवाज।)

रमेश—(चीख कर) ओफ बस! बेशक मैंने कसूर किया है—क्रूरता की है। पर क्यों ?···(सोच कर) पर क्यों ?···मैं खुद ही नहीं जानता, क्यों ? लेकिन मेरा दिल चीर कर देखो उषा! मैं तुम्हें चाहता हूँ और बहुत चाहता हूँ। मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता और मैं जानता हूँ, तुम भी मेरे बिना नहीं रह सकतीं। तुम लौटोगी उषा। मैं लौटाऊँगा तुम्हें।

[तेज कदमों की आहट दूर होती जाती है।]

दृश्य चौथा

[स्थान–विमला का घर···।]

विमला—कैसी तबीयत है उषा ?

उषा—अच्छी है विमला। आज···

विमला—हाँ, आज क्या ?

उषा—आज वे लौट आये होंगे।

विमला—तो क्या ?

उषा—(करुणता से) विमला मेरा दिल टूट रहा है। कोई कहता है··उषा तूने अच्छा नहीं किया।

विमला—तो वहीं सड़ती क्यों न रही ? यही तो स्त्री की कमजोरी है, जो अत्याचारी पर भी कठोर नहीं हो सकती।

उषा—नहीं, 'वे' अत्याचारी नहीं हैं विमला मैं उनके दिल की हालत जानती हूँ।

विमला—तो शायद यह सब शैतान ने कराया ?

उषा—यही तो मैं नहीं समझ पाती।

विमला—समझने को क्या है ? तुझसे दिल भर गया तो कहीं और आँखें लगा लीं। अभी कुछ ही दिन बाद सुन लेना कि किसी दूसरी ने तेरी जगह ले ली।

उषा—(गर्म होकर) बस विमला। एक दम असम्भव। 'वे' उस प्रकार के आदमी नहीं हैं। मैं उनकी नस-नस पहचानती हूँ। 'वे' अगर गुणवान नहीं हैं तो दुर्गुणों से तो बहुत दूर हैं।

विमला—जो अपने आश्रितों और प्रिय जनों पर लगातार अत्याचार करता है, उसे क्या आदमी कहूँ ? तू तो इतना मरती है, भला 'वे' भी तुझे चाहते हैं ?

उषा—चाहते तो बहुत हैं विमला! मेरी बीमारी में उन्हें रात-रात भर नींद नहीं आती। सिर्फ गुस्से में सब कुछ भूल जाते हैं। इन घरेलू झंझटों ने उन्हें चिड़चिड़ा कर दिया है।

विमला—बस-बस रहने दे। जब से आई है, तब से यही रोना। ज्यादा दिल टूटता है, तो वापिस लौट जा। पैरों पर नाक रगड़ना। शायद मान जायँ।

उषा—अब तो उसका समय भी निकल गया जो होना होगा, सो होकर ही रहेगा। चिन्ता बस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही है कि उस दिन भूखे दौड़े पर गये थे। कहीं तबीयत खराब न हो गई हो।

[चुन्नू अम्मा-अम्मा पुकारता आता है।]

चुन्नू—अम्मा, बाबू जी आ रहे हैं।

उषा—एँ ! कहाँ हैं।

चुन्नू—वो देख, वो दूर।

उषा—विमला अब ?

विमला—अब क्या, जूतों पर नाक रगड़ ले, और गाय के समान वापिस चली जा। यहाँ अपने सामने तो तुझे नहीं पिटने दूँगी। आगे की तू जान।

उषा—विमला तेरे पैरों पड़ती हूँ। अभी ये ताने वगैरह छोड़। मेरा दिल धड़क रहा है। तू ही बता क्या करूँ। (घबड़ाती हुई) जल्दी बता विमला ! अरी कुछ तो बोल।

विमला—अरी तो मरी क्यों जाती है ? चुन्नू को लेकर भीतर चली जा। इन्हें मैं देखती हूँ।

उषा—अच्छा मैं जाती हूँ; लेकिन···

विमला—हाँ-हाँ जल्दी बोल। मुझ पर तो जुनून-सा चढ़ रहा है।

उषा--तभी कहती हूँ कि जरा नरमाई से पेश आना। सच विमला ! वे बुरे नहीं हैं।

विमला—अच्छा जा-जा।

[कदमों की आहट नजदीक आती है।]

विमला—(कठोरता से) कहिये, आप यहाँ किसे घूर रहे हैं ?

रमेश—कुछ नहीं कुछ नहीं ! मैं जरा···

विमला—लेकिन आप जानते हैं यह लड़कियों का स्कूल है ? फिर क्या मतलब है आपका ?

रमेश—जी, मैं जरा यहाँ की पाठिका उषा देवी से मिलना चाहता हूँ।

विमला—आपका नाम ? आपका उनसे सम्बन्ध ?

रमेश—जी मैं उनका निकट सम्बन्धी हूँ।

विमला—फिर भी ?

रमेश—जी वे मेरी पत्नी हैं।

विमला—अच्छा तो आप ही उनके पति हैं। बड़ी खुशी हुई आपसे मिल कर। लेकिन आप अभी भी उन्हें अपनी पत्नी मानते हैं ?

रमेश—तो आप सब जानती हैं।

विमला—(कठोरता से) जी, मैं यहाँ की हेड पाठिका हूँ। उनसे मिलने के लिए आपको मेरी अनुमति लेनी होगी। कहिये आपका उनसे क्या काम है ?

रमेश—जी, कुछ व्यक्तिगत बातें ?

विमला—यूँ कहिए ना कि एक जबरदस्त फटकार देनी है। मुंह पर थूकना है और जलील करने के बाद अकड़ कर वापिस लौट जाना है।

रमेश—नहीं-नहीं देवी जी, आप क्या कह रही हैं ?

विमला—क्यों नहीं ? स्वामी को अपने आश्रितों के साथ कैसा भी व्यवहार करने का पूर्ण अधिकार होता है। फिर क्यों कसर की जाय ?

रमेश—देवी जी मैं तो ?

विमला—लेकिन आप भूलते हैं, रमेश बाबू। वे आपकी दासता का बन्धन तोड़ चुकी हैं। और कानून उनकी हर तरह से रक्षा करेगा।

रमेश—मानता हूँ देवी जी. लेकिन मुझे तो उनसे सिर्फ दो बातें करनी हैं और वह भी उनकी अनुमति के बाद ही।

विमला—लेकिन मैं इस समय अनुमति नहीं दे सकती।

रमेश—कारण ?

विमला—वे बीमार हैं।

रमेश—(चौंक कर) क्या हो गया उन्हें ?

विमला—डबल निमोनियाँ। लेकिन उनकी बीमारी से आपको क्या सरोकार ? वे न भी रहें तो आपको क्या परवाह ? आपको भेड़ों की क्या कमी ?

रमेश—(उत्तेजित होकर) देवी जी ! (करुणता से) मैं अपराधी हूँ। मनुष्य ही तो हूँ। गलती होती ही है, लेकिन खून पीने वाला राक्षस नहीं। मुझ में भी कोमल हृदय है। काश मैं दिखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता कि इसमें 'उषा' के लिए कितना प्यार है ? लेकिन आज इसे कौन मानेगा ?

विमला—यह नाटक रहने दीजिये। क्या आप अपने अनुचित व्यवहार का कुछ कारण भी बता सकते हैं ?

रमेश—वह मैं खुद ही नहीं जानता। मुझ पर न मालूम कौन-सा भूत सवार था, जिसने मुझे अन्धा, बहरा और पागल बना दिया था। और—

विमला—और उषा की मौन सहनशीलता ने आपको बर्बर बना दिया। उसके कलेजे को दिन रात छेद-छेद कर भूनने में आपको मजा आने लगा। उसकी आहों और चीत्कारों का कोई मूल्य आपके लिए नहीं रह गया। उसका खून उबालने !

उषा—(चीख कर) विमला ! बस करो।

रमेश—नहीं उषा ! कहने दो और तुम भी कहो जी भर कर कहो। मैं इसी लायक हूँ।

विमला—तू बाहर क्यों आई उषा ? जब तूने मेरी आज्ञा ही नहीं मानी, तो मैं क्यों बीच में पड़ूँ मैं यह चली। आ चुन्नू। (पदचाप)

उषा—विमला, ठहर।

विमला—बस, अब नहीं।

[कुछ क्षण शान्ति]

रमेश—उषा, मेरी रानी ! मैंने तुम पर बड़े अत्याचार किये हैं। तुमने जो कुछ भी किया, बहुत अच्छा किया। मैं बेहोश नीचे फिसल रहा था तुम ने यह धक्का देकर चैतन्य कर दिया। अब और नहीं फिसलूँगा। (आश्चर्य से) तुम रोती हो उषा मैं रो तो नहीं सकता पुरुष जो हूँ। लेकिन तुम्हारा एक-एक आँसू मेरे तपे कलेजे पर छनक रहा है। लेकिन कुछ भी हो, आज मुझे मेरी अर्द्धांङ्गिनी उषा मिली है, जो रुष्ट हो सकती है। जो जबरदस्ती अपने अधिकार छीन सकती है। आज अँगुलियों पर नाचने वाली उषा नहीं रही। लेकिन मुझे माफ कर सकोगी उषा ? बोलो।

उषा—(सिसक कर) कसूर मेरा है। आपका इतना अपमान !

रमेश—गलत कसूर मेरा है। इसका अर्थ है कि तुमने माफ नहीं किया। क्षमाशील होकर मानवी से देवी बन कर तो देखो उषा। एक मौका तो और दो। बोलो, माफ कर सकोगी ? उँहूँ इस तरह सिर हिला कर नहीं। मुस्करा कर ! हाँ इस तरह। इन आँसुओं से धुल कर चमकती इन्द्र धनुष-सी सतरंगी मुस्कराहट ! (हँस कर) लेकिन उषा, जब तुम अपनी सभी चीजें उस घर से ले आयी थीं तो एक चीज क्यों छोड़ आयीं ?

उषा—क्या ?

रमेश—मुझे।

उषा—तब आप मेरे कब थे ?

रमेश—और अब ? (हँसता है।)

उषा—छोड़ो, वह चुन्नू आया।

चुन्नू—(आकर) क्यों बाबू जी, अब तो हम को नहीं मारोगे ?

रमेश—(हँस कर) नहीं, कभी नहीं।

चुन्न—और हमको पतंग ला दोगे ?

रमेश—जरूर।

चुन्न—तब तुमको भी अपने घर में आने देंगे।

रमेश—अच्छा !......ऐसी कुछ बात है। (हँसता है।) !! पटाक्षेप !!

जग जननी गौ.......

माता जी बचाओ गौ माता को अनेक भाँति,
क्योंकि जग जाता वह सब ही की त्राता है।

त्राता सुर-नर-मुनि-किन्नर सभी की है,
देती तक्क, दुग्ध दही चाम काम आता है।

आता है समझ में कि पालो एक-एक गाय,
एक-एक पालने से जान बच जाता है।

जाता ही नहीं है वह सृष्टि औ समष्टि की ही;
किन्तु वह माताओं की माताओ की माता है।

—कुमारी वेदवती शुक्ला, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ा बाबू

लेखक, श्री नन्दलाल गंगोपाध्याय

जानसन कम्पनी का बड़ा बाबू आज लेट! आफिस में बड़ी हलचल मच गयी। तीस वर्ष की नौकरी में यह कभी लेट नहीं हुए थे। बड़े बाबू रोज साढ़े दस बजे के कब्ल ही आते थे और अन्यान्य किरानियों को लेट दिखला कर साहब से वाहवाही लूटते थे। किन्तु आज यह खुद लेट। लेट क्या, बारह बज गये पर बड़ा बाबू का अभी तक पता नहीं। बड़े साहब भी घबड़ा उठे हैं। कारण इस तरह मुस्तैदी से काम करने वाला आदमी उन्होंने नहीं देखा है।

अन्त में बड़ा साहब दूसरे एक किरानी को उन की तलाश में भेजने की तैयारी कर रहे थे, किन्तु किरानी बेचारे भी पैसा खर्च होने के डर से (याने गाड़ी-भाड़ा) जाने में टाल-मटोल कर रहे थे। इतने में बड़ा बाबू सीधे आकर बड़े साहब के कमरे में घुसे। उन्हें देखते ही वातावरण में सर गर्मी फैल गयी।

बड़े साहब ने पूछा—'बड़ा बाबू, आज आप लेट क्यों हो गये? ह्वाट इज दी मैटर विथ यू?'

बड़ा बाबू—'जी हाँ, क्या करूँ, आज मेरा बूढ़ा नौकर मर गया। उसे बहुत छोटे से देखता आ रहा हूँ। आज बेचारा अचानक हमें छोड़ कर चला गया। इसलिये आज लेट हो गया।'

बड़े साहब ने कहा—'मालूम होता है आप नौकर को बहुत मानते थे।'

बड़े बाबू ने जवाब में साहब को बताया कि यह भारतवर्ष है। यहाँ के लोग नौकर को भी आदमी समझते हैं। वह भी हमारे परिवार का एक मूल्यवान अंग हो जाता है। इसके बाद बड़ा बाबू अपनी कुर्सी पर आ बैठे। सभी किरानी बड़े बाबू से बहुत डरते थे। केवल समीर बाबू उनसे कुछ कहने का साहस रखते हैं। बड़े बाबू के आने पर समीर बाबू ने पूछा—'बूढ़ा नौकर मरा तो आप क्या करते थे।' बड़े बाबू ने जवाब दिया—'आप क्या समझते हैं समीर बाबू, कि मैं उसकी लाश ले नदी किनारे जलाने गया था? साला बूढ़ा कल रात को मेरे यहाँ मर गया। सब काम कौन करेगा! यह भी नहीं सोचा! आज सबेरे से मैं नौकर की तलाश में परेशान हो उठा। कौन तेल लगावे, कौन पानी लावे, किस तरह मैं ठीक समय पर आफिस आता, बड़े झंझट में पड़ गया था।'

समीर बाबू ने पूछा—'तो आपको नौकर मिला न?'

...'कहाँ मिला कहाँ! आप लोग एक देख कर अच्छा नौकर खोज दीजिये न?'

अब किरानी लोग बड़े बाबू के लिये नौकर खोजने लगे ताकि वे ठीक समय पर आफिस आ सकें। आखिर एक किरानी ने एक नौकर लाकर उन्हें दिया, किन्तु वह उनके मन के मुताबिक नहीं हुआ। 'ऐसा कि आप लोग एक नौकर भी ढूँढ़ नहीं सकते।'

बड़े बाबू का क्रोध कुछ वैसा ही है। फिलहाल उस बेचारे किरानी को नौकरी जाने के डर से बड़ा बाबू के पैर में तेल लगाना पड़ रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जासूसी कहानी

सम्वाददाता

अनुवादक, डा० हरिनन्दन पांडेय

[१]

लन्दन के प्रसिद्ध जासूसी मासिक पत्र 'डिटेक्टिव' का सम्पादक, उप-सम्पादक या सम्वाददाता बनना एक गौरवपूर्ण बात समझी जाती थी; क्योंकि उस वक्त केवल यही एक ऐसा जासूसी पत्र था, जिसमें छपी रहस्य-पूर्ण रोमांचक और भेद भरी हत्याओं का सही समाचार पढ़ने के लिए जनता व्याकुल रहा करती थी। यही कारण था कि उस पत्र की लाखों प्रतियां हर माह हाथों-हाथ बिक जाती थीं।

और एक दिन जब उक्त पत्र के लिए 'एक सम्वाददाता की आवश्यकता' शीर्षक विज्ञापन छपा, तो डिटेक्टिव आफिस में भेजे गये आवेदन-पत्रों का ढेर लग गया। छांटते-छांटते तीन व्यक्तियों को बुलवाया गया जिनमें एक करवर भी थे। करवर इसके पहले भी एक स्थानीय दैनिक पत्र के आफिस में काम कर चुके थे। अतः जब वे भेंट के लिये बुलाये गये तो प्रधान सम्पादक ने अत्यन्त नम्रतापूर्ण शब्दों में कहा—'मि० करवर आपकी नियुक्ति एक तरह हो गयी है। उसमें शर्त यह है कि आपको तीन मास तक अस्थायी रूप से रखा जाय और अगर इस अवधि में आपके कार्यों से पत्र का सञ्चालक-मण्डल सन्तुष्ट हो गया, तो आपको रख लिया जायगा। आप रोमांचक, विस्मय तथा कौतूहलपूर्ण समाचारों का संग्रह करना शुरू कर दें। साथ ही आप इस बात को सदा ध्यान में रखें कि डिटेक्टिव एक उच्च कोटि का जासूसी पत्र है, अतः इसके लिए भेदभरी हत्याओं, डकैतियों तथा चोरियों के सनसनीखेज समाचार ही संग्रह करें, जिससे पत्र जगत में तहलका मच जाये। अच्छा, तो मैं आपके काम की सफलता चाहता हूँ।

इसके बाद करवर, अभिवादन कर, प्रसन्न मुद्रा में दफ्तर से निकल आये।

[२]

लगभग पन्द्रह दिन बाद—

काला कोट और हैट लगाये करवर डिटेक्टिव सम्पादक से मिलने के लिए पहुँचे। दफ्तर में ही उप सम्पादक स्मिथ से भेंट हो गयी। उचित प्रेमाभिवादन के बाद स्मिथ ने पूछा—'मि० करवर, कहिये कैसा चल रहा है।'

करवर—सब मजे में हैं। जरा मुझे प्रधान सम्पादक जी से मिलना है। कहिए, इस वक्त वे अवकाश में हैं?

'अच्छा-अच्छा',—स्मिथ ने पूछा—'परन्तु, कहिये कुछ सनसनी-खेज समाचार भी लाये हैं या सिर्फ मिलना ही चाहते हैं?'

'जी, हाँ। एक अत्यन्त सनसनी-खेज समाचार लाया हूँ।' करवर ने सगर्व कहा।

'धन्यवाद! आप शौक से प्रधान सम्पादक से मिल सकते हैं।' स्मिथ ने हँसते हुए कहा।

करवर धड़-धड़ करते हुए जीने पर चढ़ने लगे। दूसरे ही क्षण वह सम्पादक के पास खड़े थे। सम्पादक ने पास की एक कुर्सी पर बैठने का संकेत किया और हँसते हुए पूछा—'कहिये मिस्टर करवर! कई दिनों के बाद दर्शन हुए हैं। कुछ समाचार लाये हैं?

'जी, हाँ! एक बड़ा ही सनसनी-खेज समाचार लाया हूँ। मैं वैसा समाचार लाया हूँ, जिसका पता लन्दन के प्रसिद्ध जासूस भी नहीं लगा सकते हैं। सच पूछिये तो 'डिटेक्टिव' में उसके छपते ही एक तहलका मच जायेगा।' करवर ने हँसते हुए कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'शाबाश मिस्टर करवर। आप विश्वास रखें कि यदि आपका समाचार ठीक ऐसा ही प्रमाणित हुआ, तो आपको अभी से स्थायी रूप से ३०० पौंड मासिक वेतन पर रख लिया जायगा। हाँ, तो कहिये कैसा है वह रहस्यपूर्ण समाचार।' इतना कह कर सम्पादक सिगार जला कर इतमीनान से सुनने लगे। करवर ने खाँस कर कहना शुरू किया :—

'महोदय! यह तो आपको मालूम ही होगा कि मैं दैनिक लीडर से किस तरह लांछित और अपमानित होकर निकाला गया। अतः मैं 'लीडर' के डाइरेक्टरों को बतला देना चाहता हूँ कि मैं अपने कार्यों से किसी भी पत्र-सञ्चालक को प्रसन्न रख कर दो-तीन सौ पौंड प्रति मास कमा सकता हूँ। सम्पादक जी, आप विश्वास रखें कि यदि मेरे कामों से आपका 'डिटेक्टिव' चल न निकला, तो मैं उसी क्षण अपना त्याग-पत्र दे दूंगा। आपकी इच्छा हो तो मैं यह लिख कर दे सकता हूँ।'

'कोई बात नहीं। मुझे आपके वचन पर पूर्ण विश्वास है। बहुत अच्छा, अब आप अपनी कहानी सुनायें।' सिगार का एक लम्बा कश खींचते हुए सम्पादक ने कहा।

करवर कहने लगे—'आपके दफ्तर से महज एक मील पर ही यह घटना घटी है। एक व्यक्ति को अपनी मोटर पर ही छुरा भोंक दिया गया है, और उसकी लाश मोटर के पीछे सामान रखने वाले खाने में रख दी गयी है। सच पूछिये तो मैं विशेष रूप से इस रहस्यमयी हत्या का पता लगा कर आया हूँ। मैंने तो यहाँ तक पता लगाया है कि यह हत्या कहाँ, किसने और कैसे की है। परन्तु आप इस हत्या का सही-सही समाचार लाने के लिए मुझे कितना पारिश्रमिक देंगे, इसका आश्वासन दें; क्योंकि समाचार नितांत महत्वपूर्ण है। क्यों?'

सम्पादक ने टेबुल पर झुकते हुए कहा—'यदि आपका समाचार सत्य हुआ तो आपको अपने मासिक वेतन के अलावा २५ पौंड पुरस्कार के रूप में दे दूँगा। क्यों स्वीकार तो होगा?'

'बड़ी कृपा होगी आपकी सम्पादक जी।' करवर ने पुनः कहना प्रारम्भ किया—'कहते हैं, उस दिन वह व्यक्ति जिसकी हत्या की गयी है, सवेरे ही अपने मित्र की कार से, अपने मकानों के किराये वसूल करने के लिए बोगनोर आया था। उसने किराया वसूल किया और शाम होते ही लन्दन के लिए चल पड़ा। उस वक्त उस व्यक्ति की जेब में २ हजार पौंड थे। उस बेचारे को यह पता न था कि कोई डाकू चुपके से उसकी गाड़ी की पिछली सीट पर दुबक कर बैठ गया है। वह निर्मल और निर्जन रात्रि में गाड़ी को ६० मील की रफ्तार से उड़ाये जा रहा था। पिछली सीट पर वह डाकू इस भांति लेटा हुआ था कि उसकी उपस्थिति का उसे किंचित् भान नहीं हुआ। परन्तु ज्यों ही गाड़ी लन्दन के निकट पहुँचने वाली थी कि पिछली सीट पर लेटा हुआ वह मनुष्य हाथ में छुरा थामे धीरे-धीरे तन कर खड़ा हो गया।'

करवर के मुख पर स्वेद-बिन्दु छलछला उठे। क्षण भर में संयत होकर पुनः वे कहने लगे—'लंदन शहर में प्रवेश करने के कुछ मिनट पहले ही उस व्यक्ति को अपने दाहिने कन्धे के पिछले भाग में एक तेज झटका महसूस हुआ। फिर दूसरे ही क्षण वह अपनी सीट पर लुढ़क पड़ा। हत्यारे ने उसकी सारी रकम निकाल ली, फिर लाश को एक बोरे में ठूँस, मोटर में सामान रखने वाले खाने में रख कर बन्द कर दिया। आश्चर्य तो इस बात का है सम्पादक जी, कि वह खूनी स्वयम् कार को लेकर लन्दन के लिये चल पड़ा। आप विश्वास नहीं करेंगे कि यह सारी घटनाएँ अब से केवल दो घन्टे पूर्व की ही हैं।' करवर एक लम्बी सांस लेकर चुप हो गये।

सम्पादक ने करवर को सिर से पैर तक देखते हुए कहा—'वाह! क्या खूब!...अच्छा तो यही है आपका सनसनीखेज समाचार?'

करवर कुछ क्षण चुप रह कर बोल पड़े?—'जी!...बस यही है दिल हिला देने वाली खबर।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'इस भांति के रहस्य पूर्ण सम्वाद के लिये आप को अनेक धन्यवाद मि० करवर। आप यह सोच लें कि आपकी नियुक्ति स्थायी रूप से हो गयी। लेकिन अभी आपको मेरे एक दो प्रश्नों के सम्बन्ध में कुछ उत्तर देने होंगे। क्यों, आप इसे बुरा तो न मानेंगे ?' सम्पादक ने हंसते हुए पूछा।

'आप भी क्या कहते हैं ? जो कुछ भी पूछना हो, शौक से पूछिये।' करवर ने कहा।

'कुछ नहीं। बस आप यह बतायें कि यह हत्या किस स्थान पर हुई है ?'

'आपका प्रश्न उचित है उस स्थान का पता है—१८, अर्ल स्ट्रीट, डब्ल्यू० सी०।'

'और क्षमा करें मि० करवर, यदि मैं यह कहता हूँ कि आप स्वयम् इस खबर के साथ उसी कार में मेरे पास आये हैं। क्यों, मेरा अनुमान सत्य तो है ?' सम्पादक ने होंठ चबाते हुए पूछा।

'आप ··· आपका अभिप्राय···मैं···मैं नहीं समझ सका ?' करवर ने हांफते हुए और हकलाते हुए भर्रायी आवाज में पूछा।

'मेरा तात्पर्य यह है, मिस्टर करवर'—सम्पादक तीखी आवाज में कहने लगे—'कि अब भविष्य में जब भी कभी आप अखबार के लिए कोई हत्या करें, तो कार्यालय में आने के पूर्व बुद्धिमत्ता की यह बात होगी कि आप अपनी कमीज के कालरों को साबुन से अच्छी तरह धो लिया करें। जरा देखिये तो अपने इन कालरों को ?'

करवर ने जब अपने कालरों की ओर देखा तो वहाँ खून का एक बड़ा-सा धब्बा, मासूम बच्चे की मौत की तरह मौन शिकायत कर रहा था। करवर एक बार सिर पर हाथ रख कर अपनी कुर्सी में गड़-से गये। तत्पश्चात् सम्पादक ने करवर पर एक घृणा की दृष्टि डालते हुए, दरवाजा खोल कर उन्हें बाहर धकेल दिया।

कार्यालय के बाहर पुलिस कमिश्नर, सर्जेंट और तीन सिपाही हथकड़ी लिए करवर के स्वागत में खड़े थे।

साड़ियों के पुराने बार्डर

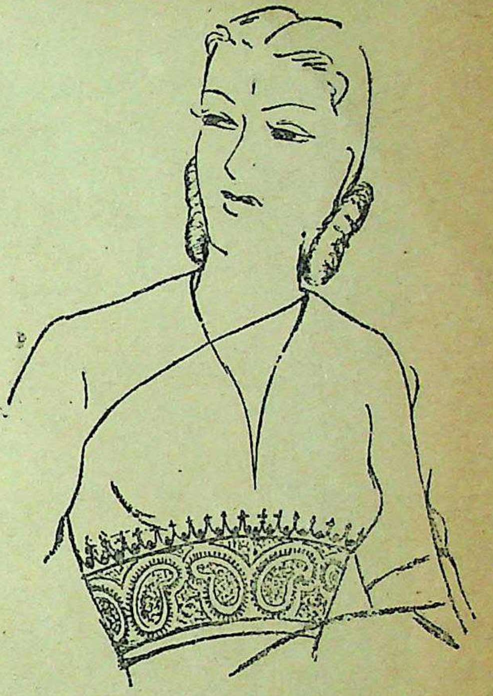

जरी अथवा बेल-बूटे वाले बार्डर का फैशन एकदम उठ गया है। आप चाहें तो उन बहिष्कृत बार्डरों को अभी भी उपयोग में ला सकती हैं। पुराने बार्डर अपने ब्लाउज के गले, बांह, कमर में लगा सकती हैं। बार्डर जो चार अँगुल या अधिक चौड़े हों उन्हें केवल कमर पर लगाने से ब्लाउज सुन्दर दिखेगा। साड़ी की चौड़ाई के बराबर टुकड़े काट कर आंचल में चौड़ाई के साथ चार या पाँच अँगुलों की दूरी पर, चार या पांच लाइनें अपनी पसन्द के अनुसार टांक सकती हैं। इस तरह प्लेन साड़ी का आंचल तैयार हो जायेगा। इसी तरह साड़ी के चुन्नट वाले स्थान पर बार्डर की खड़ी-खड़ी पट्टियाँ टांक सकती हैं।

रंग चुनने में सबसे अधिक सावधानी रखिये। गाढ़े रंगों जैसे--काला, लाल, बाटल ग्रीन (बोतल हरा), गाढ़ा पीला आदि रंगों के कपड़ों पर सुनहला या रुपहला बार्डर अच्छा लगेगा। सफेद हलका नीला कपड़ा रुपहले बार्डर के साथ अच्छा लगेगा तथा हलके पीले रंग पर सुनहला बार्डर खूब खिलेगा।

--उर्मिला बाजपेई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

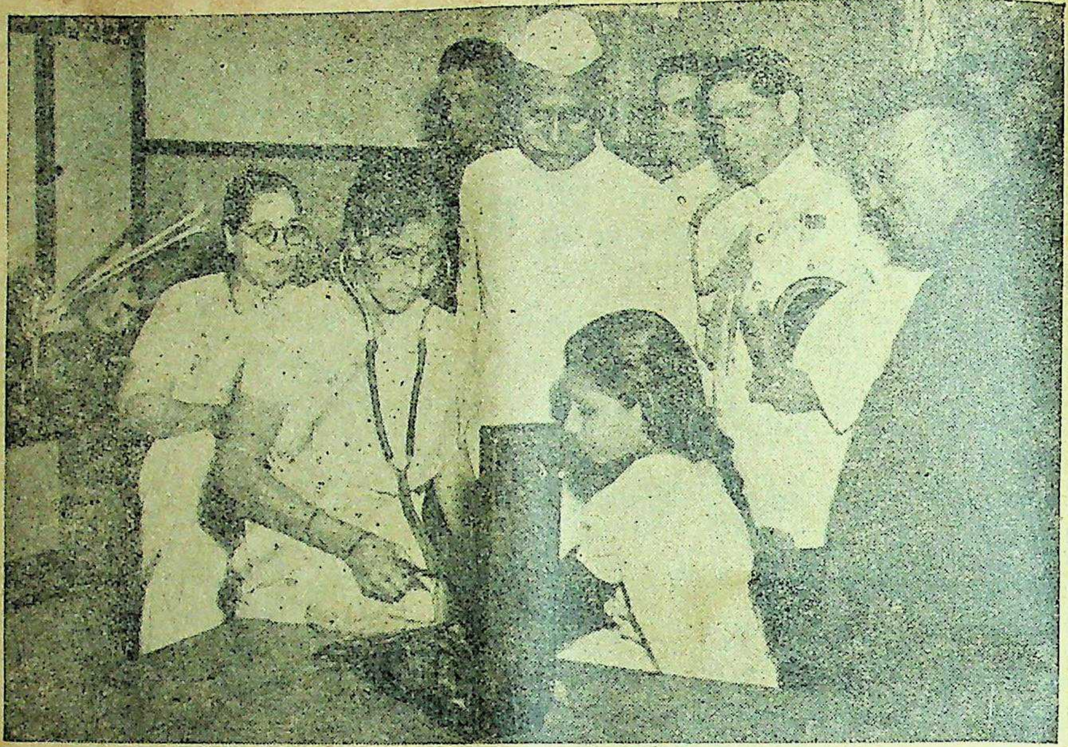

स्वास्थ्य की अग्रदूती—नर्स

नयी दिल्ली के (सेन्ट्रल) नरसिंग कालेज में छात्रा नर्सों का काम काफी सवेरे से शुरू हो जाता है। साढ़े छः बजे सवेरे का नाश्ता करने के बाद, सात बजते-बजते वे अस्पतालों में अपने-अपने वार्डों में पहुँच जाती हैं, और वहाँ उन्हें छः घंटे ड्यूटी पर रहना होता है। इसके बाद तीसरे पहर उन्हें तात्विक (थियरेटिकल) पढ़ाई में शामिल होना पड़ता है, जो किसी-किसी दिन ६ बजे शाम तक चलती रहती है। छात्रा नर्सों को सप्ताह में एक दिन की छुट्टी तो मिलती है, पर गर्मी की सालाना छुट्टियाँ उन्हें अन्य विश्वविद्यालय-छात्रों की भांति न मिल कर, केवल ५ सप्ताह की मिलती है। भारत सरकार ने इस कालेज की स्थापना १६४६ में की थी। इससे नरसिंग की बी० एस० सी० डिग्री के लिए ट्रेनिंग दी जाती है। इसे मिला कर देश में ऐसे केवल दो ही कालेज हैं।

आधुनिक नरसिंग (परिचारण) विज्ञान भी है और कला भी और साथ ही समाज-सेवा की एक वृत्ति भी। इसलिए उसकी पढ़ाई में पाठ्य विषयों का क्रम इन भारी आवश्यकताओं की पूर्ति का ध्यान रखते हुए निर्धारित किया गया है। कालेज की पढ़ाई का कोर्स चार साल का है। इस अवधि में छात्रा नर्सों को सभी आवश्यक विषय पढ़ाये जाते हैं। विज्ञान की पर्याप्त जानकारी कराने के लिए उन्हें आरम्भिक भौतिकी शरीर-विज्ञान, शरीर-रचना, विज्ञान, निरोधक चिकित्सा, कीट-विज्ञान आदि पढ़ाये जाते हैं। परिचारण कला के अभ्यास के लिए चिकित्सा, चीर-फाड़, शिशु-शुश्रूषा और दाई का काम सीखना होता है। और इस सबके अलावा उन्हें मनोविज्ञान, समाज शास्त्र तथा अर्थ शास्त्र का भी थोड़ा-बहुत अध्ययन कराया जाता है ताकि अपनी वृत्ति सम्भालने पर वे देश की विभिन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथाओं, सामाजिक दुरवस्थाओं और अन्ध-विश्वासों से पूर्णतया अपरिचित न रहें। उनका काम समाज की सेवा ही है और समाज के रहन-सहन और विश्वासों का पर्याप्त ज्ञान उनके लिए उपयोगी है।

छात्रावस्था में भी नर्सों को ऐसी स्थितियों का सामना करना पड़ जाता है, जिनसे कभी-कभी अन्ध-विश्वासों का रोचक परिचय मिलता है। एक बार देहात की एक जवान गर्भिणी स्त्री ने परीक्षा के लिए खून देने से इस कारण इनकार कर दिया, क्योंकि उसका विश्वास था कि खून देने से गर्भ का बच्चा मर जायगा और वह खुद पंगु हो जायगी। कई बार बच्चों को तौलने का भी विरोध किया गया है। एक बार एक गर्भिणी स्त्री को एनिमा देने का निश्चय करना पड़ा। किन्तु एनिमा दिये जाने की बात से सारे घर में शोर मच गया। घर वालों का खयाल था कि 'एनिमा' के पानी से बच्चा पेट में ही डूब जायगा।

इन घटनाओं से प्रकट है कि एक नर्स के लिए मनोविज्ञान और समाज-विज्ञान की जानकारी कितनी आवश्यक है। इनके अध्ययन से वे मालूम करती हैं कि देश के विभिन्न भागों में कितनी भिन्न सामाजिक प्रथायें हैं और निरक्षरता के कारण देहाती क्षेत्रों में अन्ध-विश्वास आज भी किस हद तक फैला हुआ है।

इस समय कालेज में ७२ छात्रायें हैं, जो भारत के विभिन्न भागों से पढ़ाई के लिए आयी हैं। इनमें शहरी और देहाती दोनों ही क्षेत्रों की छात्राएँ हैं। इन्हें एक-दूसरे से देश के विभिन्न भागों की विशेषताओं की जानकारी प्राप्त होती रहती है और सब मिल कर सामुदायिक जीवन का अनुभव करती हैं।

नर्स के पेशे के प्रति कुछ लोगों में अभी भी अश्रद्धा के भाव मौजूद हैं। वे नहीं समझते परिचर्या की वृत्ति कितनी उच्च है। फ्लोरेन्स नाइटिंगेल के महान् त्याग से इङ्गलैंड के समाज ने नर्स के कार्य की महत्ता को पहचाना था और सामाजिक जीवन में उसे स्वास्थ्य की अग्र-दूती स्वीकार किया था। हर्ष की बात है कि भारत में भी अब भले घरानों की युवतियां इस वृत्ति के उच्चादर्शों से प्रभावित हैं और इसे राष्ट्रीय सेवा का एक महत्वपूर्ण साधन मानने लगी हैं। जैसे-जैसे नर्स के वास्तविक कार्य एवम् कर्तव्य का प्रचार होगा, भारतीय जनता की दृष्टि में उसका सम्मान भी बढ़ता जायगा। इसमें सन्देह नहीं कि उसका कार्य जन-स्वास्थ्य की अग्रदूती का ही काम है।

आज के बच्चे कल के भारत हैं!

[श्री जवाहर लाल नेहरू]

भारत के हर बालक का यह जन्म-सिद्ध अधिकार है कि उसे ठीक मात्रा में भोजन, कपड़े, दवाई और तालीम मिले। जब भी देश के किसी हिस्से में ऐसे बच्चे देखता हूँ जिनका पालन-पोषण ठीक तरह नहीं होता; मुझे दुःख और रञ्ज होता है। आज के बच्चे कल के भारत हैं।

'मुल्क का भविष्य अधिकतर इस बात पर मुनहसिर होगा कि हम आज के बच्चों को किस तरह की शिक्षा और दूसरी सुविधाएँ दें। इसलिए बच्चों का ठीक ध्यान रखना हमारा पवित्र कर्तव्य है। यही बच्चे भविष्य में नया भारत बनेंगे।

मुझे बड़ी ही हैरानी होती है जब लोग किसी आदमी या राष्ट्र का भविष्य जानने के लिए तारों की गति का अध्ययन करते हैं। जहाँ तक मेरा ताल्लुक है मैं कभी भी ज्योतिष-विद्या के ऐसे हिसाब की परवाह नहीं करता। जब मैं भारत के भविष्य पर नजर डालना चाहता हूँ तो मैं बच्चों की आँखों और चेहरों को देखने की कोशिश करता हूँ। बच्चों के चेहरों व शक्ल में मुझे आने वाले भारत का नक्शा मिलता है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय की समस्या

अनेक स्त्रियाँ समय की कमी की शिकायत करती हैं। वे कहती हैं, वे लाख चाहती हैं पर गृहस्थी के जंजाल के कारण वे सहेलियों से मिल नहीं पातीं या कहीं आ-जा नहीं पातीं। यदि आपके सामने भी यह समस्या है तो यह लेख पढ़ें।

लेखिका, कुमारी सुशीला कुमारी

अकस्मात् आज मेरी एक सहेली मिल गई और कहने लगीं—'बहन मैं बहुत लज्जित हूँ कि मुझे समय नहीं मिला कि मैं तुम से मिल सकूँ।' समय बहुत कम है और गृहस्थी का इतना जञ्जाल जकड़े है। मैं तो सोचती हूँ कि जिसे घर बाहर दोनों सम्भालना पड़े उसे अपने इष्ट मित्रों से मिलना एक दम असम्भव है।

मुझे बहुत शर्म लगती है जब मेरी बहनें मुझसे पूछती हैं, तुमने इस महीने में कितनी किताबें पढ़ीं? तो उत्तर क्या दूं; क्योंकि मुझे समय नहीं मिलता कि मैं कोई किताब या उपन्यास पढ़ सकूँ?

मुझे अच्छी तरह याद है कि मेरी माँ भी इसी तरह कहा करती थीं जब मैं उनसे कहती कि माँ चलो आज कहीं घूम आयें।

बेटी समय नहीं है कि मैं घूम सकूँ। मैं अक्सर अपनी दादी को भी यही कहते सुना करती थी।

खैर, प्राचीनकाल में तो केवल घर का ही काम करना पड़ता था परन्तु अब तो स्वतन्त्र भारत है और उसकी ललनाएँ सार्वजनिक क्षेत्र में भी पदार्पण कर चुकी हैं तो तुम्हीं बताओ बहन! कि कहाँ से इतना समय निकाल सकें।

समय को बांधिये

बहुत-सी बहनों को ऐसी ही परिस्थित से होकर गुजरना पड़ता है और अपने इष्ट-मित्रों के सामने लज्जित होना पड़ता है। परन्तु आप अपने समय को बांधिये। वह भागने न पाये और आपको यह कहने का मौका न आये कि 'समय नहीं मिला' जैसे आप अपनी गृहस्थी के सञ्चालन व्यय का नियम बनाती हैं उसी प्रकार आप समय का भी नियमित रूप से उपयोग कीजिये। क्या आप ऐसा नहीं कर सकतीं?

आपकी कुछ ऐसी इच्छाएँ होंगी जिन्हें आप समय की कमी के कारण पूरी नहीं कर पातीं और वह इच्छायें दब जाती हैं। मान लीजिये आप किसी विशेष तीर्थ स्थान या ऐसे ही किसी महत्वपूर्ण स्थान को देखने के इच्छुक हैं परन्तु आप सबसे यही कहती होंगी—'क्या बताएँ जाने की तो सोची थी परन्तु समय न मिल सका।'

ऐसा कहने का मौका न आने दीजिये और नियमित रूप से समय का उपयोग करिये, आप स्वयम् ही अनुभव करेंगी कि आपको आपके काम भर का समय मिल जाता है। समय को नियम और संयम के ताले से बन्द कर दीजिये और आप को कभी यह कहने का मौका न आयगा कि—'बहन समय न होने की वजह से मैं अमुक काम न कर सकी।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शायद हम तुम फिर मिलें

श्रीनाथसिंह लिखित कहानी

[१]

इलाहाबाद में बदली होने पर चन्द्रभाल को अपने विद्यार्थी-जीवन की एक घटना का एकाएक स्मरण हो आया। अभी तक वे उसे भूले हुए थे। परन्तु जब उन्होंने पैर-गाड़ी पर चढ़े हुए एक युवक को किसानों के एक समूह से टकरा कर गिरते देखा तब उन्हें जान पड़ा मानों वह घटना हाल ही में घटी थी। उस घटना की जरा जरा-सी बात उन्हें याद हो आयी। उनके कानों में गूँज उठा—'शायद हम तुम फिर मिलें।' इसी एक वाक्य को वे राम-नाम की भाँति मन ही मन जपने लगे। उन्होंने हिसाब लगाना शुरू किया कि उस घटना को कितने दिन हुए। उँगुलियों पर घंटों गिनने के बाद उन्होंने मन ही मन कहा—'पन्द्रह वर्ष ! ओह ! पूरे पन्द्रह वर्ष बीत गये। मेरे जीवन का वह दिन कितना सुन्दर था, मैं उस दिन कितना सुखी था, जब उसने कहा था—'शायद हम तुम फिर मिलें।' मुझे याद है। एक-एक शब्द याद है। उसने बिलकुल यही वाक्य कहा था। आह ! वह कौन थी ? क्या उससे फिर भेंट हो सकती है ?

यही सोचते हुए चन्द्रभाल घर पहुँचे। उन्हें चिन्तित और उदास देख कर पत्नी ने पूछा—क्या मामला है ? चन्द्रभाल ने मानो इस बात को सुना ही न हो; उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। पत्नी ने करीब जाकर उनका हाथ अपने हाथ में लेकर और उन्हें हिला-झुला कर फिर पूछा—'क्या सोच रहे हो ? कुछ बताओगे ?'

चन्द्रभाल का जैसे नशा उतरा। बोले—'कुछ नहीं। एक पुरानी बहुत दिनों की बात याद आ गई थी।' उसको सोचने लगा था। तुम जानती हो, मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ पढ़ता था। मेरे जीवन का एक अच्छा समय यहाँ बीता है। उस समय की बहुत-सी स्मृतियाँ मेरे मस्तिष्क में दबी पड़ी थीं। आज यहाँ बहुत दिनों के बाद आने से एकाएक याद हो आयी। उसी पर विचार कर रहा था।

'क्या विचार रहे हो? मुझे भी बताओगे?'

'तुम्हारे जानने की कोई बात नहीं है। मेरे विद्यार्थी-जीवन की बातों से तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं है। तुम सुन कर क्या करोगी?'

'नहीं मैं सब कुछ जानना चाहती हूँ। तुम्हारे सारे जीवन की एक-एक बात जानना चाहती हूँ। अभी तक तो तुमने मुझसे कोई बात नहीं छिपाई।'

'ओह छिपाने का सवाल नहीं है। अभी तो मैं खुद नहीं समझ सका कि वह घटना क्या थी। जरा सोच लेने दो। इस वक्त मैं एकान्त चाहता हूँ। इस के बाद तुमसे सब बताऊँगा। एक-एक बात बताऊँगा।'

'अच्छा तो पहले भोजन कर लो।'

बिना कुछ कहे चन्द्रभाल हाथ-मुँह धोकर चौके में जा बैठे। वे खाते जाते थे और सोचते जाते थे—

'वह कितनी भोली थी! कितनी चञ्चल और कितनी सुन्दर! किस तेजी के साथ अपने स्कूल की गाड़ी से उतर कर वह मेरे पास आई थी। उसकी सहेलियों ने उसे रोका था। दाई ने उसका हाथ पकड़ा था। पर उसने कहा था—नहीं, चाहे जो हो मैं इस आदमी की सहायता करूँगी। गाड़ी रोको।

'मैं उस समय जमीन पर पड़ा हुआ था। मेरी दोनों आँखों में उस देहाती की पीठ पर बँधी हुई लकड़ियाँ घुस गई थीं, जिससे मेरी आँखें चोट लगने से बन्द हो गई थीं। मेरी पैर-गाड़ी कहीं पड़ी थी, किताबें कहीं पड़ी थीं। उसने किताबों को इकट्ठा किया। पैर-गाड़ी को एक तार के खम्भे के सहारे खड़ा किया और मुझसे पूछा—'क्या आँखों में ज्यादा चोट आ गई है?'

'कानों में सहानुभूति से भरे हुए ये मधुर शब्द पड़ते ही मैंने भरसक चेष्टा करके अपनी आँखों को खोला था; सिर्फ उसको देखने के लिये खोला था। मैं जानता था कि यह भोली आवाज किसकी है जो मेरी सहायता करना चाहती है।

'यदि बीच में वह न आ गई होती तो मैं उस देहाती को बिना पीटे न छोड़ता। बेवकूफ अन्धा होकर चल रहा था। न जाने किस गली से आकर मेरी बाइसिकल के अगले पहिये से उलझ गया था। आँखें बन्द होने पर भी मैं उसका फटा हुआ कुर्ता पकड़े हुए था। उसे कुछ दक्षिणा देकर बिदा करना चाहता था। पर मुझे याद है। खूब याद है। उसने कहा था, जाने दो। इसे मारने से क्या होगा? जो होना था वह तो हो ही गया।'

'मैं मन्त्र मुग्ध की तरह उसकी आज्ञा का क्यों पालन करता चला जाता था, यह बात आज तक मेरी समझ में नहीं आई। न मालूम उसमें कौन-सा आकर्षण था?

'मुझे उसकी शक्ल याद है। हजारों की भीड़ में मैं उसे पहचान सकूँगा, ऐसा मेरा हृदय कहता है। वह एक सफेद रंग की हरे किनारे की साड़ी पहने थी। किनारी का ठीक याद नहीं, पर साड़ी सफेद थी, बिलकुल सफेद। कहीं एक धब्बा न था। उसकी मैंने हँसी देखी थी। बिलकुल चमेली के फूलों-सी उसकी हँसी थी। मुझे उस समय की बातें भी नहीं भूली हैं। कदाचित् उसने कहा था—मैं आपकी और क्या सहायता कर सकती हूँ। और मैंने उत्तर दिया था, कुछ नहीं! मुझे बिलकुल चोट नहीं आई। आँखों में मामूली खोंचा लग गया है। पर वह घर पहुँचते-पहुँचते अच्छा हो जायगा।'

खा-पी चुकने पर भी जब चन्द्रभाल चौके में बैठे रह गये तब पत्नी ने कहा—इस तरह तो तुम कभी नहीं करते थे। जान पड़ता है, तुम्हें किसी डाक्टर के पास ले चलना होगा।

कुछ शर्माते हुए चन्द्रभाल ने कहा, 'अभी नये-नये यहाँ आये हैं। सब चीजें अव्यवस्थित पड़ी हैं। कुछ काम है नहीं। इसी से जरा आलस्य आ गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। दो-चार दिन में सब कार्य नियम से होने लगेंगे।'

पत्नी ने फिर पूछा—कुछ ध्यान में आया? क्या सोच रहे थे?'

चन्द्रभाल ने कहा—'स्मृतिकारों ने यह बहुत ठीक लिखा है कि स्त्रियों में सब्र नहीं होता। जल्दबाज स्त्रियाँ विवाहित पुरुषों का जीवन अशान्त बना देती हैं।

पत्नी झुँझला कर अपनी एक सहेली के यहाँ चली गई। यहाँ उसका मायका था। गपशप करने के लिये उसे मनुष्यों की कमी न थी।

चन्द्रभाल ने कुछ आजादी की साँस ली। वे बिस्तर पर जा लेटे। लेटे-लेटे फिर उसी घटना को सोचने लगे। वह बालिका कौन थी। मेरी सहायता करने को गाड़ी से क्यों उतरी? स्त्रियों का अपरिचित पुरुषों की सहायता करने दौड़ना जरा अजीबसा मालूम होता है। पर यदि कोई स्त्री ऐसा करे तो इसमें ऐब क्या है? पर वह स्त्री नहीं थी। राम-राम मैं क्या कह गया। वह बालिका थी—सरला, सुकुमारी, भोली-भाली। दया से उसका हृदय भरा था, मेरी सहायता करने के लिए उसका दौड़ना स्वाभाविक ही था।

पर उसने यह क्यों कहा था—'शायद हम तुम फिर मिलें? या मुमकिन है, कुछ और कहा हो, मुझे स्मरण न आता हो।

चन्द्रभाल गम्भीर चिन्ता में निमग्न हो गये। कुछ देर के बाद उन्होंने करवट बदली। फिर वे उठ कर बैठ गये। उन्हें नींद नहीं आ रही थी। लाख यत्न करने पर भी वे स्मृति के इस बन्धन से न छूट सके। उन्हें जान पड़ा, जैसे कानों में कोई कह रहा हो—आप कहाँ रहते हैं? पलंग पर बैठे ही बैठे उन्होंने उत्तर दिया—फतेहपुर। 'शायद हम-तुम फिर मिलें! अच्छा अब जाती हूँ। नमस्कार।'

चन्द्रभाल इसी प्रकार बड़बड़ा ही रहे थे कि पत्नी ने आकर कहा—'अभी तक तुम नहीं सोये। सपना देख रहे हो क्या?'

चन्द्रभाल चुप्पी साध गये।

[२]

सवेरा होते ही चन्द्रभाल ने बिस्तर छोड़ दिया रात उन्हें नींद कब आयी, इसका उन्हें पता नहीं था। पर इस समय उनका चित्त कुछ स्वस्थ था। उन्हें अपने आप पर हँसी भी आई। वे सोचने लगे कोई सुनेगा भी तो क्या कहेगा? पन्द्रह वर्ष की बात के पीछे हैरान हो रहा हूँ। रात में उन्होंने सोचा था कि सवेरे इस घटना का जिक्र पत्नी से करूँगा। पर सवेरा होने पर उन्होंने तय किया कि नहीं, यह ठीक न होगा। इससे मेरे वैवाहिक जीवन में विषमता उत्पन्न हो सकती है। इससे मेरी पत्नी का चित्त उदास हो सकता है। वह यह सोच कर दुखी हो सकती है कि मैं अन्य स्त्रियों की ओर भी आकर्षित हूँ। मैं बुरा हूँ।

उन्होंने उस घटना को भूल जाने की चेष्टा की। वे दृढ़ धारणा के युवक थे। अपने निश्चय से कभी टलते न थे। पत्नी से उन्होंने खूब बातें कीं। इलाहाबाद में वे कहाँ रहते थे, किस प्रकार बाईसिकल पर सैर किया करते थे, किस प्रकार वे ससुराल में आकर रहना चाहते थे, पर यह सोच कर कि शायद पढ़ाई में विघ्न पड़े किस प्रकार उनके पिता ने उन्हें ससुराल में न रहने की सख्त मनाही कर रक्खी थी? उदार-हृदया पत्नी उनकी एक दिन पूर्व की झिड़की को भूल गई और जैसे चकोरी चाँद की ओर देखती है वैसे ही उनकी ओर देख कर उनकी इस वचन-सुधा का पान करने लगी।

खा-पीकर निश्चिंत समय पर चन्द्रभाल दफ्तर के लिये रवाना हुए। पर जैसे ही उन्होंने घर से बाहर कदम रक्खा वैसे ही पन्द्रह वर्ष पूर्व की उस घटना की उस स्मृति ने उन पर फिर आक्रमण किया। उन्होंने दफ्तर पर ध्यान लगाया और अपनी चाल तेज की। संयम के सारे तीर चला डाले। पर अन्त में हार गये। उन्होंने अपने आपको एक अज्ञात स्थान में खड़ा पाया। असल में दफ्तर न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाकर वे उस स्थान को ढूंढ़ रहे थे जहाँ पन्द्रह वर्ष पूर्व वे उस देहाती से टकरा गये थे और जहाँ एक अज्ञात बालिका उनकी सहायता करने को अपने स्कूल की गाड़ी से उतरी थी। उन्होंने सोचा, शायद वह उस रास्ते से फिर आती-जाती हो। कौन जाने उससे भेंट हो जाय ?

चन्द्रभाल उस स्थान की ओर बढ़ते भी जाते थे और मन ही मन अपने ऊपर हँसते भी जाते थे। रह-रह कर वे स्वयम् को समझाते भी जाते थे—चन्द्रभाल ! तुम कितने मूर्ख हो ? वह लड़की क्या तुम्हारा नाम लिये बैठी होगी ? और फिर बैठी ही हो तो क्या तुम्हारा उससे व्याह थोड़े ही हो सकता है ? तुम विवाहित हो। अपने दफ्तर जाओ। अपना काम देखो। तुम्हें नया प्रेम करने का अधिकार नहीं है।

इस प्रकार सोचते हुए वे दफ्तर की ओर मुड़ने की चेष्टा करते, उसी समय उनके हृदय में दूसरे प्रकार के ख्याल जोर पकड़ते। वे एक स्थान पर खड़े होकर फिर अपने आपको समझाते—इसमें हज ही क्या है ? एक बात को जान लेने में हर्ज ही क्या है ? जानकारी प्राप्त करना मनुष्य का स्वभाव ही है। लोग अखबारों में पचासों किस्म की खबरें पढ़ते रहते हैं—सिर्फ कुछ न कुछ जानने के लिये—और ऐसी बातें जानने के लिए जिनसे उनका कोई सम्बन्ध नहीं होता। यहाँ तो मैं एक ऐसी लड़की को जानना चाहता हूँ जिसने मेरी सहायता की थी, जिसने मेरे साथ सहानुभूति प्रकट की थी, जिसने मुझसे फिर मिलने की आशा की थी। क्या व्याह ही करने के लिये मनुष्य किसी स्त्री की तलाश करे तो करे ? जिसने अपने साथ भलाई की है उसकी तलाश करके उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना क्या मनुष्य का धर्म नहीं है ? मुझे इस कार्य को वर्षों पूर्व करना था। ओफ ! इतना लम्बा समय मैंने क्यों बीतने दिया ? उसने भी अपने दिल में क्या सोचा होगा कि मैं कैसा असभ्य हूँ।

बीती बातों की स्मृति से मनुष्य को एक प्रकार का सुख मिलता है। परन्तु चन्द्रभाल से सुख बहुत दूर था। बीती बात की कल्पना करके वे अधीर हो रहे थे। जितना ही सोचते थे, उतनी ही उनकी बेचैनी बढ़ती थी।

उस दिन वे दफ्तर न गये। पर उन्होंने वह स्थान पा लिया। सड़क के उस भाग पर खड़े होकर उन्होंने चारों तरफ देखा। कुछ परिचित चीजें उन्हें दीख पड़ीं। आस-पास की ईमारतें ज्यों की त्यों थीं। कुछ नये मकान जरूर बन गये थे, पर उनसे उस स्थान की रूप-रेखा में कोई विशेष अन्तर न पड़ा था। उन्होंने तार के उस खम्भे को देखा जिसके सहारे उस बालिका ने उनकी पैर-गाड़ी खड़ी की थी। उन्हें एक प्रकार का रोमाञ्च हो आया। उन्होंने अपने मन में कहा—निर्जीव खम्भे ! तुम्हें इस बात से क्या प्रयोजन कि यहाँ से कौन कब निकला ? यदि तुम बोल सकते, अपने पिछले दिनों की कथा कह सकते तो आज मुझे उस बाला का कुछ पता मालूम हो जाता। उन्होंने उस खम्भे को स्पर्श किया। उस समय उनकी विचित्र अवस्था थी।

चार बजे जब स्कूलों में छुट्टियाँ हुईं और लड़के अपने-अपने घरों को जाने लगे तब उनकी व्याकुलता और भी बढ़ गई। उनके सामने उनके विद्यार्थी-जीवन का वह दिन और भी स्पष्ट हो उठा। उन्हें जान पड़ा मानों लड़कियों के स्कूल की गाड़ी लौट रही हो।

उन्होंने उस दिशा की ओर देखा जिधर को पन्द्रह वर्ष पूर्व वह गाड़ी गई थी। सचमुच एक गाड़ी उधर से आ रही थी। पहरे पर खड़ा सिपाही जैसे अपने अफसर को आने का समय जान कर मुस्तैद हो जाता है, बिलकुल उसी तरह वे मुस्तैद हो कर खड़े हो गये। उनका हृदय धक्-धक् करने लगा। वे सोचने लगे—यदि वह इस गाड़ी में होगी तो मुझे देख कर यहाँ जरूर उतर पड़ेगी। शायद कहेगी—आपसे बहुत दिनों में भेंट हुई। तब मैं क्या जवाब दूंगा ? वे एक बढ़िया-सा उत्तर सोचने लगे। तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर गाड़ी वहाँ आकर खड़ी हो गई। एक लड़की उतरी। चन्द्रभाल ने समझा, शायद वही हो। पर उस लड़की ने उनकी ओर देखा भी नहीं। वह दौड़ कर पास के घर में चली गई।

चन्द्रभाल से अब न रहा गया। उन्होंने आगे बढ़ कर गाड़ीवान से पूछा—'क्यों जी तुम यह गाड़ी कितने दिनों से हाँकते हो ?'

'कोई ६ महीने से।'

'उसके पहले कौन हाँकता था।'

'मेरा बाप! पर अब वह नहीं रहा।'

'तुम्हारे बाप ने कितने दिन गाड़ी हाँकी थी।'

'कोई बीस वर्ष।'

चन्द्रभाल ने एक ठण्डी साँस ली और कहा कि ओह! कितना अच्छा आदमी संसार से उठ गया!

गाड़ीवान की आँखों में आँसू आ गये। गाड़ी के भीतर बैठी हुई दाई चन्द्रभाल की बातें सुनकर बाहर निकल आयी और बोली—बाबू तुम उन्हें जानते हो। वे सचमुच बहुत अच्छे थे। शहर का ऐसा कोई रईस नहीं जो उन्हें नहीं जानता रहा हो। वे सबके यहाँ जाते थे। सबको सलाम कर आते थे। उनका यह लड़का उनके अनुरूप नहीं है। शर्मीता है। फिर उसने गाड़ीवान को डाँट कर कहा—बातों का ठीक से जवाब क्यों नहीं देता? यह कह कर मानो उसने यह जाहिर किया कि वह उसकी माँ है। इसके बाद उसने कहना शुरू किया—इसी गाड़ी की नौकरी में उनकी जिन्दगी कटी है। ससुराल आने पर मैं भी गाड़ी की छिपकली हो गयी। दूसरी जगह अच्छा ही नहीं लगता।

'ऐसे आदमियों से बड़े सौभाग्य से भेंट होती है।' कह कर चन्द्रभाल उस तार के खम्भे को फिर देखने लगे। अब गाड़ी चल रही थी और सड़क पर चन्द्रभाल से बातें करने के लिये दाई नीचे उतर पड़ी थी।

चन्द्रभाल ने कहा—'तब तो तुम्हें इस स्कूल की सब लड़कियों का पता होगा।'

'हाँ! सब मेरी आँखों में खिंची हैं। देखते ही पहचान जाती हूँ।'

'अब से पन्द्रह वर्ष की लड़कियों को भी तुम पहचान सकती हो।'

'हाँ! क्यों नहीं?'

'तुम्हें उन दिनों की वह घटना याद है जब मैं यहाँ पैरगाड़ी से गिर पड़ा था और एक लड़की मुझे बचाने उतरी थी।'

'नहीं, मैं किसी लड़की को रास्ते में गाड़ी से उतरने नहीं देती।'

'पर एक बार ऐसा हुआ है, सोचो।'

'नहीं ऐसा कभी नहीं हुआ।'

'तुम्हें याद न होगा। दाई! मुझे बातें बहुत याद रहती हैं। मेरी बात मानो।'

'शायद उतरी हो।'

'तुम उस लड़की का पता बता सकती हो।'

'नाम बताओ।'

'नाम मुझे नहीं मालूम।'

'तब मैं कुछ नहीं जानती! अच्छा जाती हूँ। अरे! गाड़ी बहुत दूर चली गई।'

'तुम्हारा क्या नाम है?'

'भल्ला दाई।'

चन्द्रभाल मानो उस खम्भे से कहने लगे—इस से अधिक पता तो स्कूल वाले भी न बता सकेंगे। बिना नाम जाने पता लगाना मुश्किल है। निराश होकर वे घर लौट गये।

उस दिन रात को जब वे बिस्तर पर लेटे उन्हें एक उपाय सूझा। वे तत्काल उठ कर बैठ गये और स्त्री-पत्रिकाओं में प्रकाशित कराने के लिए उन्होंने निम्नलिखित विज्ञापन तैयार किया।

'मिल कर धन्यवाद देना चाहता हूँ श्रीमती जी को जिन्होंने अब से पद्रह वर्ष पूर्व त्रिवेणी को जाने वाली सड़क पर बाईसिकल पर मुझे गिरा देख कर मेरी सहायता करने के लिये महिला-विद्यालय की गाड़ी रुकवाई थी। उस समय उनके प्रति समुचित कृतज्ञता न प्रकट करने का मुझे आज तक दुःख है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना पता लिख कर मेरी चिन्ता दूर करने का कष्ट करें।'

इसके अतिरिक्त विज्ञापन में और कुछ नहीं था, स्त्री से और दोस्तों से इस बात को गुप्त रखने के लिये उन्होंने विज्ञापन के साथ अपना नाम और पता नहीं लिखा था।

दूसरे महीने में उन्होंने अपने विज्ञापन के उत्तर में ये पंक्तियाँ उस पत्रिका में पढ़ीं।

'परसों! उसी स्थान पर!! उसी समय!!! जरूर।'

[३]

मिस्टर चन्द्रभाल आज साढ़े तीन बजे ही दफ्तर से निकल खड़े हुए। उन्हें एक अत्यन्त जरूरी काम है, यह कह कर वे अपने साथियों से विदा हुए आज उनकी ख़ुशी का ठिकाना नहीं था। आज वे स्मृति के बन्धन से मुक्त होने जा रहे थे। उनके कल्पना के संसार में जो स्त्री निरन्तर विचरण करती रहती थी उसे आज वे प्रथम बार देखने जा रहे थे। जीवन में इतने प्रसन्न शायद वे पहले कभी नहीं हुए थे।

सड़क के उस भाग में जब वे पहुँचे तब वहाँ सन्नाटा था। उसी खम्भे में पीठ का सहारा देकर वे खड़े हो गये। वह स्थान उन्हें अपने घर-सा प्रतीत हुआ। खड़े-खड़े वे सोचने लगे—पर इससे लाभ क्या होगा? मैंने भारी भूल की है। मेरा उस का ब्याह नहीं हो सकता। मेरी स्त्री मेरा उसका साथ पसन्द नहीं कर सकती। यदि उसका ब्याह हो गया हो और जरूर हो गया होगा, क्योंकि हिन्दुस्तान में कोई स्त्री अविवाहित नहीं देखी गई, तो उसका पति भी इन बातों को पसन्द न करेगा। आह! मेरा इतना पतन क्यों हो गया है? मैं ऐसी बातें क्यों सोचता हूँ? किसी गैर की स्त्री को एकान्त में बुला कर उससे बातें करने का मुझे क्या हक है?

इस प्रकार सोचते-सोचते वे तिरस्कार के साथ अपने आपसे कहने लगें—चन्द्रभाल तुम्हें कुछ शर्म है। तुम्हारी यह उम्र स्त्रियों की तलाश करने की है? तुम्हें क्या हो गया है? अपने घर वापस लौटो और इस दिशा की ओर पैर रखने का नाम न लो।

वे बल पूर्वक अपने आपको वहाँ से घर की ओर ले जाने की चेष्टा करने लगे। कुछ दूर वे गये भी, पर तुरन्त ही यह सोच कर फिर लौटे कि यदि वह स्त्री यहाँ आयेगी और उनको न पायेगी तो अपने मन में क्या कहेगी। यह तो और भी मूर्खता होगी। जिसने अपने साथ ऐसा उपकार किया है उसको इस प्रकार छकाना क्या उचित है?

वे आकर फिर उसी खम्भे के सहारे खड़े हो गये। अब वे कुछ और ही बात सोचने लगे। उन्हें जान पड़ा कि उनके जैसा सहृदय और उदार मनुष्य संसार में नहीं है। जो कुछ वे कर रहे हैं, बड़े आदमियों का वही काम है। वे यह क्यों सोचते हैं कि वे किसी बुरे भाव से प्रेरित होकर उस स्त्री की तलाश कर रहे हैं। उनका उद्देश है सिर्फ उसे धन्यवाद देना, एक बार उससे मिल कर उसके प्रति अपनी कृतज्ञता-भाव प्रकट कर देना। यह करने में कोई दोष नहीं है। कोई ऐब होता तो वह उत्तर ही क्यों देती?

चन्द्रभाल फिर गम्भीर चिन्तन में गोते लगाने लगे—सम्भव है, वह भी मेरे विषय में कुछ जानना चाहती हो। सम्भव है, उसके हृदय में भी इतनी ही व्याकुलता हो। इस मिलन से मेरा ही नहीं, दो व्यक्तियों का उद्धार होगा। इसके बाद हमें स्मृति इतना परेशान न कर सकेगी। और यदि मैं बिना जाने यहाँ से वापस चला गया तो कौन जाने ऐसा अवसर हाथ आये, न आये और फिर कौन जाने स्मृति का चाबुक और भी जोर से न लगने लगे। पन्द्रह वर्ष के बाद जब इस बात के जानने की इतनी इच्छा हुई है तब जरूर इसका कोई अच्छा ही परिणाम होगा।

उन्होंने जेब घड़ी निकाल देखा। साढ़े चार हो गया था। यही तो समय था। वे सोचने लगे—वह आई क्यों नहीं? अब उसे आना चाहिए। शायद वह न आये। शायद वह सोचे कि ऐसे अपरिचित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य से मिल कर क्या होगा ? परन्तु उसने यह क्यों कहा था—शायद हम तुम फिर मिलें। उसके यह कहने का क्या तात्पर्य हो सकता है। बस मैं यही बात जानना चाहता हूँ और कुछ नहीं।

एकाएक उन्हें पहियों की गड़गड़ाहट मालूम हुई वे सजग होकर खड़े हो गये। एक इक्का सामने से निकल गया। फिर वही सन्नाटा। थोड़ी देर बाद एक दूसरा इक्का निकला। वह भी चला गया। जरा जरा-सी आहट पर वे चौंक उठने लगे। अन्त में जब ६ बज गये तब वे निराश हो गये। उन्हें जान पड़ा, मानो किसी ने उनसे मजाक करने के लिये वैसा उत्तर अखबार में छपा दिया है। यह उत्तर छपाने वाला कौन है, यह जानने के लिए वे अखबार के दफ्तर में जाने का इरादा करने लगे। पर उन्हें फिर खयाल आया, शायद वह आती न हो। उन्हों ने एक घंटा और इन्तजार करने का निश्चय किया।

इस बार उन्हें अधिक इन्तजार न करना पड़ा, उन्होंने देखा—सामने से एक टांगा आ रहा है और ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता है त्यों-त्यों उसकी चाल मन्द होती जाती है। वे बोल उठे—आ रही है। इस बार जरूर वही है।

उनका अनुमान ठीक था। टांगा वहाँ आकर खड़ा हो गया और उसमें से एक स्त्री उतरी। अरे! यह तो उन्हीं की स्त्री है। शायद उनके घर न पहुँचने के कारण उन्हें तलाश करने आयी है। वे किंकर्तव्य-विमूढ़ हो रहे। अब वह दूसरी स्त्री भी आ जाय तो क्या होगा ? वे आश्चर्य-चकित और अपराधी-से जहाँ के तहाँ खड़े रहे। पत्नी से कुछ बोलने का उन्हें साहस न हुआ।

इधर पत्नी स्थान की निर्जनता देख कर पहले तो कुछ डरी-सी थी। पर पति को सामने पाकर उस का भय जाता रहा। और अवसर होता तो इस निजन में बेवकूफ-सा उन्हें खड़ा देख कर वह बेहद नाराज होती, पर यहाँ वह खुश ही हुई। उसने आगे बढ़ कर प्रसन्न मुख से उनसे पूछा—'यहाँ क्या कर रहे हो ?'

फा०—६

चन्द्रभाल को भी कुछ हिम्मत आयी। उन्होंने पूछा—'और तुम यहाँ क्यों आयी हो ?'

पत्नी ने उत्तर दिया—'अपने एक बचपन के साथी से मिलने। पाँच बजे तक तुम्हारा इन्तजार किया। जब तुम घर न पहुँचे तब अकेले ही आना पड़ा। वादा कर चुकी थी, आना जरूरी था।'

पत्नी ने अखबार की दो कतरनें चन्द्रभाल के हवाले कर दीं।

चन्द्रभाल जैसे सोते से जाग उठे। बोले—'अरे मेरे सपनों की रानी तुम हो। मुझसे घर ही में क्यों न बता दिया था।'

'तुमने कभी पूछा भी तो नहीं।'

अच्छा सबसे पहले यह बताओ—'तुमने यह क्यों कहा था कि शायद हम तुम फिर मिलें।'

पत्नी ने कहा—'तुमने मेरे पूछने पर यह बताया था कि तुम फतेहपुर में रहते हो।'

'हाँ शायद कहा था।'

'बस इसीलिए मैंने कहा था। मैंने सोचा था, जब तुम्हारी सेवा में फतेहपुर पहुँचूंगी तब अपने बचपन के उस साथी से भी शायद मिल सकूँगी।'

टांगे वाला पास ही दूकान पर बीड़ी सुलगाने चला गया था। आसमान में तारे निकल आये थे, पेड़ की अंधेरी छाया के नीचे चन्द्रभाल ने पत्नी को प्रेम से अपनी ओर खींच कर कहा—'मेरे कल्पना-जगत् की रानी, मेरी स्मृति की परी! तुम्हें मैंने आज पाया है।'

पत्नी ने अपने आप को चन्द्रभाल की बलिष्ठ बाँहों के हवाले करते हुए उसी भाव से कहा—'मेरे प्रत्यक्ष जीवन के सर्वस्व मैंने भी तुम्हें आज पहचाना है।'

थोड़ी देर के बाद पहियों की फिर गड़गड़ाहट हुई और वह स्थान वैसा ही निर्जन हो गया। चन्द्रभाल को अब उसकी बिलकुल चिन्ता न थी। वे अपने घर निश्चिन्त वापस जा रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिशु पालन के प्रयोग

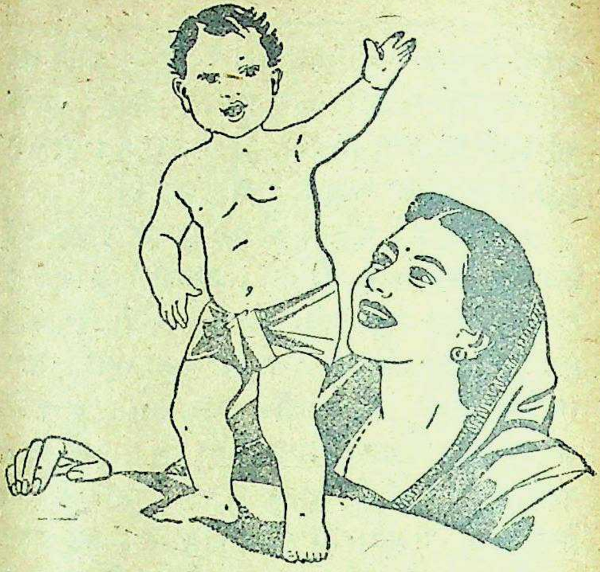

खिलौनों के सन्दूक

मैं अपने पुत्र को व्यवस्था-कुशल बना रही हूँ। इसके लिए मैंने उसे मोटे कागज के बने चार डिब्बे दिये हैं, जिनमें वह अपने खिलौने रखता है। एक में वह किताबें रखता है, दूसरे में पहियादार खिलौने, तीसरे में बजने वाले खिलौने और चौथे में अन्य प्रकार के खिलौने। इस प्रकार वह चाहे जिस खिलौने को कम से कम समय में निकाल सकता है और अपने आपको व्यवस्था कुशल समझ कर आनन्दित होता है। —राजपती देवी, कानपूर

फीते की कोर

मेरी छोटी बच्ची के फ्राक की बांहें जब पुरानी पड़ कर फट जाती हैं तब मैं उन्हें सर्वथा निकाल देती हूँ और दोनों बगलों की ओर बांहों के मुख पर २ गज का कोई लम्बा रंगीन फीता खरीद कर उससे नयी कोर बना देती हूँ। उसी फीते से गले की कोर भी बना देती हूँ। यह कोर बहुत अच्छी लगती है और फ्राक सर्वथा नवीन प्रतीत होता है।

—सिद्धेश्वरी शर्मा, गया।

एक खास चम्मच

एक बार मैं बाजार से एक सस्ता-सा प्लासटिक का चम्मच खरीद लायी। पहले तो मैंने सोचा कि यह फिजूल चीज खरीद ली है पर बाद में मुझे उस का एक अच्छा उपयोग सूझ गया। छोटे बच्चों को काड लिवर या ऐसी ही अन्य औषधि देने में यह चम्मच सर्वोत्तम सिद्ध हुआ इसमें न तो दाग पड़ता है और न धोने में कठिनाई होती है।

—विमला श्रीवास्तव

कैंची और अखबार

जब मैं कोई काम करने बैठूँ, मेरा चार साल का विनोद मुझे बहुत तंग किया करता था। उसको शान्त रखने की मैंने अच्छी तरकीब निकाल ली है। मैं उसे एक छोटी कैंची और पुराने अखबार दे देती हूँ जिनमें से वह तस्वीरें काटता है। इस काम में वह इतना मशगूल हो जाता है कि मुझे तंग करना भूल जाता है।

—प्रभावती, देहली

'दीदी' की पाठिकाओं से प्रार्थना है कि वे इस पृष्ठ पर छपने के लिए अपने शिशु पालन के प्रयोग कार्ड पर लिख कर भेजें।

दुर्घटना के लिये डिब्बा

बच्चों के साथ जब भी मैं दूर भ्रमण आदि के लिए जाती हूँ तो अपने साथ साबुन आदि के एक खाली डिब्बे को दुर्घटना का डिब्बा बना कर अवश्य ले जाती हूँ। उसमें मैं एक छोटी-सी शीशी में टिंचर, जरा-सी साफ रुई, पट्टी, जम्बक और कृमिनाशक पाउडर रख लेती हूँ। बच्चे अक्सर गिर कर घुटनों में खरोंच लगा लेते हैं या उँगली आदि काट लेते हैं। तब यह डिब्बा बड़ा काम देता है।

—मालती सक्सेना, बरेली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसोई

पालक का रायता

अंश—दही १ छटांक, पालक एक चौथाई छटांक हरी मिर्च १, बघार के लिए जीरा चाय की एक चम्मच, सरसों चाय की एक चम्मच, मेथी चाय की एक चम्मच, तेल चाय की आधी चम्मच, पूर्ण लाल मिर्च एक, नमक स्वाद के अनुकूल।

विधि—पालक साफ कर लीजिये तथा धो डालें काट लीजिये तथा भाप लगा लीजिये। दही चला लीजिये तथा भाप लगे हुए पालक में मिला लीजिये। कटी हरी मिर्चों को मिला दीजिये तथा लाल मिर्च सरसों और मेथी के साथ बघार लगा लीजिये।

लौकी का हलवा

अंश—लौकी आधा सेर, गुड़ एक चौथाई सेर, दूध आधा प्याला, घी चाय की २ चम्मच, इलायची २ फली।

विधि—लौकी छील कर कस लीजिये। एक ढकी देगची में इसे धीमी आग पर बिना पानी मिलाये पका लीजिये। जब कोमल हो जाय, गुड़ तथा दूध मिला दीजिये और दूध जज्ब हो जाने तक पकाइये। घी तथा इलायची का चूर्ण मिला दीजिये। (यह ४ आदमियों के लिए काफी होगा।)

दाल तथा प्याज

अंश—अरहर दाल १ पाव, छोटी प्याज ८, नमक चाय की २ चम्मच, इमली के आकार का नींबू कढ़ी चूर्ण, लाल मिर्च २, धनिया पूर्ण चाय की आधी चम्मच, जीरा चाय की आधी चम्मच, एक चुटकी हल्दी चूर्ण दालचीनी १ छोटी लाइची (यह समस्त अंश साथ-साथ पीस लिये जाते हैं) बघार के लिए सरसों चाय की आधी चम्मच, तेजपात (कढ़ी) के पत्ते ८, एक चुटकी हींग, तेल चाय की एक चम्मच।

विधि—दाल को धोकर पका लो। प्याज छील लो तथा दाल में मिला लो। नमक, चुकन्दर, पानी और कढ़ी का चूर्ण मिला दो। थोड़े तेल, सरसों के बीज, कढ़ी के पत्ते तथा हींग द्वारा सुसज्जित कर लो। यह ८ आदमियों के लिए काफी है।

मसालेदार नींबू

अंश—शक्कर आधा प्याला, अनाज की माढ़ी ३ बड़ी चम्मच, नमक चाय की एक चौथाई चम्मच, उबलता पानी २ प्याले, मक्खन ४ बड़ी चम्मच, नींबू का रस ३ बड़ी चम्मच।

विधि—शक्कर, अनाज का मांढ़ और नमक को पकाने के बर्तन में मिला लीजिये। धीरे-धीरे उबलता पानी मिला दीजिये। बार-बार हिलाते रहिये। ५ मिनट तक मन्दी आग पर गर्म कर लीजिये या जब तक साफ और गाढ़ा न हो जाय, बार-बार हिलाते ही जाइये। फिर बाकी बचे हुए अंशों को हिला लीजिये। गर्म-गर्म परस लीजिये। आहार १२ परोसन के लिए काफी है।

हरी चटनी

अंश—गोला (ताजा) आधी छटांक, पोदीना १ छोटी गुच्छी, ताजी शकरकन्दी १ (मध्यम आकार की), प्याज १ (मध्यम आकार की), लहसुन २ फांकें, हरी मिर्च, नींबू नमक और जीरा स्वाद के अनुकूल।

विधि—पोदीना धो लीजिये, प्याज और शकरकन्दी छील लीजिये और समस्त अंशों को पीस कर बारीक कर लीजिये। नींबू के रस से स्वादिष्ट बना लीजिये।

—अन्नपूर्णा पाकशास्त्र से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामाजिक कहानी

स्मृति

लेखिका, श्रीमती असिता कुमारी बोस

पिछले द्वार से आवाज सुनाई दी, बहन जी ! बहिन जी !! उर्मिला बोल उठी—'कौन है ?' उत्तर मिला—'बहिन जी, मैं हूँ मन्टू की मां। उर्मिला ने बाहर आकर रुद्ध कण्ठ से कहा—'क्या हुआ है तुझको जो इतने सबेरे पुकार उठी है।' वह बोली—'बहिन जी मेरा मन्टू सात दिन से बीमार है। दवा-दारू भी न कर सकी। मुझे १०) रुपयों की आवश्यकता है। आप कृपा कर मुझे उधार दे दीजिये। आगामी माह में मैं अवश्य ही लौटा दूँगी।'

उर्मिला ने कठोर स्वर में कहा—'हाँ-हाँ खूब जानती हूँ। कितना उधार वापस लौटा दिया है तूने। मुझे सब मालूम है। बारह माह तो इसी तरह भीख मांगते-मांगते गुजर जाते हैं।'

उषा ने करुण स्वर में कहा—'बहिन जी, आप मुझ पर दया कीजिये। मैं आपका यह रुपया शीघ्र ही लौटा दूँगी।' उर्मिला बोली—'नहीं-नहीं। यह नहीं हो सकता। मैं सबेरे-सबेरे कोई दान करने थोड़े ही बैठी हूँ। जा चली जा। बार-बार आकर मुझे तङ्ग न किया कर।'

विषाद की मूर्तिमान उषा की आँखों में आँसू चमक उठे। बेचारी लौट गयी। म्लान मुखी। असहाय का भगवान ही सहायक है। यदि भगवान चाहेंगे तो मन्टू बच सकेगा। बेचारी विधवा का एक मात्र सहारा। मानव के हाथों न तो करुणा की धारा बही है और न मानव में विधाता की वज्र-मुष्टिका के प्रहार से मन्टू को बचा सकने की क्षमता है। उषा अपने आंचल से आंसू पोंछ रही थी।

उर्मिला रसोई गृह में लौट आयी। आज उस का लड़का कलकत्ते से लौट कर वापस घर आ रहा है, वह उसके लिये बालूशाई का मैदा गूँद रही थी। वह एकाएक कह उठी। अच्छा किया जो उसे लौटा दिया। क्या रुपया इतना सस्ता है कि बांटा जाय। किसी को एक पाई भी नहीं दूँगी। जमींदारी का पैसा क्या पानी की तरह बह कर आता है। उषा का विषाद क्लिष्ट म्लान मुख उसकी आँखों के सामने आ गया। उर्मिला का हाथ धीरे-धीरे काम करते-करते रुक गया। आँखों के सामने दो युग पूर्व उसे अपना जीवन याद आ गया। वह किशोरी रूप और याद आ गयीं उस युग की घटनाएँ। एक भिखारिन की गोद में छोटा-सा बालक भीख मांग रही है, खाने को दो माँ! दो दिन से भूखी हूँ। फिर उर्मिला का अपना भोजन भिखारिन को दे देना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर सास की प्रशंसा। रसोइये को पुनः खाना देने की आज्ञा। फिर सास का कथन है कि बहू तो साक्षात् अन्नपूर्णा है।

फिर याद आई उसके पूर्व की एक कथा—यही घर पहले नाती-नातिन से परिपूर्ण था। चौबीस घंटे कोमल कण्ठों से गूंजता रहता था यह विशालकाय भवन। आज कङ्काल सा लगता है। नीरवता का साम्राज्य चारों ओर। दीवारों का रङ्ग निकल गया है। कहीं पर ईंटें निकल पड़ी हैं। छत की कानस दो-तीन जगह से टूट गयीं हैं। आज वह श्रीहीन परित्यक्त गृह के समान बन गया है।

उर्मिला कभी-कभी अपने पति सचिव से कहती थी कि देखो, हमारा घर श्रीहीन-सा हो गया है। इसकी मरम्मत और रंग पुतवाने की व्यवस्था कर दीजिये। सचिव तुरन्त कह उठते थे—ये सब बेकार बातें मत सोचो। यह सब पैसे नष्ट करने का मार्ग है, इतने बड़े घर की मरम्मत करवाने में काफी पैसा पानी की तरह बह जावेगा। इतने चमकते हुए रुपये यदि तुम्हारे हाथों में रहे तो तुम्हें कितना आनन्द और सुख अनुभव होगा। दुनियां में पैसा ही सब से बड़ा मित्र है। बिना मरम्मत किये हुए घर में दिन खुशी से कट सकते हैं किन्तु अर्थहीन गृह में एक पल भी कटना कठिन है। स्वामी की अखण्ड युक्ति की सत्यता को समझ कर उर्मिला चुप रह जाती थी।

उर्मिला के ससुर एक प्रसिद्ध वकील थे। दोनों हाथों से खूब पैसा कमाया था। सब कहते थे कि महालक्ष्मी का यहाँ वास है। ससुर ने मकान पर मकान बनवाने शुरू कर दिये। शहर के आस-पास की बहुत-सी जमीन खरीद डाली थी। देखते ही देखते इनका ऐश्वर्य इतना अधिक बढ़ गया कि खगेन बाबू एक छोटे से जमींदार बन गये।

महालक्ष्मी की कृपा के साथ-साथ मां षष्ठि भी कृपा करने लगी थीं। खगेन बाबू का घर चार पुत्र और दो कन्याओं के जन्म से मुखरित हो उठा था। देखते-देखते लड़के बड़े हुए। उपयुक्त शिक्षा दी गई। लड़कियों की शादी हो गई। घर में बहुएँ पदार्पण करने लगीं। इस बहू रानी उर्मिला को उसकी सास ने पसन्द कर अपनी बहू बना ली थी। सारा चित्र बन खड़ा हो गया वह सुनहला संसार—जब कि वह सचिव के साथ गठ बन्धन में बँधी हुई गाड़ी से नीचे उतरी थी। सास का वर्णा कङ्गन देकर आशीर्वाद देना। वे दिन भी खूब थे जब दिन सास-ननद देवरानी और जेठानी के बीच में आनन्द से कट जाता था। उर्मिला उस भूत के स्वप्न में अपने आप को भुला चुकी थी।

दो लड़कों के जन्म के पश्चात् तरुणी उर्मिला की गोद में एक सुन्दर कन्या ने जन्म लिया। कितने प्यार की थी वह सुन्दर लड़की। जब वह चार वर्ष की थी तब उसे अचानक मोती ज्वर हो आया। और क्या? चार दिन के ज्वर के कारण चिरकाल के लिये वह अपनी मां की गोद सूनी कर चली गई। हठात् उसी समय उषा के लड़के मन्टू की मुख छवि और उसकी अपनी लड़की रानी की छबि सामने छा गयी। उर्मिला उसे देख कर सिहर उठी। समय पलटा। सास ससुर परलोकगामी हुए। भाई-भौजाई अपने-अपने हिस्से की सम्पत्ति लेकर अलग हो गये। जो एकान्तवर्ती परिवार था अब विभाजित हो गया था। तीसरे भाई सचिव थे। इनके हिस्से में विशालकाय भवन और आस पास के गांव की जमींदारी मिली थी। सम्पत्ति का मालिक बनने के पश्चात् सचिव का स्वभाव बदलने लगा था। रुपयों का मोह धन का गर्व उन्हें गर्त में ढकेल रहा था। युवक सचिव के हृदय में दया और दक्षिणा की भावना मिट चुकी थी। वहाँ अहंकार और क्रूरता का साम्राज्य था।

उर्मिला अपने पति की यह परिवर्तित दशा देख कर बहुत दुःखी हुई। वह अपने पति का स्वभाव न बदल सकीं। उर्मिला को ऐश्वर्य का प्रवाह अपने पति के हृदय से बहुत दूर तक बहा कर ले गया था।

सचिव को धन का नशा इस तरह चढ़ा कि धन ही सब कुछ वस्तु बन गया। चारों ओर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनावश्यक व्यय समाप्त कर दिये गये। उर्मिला के हाथों से घर का कारबार सचिव ने अपने हाथ में ले लिया था। क्योंकि उन्हें यह भय था कि कहीं वह अधिक पैसा न खर्च कर दे। दिन के खर्च के लिये स्वयम् नौकर को गिन कर पैसे देते थे। उर्मिला के पास कभी-कभी दो-चार स्त्रियाँ आवश्यकता पड़ने पर पैसे मांगने आ जाया करती थीं। किन्तु सचिव के मना करने पर वे भी अब नहीं आतीं। दो प्रहर के समय प्रायः पड़ोस की सभी औरतें आमोद-प्रमोद के लिये उर्मिला के पास आती थीं। हास्य के साथ-साथ चायपान नाश्ता सब चलता था। सचिव बाबू ने अब यह बन्द करवा दिया था। यह क्या अपव्यय और समय नष्ट करने की धुन। इस हास-परिहास से स्वभाव भी बिगड़ जाता है। तुम अब किशोरी नहीं, गृहिणी हो। तुम्हें इस तरह का व्यवहार अब शोभा नहीं देता। एक-एक करके सबका आना बन्द हो गया। इतना बड़ा भवन, मालकिन-मालिक और नौकरों की बातचीत के समय को छोड़ कर नीरवता में डूबा रहता था बालक और बालिकाएँ किसी का भी अन्दर आने का साहस नहीं होता था। कभी-कभी एक आध पड़ोसी घूमने चला आता था। उसी समय गृह सजीव हो उठता था।

उर्मिला अपना अधिक समय देवालय में ही पूजा अर्चना में बिताती थी। नियम से पूजा-पाठ करती। फिर प्रार्थना करती—हे भगवान् मुझे इस बन्धन से मुक्त कर दो। बीच-बीच में अपने पुत्रों की स्मृति उसे हो आती थी। वह संसार को भूलने की चेष्टा करती थी किन्तु भूल न सकी। पूजा करते-करते यौवन काल में पति का प्रेम याद आ जाता था। आँखों के सामने वही दृश्य खिंच जाता था। कहाँ गई वह किशोरी उर्मिला ! मर गई है और अब वह इस यक्षपुरी की मालकिन है। जिसके कानों में आज कल मृदु हास के बजाय स्वर्ण मुद्रा की ध्वनि सुनाई पड़ती थी। आँखों में गहनों की चकमकाहट चिन्ता-जाल को छिन्न-भिन्न करने लगती थी। आंखों के सामने रोग जीर्ण मन्टू का चित्र खिंच जाता। उसी समय याद आ गई अपनी मृत रानी बिटिया की। उसका मन विचलित हो उठा। अपना बाक्स खोला। पहले पांच का नोट निकाला किन्तु फिर कुछ सोच कर उसे रख कर १०) रुपये का नोट बाहर निकाला। फिर उस मकान के सामने जाकर खड़ी हो गई और पुकारने लगी—'उषा ओ उषा !' प्रति ध्वनि की आशा से निराश होकर उसने घर में प्रवेश किया। रोग ग्रस्त मन्टू का कोमल छोटा-सा शरीर बिस्तर में छिपने का प्रयास कर रहा था। उषा पत्थर की तरह स्तब्ध बैठी रही; अपने लड़के का कङ्काल हाथ अपने हाथ में लिये हुए।

उर्मिला यह दृश्य देख कर सिहर उठी। तेरी अक्ल कैसी। लड़के की दवा-दारू न करके क्या उसे मार डालने की ठानी है। उषा की आँखों में आँसू चमक उठे। उर्मिला ने मुट्ठी खोल कर नोट उषा को दे दिया और फिर कोमल स्वर में बोल उठी-'यह ले मन्टू के के लिये फल दूध खरीद लेना। और हाँ फिर स्वर बदल कर कहा—बहादुरी कर इसे लौटाने मत आना।'

इसके बाद उर्मिला पाषाणपुरी में अदृश्य हो गयी।

घरेलू नुस्खे

[श्री लेखराज नन्दा एम० ए० एल० टी०]

(१) बिवाई फटना—राल को खूब बारीक पीस कर घी में मिला कर फटे हुए स्थान में भर दें।

(२) बच्चों के चुरणे—सरसों के तेल को गर्म करके २-३ बार बालक की गुदा में लगावें।

(३) दमा—नमक को पीस कर एक माशे घी में मिला कर उससे छाती की मालिश करें और गर्म रुई से छाती को सेंकें।

(४) मन्दाग्नि—सौंफ, काली मिर्च, सेंधा नमक बाय विडङ्ग। मात्रा सबकी बराबर-बराबर रहे। ३ माशे चूर्ण को प्रातः और सायंकाल को गर्म जल से सेवन करें। भूख लगने लगेगी।

—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो गीत—

१—बन्धन

लेखिका, श्रीमती तारा पाण्डे

दो मुझे नित नये बन्धन !
पंथ है मेरा अजाना,
चाहती हूँ पार जाना,
स्वप्न की दुनियां बसाना,
बाँध दो मेरा विकल मन !
बन्धनों ही में पली मैं,
बाँध दोनों पग चली मैं,
विजन बन की लघु कली मैं,
रोक दो अब करुण क्रन्दन !
बन्धनों में मुक्ति पाऊँ,
हृदय का दुख भूल जाऊँ,
रुद्ध स्वर से गीत गाऊँ,
बाँध कर जग और जीवन !
बांध मुझको बन्धनों में,
बँध गये तुम भी क्षणों में
हास छाया लघु-कणों में,
मिल गया वरदान नूतन !
दो मुझे नित नये बन्धन !

२—इसलिए

लेखिका, कुमारी पुष्पलता अस्थाना एम० ए०

इसलिये मैं जागती हूँ।
आ न जाये प्रात निष्ठुर,
जो मिटा दे स्वप्न मेरे।
मूक ही अब तक रहे हैं,
वेदना के प्रश्न मेरे।
इसलिये सपने सजा कर
रात पर मैं वारती हूँ।
बात के आघात से ही,
दीप मेरा बुझ न जाये।
आज अपनी ही कहानी,
गीत बन कर बह न जाये।
इसलिये हर भावना को
सत्य से मैं आंकती हूँ।
देखना है आज मुझको—
स्वप्न का आधार क्या है ?
मौन दीपक की शिखा पर—
शलभ का संसार क्या है ?
इसलिये अब राह तम की
अश्रु से मैं नापती हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

? प्रश्न-??? पिटारी ?

आकृति दोष

मेरी आकृति सुन्दर है। केवल एक दोष है। मेरी जाँघें मोटी और फूली फूली-सी हैं। कृपा पूर्वक कोई व्यायाम बतावें जिससे यह दोष दूर हो। यह ध्यान रख कर बतावें कि मैं टहलने नहीं जा सकती।

हमारा उत्तर यह है कि तेजी से पैर चलाने का व्यायाम करें। बिस्तर में पीठ के बल लेट जायँ और दोनों पैरों को ऊँचा उठा कर जल्दी-जल्दी इस तरह चलावें जैसे पैरगाड़ी में चलाते हैं। यह व्यायाम ५ मिनट प्रातःकाल और लगभग इतनी ही देर सायंकाल करें।

दुखते पाँव

मेरा काम ऐसा है कि मुझे काफी समय तक एक ही स्थान पर खड़ी रहना पड़ता है। इससे मेरे पाँव दुखने लगते हैं। क्या आप कोई उपाय बता सकते हैं:—

प्रत्येक रात को, जिस दिन खड़े रहने के कारण पाँव दुखने लगें, सोने से पहले गर्म पानी में एक चुटकी सोडा बाई कार डाल कर उससे पाँव धोवें और सेंकें। फिर पाँवों को कपड़े से अच्छी तरह पोंछ डालें। प्रातः काल पाँवों में थोड़ी-सी स्प्रिट मल दें।

मैले दाँत

मेरे दाँतों में औरों की अपेक्षा अधिक मैल जमा हो जाती है। दातौन इतना करती हूँ कि मसूड़ों से खून आने लगता है। तब भी दाँत साफ नहीं होते। क्या करूँ?

आपका दातौन करने का तरीका गलत जान पड़ता है। दातौन की अच्छी कूँची बनावें और उसे दांतों की जड़ों की तरफ से काटने वाले सिरों की तरफ चलावें। मसूड़ों पर कम दाँतों पर अधिक कूँची की रगड़ पड़े। दाहिने से बाएँ या बाएँ से दाहिने कदापि दातौन न चलावें। इस तरह दाँत अच्छे साफ होंगे।

मैले केश

मुझे दोनों वक्त रसोई करनी पड़ती है। चाहे इस कारण हो चाहे कोई और बात हो मेरे बालों में चिकनाई और गर्द जमी प्रतीत होती है। मैं आठवें दिन साबुन से बालों को धोती हूँ पर मैल नहीं जाती और न बालों में चमक आती है।

आपके बालों में चमक आ सकती है और वे स्वच्छ व मुलायम दीख सकते हैं यदि आप प्रति दिन शाम को स्पिरिट से तर करके बालों पर ब्रश चलावें। एक मुलायम कपड़े की कई परत करके स्पिरिट से तर कर लें फिर उसी कपड़े से बालों को या ब्रश को तर करके जो भी सुविधा-जनक जान पड़े, ब्रश चलावें। इस तरह बाल स्वच्छ और चमकीले दीखेंगे।

गूँगी लड़की

मेरी लड़की करीब ढाई साल की हो चुकी है। लेकिन अभी तक साफ-साफ बोल नहीं पाती। मुझे यही डर रहता है कि कहीं यह गूँगी न हो जाय? लिखिये इसके लिये क्या उपाय करूँ?

लड़की की पीठ की तरफ खड़ी होकर ताली बजाइए, अगर लड़की उधर देखने लगे तो समझिये कि उसे सुनाई पड़ता है और वह गूँगी नहीं है। यदि पीठ की ओर ताली बजाने से लड़की उधर न देखे तो समझिये गूँगी है। उस दशा में उसकी परीक्षा किसी गूँगों बहरों के स्कूल में ले जाकर कराइये और हो सके तो किसी ऐसे स्कूल में भर्ती करा दीजिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्धनों को धनवान बनाने वाली हिन्दी भाषा की प्रसिद्ध पुस्तकें

मोटर मिकेनिक गाइड ६)	ताश के जादू तथा खेल २॥)	खराद शिक्षा टर्नर गाइड ३)
साइकिल मरम्मत गाइड ३)	वशीकरण मन्त्र विद्या २॥)	कटाई सिलाई शिक्षा—हर प्रकार के नये-नये फैशनों के कपड़े काटना व सिलाई करना सीखिये ३)
मिमारी शिक्षा (राजगीरी) १०)	वृहद् कोकशास्त्र सचित्र ४)	इलैक्ट्रिक गाइड ६)
गृह उद्योग—लगभग २५० घरेलू उद्योग-धन्धों का वर्णन ४)	पहली सुहाग रात २॥)	इलैक्ट्रिक वायरिंग ५)
अचार चटनी मुरब्बे बनाना ३।)	रति रहस्य (कामकला) ४)	बेकरी बिस्कुट आदि बनाना ३।)
फिल्मी हार्मोनियम गाइड ३)	पति पत्नी पथ-प्रदर्शक ३)	रंग-बिरंगी आतिशबाजियाँ ३।)
बूट पालिश बनाना ३।)	असली तेजी मन्दी सट्टा ५)	आधुनिक साबुन शिक्षा ३॥)
धुलाई ड्राई क्लीनिंग शिक्षा ३।)	एम्ब्रायडरी (कढ़ाई) शिक्षा ४)	हर प्रकार की स्याहियाँ बनाना ३।)
सुगन्धित तेल व इत्र बनाना ३।)	बुनाई शिक्षा (स्वेटर आदि) ४)	सरल उर्दू-हिन्दी टीचर २॥)
पुराने छापे का असली इन्द्रजाल ३)	मुँह देखने के शीशे बनाना ३।)	फिल्मी अप्सरा एलबम २॥=)
दक्षिण का जादू २॥)	लव लैटर्स (प्रेम के गुप्त पत्र) २॥)	एलोपैथिक गाइड ५)
बैटी विज्ञान (बैट्रियाँ बनाना) २॥)	कारपेंट्री शिक्षा १०)	एलोपैथिक इन्जेक्शन बुक ५)
आयल इञ्जन गाइड ६)	ज्योतिष शास्त्र ६)	कम्पाउण्डरी शिक्षा ३॥)
क्रूड आयल इञ्जन गाइड ६)	पामिस्ट्री (हाथ रेखा ज्ञान) ६)	वृहद् बूटी प्रचार (सचित्र) ३)
घड़ी साजी शिक्षा ३॥)	फिल्म ऐक्टिंग गाइड २॥)	जर्राही प्रकाश ४॥)
फोटोग्राफी शिक्षा ३)	रेडियो गाइड ४॥)	आयुर्वेदिक चिकित्सा सागर ४॥)
सरल हिन्दी इङ्गलिश टीचर २॥)	क्रिस्टल रेडियो सैट बनाना २)	
	वर्कशाप गाइड फिटर ट्रेनिंग ४)	

—: प्रत्येक पुस्तक का डाक-व्यय पृथक है :—

पुस्तकें वी० पी० द्वारा मँगवाने का पताः— } काटेज इण्डस्ट्री (DA-5) पी०बी० १२६२ अंगूरी बाग, देहली—६

चुटकुले

[१]

हेड मास्टर साहब आफिस में बैठे थे। किसी ने टेलीफोन से कहा—'मेरा लड़का बीमार है। स्कूल नहीं जा सकेगा।'

हेड मास्टर—'खेद है लड़का बीमार हो गया। कौन बोल रहा है?'

आवाज आई—'मेरा बाप।'

[२]

एक मजदूर ने जमादार से कहा—'दो दिन मुझको खेत पर काम करते हो गये, फावड़ा नहीं मिला।'

जमादार—'तुम्हारा क्या हर्ज है? कम मेहनत पड़ेगी।'

मजदूर—'और सब फावड़े का सहारा लेकर आराम करते हैं। मैं किसका सहारा लूँ?'

[३]

एक लड़के को शराब पीने की बुरी आदत पड़ गई थी। शिक्षक ने लत छुड़ाने की बहुत चेष्टा की किन्तु सफल नहीं हुआ। एक दिन उसने लड़के का पीछा किया। वह दुकान में जाकर शराब पीने लगा शिक्षक ने उसकी पीठ पर हाथ रखा। लड़का चौंक उठा। शिक्षक ने कहा—'बेटा, क्या तुम समझते हो कि यह घातक वस्तु तुम्हारी प्यास बुझा सकेगी?'

लड़का—नहीं, एक गिलास से क्या होगा?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेठ जी और चोर

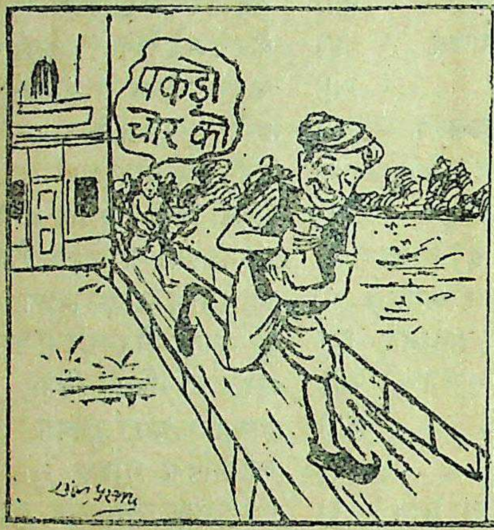

चोर सेठ जी का रुपयों का थैला लेकर भागा जा रहा है। सेठ जी पीछे से दौड़े आ रहे हैं।

'ओ हो ! माँ बच्चे को कुछ दिखाने ले गयी थी। बच्चे की गाड़ी खाली थी। सो चोर उसी में छिप गया।'

दौड़ते हुए सेठ जी की बकुली उसी गाड़ी में उलझ गई जिसमें चोर छिपा था।

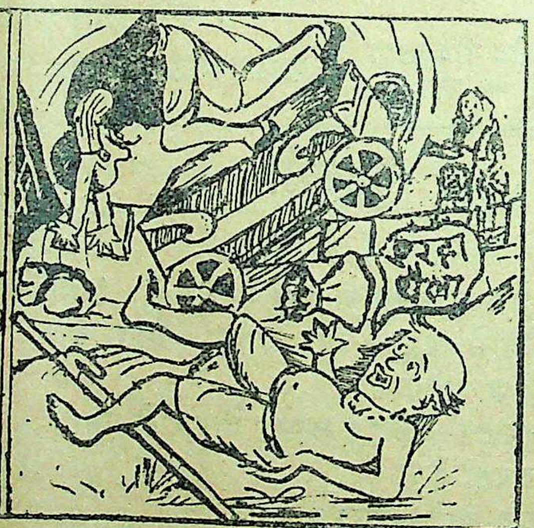

झटका खाकर गाड़ी उलट गयी। चोर थैला समेत बाहर निकल पड़ा। सेठ जी को चोट हो आयी पर रुपये मिल गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

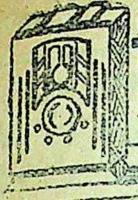

विविध-विषय

सुहाग-सोंठ

स्वर्गीय पंडित कृष्णकान्त मालवीय ने अपनी 'मातृत्व' नामक पुस्तक में स्त्रियों को स्वास्थ्य और सौंदर्य के लिए सुहाग-सोंठ का सेवन करने की सलाह दी है। वे लिखते हैं :—

नव-प्रसूता के शीघ्र ही पुष्ट होने के लिए कितनी ही बातें यत्र-तत्र लिखी जा चुकी हैं। व्यायाम तथा अन्य अनेक बातें बतलाई जा चुकी हैं फिर भी प्राचीन-काल से हम लोगों में एक 'सुहाग सोंठ' के—जिसे 'सौभाग्य-सोंठ' भी कहते हैं—सेवन का एक विधान चला आ रहा है। यह औषधि स्त्रियों के लिए साधारणतया और प्रसूता के लिए विशेष रूप से बहुत लाभकर सिद्ध होती है। इससे गर्भाशय के रोग, रजोधर्म के कष्ट दूर होते हैं और शरीर निरोग होता है।

सुहा -सोंठ का नुस्खा

१ सतुआ-सोंठ	५ सेर
२ गाय का	२० सेर
३ मिश्री	२० सेर
४ जायफल	२ तोला
५ त्रिफला	२ तोला
६ दोनों जीरा	२ "
७ धनिया का गूदा	२ "
८ सौंफ	२ "
९ छोटी इलायची	२ "
१० पीपल	२ "
११ नागरमोथा	२ "
१२ नेत्रबाला	२ "
१३ किशमिश	२ "
१४ बिदारी कन्द	२ "
१५ भीमसेनी कपूर	२ "
१६ छोहारा	२ "
१७ गोले की गरी	२ "
१८ शिलाजीत	२ "
१९ चिरौंजी	८ तोला
२० रसौत	१६ तोला

चार से बीस संख्या की समस्त औषधियों को खूब कूट-पीस कर मिला लो। अनन्तर सेतुआ सोंठ को खूब कूट और महीन कर बीस सेर दूध में इस तरह से पकाओ कि दूध खोया हो जाय। इस खोये को पाँच सेर घी में छोड़ कर भून लो, जब खोया लाल हो जाय तब उसे बीस सेर मिश्री के पाग में डाल दो और उसमें पहले की सोलह कूटी महीन की हुई औषधियों को मिला दो। जब सब ठीक हो जाय तब अपना इच्छा के अनुसार एक-एक दो-दो तोले के लड्डू बना ले, और सुबह शाम इनको खाया करे। एक मास में ही स्त्री की रङ्गत बदल जायगी और वह सुर्ख-सुर्ख हो जायगी। एक चतुर वैद्य को दिखा कर, आवश्यक हो तो अपने उपयुक्त परिवर्तन उपर्युक्त मात्राओं में करा ले और विश्वास योग्य वैद्य हो तो पाग भी उसी से तैयार करा लो।

गुण्डे की मरम्मत

एक शाम की घटना है—एक नवयुवती जो शायद किसी कालेज की छात्रा थी, गोलबाजार के रास्ते से जा रही थी। उस नवयुवती को सुनसान रास्ते पर अकेली जाती देख कर एक नवयुवक ने उसे धक्का मार दिया और आगे बढ़ गया।

उस धक्के से यद्यपि युवती को कोई नुकसान नहीं पहुँचा फिर भी वह लौट पड़ी और उसे भागने का मौका दिये बगैर उसने उस युवक का हाथ पकड़ लिया। युवक ने इसकी कल्पना न की होगी। युवती के हाथ पकड़ते ही वह काँपने लगा। आगे क्या करे यह निश्चित भी न कर पाया था कि युवती ने पूछा, 'तुमने मुझे क्या समझ कर धक्का मारा ?'

भीड़ बढ़ती जा रही थी किन्तु सभी चुप ! और तभी तड़ से एक चांटा पड़ा उसके गाल पर युवती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का। इस घटना से मुझे यह सोचने का अवसर मिला कि अगर एक बार हमारी बहिनें साहस से काम लें तो गुण्डों में इतनी शक्ति नहीं कि वे दुबारा ऐसी हरकत न करें ?

—सुधा सिजारिया, जबलपुर

चार सलाई का मोजा

सामान—तीन तार का ऊन चार औंस, १२ नं० की दोनों ओर नोंक दार सलाई चार।

विधि—पहले तीन सलाइयों पर सोलह-सोलह कुल ४८ फन्दे डाल ले। और एक सीधा, एक उल्टा बुनती जायें जब तक तीन इञ्च पूरा न हो। इसके बाद ४॥ इञ्च तक सादा बुन डालो (सिर्फ सीधा बुनो, उल्टा नहीं बुना जाता) अब एड़ी तैयार करो।

पहले एक सलाई पर पहली सलाई से बारह फन्दे बिना बुन कर उठा ले। इसके बाद पहली सलाई के पीछे से तीसरी सलाई से भी बिना बुन कर बारह फन्दे उठा ले। इन चौबीस फन्दों पर एड़ी तैयार करनी होगी। बाकी चौबीस फन्दों को पैर के ऊपरी हिस्से के लिए दो सलाइयों पर बारह-बारह, हिस्सा करके रख दें। अब एड़ी बुनिये। प्रत्येक लाइन के प्रथम फन्दे को बिना बुन कर उठा लो।

२४-उल्टा बुनिये। २३-सीधा बुनिये। २२-उल्टा बुनिये। २१-सीधा। २०-उल्टा। इसी तरीके से प्रत्येक लाइन की प्रथम फन्दे को बिना बुन कर उठा ले। जब तक न बिना बुने हुए फन्दे दोनों ओर सात-सात करके चौदह न हो जाय। आखिरी उल्टे पर खत्म करो। दस उल्टा बुनिये। दस सीधा बुनिये। अब बिना बुने हुए फन्दों में से सबसे बाद में रखा फन्दे के किनारे से ऊन खींच कर उँरे हाथ के सलाई पर लो और बिना बुने हुए फन्दों के आखिरी फन्दे के साथ जुड़ा बुनो। ग्यारह उल्टा बुनिये। एक बार और कीजिये।

बारह सीधा बुने। तेरह उल्टा बुने। इसी प्रकार बुनती जायें जब तक चौबीस न पूरे हों। आखिरी लाइन उल्टे पर खत्म करे। अब बारह सीधा बुने। अब ऊपरी हिस्से को शुरू करो। ऊपरी हिस्से के लिये रखे चौबीस फन्दों को एक सलाई पर करो। अब एक दूसरी सलाई लेकर एड़ी के जो बारह फन्दे बाकी हैं सीधा बुने और किनारे से दो फन्दे उठा कर इसी सलाई पर सीधा बुने। अब एक सलाई लेकर ऊपरी हिस्से के लिए रखे चौबीस फन्दों को सीधा बुने, और एड़ी के किनारे से दो फन्दे उठा कर सीधा बुनो। अब इसको गोलाई के रूप में शुरू करो। १ गोलाई—सब सीधा।

२ गोलाई—पहली सलाई पर—सब सीधा आखिर के तीन फन्दे एक जुड़ा, एक सीधा। दूसरी सलाई पर—सब सीधा। तीसरी सलाई पर—१ सीधा, १ जुड़ा सामने ऊन लेकर। यह पहली और दूसरी गोलाई की बुनाई और दो बार बुनो। इसके बाद तीन इञ्च सादा बुनो। अब अँगुली (Toe) शुरू करें।

१ पहली गोलाई—पहली सलाई पर-सब सीधा आखिर के तीन फन्दे एक जुड़ा, एक सीधा। दूसरी सलाई पर—एक सीधा, एक जुड़ा सामने ऊन लेकर बाकी सब सीधा सिर्फ आखिर के तीन फन्दे एक जुड़ा एक सीधा। तीसरी सलाई पर-एक सीधा, एक जुड़ा, सामने ऊन लेकर। बाकी सब सीधा।

दूसरी और तीसरी गोलाई, सदा बुनिये।

इन तीनों गोलाई, मतलब नौ लाइन की बुनाई तब तक बुनिये जब तक न तीनों सलाइयों पर सिर्फ छब्बीस फन्दे बाकी रह जाय। अब पहली सलाई के फन्दों को तीसरी सलाई के पीछे से बुन डालो और दूसरी सलाई से भी एक फन्दा बुन लो।

इसके बाद मोजे को उल्टा करे। और दोनों सलाई पर जो फन्दे हैं उन्हें सलाई या सुई के सहारे जोड़ कर बन्द कर दो।

अब आपका मोजा पूरा हो गया। दूसरे मोजे को भी इसी प्रकार बुनिये। जब दोनों पूरे हो जायँ, इन पर गीला कपड़ा रख कर स्त्री कर लो।

—सुनीता बागची, लश्कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञातव्य बातें

पहली भारतीय हवाई कम्पनी १६३२ में स्थापित हुई थी और पहली हवाई सर्विस टाटा कम्पनी ने १५ अक्टूबर १६३२ को चलाई, जिसका वायु-मार्ग कराची, बम्बई, मद्रास था।

भारत के चार केन्द्रीय ट्रेड यूनियन संगठनों से लगभग १,३०० रजिस्टर्ड ट्रेड यूनियनें सम्बद्ध हैं जिनकी कुल सदस्य संख्या १६, ३३,००० हैं।

रेलों के सहकारी उपभोक्ता स्टोरों तथा सहकारी ऋणदात्री तथा बीमा समितियों की कुल संख्या ८४ है, जिनकी सदस्य-संख्या लगभग ३,६६,००० है तथा उनमें लगभग २ करोड़ १५ लाख के हिस्सों की पूँजी लगी हुई है।

पिछले वर्ष के अन्त तक लोगों के स्वेच्छा पूर्वक बताने से अथवा आय-कर जांच आयोग के प्रयत्न से १२५ करोड़ रुपये की छिपाई हुई आमदनी का पता लगा।

सन् १६५३ में भारत से १३ करोड़ ५० लाख रुपये के फलों तथा मेवों का निर्यात हुआ।

१६५२-५३ में भारत ने विदेशों को २० करोड़ ६५ लाख रुपये के मसाले भेजे।

सौंदर्य

सौंदर्य के लिए प्रसन्नता से उत्तम शृङ्गार कोई नहीं।

एक सुन्दर वस्तु प्राकृतिक सौंदर्य है।

सौंदर्य सत्यता है और सत्यता सौंदर्य।

जो वस्तु आकर्षक और दर्शनीय हो, उसका सुन्दर होना आवश्यक नहीं, लेकिन जो वस्तु अच्छी हो, वह सदा सुन्दर होगी।

स्त्री रोगों की जड़

मासिक धर्म का ठीक समय पर न होना बाँझपन, रक्त हीनता, क्षय, कैन्सर आदि घातक रोग क्यों होते हैं?

इसलिये कि गर्भाशय, डिम्बकोष आदि जननेन्द्रिय विकार युक्त और रोग ग्रस्त हो जाते हैं, उनकी स्वाभाविक क्रिया नष्ट हो जाती है और ठीक दवा ठीक समय पर नहीं की जाती।

यदि आप नीरोग रह कर सुखी जीवन बिताना चाहती हैं तो—

संजीवनी

का सेवन कीजिये।

तीस वर्ष के अनुभव के बाद प्रसिद्ध चिकित्सक की अनुभूत यह नवीन औषधि संजीवनी स्त्री रोग का अमोघ अस्त्र है।

रोग निदान और सेवन-विधि औषधि के साथ भेजी जाती है।

मूल्य—१ शीशी (एक महीने के सेवन के लिए)	३) रुपया	डाक व्यय अलग।
२ शीशी	५॥) "	
४ शीशी	१०) "	

कृष्णा होमियोपैथिक चिकित्सालय, ४६४-सुभाषनगर, इलाहाबाद-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

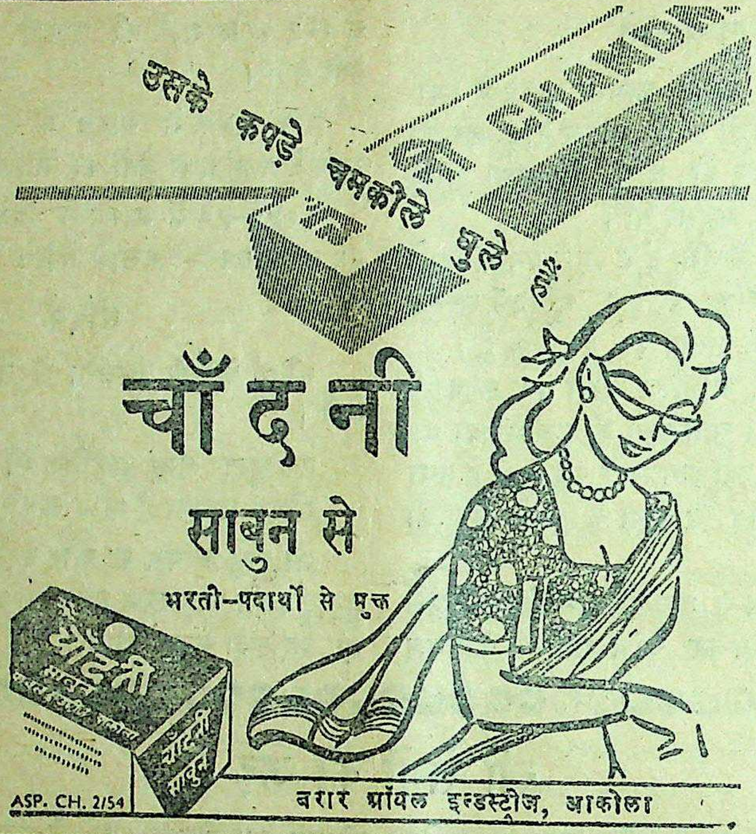

दीदी की फाइल

दीदी की सन् १९५३ की बारहों मास की पूर्ण फाइल

६) रुपये में प्राप्त कीजिये। इस फाइल में 'दीदी' का गृह-प्रबन्ध अङ्क भी है, जो अलग से नहीं मिल सकता।

मैनेजर दीदी कार्यालय

इलाहाबाद—२

हर भाषा में कच्ची-पक्की दीवार पर सुन्दर विज्ञापन के लिए लिखें

विश्व-बन्धु आर्ट

पता—विश्वबन्धु-मु० धरतीपुर विरुयां
पो०—गम्भीरपुर, (जिला आजमगढ़)
यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप विलास कम्पनी कानपुर की स्त्रियों के लिये सर्वोत्तम शक्तिवर्धक औषधियाँ

नारी संजीवनी

स्त्रियों का प्रदर रोग स्त्रियों के स्वास्थ्य और सौन्दर्य का भयानक शत्रु है। इस बीमारी से पीड़ित होने वाली स्त्रियों के पेट, पीठ, कमर, रीढ़, सिर में दर्द, शरीर में जलन, मन मलीन, उठने बैठने में थकावट, भूख न लगना, बदन दुबला और कमजोर हो जाना, मासिक धर्म का ठीक समय पर न होना, सन्तान न होना, हिस्टीरिया आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं और धीरे धीरे स्त्री के यौवन का खात्मा हो जाता है। भारत के विख्यात वैद्यरत्न श्री सत्यदेव जी के ३० वर्ष में अनुभव में आई हुई नारी संजीवनी सब प्रकार के स्त्री रोगों की एक मात्र दिव्य औषधि है जिसके द्वारा आज तक सहस्रों स्त्रियों को भयानक रोगों के पंजे से छुड़ाया है।

कीमत फी शीशी ३=) तीन रुपया दो आना। दो का दाम छै रुपया। डाक खर्च अलग।

गर्भदाता रसायन

अगर विवाह को हुये कई वर्ष हो गये हैं अथवा किसी अज्ञात कारणवश सन्तान नहीं होती है तो ऐसी अवस्था में गर्भदाता रसायन सेवन करा कर संतान सुख दीजिये। जो स्त्रियाँ संतान न होने से निराश हो चुकी थीं वे अब बच्चे की माँ हैं। यदि आपके सन्तान नहीं होती अथवा खंडित हो जाती है तो इस दवा की परीक्षा अवश्य कीजिये। कीमत एक शीशी ४।=) चार रुपया छै आना। डाक व्यय अलग।

रजस्वलोना

रुके हुये मासिक धर्म को बिना कष्ट व दर्द के जारी कर देता है। गंदे खून के रुकने से अनेक बीमारियाँ तो हो जाती हैं, किन्तु सन्तान भी नहीं होती है। इससे बगैर तकलीफ के रज जारी हो जावेगा और स्त्रियाँ गर्भ धारण योग्य हो जाती है। गर्भवती स्त्रियाँ इसे सेवन न करें। कीमत एक शीशी ५।।) पाँच रुपया आठ आना। डाक व्यय अलग।

रूपविलास

मुँह से बदनुमा दाग, भाँई, फुन्सी, खुश्की, बदरोनकी, झुर्रियाँ, मुहाँसा, चेचक के काले २ दाग आदि दूर होते हैं। शादी के पहले वर-वधू की शोभा बढ़ाने के लिये रूप विलास भेंट कीजिये। इससे भद्दे पुराने चमड़े से छिपी हुई सुन्दरता निखर कर असली सुन्दरता चमक उठेगी। यह स्त्रियों और पुरुषों के दिल खुश करनेवाली मनमोहनी दवा है। कीमत एक डिब्बी २) दो रुपया। डाक व्यय अलग।

मँगाने का पता—**रूप विलास कम्पनी नं० ४३९ धनकुट्टी, कानपुर**

पत्र लिखते समय 'दीदी' का हवाला दें!

सफ़ेद कोढ़ की पेटेंट दवा. मूल्य ५) रुपया

विवरण पत्र मुफ्त मँगावें।

वैद्य बी० आर० बोरकर, आयुर्वेद भवन
मु० पोस्ट मँगरूलपीर, जिला—अकोला
(बेरार) मध्य प्रदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

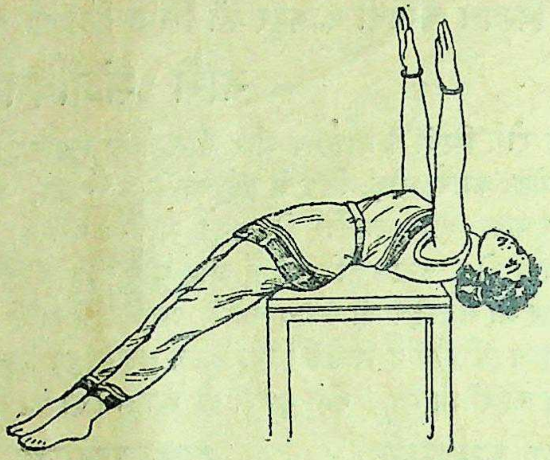

स्वास्थ्य और सौंदर्य ॥)

इस पुस्तक में चित्रों सहित वे सब व्यायाम बताए गए हैं जिनको अपने एकान्त कमरे में ५ से १५ मिनट तक रोज करके स्त्रियाँ पूर्ण स्वस्थ और सुन्दरी बन सकती हैं। इसके अलावा इसमें सौंदर्य वृद्धि की ओर भी ऐसी बहुमुल्य सलाहें दी गई हैं जो आपको अन्यत्र न मिलेंगी।

केश विन्यास ॥)

यदि कोई कहे कि बालों को धन्नी में बाँध कर झूलने से बाल बढ़ेंगे तो स्त्रियाँ अपने बालों को बढ़ाने के लिए यह कष्टकर उपाय करने को तैयार हो जायेंगी। जैसा कि नार्वे की यह स्त्री कर रही है। परन्तु यदि आप यह पुस्तक पढ़ें तो सहज ही केश रहस्य समझ जायेंगी और आपके केश सघन, सुचिक्कन और दीर्घ हो जायेंगे।

१) मनिआर्डर से भेज कर दोनों पुस्तकें घर बैठे मँगाइए। वी० पी० नहीं भेजी जायगी।

पता—'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीदी के संरक्षक

1—श्रीमती राजकुमारी ठोलिया, उज्जैन २००)
२—श्री मुकुटविहारीलाल श्रीवास्तव, बिरलापुर २००)
३—कुमारी कमल सहाय, आरा २००)
४—श्री हेमप्रभादेवी तापड़िया, जसवन्तगढ़ १५०)
५—श्री सरलादेवी मेहता, बांदा १२८)
६—श्री सेठ बल्देवदास मूँधड़ा, कलकत्ता १००)
७—श्रीमती स्नेहलता नेवाटिया, बम्बई ,,
८—श्रीमती चन्द्रावती एस० कानोडिया, बम्बई ,,
९—श्रीमती सरलादेवी डागा, कलकत्ता ,,
१०—श्रीमती निर्मला गोबिल, आगरा ,,
११—श्री रानी लक्ष्मीकुमारी चूंड़ावत, रावतसर ,,
१२—श्रीमती सावित्री बाँगड़, कलकत्ता ,,
१३—श्री विन्दुवासिनीदेवी सकलानी, देहरादून ,,
१४—श्रीमती कृष्णादेवी मन्त्री, बम्बई ,,
१५—श्रीमती मोहिनी तापुड़िया, बम्बई ,,
१६—कु० अरुणा कुमारी जायसवाल, हैदराबाद ,,
१७—श्रीमती रतनदेवी सुखानी कुमरी तलैया २००)

'दीदी' के नियम

(१) 'दीदी' मासिक पत्रिका है। इसका वार्षिक मूल्य ६) और एक प्रति का ।।) है। वार्षिक मूल्य कार्य्यालय में पहुँचते ही ग्राहक का नाम रजिस्टर में दर्ज हो जाता है और पत्रिका जानी शुरू हो जाती है।

(२) रुपया पैसा, वार्षिक मूल्य और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र आदि प्रेमलता देवी संचालिका 'दीदी' कार्य्यालय, इलाहाबाद—२ के पते से भेजना चाहिए।

(३) पत्र-व्यवहार करते समय ग्राहकों को अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये। पत्र-व्यवहार का पता यह है—संचालिका 'दीदी' कार्य्यालय, इलाहाबाद—२।

(४) 'दीदी' हर महीने में पहली तारीख को प्रकाशित हो जाती है। पहली तारीख के आसपास यदि 'दीदी' आपको न मिले तो आपको तुरन्त अपने डाकघर से पूछना चाहिये। अगर पता न लगे तो १५ तारीख के भीतर संचालिका 'दीदी' इलाहाबाद को लिखना चाहिये।

(५) यदि एक-दो मास के लिये पता बदलवाना हो तो डाकखाने से प्रबन्ध कर लेना चाहिए। यदि साल भर या अधिक काल के लिये पता बदलवाना हो तो उसकी सूचना मय ग्राहक नम्बर के हमें देनी चाहिये।

(६) लेख, फोटो, बदले के पत्र, समालोचना के लिये पुस्तकें सम्पादक 'दीदी' इलाहाबाद के पते से भेजना चाहिये।

(७) न छपने की हालत में वे ही लेख वापस किये जायँगे जिनके साथ आवश्यक स्टाम्प होगा।

(८) 'दीदी' में विज्ञापन छपाना हो तो उसके नियम अलग से मँगावें। पर यह ध्यान रखें, 'दीदी' में अश्लील व झूठे विज्ञापन नहीं छापे जाते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

DIDI -/8/- May 1954 Regd. No. A—691

'दीदी' मुझे क्यों प्रिय है—

पिछले कई वर्षों से मैं दीदी की ग्राहिका हूँ। परिवार के व्यय को आय के अन्दर रखने के लिये मुझे कुछ भी क्यों न करना पड़े, पर मैं अपनी इस प्यारी पत्रिका से नाता नहीं तोड़ूँगी। इसका मूल्य तो इसके विशेषज्ञों की उन सलाहों में ही वसूल हो जाता है जो इसमें आती रहती हैं। यह 'दीदी' पढ़ते रहने का ही फल है कि मेरा घर आनन्द-दायक, मेरी रसोई रुचिकर, मेरा शृङ्गार आकर्षक और मेरा शिशु स्वस्थ दीखता है।

'दीदी' ने मुझे प्रिय पत्नी, आदरणीय माता और एक अच्छी सहेली बना दिया है। 'दीदी' का वार्षिक मूल्य ६) रुपया है। इतनी उपयोगी पत्रिका केलिए यह मूल्य कुछ नहीं है।

पता—मैनेजर 'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद—२

आपका बच्चा बहुत प्रसन्न होगा! यदि आपकी डाक में उसे

बा ल बो ध

को एक प्रति मिलेगी!

बालबोध, श्रीनाथसिंह द्वारा संस्थापित छोटे बच्चों का कहानियों आदि का मासिक पत्र है। अपने प्यारे बच्चे के नाम प्रतिमास इसे डाक से पहुँचने दीजिये।

बालबोध का वार्षिक मूल्य सिर्फ ३) रु० है। यह रकम मनिआडर से भेज कर आप निश्चिन्त हो जाइये और शेष काम हमको करने दीजिये। नमूने की प्रति मुफ्त मँगाइये।

मैनेजर—'बालबोध', इलाहाबाद—२

मुद्रक और प्रकाशक श्रीनाथसिंह 'दीदी' प्रेस, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल पत्रिका

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीदी

प्रधान सम्पादिका
श्रीमती यशोवती तिवारी

सम्पादिका-समिति
महा माननीया श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित
रानी लक्ष्मीकुमारी रावतसर
श्रीमती रत्नकुमारी एम० ए०
श्रीमती कमला शिवपुरी बी० ए०, बी० टी०
श्रीमती चन्द्रकान्ता जेरथ बी० ए०
श्रीमती रजनी पनिकर एम० ए०
कुमारी विद्यावती साहित्य रत्न

प्रबन्ध सम्पादक—श्री श्रीनाथसिंह

पत्र व्यवहार का पता—
प्रेमलता देवी संचालिका 'दीदी' कार्यालय
इलाहाबाद नं० २

विषय-सूची

कहानियाँ

१—घुश्मेश्वर महादेव [श्री श्रीनाथसिंह] २९४
२—क्षणिक सुख [श्री स्वामीनाथ श्रीवास्तव 'स्वतन्त्र'] ३००
३—राह की खोज [श्रीमती विमला बांठिया] ३१०
४—क्रान्तिकारी [श्री विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक'] ३१५
५—सास-ससुर-सम्मेलन [कुमारी उषा कोविद शाह] ३२१
६—झगड़े का निपटारा [कुमारी सुशीला कुमारी] ३२७
७—उपेक्षिता [श्रीमती अमिताकुमारी बोस] ३३३
८—मोहजाल [श्री तेजबहादुर 'अनाथ'] ३३७

लेख

१—दहेज की समस्या [श्री श्रीनाथसिंह] २९०
२—कढ़ाई की कला सीखिये ! [कुमारी सुशीला कुमारी] ... २९२
३—नवजात शिशु : उसकी देख-रेख [श्री रवीन्द्रनाथ झा] ... २९७
४—भोजन और स्वास्थ्य [श्रीमती शिवनयना मेहता] ३०७

कविताएँ

१—चञ्चल नारी ['कुटज' से] २९६
गीत [कुमारी पुष्पलता अस्थाना एम० ए०] ३३५

फुटकर

१—मौर फाड़ डाला ... २९१
२—ज्ञान का आधार ... २९६
३—कागजी गुलदस्ता [कुमारी सु० तारे, कोटा] ३०६
४—महाराजा रणजीतसिंह की बात ! ३१४

स्तम्भ

१—अपने विचार २८६
२—प्रश्न पिटारी ३२६
३—विविध विषय ३३०
४—नयी किताबें ३३६
५—बच्चों का पृष्ठ ३३९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलाहाबाद
जून, १९५४

दीदी

वर्ष १५
संख्या ६

महिलाओं की पत्रिका

'दीदी' का यह अङ्क पाठिकाओं के हाथों में देते हुए हमें बड़ा सन्तोष हो रहा है इसमें अनेक ऐसी चीजें हैं जिन्हें हम पहले के अङ्कों में देना चाहते थे परन्तु न दे सके थे। इस अङ्क की कहानियां भी बहुत ही सुन्दर हैं, खास कर स्वर्गीय पंडित विश्वम्भरनाथ शर्मा की 'क्रान्तिकारी' नामक कहानी। आगामी अङ्क में पाठकों को और भी सुन्दर कहानियां पढ़ने को मिलेंगी।

'दीदी' के इस अङ्क से कढ़ाई के सम्बन्ध में एक लेख माला आरम्भ की जा रही है। जो पाठिकायें इसे ध्यान से पढ़ेंगी वे घर बैठे अच्छा सीना और काढ़ना सीख जायेंगी। हो सकता है, अधिकांश पाठिकायें इस कला में निपुण हों, पर यदि वे इस लेख माला को पढ़ेंगी तो उन का ज्ञान और बढ़ेगा और काढ़ने में वे जो भूलें करती हैं, उनसे बचेंगी। इस लेख माला द्वारा 'दीदी' पाठिकाओं को कढ़ाई की कला सीखने का एक अच्छा अवसर प्रदान कर रही है, आशा है पाठिकायें इससे लाभ उठावेंगी।

कु० पुष्पलता अस्थाना
एम० ए०

कुमारी पुष्पलता अस्थाना से 'दीदी' की पाठिकायें परिचित हैं। वे हिन्दी की उदीयमान कवयित्री और सुयोग्य लेखिका हैं। इस अङ्क में भी हम उनका एक गीत छाप रहे हैं। जैसी वे श्रेष्ठ कवयित्री हैं वैसी ही आधुनिक गृह-विज्ञान की कला में दक्ष हैं। उनका कहना है कि घरों को चित्रों से किस प्रकार सजाना चाहिए यह बहुत कम स्त्रियां जानती हैं। इस सम्बन्ध में उन्होंने एक सुन्दर लेख लिखा है, जिसे हम 'दीदी' के आगामी अङ्क में प्रकाशित करेंगे।

वर्तमान समय में नव शिक्षिता बालिकाओं के के सामने सबसे बड़ी समस्या दहेज की है। दहेज की बलिवेदी पर अनेक भारत ललनाओं को अपनी बलि करनी पड़ी है। कानपूर की बिमला तिवारी का दुखद अन्त इसका नया उदाहरण है जिसकी चर्चा हम अन्यत्र कर रहे हैं। पाठक-पाठिकाओं से निवेदन है कि इस सम्बन्ध में वे भी अपने सुझाव भेजें कि कैसे इस राक्षसी प्रथा का अन्त हो।

'दीदी' के पिछले अङ्कों की उत्तम पाठ्य-सामग्री के लिये हमें चारों से बधाई के पत्र मिले हैं। कागज, छपाई और चित्रों में अभी सुधार होना बाकी है। इधर भी हम ध्यान दे रहे हैं आशा है कि पाठक गण हमें बताते रहेंगे कि 'दीदी' में उन्हें क्या पसन्द है क्या नहीं? ताकि इसमें हम और भी सुधार कर सकें। साथ ही पाठिकाओं से निवेदन है कि वे 'दीदी' में छपने के लिए अपने रसोंई, गृह प्रबन्ध, शिशु-पालन आदि के नये प्रयोग भेजें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दहेज की समस्या

लेखक, श्री श्रीनाथसिंह

बिमला तिवारी बी० ए० (आयु १८ वर्ष) ने आत्म हत्या करके हमारा ध्यान नये सिरे से दहेज की समस्या की ओर आकृष्ट किया है।

बिमला सरनैती गाँव (कानपूर) के पंडित नवरङ्गी लाल तिवारी की प्यारी पुत्री थी। पंडित जी एक गांव के स्कूल में अध्यापक हैं और ७०) रुपया मासिक वेतन पाते हैं। उन्होंने बिमला को पढ़ाया-लिखाया सुयोग्य बनाया। पर इतना धन न जमा कर सके कि उसके अनुरूप वर उसके लिये प्राप्त कर सकें। पण्डित जी अपना सब कुछ बेच-बाच कर ४०००) रुपये तक देने को तैयार थे परन्तु उन पुत्रों के पिता जिनमें से वे किसी एक के साथ अपनी कन्या व्याहना चाहते थे, इससे बहुत अधिक मांग रहे थे और जितना वे मांग रहे थे, उतना धन जुटाना पंडित जी की शक्ति के बाहर था इससे वे बहुत दुःखी हुए। बिमला से पिता का दुःख देखा न गया और उसने उन्हें चिन्ता मुक्त करने के लिये अपने वस्त्रों में मिट्टी का तेल छिड़क कर आग लगा ली और जल मरी।

इस घटना से, जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं, लोगों का ध्यान नये सिरे से दहेज की कुप्रथा की ओर गया है और कानपुर के कतिपय उत्साही युवकों ने इस राक्षसी प्रथा का सर्वथा विनाश कर देने की प्रतिज्ञा की है और उन्होंने इसके विरुद्ध लोकमत तैयार करना प्रारम्भ कर दिया है। यदि बिमला का बलिदान सुशिक्षिता कन्याओं की इस राक्षसी प्रथा से रक्षा कर सका तो हम कहेंगे कि बिमला का बलिदान व्यर्थ नहीं गया।

परन्तु पाठक! आइये, जरा सोचें कि क्या बिमला जैसी सुशिक्षिता नारी के लिए आत्म हत्या के सिवाय और कोई रास्ता ही नहीं था? क्या वह गरीब या कम पढ़े व्यक्ति से विवाह करती तो वह मृत्यु से अधिक असह्य या दुखदायी होता? क्या यूनिवर्सिटी की डिग्री, उच्च सरकारी नौकरी और धन ही सब कुछ है? क्या जो इन चीजों से हीन हो वह मनुष्य नहीं है और सब प्रकार से त्याज्य है?

ये प्रश्न हैं जिन्हें हम आधुनिक सुशिक्षिता कन्याओं और उनके माता पिताओं से पूछना चाहते हैं। बिमला के पिता गरीब ब्राह्मण हैं। उन्होंने अपनी कन्या को बी० ए० तक पढ़ाया यह प्रशंसा का काम किया। परन्तु जब ४०००) रुपये देने पर भी उन्हें धनी परिवार का बी० ए० या एम० ए० पास लड़का नहीं मिला, तब क्या यह उचित न होता यदि वे अपने गांव के समाज में कम पढ़ा या सर्वथा बे पढ़ा ही बर ढूँढ़ते। जिस प्रकार दहेज की प्रथा का अन्त होना आवश्यक है उसी प्रकार सुशिक्षिता कन्याओं के मन से यह विचार भी दूर होना चाहिए कि शादी करेंगी तो धनी और सुशिक्षित से ही और नहीं तो क्वारी रहेंगी या आत्म-हत्या कर लेंगी।

यह तो हम मानते हैं कि कन्या के अनुरूप बर होना चाहिए। परन्तु बी० ए० पास के लिए अनुरूप बर बी० ए० या एम० ए० पास ही है, यह हम नहीं मानते। जिस प्रकार पुरुष अपने से कम पढ़ी या सर्वथा बे-पढ़ी कन्या से विवाह करके सुख से रह सकता है उसी प्रकार स्त्री भी अपने से कम पढ़े या सर्वथा बे-पढ़े पुरुष से विवाह करके सुख से रह सकती है। यह दृष्टि कोण अपना लिया जाय तो कन्याओं के लिये बरों का अभाव नहीं हो सकता और दहेज माँगने वाले बी० ए० बर बैठे ही रह जा सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुशिक्षिता कन्या के लिए सुशिक्षित वर प्राप्त हो सके तो अच्छा है। परन्तु यदि कोई सुशिक्षित व्यक्ति दहेज मांगे तो उसे पशु-तुल्य समझ कर छोड़ देना चाहिए, क्योंकि जब मनुष्यता नहीं तब कुछ नहीं। यदि बिमला जीवित होती तो उससे हम यह बात कहते। अब बिमला नहीं है तो समस्त सुशिक्षिता कन्याओं से यही बात कहना चाहते हैं कि बरों में डिग्री न देखें, धन न देखें केवल यह देखें कि वे सहृदय, चरित्रवान, स्वस्थ, सच्चे और श्रम करने वाले हैं या नहीं। ऐसे व्यक्ति दहेज का आग्रह नहीं करेंगे और ऐसे ही व्यक्तियों के साथ व्याह होने से जीवन सुखी हो सकता है।

मुँह मांगा दहेज देने वाले पिताओं को भी प्रायः पछताना पड़ता है। इसका एक उदाहरण लीजिए। यहीं इलाहाबाद जिले में एक सज्जन जो राज्य की सरकार के एक कर्मचारी हैं, ने अपने पुत्र का व्याह एक ऐसी कन्या से किया जो कुरूपा थी। पर मुँह माँगा दहेज पाने पर उन्होंने इस कुरूपा को अपनी पुत्र वधू बना लिया था। यह कन्या जब ससुराल आयी तब परिवार के लोग भूल गये कि इसके स्वागत के लिए मुँह मांगा धन मिल चुका है और लगे उसको ताने मारने। परिणाम यह हुआ कि इस बेचारी ने भी तन में आग लगा कर आत्म हत्या कर ली। विमला की जान इसलिए गई कि उसका पिता दहेज नहीं दे सकता था और इस कन्या की जान इसलिये गई कि इसके पिता ने मुँह मांगा दहेज दिया था। इस कन्या का पिता भी धनी बर न खोज कर सहृदय बर खोजता तो इस कन्या को प्राण न देना पड़ता।

प्रत्येक अवस्था में अनुरूप वर खोजना चाहिए और अनुरूप वर वही है जो तन से मन से स्वस्थ हो, सहृदय हो, भले गरीब हो। सावित्री ने सत्यवान को जब बरा था तब यह नहीं जानती थी कि यह राजपुत्र है। उन्हें वह केवल बन-वासी समझती थीं पर वे उसे अनुरूप प्रतीत हुए और उसने फिर और कुछ न देखा।

सरकार को दहेज की प्रथा को कानून बना कर उठा देना चाहिए। आशा है व्यवस्थापिका सभाओं का ध्यान तत्काल इस ओर जायगा। हो सकता है, कानून बनने पर भी यह प्रथा चोर बाजारी का रूप धारण कर ले अतएव इससे बचने का सर्वोत्तम उपाय यही है कि कन्याओं के पिता अपनी ओर से भले ही चाहे जो दे दें पर दहेज मांगने वालों से बात न करें, उन्हें हिंसक पशु समझ कर उनसे दूर ही रहें।

मौर फाड़ डाला

सुल्तानपुर का समाचार है कि वहाँ एक नवयुवक जिसके एक पत्नी और कन्या पहले से मौजूद हैं, दूसरा विवाह करने चला। नवयुवक के माता-पिता ने उसका साथ दिया। पत्नी की प्रार्थनाएँ सब ने ठुकरा दीं।

बारात जब गंतव्य स्थान पर पहुँची और मंडप के नीचे विवाह आरम्भ होने जा रहा था तभी यह पहली पत्नी अपनी कन्या के साथ गुप्त रूप से वहाँ जा पहुँची। आवेश में आकर उसने अपने पति के मस्तक पर से मौर उतार कर भूमि में डाल दिया और उसे अपने पैरों तले रौंद डाला, उसका जोरा जामा फाड़ डाला, शुभ कलश ढकेल दिया। मण्डप की चीजें इधर उधर बिखरा दीं और कहा—'इनकी शादी मुझसे हो चुकी है, ये इस कन्या के पिता हैं। मैं इनकी विवाहिता पत्नी हूँ। कोई बाजारू औरत नहीं हूँ। मेरे जीते जी ये दूसरी शादी नहीं कर सकते।'

पहली पत्नी के इस कथन का घराती-बराती दोनों पर प्रभाव पड़ा। भावी नव वधू के पिता ने कहा कि उसे पता न था कि इनके एक पत्नी पहले से मौजूद है। उसने विवाह रोक दिया। पति महोदय लज्जित होकर वापस लौट आये।

अब एक पत्नी के रहते दूसरा विवाह करने वाले सावधान हो जायें!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कढ़ाई की कला सीखिये !

[इस लेख के लिखने में हमें श्रीमती इन्दिरा अग्रवाल, महिला शिल्प भवन से सहायता मिली है ।]

लेखिका, कुमारी सुशीला कुमारी

वस्त्र पर कढ़ाई करना एक उपयोगी कला है। इससे दिल तो बहलता ही है, वस्त्र की भी सुन्दरता बहुत बढ़ जाती है। प्रत्येक स्त्री को यह कला सीखनी चाहिए। यह लेख माला 'दीदी' में इसी ध्येय से प्रारम्भ की जा रही है।

सुई और धागा

कढ़ाई के लिए खास तौर से की सुइयाँ आती हैं जिनकी आँख कुछ बड़ी होती है। कढ़ाई का धागा भी सिलाई के धागे से भिन्न होता है और कमजोर होता है। पर बड़ी आँख वाली सुई से काढ़ने से वह टूटता नहीं। लीजिये अब कढ़ाई सीखिये।

कच्ची कढ़ाई

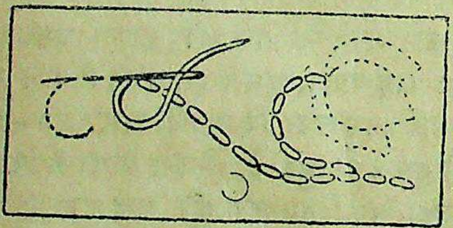

(१)

कच्ची कढ़ाई सबसे सरल है। कोई भी स्त्री इसे सरलता से बना सकती है। इसमें प्रत्येक सीवन दूसरी के समान लम्बाई की होती है। प्रत्येक सीवन को वस्त्र के तीन या चार तारों के ऊपर से जाना चाहिए और प्रत्येक दो सीवनों के बीच में एक या दो तार लेना चाहिए। यह कढ़ाई सीवनों की असम्बद्ध रेखा सी प्रतीत होती है। इसे वस्त्र पर रेखा या डिजाइनों की बाहरी रेखा के तौर पर प्रयोग किया जाता है। (चित्र १)

कच्ची कढ़ाई पर डिजाइन

(२)

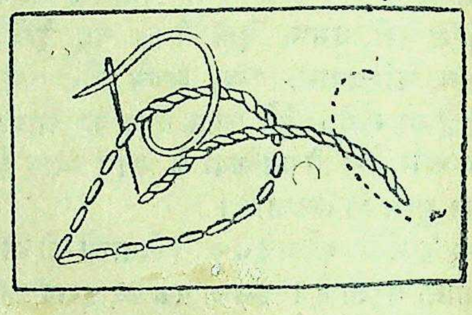

कच्ची कढ़ाई पर डिजाइन काढ़ कर उसे और भी आकर्षक बनाया जा सकता है (देखो चित्र नं० २)। इसके लिये बिना नोंक की सुई का प्रयोग करो और प्रत्येक सीवन में उसे डाल-डालकर धागे को उसमें लपेटो। यह सुई वस्त्र में कहीं भी चुभने न पावे।

दो सुइयों की कढ़ाई

(३)

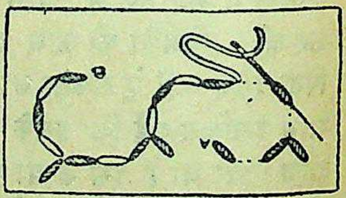

इसे होलबीन स्टिच भी कहते हैं (देखो चित्र नम्बर ३) यह दो भिन्न रंगीन धागों से काढ़ी जाती है। इसमें और कच्ची कढ़ाई में यह अन्तर है कि इसमें सुई ऊपर नीचे वस्त्र के समान स्थान लेती है और फिर दूसरे रंग के धागे से खाली स्थानों को भरती हुई लौटती है। जैसा कि चित्र में दिखाया गया है। सुई की पहली यात्रा बिन्दु (ए) से शुरू होकर (बी) तक एक रंग के धागे से जाती है और फिर बिन्दु (बी) से दूसरे रंग के धागे से (ए) की ओर लौटती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बखिया　　　　(४)

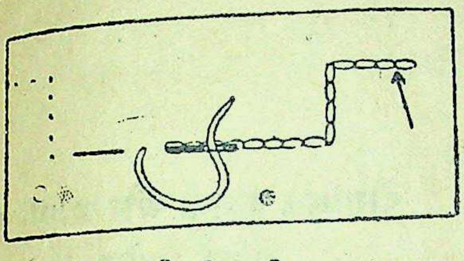

इसमें सुई जहाँ से सिलाई आरम्भ करनी हो वहाँ से थोड़ा आगे बढ़ कर वस्त्र के नीचे से निकाली जाती है और फिर प्रारम्भ के स्थान पर लाई जाती है। इस तरह यह एक टांका पीछे की ओर लगाती हुई बढ़ती है और प्रत्येक टांके में समान स्थान लेती हुई चलती है। बखिया को भी रेखा के तौर पर प्रयोग करते हैं। (चित्र नं० ४)

दोहरी कढ़ाई का कच्चा काम

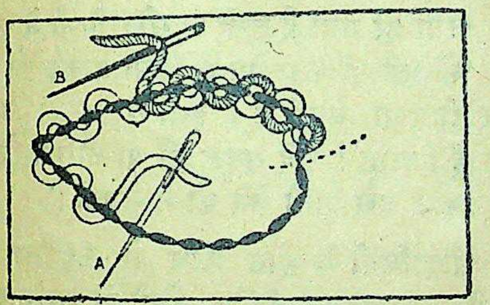

(५)

जिस प्रकार कच्ची कढ़ाई में डिजाइन बनाई जाती है उसी प्रकार बखिया में भी डिजाइन बनाई जाती है। इसे प्रायः दो रङ्ग के धागों से इस तरह बनाते हैं कि यह कढ़ाई वस्त्र के ऊपर फीता-सी प्रतीत होती है। इस काम के लिए कुछ मोटा धागा प्रयोग करना चाहिए। इसमें जैसा कि (ए) और (बी) रङ्ग के धागों से दिखाया गया है। (चित्र नम्बर ५)।

पेकिंग कढ़ाई

यह बखिया पर काम करने का दूसरा अति प्राचीन ढङ्ग है। इसे पेकिंग स्टिच इसलिए कहते हैं, यह चीन की कढ़ाई में बहुत प्रचलित है। इसमें

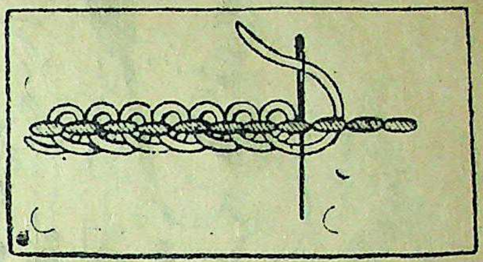

(६)

बखिया पर जरा बड़े लूप बनाये जाते हैं। देखिये (चित्र नम्बर ६)।

कभी-कभी इस काम में सोने चांदी आदि के तारों का भी प्रयोग किया जाता है। जिससे यह फीता नुमा बहुत ही सुन्दर दिखाई पड़ती है।

उल्टी बखिया　　　　(७)

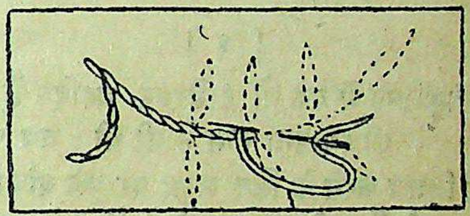

इसे स्टेम स्टिच भी कहते हैं। यह एक प्रकार की बखिया है जो बाएँ से दाहिने की ओर काढ़ी जाती है। इसमें जिस रेखा को ढकना होता है उस के अन्त में सुई निकलती है और तब वस्त्र में आगे दाहिनी ओर से घुसती है और बाईं ओर से निकलती है। इस तरह आगे की ओर जरा लम्बा और पीछे की ओर जरा छोटा डग भरती हुई चलती है। यह कढ़ाई फूलों का डंठल बनाने में प्रयुक्त होती है। (देखिये चित्र नम्बर ७)।

भराव की कढ़ाई

इसमें उल्टी बखिया से इस प्रकार कढ़ाई की जाती है कि एक पूरा स्थान भरा हुआ प्रतीत हो। इसमें जो भी कढ़ाई की जाये इस तरह की जाये कि

[शेष पृष्ठ २६६ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पौराणिक कहानी और आधुनिक
विचित्र संयोग

घुश्मेश्वर महादेव

लेखक, श्री श्रीनाथसिंह

[१]

'दक्षिण में एक तो रामेश्वर महादेव हैं, जिन की स्थापना राम ने की थी ; जब उन्होंने लङ्का विजय करने के लिए समुद्र पर पुल बांधा था। और दूसरे हैं घुश्मेश्वर महादेव जिनकी स्थापना घुश्मा नामक एक उदार हृदया नारी ने की थी। न जाने क्यों ? मुझे घुश्मेश्वर महादेव अधिक आकर्षित करते हैं।'

पंडित बंशीधर ने अपनी द्वितीय पत्नी सौदामिनी से कहा जो उनकी पहली पत्नी के लड़के मृदुल को बहुत सताया करती थी।

'कहाँ हैं ये घुश्मेश्वर महादेव ?' सौदामिनी ने पूछा।

रेलगाड़ी रामेश्वरम् के रास्ते पर दौड़ी जा रही थी। पिछले स्टेशन पर सौदामिनी ने मृदुल को पानी लेने के लिये भेजा था और इस बीच में गाड़ी छूट चुकी थी।

बंशीधर खिड़की से बाहर दूर तक फैले हुए हरित-भरित प्रदेश को देखने लगे और बार-बार कहने लगे—'घुश्मेश्वर ! घुश्मेश्वर !!

'क्या हो गया है तुम्हें ?' सौदामिनी ने पूछा।

'सौतेली माँ के प्रकोप से किसी बालक को घुश्मेश्वर ही बचा सकते हैं। इसी से उनका नाम ले रहा हूँ। आह् ! यदि मृदुल की माँ जीवित होती तो इस प्रकार उसे पानी लेने को न भेजती।'

सौदामिनी के होंठ क्रोध से फड़फड़ा उठे। बोली—'उसकी माँ जीवित होती तो इस नालायक को चूल्हे में झोंक देती। मैं सौतेली माँ हूँ इसी से मैं उसके हक में अच्छा भी करती हूँ तो बुरा हो जाता है।'

बंशीधर के मन में आ रहा था कि जंजीर खींच लें या खिड़की में से बाहर कूद पड़ें। पर वे दो में से एक भी न कर सके।

बीच में कई स्टेशनों को छोड़ती हुई गाड़ी बेजवादा में रुकी। बंशीधर पहले तो शान्त रहे कि मृदुल किसी दूसरे डिब्बे में चढ़ गया होगा परन्तु जब वह आता न प्रतीत हुआ तब वे स्वयम् उतरे। जल्दी-जल्दी सब डिब्बे देख डाला, मृदुल का नाम ले-लेकर पुकारा पर उसका कुछ पता न चला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घबराहट से हांफते हुए वे सौदामिनी के पास आकर कहने लगा—'शायद मृदुल पीछे रह गया।'

'चलो छुट्टी मिली, नालायक से। आओ बैठो।' सौदामिनी ने कहा।

'बेटा पीछे रह गया और तुम्हें इसके लिये तनिक भी चिन्ता नहीं है।'

'मैं कहती थी न कि इसे मत ले चलो। पर तुम माने ?'

'उसी की यह सजा दे रही हो ?'

इञ्जन की सीटी सुनाई पड़ी। बंशीधर ने कहा—'उतरो! लड़के को पीछे छोड़ कर हम आगे नहीं बढ़ सकते ?'

सौदामिनी ने घोर बेबसी और अपमान का अनुभव किया। 'परदेश में मुझे सताने के लिये ही ले आये हो।' कहती हुई वह गाड़ी से नीचे उतर आयी। पीछे के स्टेशन को तार दिया गया, सौदामिनी को वहीं छोड़ कर बंशीधर दूसरी गाड़ी से वहाँ गये और वापस आये। मृदुल न मिला।

'वह भागना ही चाहता था।' सौदामिनी बोली—'पर तुम्हारा दिल न टूटे। चलो घुश्मेश्वर के भी दर्शन कर लो।'

'अवश्य चलेंगे।'

दोनों पति पत्नी घुश्मेश्वर के लिये रवाना हो गये।

[२]

बंशीधर ने सौदामिनी को घुश्मेश्वर की कथा सुनानी आरम्भ की। यहाँ दक्षिण में सुधर्मा नामक एक ब्राह्मण रहते थे। उनकी पत्नी का नाम सुदेहा था। वह परम धार्मिक और पतिव्रता थी। परन्तु पति पत्नी दोनों बहुत दुःखी रहते थे क्योंकि उनके कोई सन्तान न थी।

'तुम अपना एक विवाह और कर लो ?' सुदेहा बोली—'सन्तान के लिये यह परम आवश्यक है।'

सुधर्मा पहले तो तैयार न हुआ। परन्तु जब सुदेहा ने बहुत आग्रह किया तब तैयार हो गया।

सुदेहा की एक छोटी बहन थी, घुश्मा। उसी को तैयार करके सुदेहा ने अपने पति का दूसरा विवाह करा दिया।

दोनों बहनें प्रेम पूर्वक रहने लगीं। घुश्मा ने सन्तान के लिये शिव की उपासना प्रारम्भ की। वह नित्य ही निकट के सरोवर में जब स्नान करने जाती तब मिट्टी की शिवमूर्ति बना कर उनकी पूजा करती।

उसकी पूजा सफल हुई। उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। शिव पर उसकी श्रद्धा बढ़ गई। उसने पुत्र की मङ्गल कामना के लिये शिव को पूजा जारी रखी।

सुधर्मा का झुकाव नयी पत्नी की ओर पहले ही कुछ अधिक था। पुत्र उत्पन्न होने से और भी अधिक हो गया। इससे सुदेहा उससे द्वेष करने लगी। ज्यों-ज्यों यह पुत्र बढ़ने लगा, उसकी द्वेशाग्नि भी प्रचण्ड होने लगी। यहाँ तक कि एक दिन जब यह पुत्र सो रहा था, सुदेहा ने गला घोंट कर उसको मार डाला और सरोवर में फेंक दिया।

तीसरे पहर घुश्मा को जब अपना पुत्र घर में खेलता दिखाई न पड़ा तब वह चिन्तित हुई। इधर-उधर ढूँढ़ा पर कुछ पता न चला। तब वह घबड़ाई हुई सरोवर पर गयी। स्नान किया, मिट्टी की शिव की मूर्ति बनायी, उसका पूजन किया और प्रार्थना की कि भगवान मेरे पुत्र की रक्षा करो। और जैसे ही उसने मिट्टी की शिव-मूर्ति को जल में विसर्जन किया, क्या देखती है कि उसका पुत्र पानी में से निकला आ रहा है।

'माँ, मुझे बड़ी अम्मा ने गला घोंट कर सरोवर में फेंक दिया था।'

'चुप बेटा चुप !' घुश्मा बोली-'ऐसी बात अब और किसी के आगे मुँह से मत निकालना।'

तभी त्रिशूलधारी भगवान शङ्कर प्रकट हुए—'घुश्मा, तू इतना बड़ा अपराध क्षमा कर देना चाहती है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हाँ, भोले नाथ ! वह मेरी बहन है और दुःखी है। दुःख विवेक हर लेता है। मेरी बहन को इस पाप से मुक्त कर दें, उसके हृदय को शान्ति प्रदान कर दें।'

'एवमस्तु ! तेरी क्षमा-शीलता से मैं बहुत प्रसन्न हूँ। और बर माँग।'

'भोलेनाथ ! आप यहीं निवास करें और अपने भक्तों को शक्ति दें कि वे अपने प्रिय जनों के बड़े से बड़े अपराध क्षमा कर सकें।'

'एवमस्तु !' भगवान शङ्कर अन्तर्धान हो गये। घुश्मा ने उसी स्थान पर प्रस्तर का शिव लिङ्ग बनवा कर स्थापित किया, वही शिव लिङ्ग कुछ समय बाद घुश्मेश्वर नाम से विख्यात हुआ।'

[३]

यह आख्यान सुन कर सौदामिनी को अपने सौतेले पुत्र पर बड़ा स्नेह जागृत हुआ और उसे बड़ा पश्चात्ताप होने लगा। कुछ तो इसलिए भी कि उसकी सेवा टहल करने वाला अब कोई न था।

दौलताबाद स्टेशन पर उतर कर पति पत्नी बेरूल गांव को रवाना हुए जहाँ घुश्मेश्वर महादेव का मन्दिर है। और जब वे स्नान के लिये सरोवर पर गये तब देखा कि उनका पुत्र उसी सरोवर से स्नान करके निकला आ रहा है।

सौदामिनी ने दौड़ कर उसे छाती से चिपटा लिया और इतना रोई कि जितना पहले कभी नहीं रोई थी।

बात यह हुई थी कि कुछ यात्रियों ने जो एलोरा की गुफायें देखने जा रहे थे, उस लड़के को अपने साथ ले लिया था। यह एक संयोग की बात थी, परन्तु पंडित बंशीधर ने इसे घुश्मेश्वर महादेव की कृपा ही समझा।

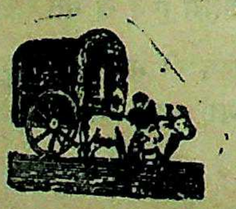

—कढ़ाई की कला सीखिये—

[पृष्ठ २६३ का शेषांश]

वह नियमित हो और जिस आकृति को भरना हो उस के अनुरूप हो। देखो (चित्र नं० ८) इसमें आधा भरा काढ़ा गया है और आधा स्थान अभी खाली है। आप चाहें तो इस पत्ती का आधा खाली स्थान दूसरे रङ्ग से काढ़ सकती हैं।

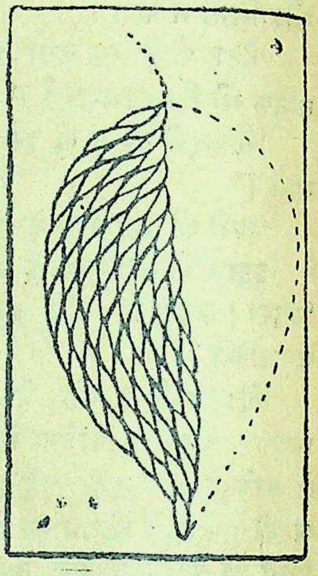

(८)

(इस लेख माला का दूसरा लेख 'दीदी' के आगामी अङ्क में प्रकाशित होगा।)

ज्ञान का आधार

ब्रह्म विद्या की दीक्षा देते हुए ऋषि उद्दालक ने अपने पुत्र श्वेतकेतु से कहा—'सौम्य ! पन्द्रह दिन तक कुछ मत खाओ।'

पन्द्रह दिन निराहार रह कर श्वेतकेतु पिता के पास आया—'देव क्या सुनाऊँ ?'

पिता ने आज्ञा दी—'सौम्य ! ऋक, यजु, साम के मन्त्र सुनाओ।'

पुत्र ने हताश वाणी में कहा—'देव, क्षमा करें, मैं सभी मन्त्र भूल गया हूँ।'

तदन्तर पिता के आदेशानुसार श्वेतकेतु ने भोजन किया, मन्त्र उसकी जिह्वा पर उतर आये।

तब पिता ने कहा—'सौम्य ! हमारा मन अन्न-मय है। अन्न के अभाव में उसकी गति कहाँ ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल-पत्रिका

नवजात शिशु : उसकी देख-रेख

लेखक, श्री रवीन्द्रनाथ झा

बच्चा जब पहले रुदन के साथ जन्म लेता है उसके साथ-साथ सहायक धाय की जिम्मेवारियाँ भी बहुत बढ़ जाती हैं और उचित उपचार न होने के कारण बहुत से ऐसे बच्चे अल्हड़ धाइयों की गलतियों से, दुनियां की चहल-पहल में आने के पहले कराल काल की गालों में कवलित हो जाते हैं। आज भी बहुत-सी पुरानी धारणाएँ देहातों में प्रचलित हैं जहाँ देश की अत्यधिक जन-संख्या का निवास है। बेचारी मातायें और बहनें जान भी नहीं पातीं कि वे देहाती अनपढ़ धाइयाँ कुछ गलती भी कर रही हैं या नहीं। जान का भी सौदा कर वे भाग्य को ही कोस कर रह जाती हैं। इसलिये कुछ शब्दों में आधुनिक वैज्ञानिक तरीके जो अस्पतालों में अपनाये जाते हैं, जानकर और उनको काम में लाकर उन्हें काफी फायदा हो सकता है।

बच्चा को जन्म लेने के साथ ही उसको ऐसे रखना चाहिए ताकि उसका सिर, बाकी भाग से नीचे रहे जिससे गले के नजदीक भरे हुए तरल पदार्थ नीचे आ जायें और गला साफ हो जाय तथा साँस लेने में दिक्कत न हो।

नार काटने की क्रिया भी अधिक महत्वपूर्ण है। देहातों में जैसे-तैसे गन्दे चाकुओं से बिना कृमि का बैक्टेरिया का ख्याल किये ही नार काट दी जाती है। जिस के फलस्वरूप बच्चे और माँ दोनों खतरे में पड़ सकते हैं। इसलिये हमें चाहिए कि बच्चे को साफ कपड़े पर लेटा कर नाभी से अढ़ाई इञ्च के फासले पर एक धागा बाँध दें और दूसरा उससे आध इञ्च की दूरी पर नाभी की ओर। फिर इन दोनों के बीच से नार काट दें। अगर खून आना अभी भी जारी हो तो पहले धागे से सटा कर दूसरा धागा बाँध दें।

ख्याल रहे कि काटने वाला चाकू गर्म पानी में उबाल, फिर डेटौल मिलाये पानी में डुबाया हो जिससे हानिकारक कीड़े आसानी से मर जाते हैं।

फा०—२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहलाना—

माता के उपचार से निवृत होकर शिशु के स्नान का ख्याल करना चाहिए। शिशु के शरीर पर श्वेत पदार्थ लगा रहता है। पहले उसे साफ रुई से सरसों के तेल लगा कर देह पोंछ दें, पुनः गुन-गुने पानी में स्नान करा देना चाहिए। पानी का ताप करीब १०० डिग्री एफ होना चाहिए। इसके लिए एक चौड़े बर्तन का रहना आवश्यक है।

स्नान के बाद साफ तौलिये से बदन पोंछ देना चाहिए। यह देखना उचित है कि कांख और रान में पानी पूरी तरह सूख गया है या नहीं। अन्यथा घाव हो जाने का डर रहता है। याद रहे कि नार हमेशा सूखी रहनी चाहिए। और इसलिए प्रथम स्नान के बाद फिर बच्चे को टब में न डुबायें अन्यथा नार भीग जायेगी। इसके बदले हल्के हाथ थोड़ा गर्म पानी से बच्चे की देह पोंछ देना चाहिये। पूरा नहाना तब तक उचित नहीं जब तक पूरी नार सूख कर गिर न जाय।

लिवास और रहने की जगह—

बच्चे को प्रसूतिका गृहों में काफी कपड़ों में लपेट कर रखने में ही हमारी माताएँ उसका उपकार समझती हैं। पर यह गलत धारणा है। ऐसा करने से बच्चे के सारे शरीर में गर्मी की वजह से लाल दाने निकल आते हैं। इसलिये हल्के कपड़े ही जो बच्चों को गर्म रख सकें पर्याप्त हैं।

पहले चार पाँच दिन बच्चे को घर से बाहर निकालना ठीक नहीं। लेकिन अगर बच्चा स्वस्थ है तो दूसरे ही दिन से खुली हवा में रखना कोई हानि-कारक नहीं।

मल-मूत्र त्याग—

जन्म लेने के बाद ही बच्चा पेशाब करना शुरू कर देता है, अगर किसी कारण से पेशाब न हो तो पानी उबाल कर और फिर ठंढा कर उसे पिलाना शुरू कर देना चाहिए।

प्रथम तीन दिन बच्चे का मल गहरे हरे रंग का होता है और मेकोनियम कहलाता है। इसके बाद दूध का पचा भाग आना शुरू होता है। इसका रंग पीला होता है। प्रत्येक २४ घण्टे में ऐसे तीन से चार तक पाखाने होते हैं। अगर मल त्याग अधिक होने लगे और कभी-कभी उसके साथ उल्टी हो और बच्चे में अस्त व्यस्तता देखी जाय तो दूध पिलाना कम कर देना चाहिए, क्योंकि यह ज्यादे दूध पिलाने से ही होता है। इस सिलसिले में यह भी कह देना जरूरी है कि माताएँ अगर कोशिश करें तो अभी से बच्चे को दूध पिलाने के बाद मल त्याग करना सिखला सकती हैं।

नींद—

एक स्वस्थ नवजात बालक के प्रथम सप्ताह तो खाने और सोने में ही बीतना चाहिए। उसके लिये २४ घण्टों में २० घण्टा सोना आवश्यक है और बच्चा जागने का समय ठीक दूध पीने के समय निर्धारित करता है।

वजन—

औसतन बच्चा जन्म के समय ६ पौंड का होता है। अगर उसका वजन साढ़े पाँच पौंड से कम हो तो उसकी हालत नाजुक समझनी चाहिए और ऐसी स्थिति में उसे किसी अस्पताल में भर्ती कराना जरूरी है। प्रथम तीन दिनों में माता का दूध क्लोस्ट्रम कहलाता है और बच्चा जब तक उसे पीकर रहता है वजन में घटता जाता है। लेकिन फिर माता के स्तन में जब दूध पूर्ण रूप से आने लगता है तो उसे पी बच्चा फिर वजन में बढ़ने लगता है। बच्चे का वजन में बढ़ना उसके स्वस्थ होने का प्रतीक है। अगर वह वजन में नहीं बढ़ता तो किसी कुशल डाक्टर से राय लेनी चाहिए।

दूध पिलाना—

देहातों में अनजान माताएँ गाय और बकरियों के दूध को बच्चे के योग्य समझ कर उसे ही पिलाती हैं। पर उसकी कमजोर अंतड़ियाँ ऐसे दूध के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपयुक्त मशीन नहीं और इसलिये ऐसे दूध नहीं देने चाहिए। प्रथम दो दिनों में प्रत्येक छः घण्टे पर बच्चे को तीन मिनट के लिये फेर बदल कर स्तन से दूध पिलाना चाहिए। अगर दूध आना अभी ठीक से शुरू नहीं हुआ हो तो ग्लूकोज को पानी में घोल कर दिया जा सकता है।

तीसरे दिन जब माता के स्तन में पूरा दूध आना शुरू हो जाता है, तब उन्हें चाहिए कि बच्चे को प्रत्येक तीन घन्टे पर दूध पिलायें। बच्चे को सिखलाया जा सकता है कि उसे रात को दूध पीने की आवश्यकता नहीं पड़े और दूध पीने का समय भी निर्धारित किया जा सकता है। प्रत्येक बार बच्चे को २० मिनट से अधिक दूध नहीं पिलाना चाहिए और उसके साथ एक ही स्तन का प्रयोग एक बार में करना लाभदायक है।

जन्म के समय बच्चे केवल एक औंस मात्र दूध पी सकते हैं। एक सप्ताह के अन्त में प्रत्येक दूध पिलाने के समय बच्चा ढाई औंस दूध पी जाता है, लेकिन इसके लिये कोई खास कानून नहीं। दूध पिलाना बच्चे के स्वास्थ्य और उसकी भूख पर अवलम्बित है प्रथम कुछ महीनों तक बच्चे को अपनी माँ के दूध से कभी वञ्चित नहीं करना चाहिए और शुरू के प्रथम महीने में तो चालानी दूध भी देना ठीक नहीं। इसका प्रयोग तभी करना चाहिए जब माता का दूध किसी कारण से नहीं मिल सके। ऐसी परिस्थिति में हम या तो चालानी दूधों का प्रयोग कर सकते हैं या उससे अच्छा गाय के दूध में कुछ फेर बदल कर पिलाना होगा।

इससे गाय के दूध को हम माता के दूध के समान बनाने की कोशिश करते हैं। माता के दूध में प्रधान-तया—

प्रोटीन—	१२ प्रतिशत
कारवोहाइड्रेट—	६ ”
फैट—	४ ”
नमक और अन्य—	०·२ ”

चञ्चल नारी

देखा उसको इन आँखों से
दिखी कुरूपा कानी;
देखा फिर निज प्रेम-नयन से
दिखी स्वरूपा रानी!
बाँधा उसको बाहु-बंध में
बँधी न चञ्चल नारी;
बाँधा फिर निज प्रेम-पाश में
बँधी तुरत सुकुमारी!!

('कुटज' से)

ये पदार्थ बच्चे के लिये हितकारी हैं और इनके लिये जरूरी और कुछ नहीं चाहिए।

गाय के दूध में निम्नलिखित चीजें हैं:—

प्रोटीन—	४ प्रतिशत
कारवोहाइड्रेट—	४ ”
फैट—	४ ”
नमक और अन्य—	०·६ ”

अब माता और गाय के दूधों में फर्क आसानी से समझा जा सकता है और इसे माता के दूध के करीब लाने के लिये हम आधा पाइन्ट दूध में आधा पाइन्ट पानी मिलाते हैं और फिर ऊपर से एक चौथाई औंस मक्खन और तीन चौथाई औंस चीनी डालते हैं या इसी तरह औसतन प्रत्येक चीज डालकर माता के दूध के समान दूध तैयार कर सकते हैं पर इसके साथ दूध देने की मात्रा भी निर्धारित करना आवश्यक है और उसके लिये छान-बीन कर पता लगाया गया है कि पहले सात दिन में भर दिन २ औंस प्रति पौंड बच्चे के वजन के अनुसार दिया जा सकता है और दूसरे सप्ताह में ३ औंस प्रति पौंड। यानी अगर बच्चा ६ पौंड का है तो उसे भर दिन में १ औंस दूध दिया जायेगा जो थोड़ी-थोड़ी मात्रा में तीन घण्टे पर दिया जाना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अँग्रेजी से अनुवादित
दुखान्त कहानी

क्षणिक सुख

अनुवादक, स्वामीनाथ श्रीवास्तव 'स्वतन्त्र'

हम सभी उसे जानते हैं। कोई यह बात नहीं है कि उसके चेहरे पर दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करने वाला कोई गुण मौजूद है। सभी का ध्यान उसकी ओर चला जाता है। हम सभी उसे इसी प्रकार जानते हैं, जैसे किसी पत्थर की मूर्त्ति को। किसी वृक्ष या किसी बागीचे में स्थित किसी वस्तु या संसार में नित्य एक ही प्रकार की दिखाई देने वाली कोई अन्य वस्तु के समान ही, हम सभी उसे जानते हैं। रेस्ट्रां के गेट के पास वह नित्य खड़ा दिखाई पड़ता है। अपना दाहिना हाथ फैलाये हुए भिक्षा मांगने के लिये वह हर दिन खड़ा दिखाई देता है।

उसका नाम है भोला। हर किसी को उसका नाम मालूम है। मगर किसी को यह नहीं मालूम कि उसने उसके इस नाम को कैसे जाना। न तो भोला ने कभी किसी को अपना नाम बताया, न किसी ने आज तक उससे उसका नाम पूछा। फिर भी उसे भोला कह कर ही पुकारा जाता है। उसे देख कर कोई यह नहीं कह सकता कि वह सुन्दर नहीं है। कोई यह भी नहीं कह सकता कि वह काम-धाम करने लायक नहीं है। उसके घुँघराले बाल, उसकी बड़ी-बड़ी डाढ़ी, उसकी लम्बी नाक, उसके मोटे लाल ओंठ और उसकी मूँछें—इन सबको देख कर उसे असुन्दर नहीं कहा जा सकता। अगर उसकी ओर कोई गौर से देखे तो कोई यह नहीं कह सकता कि वह स्थान जहाँ वह हर दिन खड़ा रहता है उस के लिये उपयुक्त है। उसकी पोशाक भी उसके जैसे व्यक्ति के साथ अन्याय करती है।

शनिवार के शाम की बात है। रेस्ट्रां में एक से एक लोग बैठे थे। संगीत की ध्वनि खिड़की से होकर बाहर आ रही थी। ध्वनि बहुत क्षीण थी। संगीत की ध्वनि वातावरण में विलीन हो जाती। संगीत समाप्त नहीं हो रहा था। भोला वहीं अपने स्थान पर चिथड़े लपेटे हुए खड़ा था। आकाश पर थोड़े से बादल छाये हुए थे। रिमझिम वर्षा भी हो रही थी। वातावरण में नमी थी। पानी पड़ने के कारण भोला के बाल इधर-उधर फैल गये थे। उस के चेहरे पर सन्नाहट थी। उसकी आँखें अधखुली थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक नवयुवक बहुत अच्छी पोशाक पहिने, रेस्ट्रां के बाहर निकला। उसके साथ एक युवती भी थी। रेस्ट्रां के गेट के पास एक टैक्सी आकर खड़ी हो गयी। नवयुवक ने उस युवती को टैक्सी पर बैठने में सहायता दी। इतने में ही नवयुवक की आँखें पत्थर की मूर्ति के समान खड़े हुए भोला के शरीर पर लगी। वह भोला की तरफ जाने लगा। नवयुवक के पीछे टैक्सी भी धीरे-धीरे चलने लगी। गैस लैम्प की पोस्ट से कुछ गजों की दूरी पर सड़क के किनारे टैक्सी आकर खड़ी हो गई।

युवक भिखारी के सामने आकर खड़ा हो गया। कुछ देर तक भिखारी की ओर गौर से देखने के बाद उसने पूछा :—

'क्यों, तुम भीख क्यों मांगते हो ?'

भोला इस प्रकार के प्रश्न के लिये तैयार न था, इस प्रश्न के तत्काल उत्तर देने के लिये वह तैयार न था। ऐसा सम्भव भी नहीं था। अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से वह युवक की ओर एक टक देखता रहा। युवक जीवन से पूर्ण था। इसके पहले भोला ने कभी भी अपने सामने किसी ऐसे व्यक्ति को खड़ा हुआ नहीं देखा था जो जीवन से इतना अधिक पूर्ण रहा हो। उसे कुछ-कुछ अजीब-सा लगा। उसने अनुभव किया कि अन्य व्यक्तियों की भांति वह भी एक मनुष्य है। उसने यह भी अनुभव किया कि नवयुवक की मौजूदगी ने उसके जीवन की सोती हुई शक्ति को फिर से जगा दिया। उसमें नवशक्ति का सञ्चार होने लगा।

युवक ने पुनः प्रश्न किया—'तुम भीख क्यों मांगते हो ?'

भोला ने लड़खड़ाती आवाज में उत्तर दिया—'मैं...! मैं जीवित रहने के लिये भीख मांगता हूँ।'

'क्या तुम इससे अच्छा जीवन नहीं अपना सकते ? क्या तुम किसी अन्य पेशे को नहीं चुन सकते ?'

'मेरे भाग्य ने मुझे भिखमंगा बनाया है। इससे अच्छे जीवन की तो आज तक मैंने कभी कल्पना भी नहीं की।'

'क्या तुम भर पेट भोजन कर सकने के लिये दिन भर में पैसे प्राप्त कर लेते हो ?'

'जी हाँ, सभी मुझे बड़े दयालु लगते हैं। मुझे खाने के लिये नित्य कुछ न कुछ मिल ही जाता है।'

'तुम्हें यह कैसे मालूम कि सभी लोग बड़े दयालु हैं ?'

'इसके विपरीत मैं कुछ और सोच भी नहीं सकता। मैं जानता हूँ कि प्रेम ही सहानिभूति की जननी है।'

युवक ने उसकी ओर प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखा।

भोला ने फिर कहा—'यह स्थान प्रेमी-प्रेमिकाओं का स्थान है। यहाँ पर प्रति दिन वे शाम को इसी रेस्ट्रां में आते हैं।'

युवक ने मुस्करा कर कहा—'क्या तुम इससे अच्छा जीवन व्यतीत करना चाहोगे, अगर ऐसा सम्भव कर दिया जाय। मैं तुम्हारी कुछ सहायता करना चाहता हूँ।'

भोला किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। उससे ठीक से सोचते नहीं बन रहा था। इससे बेहतर जिन्दगी! इससे अमीरी का जीवन! एक बेहतर जिन्दगी की कल्पना उसने कभी नहीं की थी। उसने सपने में भी कभी यह नहीं सोचा था कि एक बेहतर जिन्दगी उसे कभी मिल सकेगी। वह नहीं समझ पा रहा था कि जो जिन्दगी वह बिता रहा था उससे भी बेहतर जिन्दगी हो सकती है। उसे बहुत अजीब-सा लगा।

युवक ने फिर पूछा—'हाँ, बताओ।'

भोला चुप रहा। युवक ने अपनी कोट की जेब से मनीबैग निकाला। उसमें से दो नोट निकाल कर भिखारी के खुले हुए हाथों में रखते हुए कहा—'इसे लो और एक नयी जिन्दगी, एक बेहतर जिन्दगी गुजारने की कोशिश करो।'

इतना कह कर युवक अपनी टैक्सी में बैठ गया, टैक्सी चल पड़ी। शाम के अन्धेरे में टैक्सी विलीन हो गयी। टैक्सी के पीछे लगे हुए बिजली के बल्ब की रोशनी को भोला देर तक निहारता रहा। कुछ देर तक के लिये उसे ऐसा लगा कि जैसे वह किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वप्न की दुनियां में पहुँच गया हो। उसने अपने हाथ में रखे नोटों की ओर देखा। उस समय पूरे दो सौ रुपये उसके अधिकार में थे।

भोला के हृदय को बड़ा धक्का लगा। धक्के का प्रभाव दूर हो चुकने पर उसे लगा, उसके लिये सब कुछ बदल गया था। रेस्ट्रां, पार्क, पार्क की मूर्तियाँ, अच्छे-अच्छे पेड़, जगमगाती सड़क, गैस लैम्प की पोस्ट और उसकी हरी रोशनी, करीब-करीब हर वस्तु उसके लिये बदल गई थी। वास्तव में उसकी दृष्टि जिस किसी भी वस्तु के ऊपर पड़ती वही बदली हुई दिखाई देती। उन सभी वस्तुओं से अपनी भिन्नता का उसे अनुभव होने लगा। उसने ऐसा अनुभव किया कि वह इस संसार का स्वामी है। इस संसार में जो कुछ जीवित है, सब उसी के लिये हैं। यह संसार उसका अपना संसार है। अन्य वस्तुओं से वह नितान्त भिन्न है।

दूर की घड़ी में दस का घंटा बजा। वह अपनी सोती हुई अवस्था से जग उठा। सड़क खाली थी। भोला अकेला था। उसने अनुभव किया कि उसके जीवन में गति आ गयी है।

[२]

दूसरे दिन भोला उसी रेस्ट्रां में आया। आज उसकी हुलिया बिलकुल बदली हुई थी। उसके बाल सावधानी से, फैशनेबुल ढङ्ग से कढ़े हुए थे। उसकी डाढ़ी बिलकुल साफ थी। उसका मुख मण्डल चमक रहा था। वह एक बिलकुल नया सूट पहने हुए था, सूट उसके शरीर पर बिलकुल फिट बैठता था। आज वह एक बिलकुल बदला हुआ आदमी दिखाई दे रहा था। लैम्प पोस्ट के नीचे भिक्षा मांगने के लिये खड़े हुए कल के भोला और आज के भोला में जमीन आसमान का अन्तर था। ऐसा प्रतीत होने लगा मानों भूतकाल की परिस्थितियों से उसका कोई सम्बन्ध नहीं था। मानों वर्तमान से ही उसका निर्माण हुआ है। रेस्ट्रां में आज भी कई लोग बैठे हुए थे। भोला का ठाट-बाट रेस्ट्रां के अन्य लोगों के ठाट-बाट से किसी प्रकार कम नहीं था।

रेस्ट्रां के हाल में एक कोने पर भोजन के लिये रखे टेबुल के पास वह बैठा हुआ था। सारा हाल भरा हुआ था। जिस कुर्सी पर वह बैठा था उसके सामने वाली कुर्सी खाली थी। वह चारों ओर देख रहा था। गौर से देखते हुए वह अपनी दृष्टि चारों ओर दौड़ा रहा था। जैसे उसकी आँखों को किसी विशेष व्यक्ति की तलाश थी। सभी व्यक्तियों में उसे भिन्न-भिन्न गुण दिखाई दे रहे थे। रेस्ट्रां में बैठे हुए सभी लोगों में उसकी भी एक संख्या थी। लेकिन वह औरों से कितना भिन्न था। यह भिन्नता उसे खटक रही थी। भोला के मस्तिष्क में यही एक चिन्ता विद्यमान थी। तभी उसकी आँखें रेस्ट्रां के द्वार पर जा लगीं। एक नवयुवती रेस्ट्रां में प्रवेश कर रही थी। भोला ने उसे तत्काल पहचान लिया। यह कल शाम वाली युवती थी। कोई और कुर्सी खाली न होने के कारण युवती भोला के सामने वाली खाली कुर्सी के पास आयी। भोला उठ कर खड़ा हो गया। उसने हाथ से इशारा करते हुए युवती से उसी खाली कुर्सी पर बैठने के लिये कहा।

युवती मुस्कराहट के साथ कुर्सी पर बैठ गयी। भोला ने विनम्र भाव से पूछा—

'क्या मैं आपके लिये कुछ...?'

'ओह! आप कष्ट न कीजिये।'

'क्या आप किसी की प्रतीक्षा में थीं?'

'नहीं, मैं नित्य शाम को यहाँ अकेली आती हूँ।'

इतने में बेयरा एक ट्रे में मेनू रख कर ले आया। भोला ने मेनू उठा लिया और युवती को देते हुए कहा—

'कृपया, देखिये, क्या मँगाइयेगा?'

युवती ने मुस्कुराहट के साथ अपनी ब्लाउज में खोंसे हुए फाउन्टेनपेन को निकाला। थोड़ा झुक कर उसने मेनू के कुछ अकों पर निशान लगाया। भोला अपनी दृष्टि युवती के झुके हुए शरीर पर लगाये था। बेयरा चला गया। युवती ने भोला की ओर देखा। अपने लाल होठों पर मुस्कुराहट लाते हुए उसने पूछा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मैंने आपको इस रेस्ट्रां में कभी नहीं देखा।'

'मैं बम्बई से आया हूँ। यहाँ के लिये नया आदमी हूँ।'

'बम्बई से ?' युवती ने पूछा।

'हाँ!' भोला ने उत्तर दिया—'मैं यहाँ बिजनेस के सिलसिले से आया हूँ'

'ओह! बिजनेस के सिलसिले में। तब तो आप कहीं भी अधिक नहीं ठहरते होंगे। यहाँ से वहाँ, वहाँ से यहाँ।'

'हाँ, मगर अबकी बार मुझे कलकत्ते एक माह ठहरना पड़ेगा।'

'मुझे यह सुन कर खुशी है। तब तो हम और आप अभी कई बार मिल सकते हैं।'

'हाँ-हाँ, अवश्य। क्या आप रोज यहाँ आती हैं।'

'जी हाँ, मैं यहाँ रोज शाम को आती हूँ। शाम की शूटिंग खतम हो जाने के बाद, यहाँ मैं स्टुडियो में दिन भर काम करने के कारण उत्पन्न हुए थकान को दूर करने के लिये यहाँ चली आती हूँ।'

'अच्छा तो आप कलाकार हैं ?'

'जी हाँ, यदि आप समझें।'

बेयरा ट्रे में चाय दे गया। चाय के साथ और प्लेट में कुछ और सामान दे गया। इसके बाद उस ने झुक कर सलाम किया और चला गया। रात के नौ बजे थे। भीड़ धीरे-धीरे छँट रही थी। युवती ने चाय कप में डाल कर उसे भोला के सामने रख दिया। उन दोनों में भिन्न-भिन्न विषयों पर बात-चीत होने लगी। भोला ने बहुत चालाकी से उस युवती के सामने अपने व्यक्तित्व का एक सुन्दर चित्र खींच दिया। बेयरा बिल लेकर आया। भोला ने बिल अदा कर दिया। यकायक युवती ने बेचैनी का अनुभव किया। एक ठण्डी सांस भर कर उसने कहा—'ओह!'

'क्यों क्या हुआ ?' भोला ने पूछा।

'कुछ नहीं, कुछ नहीं।' युवती ने कहा।

'लेकिन आप कुछ परेशान-सी नज़र आ रही हैं।'

'कुछ नहीं, मैं अपना मनीबेग भूल गई हूँ।'

'यदि आप बुरा न मानें तो मैं आपको कुछ रुपये उधार दे दूँ।'

'धन्ययाद, आप चिन्तित न होइये।'

इतना कह कर युवती उठ खड़ी हुई। भोला उस के पीछे-पीछे चला। दोनों रेस्ट्रां के बाहर निकले। भोला ने एक टैक्सी बुलाया और युवती से बोला—'अगर आप बुरा न मानें तो मैं आपको टैक्सी पर बैठा दूं।'

लेकिन, आप मेरी खातिर इतनी तकलीफ क्यों कर रहे हैं ?'

'खैर, कोई बात नहीं, आप किधर जाइयेगा।'

'उत्तर की ओर बने पक्के मकानों की तरफ।'

'मुझे भी उसी ओर जाना है।'

इतना कह कर भोला ने हाथ के सहारे युवती को टैक्सी पर बैठा दिया। भोला फिर स्वयम् टैक्सी पर बैठ गया।

एक झटके के साथ टैक्सी चल पड़ी। सड़क पर धीमी रोशनी थी। टैक्सी तेजी के साथ भागने लगी भोला अपने जीवन में कभी भी ऐसी परिस्थिति में नहीं रहा। वह इसके पहले कभी भी किसी ऐसी युवती के साथ नहीं रहा जिसके भूतकाल के बारे में उसे कोई जानकारी न थी। बल्कि ऐसी परिस्थिति के विषय में उसे कभी कोई अभिरुचि भी न थी। उसे पहली बार इस वर्तमान परिस्थिति में ही अपने को समझने का मौका मिला। युवती के चेहरे के पाउडर की मीठी सुगन्ध उसके नासिका में प्रवेश करने लगी।

युवती ने ड्राइवर को एक विशेष पता बताया। लगभग १५ मिनटों में टैक्सी एक बिल्डिङ्ग के नीचे आकर रुक गई। युवती टैक्सी पर से उतर गई। उसने कहा—'क्या आप मेरे साथ नहीं आइयेगा ?'

भोला ने कहा—'इस समय काफी देर हो गयी है।'

'क्यों ? केवल दस ही तो बजे हैं। मेरे लिये तो अभी दिन केवल समाप्त हुआ है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सच कह रही हैं आप ?' भोला ने कहा।

'जी हाँ, मैं आपको अधिक देर तक नहीं रोकूँगी। अगर आप बुरा न मानें तो एक कप चाय मेरे कमरे में और पी लीजिये।'

'लेकिन ?'

युवती मुस्करा पड़ी। उसने कहा—'हम लोग भूल जाते हैं कि आप लोग हमारी तरह बिलकुल आजाद नहीं रहते। शायद आपके पास एक परिवार होगा, शायद आपकी पत्नी होगी···। मेरा तो अपना कोई नहीं है। मुझे तो पूर्ण रूप से अपने हर काम के सम्बन्ध में स्वतन्त्रता है।'

भोला टैक्सी से उतर पड़ा। टैक्सी ड्राइवर को उसने रुपये दे दिये। युवती ने फिर कहना आरम्भ किया—'मुझ पर अपने जीवन का पूर्ण उत्तरदायित्व है। मैं जिस प्रकार का जीवन बिताना चाहूँ बिताती हूँ। प्रत्येक दिन मेरे जीवन का निर्माण होता है। नित्य मेरे लिये एक नवीन संसार का सृजन होता है।'

[३]

इस अपरिचित युवती के शब्द भोला के लिये आश्चर्य-जनक नहीं लगे। जीवन में पहली बार उसे अपनी आजादी मिली थी। उसने अनुभव किया कि न तो किसी शक्ति ने और न उसके भाग्य ने उसे भिखारी बनाया था। उसने यह भी अनुभव किया कि अपने पिछले जीवन के लिये वह स्वयम् ही उत्तरदायी था और अब अपने भविष्य के लिये भी वह स्वयम् ही उत्तरदायी है। उसने अपने को इसके पहले कभी बनाने का प्रयत्न नहीं किया। अभी तक वह बिलकुल गति-हीन रहा, संसार की अन्य गतिहीन वस्तुओं की भांति। अभी तक वह एक ऐसे संसार की चहार दीवारी के अन्दर बन्द था जिसे उसने स्वयम् बनाया था। परन्तु आज वह सचमुच एक आदमी की तरह रहना चाहता था। हमेशा चलते हुए और हमेशा आगे बढ़ते हुए, अपने से भी आगे।

दोनों उस बिल्डिङ्ग के अन्दर गये। लिफ्ट पर खड़े होकर वे ऊपर की चौथी मंजिल पर पहुँचे। युवती लिफ्ट से बाहर निकली। भोला भी उसके पीछे-पीछे चला। युवती एक कमरे के द्वार पर रुकी। अपनी बैग से उसने एक कुञ्जी निकाली और दरवाजा खोला। कमरा बिलकुल अन्धेरा था।

'जरा एक मिनट ठहरिये।' युवती ने कहा—इतना कह कर युवती अन्दर घुसी। उसने बिजली का स्विच दबाया। कमरा प्रकाशमय हो गया। युवती ने कहा—'अन्दर आइये। इस समय यही मेरी दुनियां है।'

भोला ने चारों ओर देखा। कमरा साधारण था। वह अच्छी वस्तुओं से सजा था। युवती ने भोला की ओर देखते हुए कहा—'कृपया यहाँ आराम कीजिये। मैं अभी एक मिनट में आयी।'

इतना कह कर युवती दाहिनी तरफ के एक छोटे कमरे में चली गयी।

[४]

भोला एक युवती के कमरे में अकेला था। उसे गर्मी लग रही थी। उसने अपना कोट उतारा, उसे कुर्सी के पीछे टांग दिया। एक आराम कुर्सी पर वह चैन के साथ लेट गया। कल से आज तक उसके जीवन में जो परिवर्तन हुआ था उस पर वह सोच-विचार करने लगा।

कमरा बिलकुल सुनसान था। सिर्फ घड़ी की टिकटिक की आवाज हो रही थी। भोला की दृष्टि घड़ी पर पड़ी। घड़ी को वह देर तक देखता रहा।

भोला विचारों में डूबा हुआ था। तभी दरवाजे के मुड़ने की आवाज हुई। युवती अन्दर आते हुए दिखाई दी। युवती के हाथ में ट्रे थी जिस पर चाय की दो प्यालियाँ रखी थीं।

युवती इस बार दूसरे पोशाक में थी। नवीन सुन्दर वस्त्रों के ऊपर उसने काले रंग का एक ढीला-ढाला गाउन पहन रखा था। उसके पीछे की तेज रोशनी से वह जगमगा रही थी। उसके शरीर का प्रत्येक भाग भोला को प्रकाश में दिखाई दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोला की आँखें युवती की आँखों से मिल गयीं। युवती भोला की ओर गौर से देख रही थी। युवती के इस प्रकार गौर से देखने से भोला कुछ परेशान हुआ। युवती आराम कुर्सी के पास पहुँची। पास के छोटे टेबुल पर उसने चाय की ट्रे रख दी। बगल की कुर्सी पर युवती भी भोला के पास बैठ गई। भोला ने एक प्याली उठाई और एक घूँट गरम चाय पी। परन्तु उसे कोई मजा न आया। युवती भोला की ओर उसी मुस्कुराहट से देख रही थी जैसे पहले।

युवती के देर तक उसकी ओर गौर से देखते रहने के कारण भोला को कुछ कष्ट हुआ। उसे लगा जैसे वह स्वयम् पत्थर की एक मूर्ति बन गया हो। सारे कमरे का चेहरा बदल गया। कुछ मिनट पहले कमरा ही भोला के लिये अपना एक संसार था। इसमें और कोई व्यक्ति नहीं था। परन्तु अब भोला को लगा जैसे कमरे पर से उसका अधिकार किसी दूसरे के हाथ में चला गया हो। कमरे की प्रत्येक वस्तु पर उस युवती के व्यक्तित्व की छाप दिखाई दे रही थी। उसने अनुभव किया कि स्वयम् उसके व्यक्तित्व पर युवती के व्यक्तित्व की विजय होती जा रही थी। ऐसा लगा कि जैसे कमरे की अनेक वस्तुओं में वह भी एक हो गया हो। उसे लगा कि कल शाम से वह सचमुच एक मनुष्य बन गया है। जागृत और गतिवान। युवती की गौर से देखने वाली आँखों के सामने उसने अपना होश भी खो दिया। अब भोला के लिये परिस्थिति के प्रभाव को और अधिक सह सकना कठिन था। घृणा की भावना से उसका हृदय भर गया। उसने सोचा कि उसे इस प्रकार अपने को लुटने न देना चाहिए। उसने सोचा कि उसे अन्य वस्तुओं की भाँति मनुष्य से पदार्थ न बन जाना चाहिए।

[५]

दोनों ने अपनी चाय समाप्त की। युवती उठी और चाय की दोनों प्यालियों को उठा कर फिर दूसरे कमरे में चली गई। शीघ्र ही वह लौटी। अपनी आँखों में वही तीक्ष्णता लिये हुए। उसके ओठों पर वही मुस्कुराहट मानों कह रही थी—'मैंने तुम्हें अपने वश में कर लिया है।' वह भोला के पास पहुँची। एक सेकेण्ड रुक कर उसने कहा—'क्या आप थके हुए नहीं हैं?'

भोला से उत्तर देते न बना।

'मैं तो हद से ज्यादा थक गयी हूँ।' इतना कह कर युवती मुस्कुराई।

भोला उठ खड़ा हुआ, जाने के लिये नहीं। क्योंकि वह इस बात को तो भूल ही गया था कि काफी देर हो चुकी थी। युवती अपने सिर के नीचे अपनी बांहों को रख कर अपनी चारपाई पर लेट गयी।

भोला ने अनुभव किया कि वह अन्धा होता जा रहा है। उसे कुछ नहीं दिखाई दिया। उसकी आँखों के सामने हर एक वस्तु धुँधली दिखाई दे रही थी। उसका सिर चकराने लगा। उसे चारों ओर सभी वस्तु घूमती हुई दिखाई देने लगी। युवती की आँखें अब भी भोला की ओर गौर से देख रही थीं। भोला से खड़ा नहीं रहा गया। वह कमरे से भाग गया, मानों मृत्यु उसका पीछा कर रही हो।

भोला भागता हुआ अपनी कोठरी में पहुँचा। उसकी स्थिति ऐसी थी जैसे किसी भूत के डर से भयभीत मनुष्य की होती है। वह कांप रहा था। अपने भय के कारण वह अपना कोट भूल गया था। अब उसके पास एक भी पैसा न था। उसके सब पैसे—आखिरी पाई तक—कोट की जेब में थे। उसकी हिम्मत नहीं हुई कि उन्हें लेने के लिये वह युवती के निवास-स्थान पर फिर से जाय। कई दिनों तक वह अपने कमरे में ही बन्द रहा। उसकी डाढ़ी बढ़ आयी। उसने अपने दो दिनों के जीवन के बारे में सोचा। उसने अपने से बार-बार वही प्रश्न किये। अब क्यों वह अपने कमरे में पड़ा रहे? किसी अन्य स्थान को क्यों न चला जाय? परन्तु उसके पास अपने से ही पूछे गये प्रश्नों का उत्तर नहीं था। जीवन के क्षणिक सुख का उसने अनुभव कर लिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। उसने दूसरों के साथ में रहने का अनुभव कर लिया था। दूसरों के साथ में क्या खतरा है, इस का भी उसे ज्ञान हो गया था। उसे दूसरे की मौजूदगी में लुट जाने का अनुभव भी हो गया था। जीवन की तीव्र गति का कारण भी उसे ज्ञात हो गया था। इतनी तीव्रता से दौड़ने के बाद जीवन को मृत्यु की प्राप्ति हो जाती है—वही मृत्यु जो सभी शुरू की गई बातों का अन्त हुआ करता है। उसने जीवन के कटु से कटु अनुभव प्राप्त कर लिये थे।

[६]

कई दिन बीत चुके थे। एक दिन शाम को रेस्ट्राँ में जाने वाले लोगों ने भोला को फिर अपने उसी पुराने स्थान पर खड़े होकर भीख मांगते पाया। भोला उसी तरह खड़ा पाया गया जैसे वह पहले खड़ा रहता था। उसके शरीर पर उसी प्रकार के कपड़े या चिथड़े दिखाई दे रहे थे जैसे पहले। वह बिलकुल गति शून्य होकर खड़ा था। अपने में ही समेटा हुआ रेस्ट्राँ में जाने वाले लोगों में से कई उसके नजदीक गये, कइयों ने उसे गौर से देखा। परन्तु उनके गौर से देखने का प्रभाव भोला के ऊपर कुछ भी न पड़ा। भोला की आँखें उनकी आँखों को देख रही थीं परन्तु स्वयम् उसकी आँखों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा था।

राह चलन्तुओं में से एक ने भोला के भीख मांगने के लिये फैले हुए हाथ पर एक पैसा रख दिया। भोला को अपना वह वाक्य याद आया जो वह हर एक भीख देने वाले से कहा करता था, जो वह अपने मुँह से हजारों बार निकाल चुका था—'भगवान तुम्हारा भला करे।' भोला के मुँह से आज यह वाक्य नहीं निकला।

इसके बदले में भरे आँसुओं की दो चमकती हुई धाराएँ उसके गालों पर से बह चलीं। किसी ने भी उन धाराओं को नहीं देखा।

—

कागजी गुलदस्ता

हे पत्र पुष्पो! अम्लान तेज से विभूषित होने पर भी आज मैं तुम्हें फेंक रही हूँ। यह गुच्छ, यह मनोहर माला तथा यह झूमती हुई बेलें! इन हरित पीत और रक्त वर्णों में कितना तेज है! किन्तु यह तेज, यह तो रंगों का है, स्वाभाविक कहाँ?

शहर की संकुचित उच्च अट्टालिकाओं में वास करने वाला बेचारा मानव फल-फूलों से अपने घर को कैसे सुशोभित कर सकता है। जहाँ 'तुलसी' द्वारा अपने गृह को पवित्र करने के लिये भी स्थान नहीं, वहाँ सुगन्धित पुष्पों की अभिलाषा का तो कहना ही क्या! वह तो तुम्हारे ही द्वारा मन को शांति प्रदान करता है। मैं भी तो उन्हीं हत भागियों में से एक हूँ। इसीलिये मेरे सौंदर्य-प्रेम ने तुम्हें यहाँ लाकर बड़े कौतुक से तुम्हारा पालन-पोषण किया था।

तुम्हारी शान लज्जावन्ती की तरह हाथ लगाते ही नष्ट होने वाली नहीं, न रङ्ग ही इतनी जल्दी बेरङ्ग होते हैं। किन्तु आज वास्तविक सौंदर्य को समझ कर तुम्हें मुझे उपेक्षा से फेंकना ही पड़ेगा।

उन्मुक्त स्वच्छ वायु में लहराते हुए दो पुष्प मन को आकर्षित करते हैं, किन्तु उनका सौंदर्य शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। यद्यपि यह मालिन्य तुम्हें नहीं ग्रसता, किन्तु तुम तो जन्म से ही मलीन हो।

यदि तुम्हें इत्र में डुबो दूँ, तो भी क्या तुम्हारे ऊपर भ्रमर मँडरा सकते हैं। यदि तुम पर मधु भी छिटक दूँ, तब भी क्या मधु के प्यासे मधुप तुम पर लालायित हो सकेंगे? और यदि क्षण भर को बैठ भी जायें तो भी क्या तुम उन्हें अपने पखों पर वहन करने के लिये वह पुष्प-रज दे सकोगे? नहीं, जिसके पास कुछ भी देय नहीं, वह कला भी व्यर्थ है।

इसीलिये हे पुष्प-गुच्छ! मैं तुम्हें—जिसे मैंने आज तक सम्भाल कर रखा, जिस पर गिरने वाले प्रत्येक बालु-कण को बड़ी सावधानी से उड़ाया करती थी—आज उपेक्षा से, तिरस्कार से फेंक रही हूँ।

—कुमारी सुमन तारे, कोटा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

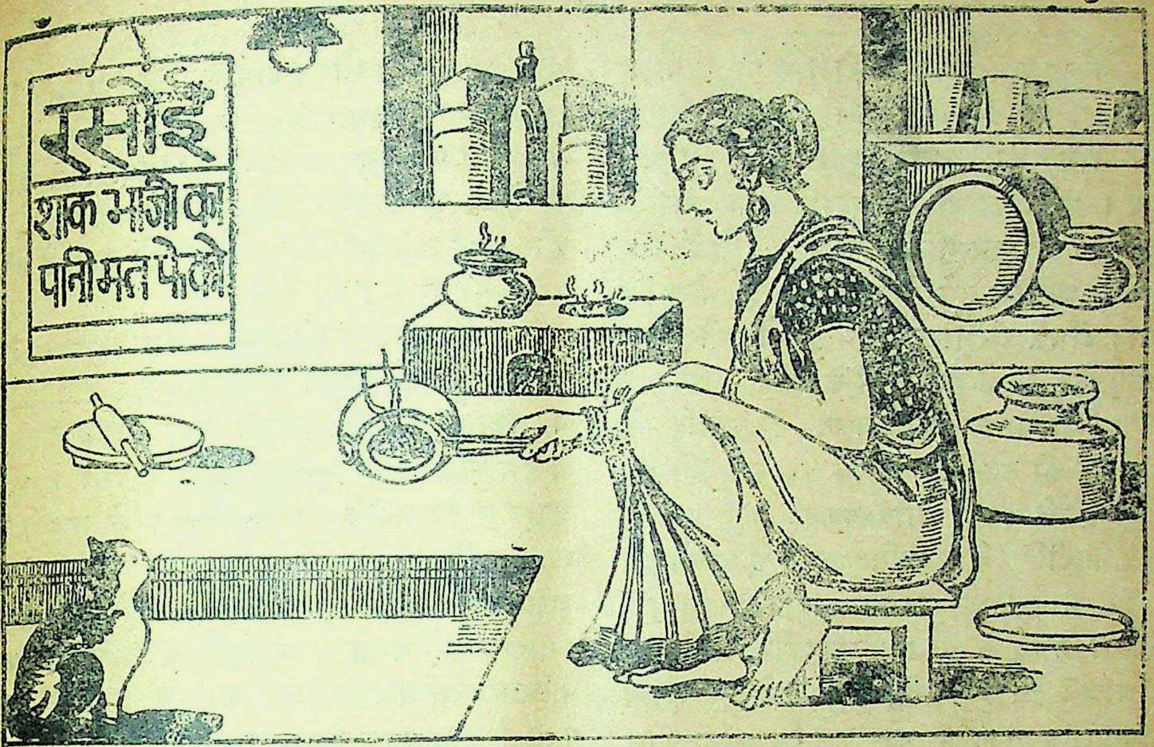

भोजन और स्वास्थ्य

लेखिका, श्रीमती शिवनयना मेहता

साधारण दृष्टिकोण से यदि देखा जाये तो सबको ही थोड़ा-बहुत भोजन बनाना आता है। परन्तु भोजन बनाना भी एक कला है और यह कला इतनी आसान नहीं है जितना प्रायः समझी जाती है। शरीर को स्वस्थ्य रखने के लिए और नाना प्रकार के रोगों से बचा रहने के लिये भोजन की ओर ध्यान देना परमावश्यक है। हमारा शरीर भिन्न-भिन्न उपकरणों से तैयार होता है—रक्त, मांस, हड्डी, चर्बी आदि सभी भिन्न-भिन्न तत्वों से बने हैं और यह सभी तत्व खाद्य पदार्थों में अलग-अलग परिमाण में पाये जाते हैं। जिस प्रकार रेल गाड़ी के इञ्जन को ईंधन की आवश्यकता पड़ती रहती है, उसी प्रकार शरीर को भी इन तत्वों की आवश्यकता रहती है—इञ्जन में ईंधन की खपत होती है और शरीर में इन तत्वों की। इस खपत से हुई कमी को पूरी करने और शरीर की उन्नति के लिए भोजन में इन तत्वों का होना अत्यन्त आवश्यक है। नीचे लिखे मुख्य तत्वों से हमारा शरीर बना है। कार्बन, हाइड्रोजन, फासफोरस, कैलसियस, गन्धक, नाइट्रोजन, क्लोरिन, आक्सीजन, सोडियम, पोटाशियम और मैगनिसियम आदि।

खाद्य पदार्थों का उपयोग इस प्रकार करना चाहिए, जिससे उनका उपयोगी भाग नष्ट न हो जाये। इसके लिए यह जानना आवश्यक है कि किस खाद्य-पदाथ में कौन-कौन से उपयोगी तत्व हैं और उन्हें किस प्रकार उपयोग में लाना चाहिए। वैसे तो पेट भरने के लिए केवल भात अथवा रोटी ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्याप्त है परन्तु केवल भात या रोटी में शरीर पोषण के सभी तत्व नहीं मिल सकते। इसलिए भात या रोटी के साथ दाल, सब्जी, दही आदि भी खाये जाते हैं। खाद्य पदार्थों में विटामिन का अंश भी होता है। विटामिन भी छः प्रकार के होते हैं और इन सबके अलग-अलग काम हैं। यदि भोजन में सब तत्व उचित परिमाण में न हों तो शरीर रोगी हो जाता है। बढ़ते हुए बच्चों के लिए नाइट्रोजन और चर्बी की अधिक आवश्यकता है क्योंकि यह उनके शरीर की उन्नति में अधिक सहायक होते हैं। बुढ़ापे में इनकी इतनी आवश्यकता नहीं रहती। जो लोग शारीरिक काम अधिक करते हैं उनको इन तत्वों की आवश्यकता अधिक होती है। दिमागी काम करने वालों के लिए हल्का और शीघ्र पचने वाला भोजन चाहिए। स्त्रियाँ पुरुषों से कम खाती हैं पर इसका शायद यह कारण है कि उनका काम पुरुषों से हल्का होता है। परन्तु जो माताएँ छोटे बच्चों को दूध पिलाती हैं उनको अधिक मात्रा में इन तत्वों की आवश्यकता पड़ती है।

पकाने से भोजन स्वादिष्ट सुपाच्य और रुचिकर हो जाता है और कीटाणु आदि सब नष्ट हो जाते हैं। सुस्वादु भोजन देख कर खाने वाले का मन प्रसन्न हो जाता है और वह बड़े प्रेम से पेट भर कर खाता है। इस प्रकार रुचि कर भोजन देख कर मुँह में काफी पानी-सा बन जाता है जिसकी सहायता से भोजन भली प्रकार पच जाता है। भोजन रुचि के अनुकूल न होने पर न तो खाने की इच्छा होती है और न ही पाचन शक्ति पर उसका अच्छा प्रभाव पड़ता है। भोजन के समय जो मानसिक अवस्था होती है उसका प्रभाव पाचन-शक्ति पर बहुत पड़ता है।

भोजन स्वादिष्ट तो अवश्य होना चाहिए परन्तु गरिष्ठ नहीं। आजकल स्वादिष्ट भोजन बनाने के लिए न जाने कितने प्रकार के मसाले डाले जाते हैं और खूब घी डाल-डाल कर भून-भून कर पकाते हैं। इस प्रकार पकाने से मुँह का स्वाद तो अवश्य पूरा हो जाता है पर शरीर की कमी पूरी नहीं होती और ऐसे भोजन को पचाने के लिए पाचन-शक्ति को भी दुगना काम करना पड़ता है। भोजन को तेज आँच पर कभी नहीं पकाना चाहिए। तेज आँच से भोजन का काफी उपयोगी अंश नष्ट हो जाता है और दूसरे तली हुई चीजें गरिष्ट हो जाती हैं और पचती देर में हैं।

उबले हुए खाद्य-पदार्थ अधिक सुपाच्य हैं। उबालने के लिये थोड़ा पानी डाल कर धीमी आँच पर पकाना चाहिए। पकाते समय बर्तन को ढक्कन से ढक देना चाहिए। ऐसा करने से उसमें से भाप बाहर न जा सकेगी। अधिक आँच से भाप पानी बन कर निकल जायगी। इस प्रकार उसमें काफी अंश विटामिन का नष्ट हो जाता है और भोजन स्वादिष्ट नहीं बनता। उबालते समय पदार्थों का पौष्टिक अंश जल में मिल जाता है इसलिए जिस पानी में कुछ खाद्य पदार्थ उबाला जाये उस पानी को फेंकना नहीं चाहिए। जिन साग भाजियों में अपने आप पानी निकलता है उनमें पानी नहीं डालना चाहिए। उन्हें धीमी आँच पर पकाना चाहिए। यदि आँच तेज होगी तो उसमें पानी और डालने की आवश्यकता पड़ेगी और उसका स्वाद भी बिगड़ जायगा।

फल, अन्न, शाक, भाजी आदि में विटामिन का बहुत-सा अंश छिलके में होता है इसलिए जहाँ तक हो सके छिलके समेत ही इनका उपयोग करना चाहिए। यदि खाद्य पदार्थ प्राकृतिक रूप में व्यवहार में लाये जायें तो अधिक लाभप्रद हैं। परन्तु सदियों के पुराने अभ्यास से हमारा शरीर ऐसा हो गया है कि अब हमारी पाचन-शक्ति के लिए ऐसा आहार पचाना असम्भव है। फिर भी मूली, गाजर टमाटर, सलाद और फल आदि तो कच्चे खाये जा सकते हैं। दूध को कभी बिना उबाले नहीं पीना चाहिए। उबालने से उसमें जो रोग के कीटाणु मिले होते हैं वह नष्ट हो जाते हैं। परन्तु दूध को देर तक काढ़ने की प्रथा ठीक नहीं। इस प्रकार उसका उपयोगी अंश तो नष्ट हो जाता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और दूध भारी हो जाने से देर में पचता है। हलवाई के यहाँ का दूध पीना व्यर्थ है—वे लोग दूध को घंटों खुली कढ़ाई में काढ़ते रहते हैं और कई हलवाई तो सिंघाड़े का आटा और न जाने क्या-क्या मिलाते हैं। इससे दूध गाढ़ा हो जाता है और उसके ऊपर मलाई की मोटी तह आ जाती है। पर ऐसा दूध पीने से कोई लाभ नहीं।

भोजन कब और कैसे करना चाहिए, यह विषय भी ध्यान देने योग्य है। भोजन सदा नियमित समय पर खाना चाहिए। साधारणतया भोजन चार घंटे तक पेट में रहता है, फिर उसके बाद आगे अतड़ियों में चला जाता है। इसके बाद थोड़ा समय पेट को विश्राम करने के लिये भी मिलना चाहिए। इस प्रकार दिन में तीन बार भोजन करना पर्याप्त है। यदि अधिक देर में भोजन किया जायगा तो अधिक खाने की सम्भावना रहती है और इससे पाचन-शक्ति पर अधिक बोझ पड़ता है। दूसरी बार समय पर भूख भी नहीं लगती। ऐसा करने से पेट बिगड़ जाता है। जो लोग दिन में दो-बार भोजन करते हैं उन्हें चाहिए कि प्रातःकाल थोड़ा-सा हल्का नाश्ता कर लें। भूखे पेट सवेरे अपने काम-काज में नहीं लग जाना चाहिए। प्रातःकाल शरीर बहुत शिथिल अवस्था में होता है इसलिए थोड़ा-सा नाश्ता कर लेने से शरीर को शक्ति तो मिलती ही है और साथ-साथ शरीर अनेक रोगों से बचा रहता है। कमजोर दशा में शरीर पर रोगों के आक्रमण का अधिक भय रहता है। छोटे बच्चों को चार बार भोजन करना चाहिए पर उनका भोजन हल्का और सुपाच्य होना चाहिए। बीच-बीच में खाते रहना हानिप्रद है। पेट को विश्राम नहीं मिलता और हर मशीन को तनिक विश्राम मिलना तो अनिवार्य ही है नहीं तो कल-पुर्जे बिगड़ जाएंगे।

भोजन कर लेने पर सीधे बिछौने की शरण नहीं लेनी चाहिए और न ही अधिक शारीरिक काम करना चाहिए। भोजन करने के एक या दो घंटे के बाद सोना चाहिए। रात के समय भोजन हल्का किया जाये तो और भी अच्छा है। भोजन करते समय पढ़ना हानिकारक है। खाते-खाते पानी अधिक नहीं पीना चाहिए। इससे पाचन-क्रिया में असुविधा होती है। शांत चित्त, एकाग्र मन होकर बड़े प्रेम से भोजन करना चाहिए।

यदि इस प्रकार इन सब बातों का ध्यान रखा जाये तो आजकल जब कि हमें खाने-पीने के विषय में इतनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, जो कुछ मिलता है उसी से अपने शरीर को स्वस्थ्य और निरोग रक्खा जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारिवारिक कहानी

राह की खोज

लेखिका, श्रीमती विमला बांठिया

सिगरेट के धुएँ में एक टक देखता हुआ दीप खोया-खोया सा बैठा था। एकाएक न जाने क्या सोच कर उसने सिगरेट को मसल कर एक कोने में फेंक दिया और जल्दी-जल्दी सीढ़ियां चढ़ कर अपनी मां के सामने जा खड़ा हुआ। उस की भाभी और मां ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा भाभी की उत्कंठित दृष्टि की उपेक्षा कर वह सीधा मां से बोला—'सुनो मां।'

मां ने आश्चर्य से कहा—'क्या है रे।'

दीप ने तत्क्षण गम्भीर स्वर से कहा—'मैंने खूब सोच लिया है मां। मेरा आखिरी फैसला यही है कि शादी शीला से ही करूँगा और किसी से नहीं। यदि तुम अब भी मेरी बात मानने को तैयार नहीं हो तो आगे से कभी भी मुझसे शादी करने के लिये जिद न करना।'

मां हतबुद्धि हो उसका मुख देखती रह गई। उन्हें उम्मीद नहीं थी कि दीप इस तरह से उनके मुँह के सामने बोल जायेगा और उनकी इच्छा के विपरीत कार्य करने का हठ करेगा। दीप ने अधिक इन्तजार नहीं किया, बोला—'जो भी हो, मेरी राय अब तुम खूब जान चुकी हो। न हो तो और भी सोच देखना और यदि अपना फैसला मेरे पक्ष में न कर सको तो ईश्वर के लिये आगे कभी मुझसे इस सम्बन्ध में कुछ न कहना।'

कहता हुआ वह खट्-खट् सीढ़ियां उतर गया। अपने कमरे में जाकर कोट पहनते हुए उसकी आंखें भर आयीं। कितनी अजीब बात है। माना कि शीला सुन्दर नहीं है पर वह तो उसे पसन्द करता है और जब कि वह उसे पसन्द करता है तो ये सभी क्यों उसके खिलाफ हैं। शादी उसे करना है, इन्हें नहीं; फिर क्यों ये लोग उस पर जबरन दबाव डाल कर उसका इरादा बदलना चाहते हैं। माँ और दीदी कहती हैं कि वह सुन्दर नहीं है। न हो, वह स्वयम् तो ऊपरी सौंदर्य की उपासक नहीं है। उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीला को खूब परखा है तभी अपनी राय कायम की है। थोड़े दिन पहले जब वह दीदी के साथ कलकत्ता से दिल्ली जाते हुए दस दिन को उनके यहाँ ठहरी थी उस समय की एक-एक बात उसे याद है। मालूम नहीं शीला में उसने क्या देखा था। बिलकुल ही साधारण सी लड़की थी पर उसे वह बहुत अच्छी लगी थी और उसी समय उसने सोच लिया था कि वह यदि शादी करेगा तो उसी से, वरना नहीं। यद्यपि शीला से कुछ खास उसने इस बारे में नहीं कहा था पर वह जानता था कि वह स्वयम् भी उसे पसन्द करती है। इस बात का पता उसे अचानक ही शीला के मुख से निकल जाने वाले एक वाक्य से लगा था। एक दिन उसने बातों ही बातों में उससे पूछा था—'क्यों शीला, मैं तुम्हें कैसा लगता हूँ?' तो शीला के मुख से एकाएक निकल पड़ा था—'बहुत अच्छे।'

पर कहते ही वह झेंप गयी थी और बात दबाने के इरादे से बोल पड़ी थी—'यानी वैसे ही जैसे सब होते हैं।' पर दीप ने सुन कर हस दिया था। उसे तो जो बात जाननी थी वह पता लग चुकी थी। अब शीला लाख उसे छिपाये तो क्या होता है।

यह बात याद कर दीप को हँसी आ गयी। उस ने रूमाल से अपनी आँखें पोंछ कर बाल काढ़ने को कंघा उठाया ही था कि पीछे से दीदी ने कहा—'दीप!'

'क्या है दीदी।'

'ले, तेरा पत्र आया है।'

एक दम उसे याद आ गया कि आज शीला का पत्र आने का दिन है। उसने लपक कर पत्र दीदी के हाथ से ले लिया और लिखावट की ओर जो देखा तो पढ़ने के लिये मन अधीर हो उठा, पर उनके सामने एकाएक उसे खोल कर वह पढ़ नहीं सका, दीदी को कुछ सन्देह हुआ, पूछा—'किसका पत्र है?'

दीप छिपा न सका, बोला—'शीला का है।'

सुन कर दीदी का मुख गम्भीर हो गया, बोलीं, 'उसे तू पत्र क्यों देता है?'

'क्यों देने में कुछ पाप है?'

दीदी चिढ़ीं—'पाप नहीं कह रही हूँ। कहती हूँ कि जब तेरा उससे कोई सम्बन्ध ही नहीं है तो क्यों लिखता है?'

दीप ने शान्त स्वर में कहा—'सम्बन्ध तो बनाने से बनता है दीदी। अभी नहीं है तो क्या हुआ, अब हो जायेगा।'

'क्या मतलब है तेरा?'

दीप ने धीरे से कहा—'मैं शीला से शादी करूँगा।'

दीदी आँखें फाड़े उसकी ओर देखती रह गयीं—'शीला से···? तेरा दिमाग तो खराब नहीं हो गया है दीप? शीला में ऐसा है क्या जो तू उस पर इतना लट्टू हो गया है?'

दीप को क्रोध आ गया बोला—'मैं नहीं समझता दीदी कि उसमें तुम सभी लोगों ने आखिर खराबी क्या देख ली। मां, बाबू जी, आप जिसे देखो सभी उसके खिलाफ हो रहे हैं। इसीलिये ना कि वह सुन्दर नहीं है, तुम लोगों जैसी गोरी नहीं है, उसके पिता के पास तुम्हारे बेटे की कीमत देने लायक धन नहीं है। पर जरा ख्याल तो करो। उस जैसा एक भी गुण है तुम लोगों में। खालिस पैसे और रूप से ही किसी को तौला नहीं जा सकता। मैं कहे देता हूँ दीदी यदि आज से तुम लोगों में से किसी ने भी उसकी मेरे सामने बुराई की तो अच्छा न होगा। नहीं लाना है उसे घर में तो न लाओ पर खामखा उसकी निन्दा तो न किया करो।'

कह कर उसने मुँह फेर लिया और शीला का पत्र पढ़ने लगा। दीदी मर्माहत-सी उसकी ओर देखती रह गयीं। जिस शीला की वजह से उनका भाई आज उन्हें इतनी कड़वी बातें कह गया उसके ऊपर उनकी जान जल उठी।

कुछ मिनट बाद ही दीप ने मुड़ कर शीला का पत्र उनके पैरों के पास फेंक दिया और व्यथित किन्तु तीव्र कण्ठ से कह कर बोला—'देखो तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों के वाक्यों का प्रभाव। यह मत समझना कि पीड़ा केवल तुम्हीं लोगों को हो सकती है। एक काली और कुरूप लड़की के पास भी दिल होता है और उसमें भी कुछ दुख सकता है। भूलो मत दीदी कि तुम भी एक लड़की हो।' वह घर से बाहर निकल गया।

चकित विस्मित दीदी ने पत्र उठा कर देखा—
'दीप बाबू!

आपने मुझे भुलाया नहीं, यह मेरा सौभाग्य है, मैंने तो सोचा था कि हमारा परिचय जैसा आकस्मिक व थोड़े दिन का था वहीं शेष हो जायेगा और तब मेरे पास केवल वे स्मृतियां ही रह जायेंगी याद करने के लिये, पर देखती हूँ मेरी धारणा गलत निकली। जिसकी तरफ से परिचय मिट जाने की आशङ्का थी, उसी ने उसे एक दृढ़ बन्धन में बांध दिया। मैं आज कितनी प्रसन्न हूँ, आप शायद अन्दाज भी नहीं लगा सकते।

आपके जीवन में मैं आ सकती तो बहुत ही सुखी होती, पर आप शायद यह नहीं जानते कि यह बात कितनी असम्भव है। आपको मैं एक घटना सुनाऊँ। यह केवल मुझे जतलाने को ही कहा गया था क्योंकि उस समय आपकी बातों से सभी ने यह आशङ्का की थी कि कहीं आप मुझे अपना न बैठें। जब मैं वहाँ थी तो आपकी मां ने कहा था—'अब तो मेरे दीप की भी शादी हो जाये तो अच्छा। क्यों शीला जी है कोई लड़की उधर आपकी निगाह में। दीप तो बहुत सुन्दर बहू चाहता है और चाहे भी क्यों नहीं। वह क्या खुद किसी से कम सुन्दर है। मैं भी उसकी बहू तो ऐसी ही लाऊँगी जैसे चांद का टुकड़ा।'

सुन कर मैंने चुपचाप अपने को देखा था। आपकी बात तो मैं जानती हूँ पर उनकी धारणा से तो मैं एक दम उलटी हूँ। काश मैं सुन्दर होती दीप बाबू! किन्तु एक बात से मुझे जितना ताज्जुब हुआ था उससे कहीं अधिक दुख अब होता है। माँ और दीदी ने मुझसे कहा था—'शीला जी, आप यों तो सब तरह से ठीक हैं, पर एक खराबी है आप में।'

मैंने डरते-डरते पूछा—'क्या।'

'आप जरा एक पैर पर जोर देकर चलती हैं। चाल बड़ी भद्दी लगती है आपकी।'

मैं विमूढ़-सी उन्हें देखती रह गयी। जबरदस्ती किसी आदमी में खोट निकालना कहाँ की सभ्यता है। मैं जानती हूँ कि मैं सुन्दर नहीं हैं, आपके परिवार के लायक नहीं हूँ पर इसका यह मतलब तो नहीं कि जबरदस्ती मुझ में ऐब निकाल कर मेरा चारों तरफ से रास्ता बन्द कर दिया जाये। बात कोई बहुत बड़ी नहीं है पर कभी-कभी बहुत दुख लगता है। किसी को रास्ते से हटाने की यह कितनी अच्छी तरकीब है।

आपकी बात का क्या जवाब दूँ। मैं केवल सोच सकती हूँ। वह सब मुझसे लिखा नहीं जाता। आप खुद समझदार हैं, मेरी भावनायें खूब समझ सकते हैं। पर एक बात का जवाब मैं आपको अवश्य दे दूंगी। आपने लिखा है कि मैं अभी दो साल और शादी न करूँ। यकीन कीजिये, जैसा आपने कहा है वही होगा। यह तो मैं नहीं जानती कि मेरी बात पर आप यकीन कर सकेंगे या नहीं, फिर भी कहती हूँ कि आप कहें तो दो क्या, जीवन भर मैं यों ही रह सकती हूँ। अच्छा, अब बस करती हूँ। उत्तर की प्रतीक्षा में—

आपकी
शीला!'

[२]

अपनी बुलाहट सुन कर दीप चुपचाप अपने पिता सेठ हरिलाल जी के कमरे के सामने जा खड़ा हुआ। उन्होंने उसे देख कर अन्दर बुला लिया। दीप चुपचाप सामने के कोंच पर जाकर बैठ गया।

'दीप!'

'कहिये।'

'मैंने जो सुना है, क्या वह सब सच है?'

दीप ने करुण दृष्टि से उनकी ओर देखकर कहा, 'किस बारे में बाबू जी।'

सेठ साहब ने गम्भीर स्वर में कहा—'यही, तुम्हारे शीला के प्रति विचारों के बारे में।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीप ने मुख झुका कर कहा—'ठीक है बाबू जी।'

सेठ साहब ने अत्यन्त क्रोधित होते हुए भी शांत स्वर में कहा—'लेकिन यह हो नहीं सकता। सम्बन्ध बराबर वालों में ही शोभा देता है। मैं इतने गरीब और नीचे घर में सम्बन्ध करके अपनी हँसी नहीं उड़वाना चाहता। इसके सिवा तुम्हारी मनोवृत्ति देख कर भी मुझे बड़ा ताज्जुब होता है। तुम तो कहते थे कि ऐसी लड़की से शादी करूँगा जो पढ़ी हो, सुन्दर हो, गाने-बजाने में प्रवीण हो। ताज्जुब है कि अब तुम्हारी राय बदल गयी।'

दीप को बहुत बुरा लगा; पर शान्त स्वर में बोला—'एक बात को छोड़ कर शीला में और सभी बातें हैं बाबू जी। इसके सिवा वह ऐसी भी तो नहीं है जिसे कुरूप कहा जा सके। मीना और बड़ी भाभी का रंग भी तो उसी के जैसा है। फिर आदमी की कद्र तो उसके गुणों से होती है बाबू जी, रूप से नहीं।'

अब सेठ साहब असल बात पर आ गये—'लेकिन पूछता हूँ कि है क्या उसके बाप के पास देने को है मोटरकार?'

'ओह, तो आप सभी बातों को केवल रुपये से तौलना चाहते हैं?'

'हाँ तौलना चाहता हूँ। ध्यान से सोचो बाबू साहब, तुम आज जो कुछ भी बन कर खड़े हो वह केवल रुपये की बदौलत। मैं तुम से साफ-साफ कहे देता हूँ कि तुम उससे शादी नहीं कर सकोगे। आगे से इस तरह की बात भी अपनी जबान पर मत लाना।'

दीप मर्माहत-सा बोला—'बाबू जी कुछ तो सोचिये। शीला के पिता के पास रुपया नहीं है तो क्या हुआ, हमारे पास तो है। आपके लड़के में भी इतनी सामर्थ्य है कि वह अपना और दूसरों का पेट भर सके। रुपया मांगना तो अपने आपको बेचना है बाबू जी। सोचिये तो सही कि यदि सभी आपके समान रुपया व सौन्दर्य देख कर सबका मूल्य आंकने लग जायंगे तो गरीबों का क्या होगा। जिन के पास कुछ भी नहीं है वे क्या करेंगे। आप तो खुद दहेज प्रथा को बुरा बताते हैं फिर अपने लड़के के लिये इसे कैसे ठीक समझ रहे हैं।'

सेठ साहब चिल्ला पड़े—'मैं कहता हूँ दीप अपनी जबान बन्द करो। मैं क्या ठीक समझता हूँ और क्या गलत, इसका निर्णय करने की बुद्धि मुझ में तुम से कहीं अधिक है। मेरा फैसला तुमने सुन लिया है, अब तुम जा सकते हो।'

दीप ने फिर कुछ कहने का प्रयास किया पर सेठ जी ने उसे रोक दिया और उँगुली के इशारे से बाहर चले जाने को कहा। उसे बाहर आता देख दरवाजे के पास खड़ी उसकी माँ, दीदी व भाभी धीरे से हट गयीं और चेहरे गम्भीर बना लिये। किन्तु दीप को दिख गई उनके गम्भीर चेहरों के नीचे छिपी असीम प्रसन्नता। वह अपने पर काबू न रख सका, चिल्ला कर बोला—'हँसो, खुशियां मनाओ। कोई रोये और तुम हँसो। लेकिन कहे देता हूँ मां तुम्हारी कुमन्त्रणा मैं कभी सफल न होने दूंगा। मैंने शीला को वचन दिया है, उसे पूरा करके रहूँगा।' फिर एक दम अपने कमरे में घुस कर वह पलंग पर गिर पड़ा।

भाभी ने चुपके से आकर उसका मुँह अपनी ओर घुमा कर कहा—'भैया जी।'

इस सारे घर भर में केवल वे ही दीप को समझ पाती हैं। उन्हें दीप से शीला से पूरी सहानुभूति थी पर वे चाहते हुए भी कुछ कर नहीं सकती। सास, ससुर, ननद आदि जब सभी एक तरफ हों तो बेचारी बहू अकेली क्या कर सकती है। यद्यपि वे खुद काफी सुन्दर और एक लखपति बाप की बेटी थीं फिर भी शीला को वे चाहती थीं। इतनी भोली और सीधी-सी लड़की है शीला कि मन आप ही उसकी तरफ खिंच जाता है।

दीप कुछ न बोला। केवल उसकी आँखों से दो बूँद आँसू ढुलक पड़े। स्नेहमयी भाभी ने उन्हें अपने आंचल से पोंछ दिया और कहा—'छिः भैया जी, भला इस तरह कहीं अधीर हुआ जाता है? धैर्य से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम लीजिये। अभी तो बहुत वक्त पड़ा है, इतने दुखी क्यों होते हैं।'

दीप ने भग्न कण्ठ से कहा—'भाभी कोई भी तो मेरी बात नहीं सुनना चाहता। जिसे मैं चाहता हूँ, उसे ही ये लोग ठुकरा रहे हैं। ओह, कितने निर्दय हैं ये लोग। भाभी तुम खुद सोचो। तुम्हारे पास भी तो नारी का हृदय है। शीला की भावनायें क्या तुम नहीं महसूस करतीं। मैंने उससे वादा किया था उसे आशा दिलाई थी भाभी, उससे वह सब तोड़ देने को अब मैं कैसे कहूँ।'

भाभी यह सब नहीं जानती थीं। बोलीं—'ऐसा भी हुआ है क्या भैया जी ?'

'हाँ भाभी। वह दस दिन यहाँ रही थी। उस समय तुमने देखा होगा कि हम दोनों काफी खुल गये थे। एक दिन मैंने उससे पूछा था—'शीला मुझ से शादी करोगी ?' उसने मुँह से तो कुछ नहीं कहा पर उसका भाव देख कर मैं भांप गया था कि वह इससे खुश होगी। उसके बाद भी बहुत सी बातें हुईं। वह सब मैं तुम्हें क्या बताऊँ भाभी। फिर वह चली गयी। कुछ दिन तो मैं चुप रहा पर एक दिन न रहा गया तो एक शर्त की याद दिलाने के बहाने मैंने उसे पत्र डाल दिया। उसने जवाब दिया और तब से हम में बराबर पत्र व्यवहार होता है। घर में सभी इसे जानते हैं। बताओ भाभी इतना आगे बढ़ कर अब मैं उससे पीछे लौटने को कैसे कहूँ और ऐसे हृदयहीन परिवार में उसे लाने की हिम्मत भी मैं कैसे करूँ। मैं सब सह सकता हूँ पर वह नहीं सह सकेगी भाभी। बताओ मैं क्या करूँ मुझे कुछ समझ में नहीं आता।'

भाभी ने धीरे से उसके सिर पर हाथ फिरा कर कहा—'मनुष्य का अभिमान कोई भी नहीं तोड़ सकता भैया जी। शीला के सामने आपका सिर नीचा नहीं होगा, मेरा आज के दिन यही सबसे बड़ा आशीर्वाद रहा।'

दीप ने तकिये में मुँह छिपा लिया। भाभी के इस आशीर्वाद और अपने आंसुओं के बीच शायद उसे कोई राह दिखाई दे जाये कि वह उस पर निर्भयता से आगे बढ़ता जाये। क्या वास्तव में ऐसा दिन उसके जीवन में आ सकेगा कि सबको खुश रखता हुआ वह शीला के सामने सिर उठा कर खड़ा हो सके !

महाराजा रणजीतसिंह की बात !

एक बार महाराजा रणजीत सिंह कहीं जा रहे थे कि सामने से उन्हें एक ईंट आकर लगी। एक बुढ़िया दिखाई दी, जो गिरफ्तार करके सामने लायी गई।

बुढ़िया बोली—'महाराज ! मेरा बच्चा कल से भूखा था। घर में खाने को कुछ था ही नहीं। पेड़ पर पत्थर मार रही थी कि कुछ बेर तोड़ कर उसे खिलाऊँ। वह पत्थर भूल से आपको आ लगा। मैं निर्दोष हूँ।'

महाराजा ने आज्ञा दी—'एक हजार रुपये देकर बुढ़िया को ससम्मान छोड़ दिया जाय।'

इस पर अधिकारी साश्चर्य बोले—'इस बुढ़िया को तो दण्ड मिलना चाहिए'

महाराजा रणजीत सिं ने उत्तर दिया—'यदि निर्जीव पेड़ पत्थर लगने पर मीठे फल देता है तो पञ्जाब का महाराजा उसे खाली हाथ कैसे लौटा दे ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' लिखित

अन्तिम कहानी

क्रान्तिकारी

रात के दस बज चुके थे। शहर में सन्नाटा हो चला था। इसी समय एक युवक योरपीय वस्त्र पहने तेजी के साथ एक ओर जा रहा था। नाइटकेप से उसका माथा ढँका हुआ था और उस के मुख का निचला भाग ओवरकोट के कालर में छिपा हुआ था। उसके दाहिने हाथ में बिजली का 'टार्च' था और बायां हाथ ओवरकोट की जेब में पड़ा था।

सहसा सड़क से वह एक गली में घुसा। गली में घुसते ही एक अर्द्ध वयस्क भिखारी ने हाथ फैला-कर कहा—'कुछ मिल जाय, बाबू! आज दिन भर कुछ नहीं मिला।' युवक के माथे पर बल पड़ गये। उसने भिखारी को ध्यान पूर्वक देखा। भिखारी ने युवक को अपनी ओर देखते हुए देख कर बड़ी दीनता पूर्वक कहा—'बाबू, भूखा हूँ। कुछ मिल जाय।' युवक ने बायें हाथ से कोट के भीतरी जेब से एक एकन्नी निकाल कर भिखारी को दी और चल दिया।

थोड़ी दूर चल कर वह एक द्वार पर रुका। पहले उसने ध्यान पूर्वक अपने चारों ओर देखा। कुछ दूर पर वही भिखारी सिर झुकाये धीरे-धीरे चला आ रहा था। युवक ने द्वार की कुण्डी खटखटाई। एक क्षण पश्चात् द्वार खुला और युवक अन्दर चला गया। द्वार फिर बन्द हो गया।

द्वार खोलने वाला एक युवक था। उसने आग-न्तुक से पूछा—इतनी देर क्यों हुई रमेश?'

रमेश ने चिढ़े हुए स्वर से उत्तर दिया—'मुझे कितनी दूर से आना पड़ता है, यह भी खबर है? तुम्हें क्या, तुम तो घर में घुसे रहते हो।' ये बातें करते हुए दोनों एक कमरे में पहुँचे। इस कमरे में एक गोल-मेज पड़ी हुई थी—उसके चारों ओर पाँच-छः कुर्सियाँ थीं और उन पर तीन व्यक्ति बैठे हुए थे। रमेश को देखते ही एक बोला—'लो रमेश आ गया।'

रमेश ने अपनी नाइटकेप मेज पर पटक दी और ओवर-कोट उतार कर खूँटी पर टांग दिया। तत्प-श्चात् अपने सिर के बालों को दाहिने हाथ से बरा-बर करते हुए कुर्सी पर बैठ गया। जिस युवक ने द्वार खोला था वह भी बैठ गया।

कुछ क्षणों तक रमेश सिर झुकाये बालों पर हाथ फेरता रहा। अन्य चारों व्यक्ति उत्सुकता पूर्ण दृष्टि से उसके मुख की ओर देखते रहे। सहसा उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर ऊपर उठा कर कहा—'अभी इस गली के सिरे पर मुझे एक भिखारी मिला था। वह कौन है, जानते हो?'

'भिखारियों का परिचय प्राप्त करना हमारे कार्यक्रम का अङ्ग नहीं है। क्यों, क्या उसका परिचय प्राप्त करना आवश्यक है?' एक व्यक्ति ने कहा।

'हाँ, यदि वह संदिग्ध व्यक्ति हो तो।'

'तुम्हें वह कैसा जँचा?' दूसरे व्यक्ति ने प्रश्न किया।

'मुझे उस पर सन्देह हुआ तभी तो पूछता हूँ।' रमेश बोला।

इतना सुनते ही सब हँस पड़े।

रमेश भौंह चढ़ा कर बोला—'क्यों आप लोग हँसते क्यों हैं? हम जिस परिस्थिति में हैं उसमें रह कर इस प्रकार का सन्देह करना आवश्यक है, यह जानते हो?'

'परन्तु तुम्हें सन्देह करने की कोई आवश्यकता नहीं। हम उस भिखारी को जानते हैं। वह बहुधा इस गली में भीख मांगने आया करता है।'

'और तुम लोगों को उस पर किसी प्रकार का सन्देह नहीं है?'

'नहीं।'

'तब कोई बात नहीं!'

कुछ क्षणों तक सब लोग मौन बैठे रहे। हठात् एक युवक बोला—'तुम क्या कर आये? यह तो बताओ।'

रमेश ने कहा—'रुपये का प्रबन्ध तो नहीं हो सका।'

'यह क्यों?' एक ने भौंह चढ़ा कर प्रश्न किया।

'नहीं हो सका बस, इससे अधिक मैं और कुछ नहीं कह सकता।' रमेश ने उत्तर दिया।

'परन्तु प्रबन्ध न हो सकने का कोई कारण भी तो होगा।'

'कारण यही कि जहाँ से मिलने वाला था, वहां से नहीं मिला।'

'बड़े आश्चर्य की बात है!'

'आश्चर्य क्यों? ऐसा बहुधा हो जाया करता है।' रमेश ने मुँह बना कर कहा।

'आश्चर्य इसलिये कि तुमने विश्वास दिलाया था कि रुपये का प्रबन्ध निश्चय कर दोगे।'

'हाँ, मैंने विश्वास अवश्य दिलाया था, परन्तु विवश हूँ। मुझे पूरा भरोसा था कि रुपया मिल जायगा। परन्तु समय की बात है, नहीं मिला।'

'तुम तो 'समय की बात' और 'संयोग' कह कर छुट्टी पा गये, परन्तु यहाँ तो सारी आशाओं पर पानी फिर गया।'

'मुझे इसका हार्दिक खेद है; पर क्या किया जाय।'

'हाँ, अब क्या किया जाय, यही सोचना है।'

'बिना रुपये के काम नहीं चल सकता?'

'एक इञ्च भी नहीं चल सकता।'

रमेश विचार में पड़ गया। कुछ क्षणों तक सोच कर बोला—'अच्छा मुझे कल की मोहलत और दो मैं एक बार फिर प्रयत्न करूँगा।'

चारों ने एक-दूसरे की ओर देखा। तत्पश्चात् एक बोला—'अच्छा कल की मोहलत और दी जाती है।'

[२]

रमेशप्रसाद एक धनाढ्य परिवार का लड़का है, उसने बी० ए० तक शिक्षा पाई है, परन्तु वह बी० ए० की डिग्री प्राप्त नहीं कर सका। दो साल लगातार फेल हो जाने के कारण उसने पढ़ना छोड़ दिया। जब वह कालेज में पढ़ता था उस समय उसे क्रान्तिकारी बातों तथा क्रान्तिकारियों से बहुत दिलचस्पी थी। जब वह समाचार-पत्रों में क्रान्तिकारियों के कारनामे पढ़ता था तब उसके शरीर में बिजली-सी दौड़ जाती थी। वह क्रान्तिकारियों का परिचय प्राप्त करने के लिए सदैव उत्सुक रहता था। वह अपने को भी क्रान्तिकारी समझने लगा था। क्रान्तिकारियों की भांति सदैव सतर्क रहने, प्रत्येक व्यक्ति को सन्देहात्मक दृष्टि से देखने, अपने व्यक्तित्व को छिपा कर घूमने-फिरने तथा इसी प्रकार के अन्य क्रान्तिका-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रियों जैसे आचरणों का पालन करने में उसे बहुत ही आनन्द मिलता था। उसे क्रान्तिकारियों के लक्ष्य तथा उद्देश से कोई प्रयोजन नहीं था। न उसे देश को स्वतन्त्र करने की लगन थी और न उसके सामने अन्य कोई देश भक्ति पूर्ण अथवा राजविद्रोहात्मक लक्ष्य था। उसका लक्ष्य केवल इतना था कि वह क्रान्तिकारियों की तरह एक रहस्यमय व्यक्ति हो जाय और लोग उसे क्रान्तिकारी समझ कर उससे भयभीत रहें। वह किसी क्रान्तिकारी-दल का नेता बन जाय, यह उसकी महत्वाकांक्षा थी।

रात के ग्यारह बज चुके थे। रमेश के पिता अपने कमरे में अकेले पड़े हुए सो रहे थे। अकस्मात् कुछ खटका होने से उनकी आँख खुल गईं। कमरे में बिजली की धुँधली रोशनी थी। उस क्षीण प्रकाश में उन्होंने एक आदमी की छाया देखी। वे तुरन्त उठ कर बैठ गये और उन्होंने चाहा कि बिजली की दूसरी बत्ती जलावें। जैसे ही उन्होंने बटन की ओर हाथ बढ़ाया, वैसे ही एक व्यक्ति काले चोगे से अपना शरीर ढके और मुँह पर नकाब डाले लपक कर उनके समीप आ गया और उसने अपना दायां हाथ बढ़ा कर गम्भीर स्वर में कहा—खबरदार! रमेश के पिता ने देखा—उस व्यक्ति के हाथ में एक पिस्तौल है। उस व्यक्ति ने फिर गम्भीर स्वर में कहा—'खबरदार! स्विच मत दबाना, नहीं तो प्राणों से हाथ धोना पड़ेगा।' रमेश के पिता ने शीघ्रता पूर्वक हाथ हटा लिया। उनका हृदय धड़कने लगा, कण्ठ सूख गया। उन्होंने भयभीत स्वर में उस व्यक्ति से पूछा—'तुम क्या चाहते हो?'

'लोहे की अलमारी की ताली।'

रमेश के पिता विचार में पड़ गये। उस व्यक्ति ने उन्हें हिचकिचाते देख कर्कश स्वर में कहा—'जल्दी करो।'

रमेश के पिता ने कांपते हुए हाथों से अपने सिरहाने से ताली निकाल कर दे दी। उस व्यक्ति ने बायें हाथ से ताली ले ली, तत्पश्चात् कहा—'खबरदार! हिलना-डुलना नहीं और न शोर मचाना, अन्यथा जान चली जायगी।'

इतना कह कर वह पास ही दीवार में लगी हुई लोहे की अलमारी के पास पहुँचा और उसने शीघ्रता पूर्वक अलमारी खोल कर उसमें से कुछ निकाला, तत्पश्चात् अलमारी बन्द करके ताली रमेश के पिता की ओर फेंक दी। इसके पश्चात् वह बोला—'खबरदार! जब तक मैं निकल न जाऊँ, चुपचाप पड़े रहना!' इतना कह कर उसने पिस्तौल हिलाया और बत्ती बुझा दी। अब बिलकुल अन्धेरा हो गया। रमेश के पिता ने द्वार खुलने तथा बन्द होने का शब्द सुना। थोड़ी देर तक वे चुपचाप पड़े रहे, इसके पश्चात् उन्होंने धीरे से हाथ बढ़ा कर 'स्विच' दबाया। कमरा बिजली के पूर्ण आलोक से जगमगा उठा। वे उठे और उन्होंने धीरे से द्वार खोलकर बाहर झाँका—बाहर पूरा सन्नाटा था। उसी समय वे जोर से चिल्लाये—'चोर! चोर! दौड़ो! पकड़ो!'

रात की निस्तब्धता में उनका कण्ठ स्वर घर में गूँज गया। कुछ ही क्षणों में फटाफट कई द्वारों के खुलने का शब्द हुआ और दो तीन आदमी 'कहाँ' 'कहाँ' चिल्लाते हुए बाहर निकल आये।

रमेश के पिता को देख कर एक बोला—'क्या है सरकार?'

'अभी एक चोर मेरे कमरे से निकल कर गया है।' रमेश के पिता ने घबराये हुए स्वर में कहा।

'हैं! आपके कमरे में चोर! वहाँ कैसे पहुँचा?'

'मैं स्वयम् चक्कर में हूँ, कुछ समझ में नहीं आता।'

'किधर गया?'

'अभी इसी द्वार से बाहर निकल गया है।'

'तो सदर दरवाजा तो बन्द होगा—जायगा कहाँ—यहीं कहीं होगा।'

'परन्तु होशियार रहना। उसके पास पिस्तौल है।'

इसी समय रमेश आँखें मलता हुआ और घबराया हुआ आया। उसने पूछा—'क्या है पिता जी?'

पिता ने सारा वृत्तान्त कह दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रमेश बोला—'हमारे घर में और चोर! बड़े आश्चर्य की बात है।'

इसी समय एक व्यक्ति ने आकर कहा—'सदर द्वार खुला पड़ा है। जान पड़ता है चोर निकल गया।'

रमेश बोला—'यह तो बड़े गजब की बात हुई। आपने उसे देखा था?'

'हाँ! काला चोगा पहने था, मुँह पर काली नकाब डाले था और हाथ में पिस्तौल लिये था।'

'तब तो वह कोई साधारण चोर नहीं था! कुछ ले भी गया क्या?'

'ले अवश्य गया है, पर पता नहीं क्या ले गया। चलो देखें।'

[३]

सवेरे पुलिस को सूचना दी गई। पुलिस ने आकर मौका देखा और तहकीकात आरम्भ कर दी स्थानीय समाचार-पत्रों में भी यह समाचार निकल गया। पुलिस ने चोर का हुलिया सुन कर अनुमान लगाया कि यह कार्य किसी क्रान्तिकारी का मालूम होता है। रमेश तो पहले से ही यह कह रहा था कि इस ढङ्ग से केवल क्रान्तिकारी ही आ सकता है। नगर भर में सनसनी फैल गई थी। जहाँ देखो, यही चर्चा हो रही थी।

शाम का समय था। उक्त गली वाले मकान में वे चारों युवक इकट्ठा थे। वे भी इसी विषय पर वार्त्तालाप कर रहे थे। एक कह रहा था—'आज तो रमेश का आना कठिन ही मालूम होता है।'

'हाँ, उसके यहाँ चोरी हो गई है। शायद ही आ सके।'

'क्यों जी, भला यह चोर कौन होगा?'

'कोई बड़ा ही होशियार और बहादुर आदमी है। पराये मकान में इस तरह जाकर चोरी कर लाना मजाक नहीं है।'

'अब तो रमेश से रुपया मिलना कठिन ही मालूम होता है।'

'हाँ दिखाई तो ऐसा ही पड़ता है।'

'क्या कहें, चिड़िया तो अच्छी फँसी थी, पर विघ्न पड़ गया।'

'परन्तु इसे हाथ से न निकलने देना चाहिए। रुपया इससे मिलेगा अवश्य। अभी नहीं तो महीना बीस दिन बाद सही, पर मिलेगा निश्चय।'

'हाँ, यह बात तो रामचन्द्र ठीक कहता है। उस पर इस समय क्रांतिकारी बनने का भूत सवार है। वह रुपया अवश्य देगा।'

'पहले तो यह देखना है कि आज यहाँ आता है या नहीं।'

'रुपया चाहे न लावे, परन्तु आवेगा तो जरूर।'

ये बातें हो ही रही थीं कि द्वार खटखटाने का शब्द सुनाई पड़ा। रामचन्द्र उछल कर खड़ा होते हुए बोला—'लो, आ गया!' यह कह कर द्वार पर गया और उसने द्वार खोला। द्वार खोलते ही रमेश अन्दर आया। रमेश को लिये हुए रामचन्द्र कमरे में प्रविष्ट हुआ। रमेश को देखते ही एक युवक मुसकरा कर बोला—'आ गये! हमें तो सन्देह था कि शायद न आ सके।'

रमेश ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा—'क्यों?'

'तुम्हारे यहाँ चोरी हो गई थी, इसलिये!'

रमेश मुँह बना कर बोला—'तो इससे क्या हुआ। चोरी हो गयी सो हो गई, उसके पीछे कोई अपना काम-धन्धा थोड़े ही बन्द कर देगा।'

'ठीक कहते हो। परन्तु यार यह बड़े ताज्जुब की बात है कि तुम्हारे घर में रहते हुए चोरी हो गयी।'

'इसका क्या मतलब?' रमेश ने किञ्चित् मुसकरा कर पूछा।

'क्रांतिकारी के घर में चोरी हो जाना आश्चर्य की बात नहीं तो क्या है?'

'क्रांतिकारी के घर में क्रांतिकारी ही चोरी कर सकता है। कुछ भी हो उसने किया बहादुरी का काम, यह तो मानना ही पड़ेगा।' रमेश ने कहा।

'हाँ, यह तो अवश्य मानना पड़ेगा। पर तुम्हारे लिए यह लज्जा की बात है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आप लोग अपना काम कीजिये, इस फेर में न पड़िये।'

'काम तो रुपये से होगा। रुपया लाये हो?'

'जब वादा कर गया था तब कैसे न लाता।'

इतना कह कर रमेश ने जेब से नोटों का बंडल निकाला और मेज पर रख दिया। रामचन्द्र ने बंडल को देखते हुए पूछा—'कितने हैं?'

'दो हजार! इतने ही तो तुम लोगों ने माँगे थे।'

'हाँ, इतने ही माँगे थे। परन्तु यार खूब लाये। हम लोगों को तो आशा नहीं थी।'

'क्यों?' रमेश ने पूछा।

'इसी चोरी के कारण हम लोगों ने अनुमान लगाया था कि तुम चोरी के झगड़े में पड़े होगे, रुपया भला क्या ला सकोगे।'

रमेश हँसने लगा। हँसते हुए बोला—'ऐसी छोटी-छोटी बातों से यदि क्रान्तिकारी लोग विचलित हो जायँ तो बस हो चुका।'

इसी समय किसी ने द्वार की कुण्डी खटखटाई। रामचन्द्र चौंक कर बोला—'यह कुण्डी कौन खटखटाता है?'

सबके मुँह पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। उधर फिर किसी ने कुण्डी खटखटाई।

देखो, कुण्डी कौन खटखटाता है। परन्तु द्वार मत खोलना। पहले मालूम कर लेना कि कौन है।'

रामचन्द्र उधर गया, इधर एक युवक ने नोटों का बण्डल उठा कर अपनी जेब में रख लिया और मेज की दराज से ताश निकाल कर बांटने आरम्भ कर दिये।

रामचन्द्र द्वार पर पहुँचा और अन्दर से ही बोला—'कौन है?'

'अभी एक बाबू इसी मकान में गये हैं। उनकी कोई चीज गिर पड़ी है, ले लीजिये।'

'तुम कौन हो?' रामचन्द्र ने प्रश्न किया।

'मैं तो भिखारी हूँ। बाबू जी ने मुझे जेब से एक इकन्नी निकाल कर दी थी, उसी समय उनकी जेब से यह गिर पड़ी।'

'क्या चीज है?'

'कोई छोटी-सी किताब है।'

रामचन्द्र ने कहा—'ओहो नोटबुक होगी। अच्छा लाओ।'

यह कह कर रामचन्द्र ने द्वार खोला। उसके द्वार खोलते ही पुलिस के छः-सात आदमी भड़भड़ा कर अन्दर घुस आये। एक ने रामचन्द्र को पकड़ लिया। शेष सब कमरे की ओर चले। आगे-आगे सब-इन्स्पेक्टर था। उसने कमरे में घुसते ही पिस्तौल निकाल कर हाथ में ले ली और कड़क कर बोला—'बस जो जहाँ है, वहीं बैठा रहे।'

पुलिस को देखते ही चारों के हाथों से ताश छूट पड़े।

[४]

कांस्टेबलों ने उन चारों को भी हिरासत में ले लिया। चारों की तलाशी ली गयी। एक के पास से वही नोटों का बण्डल निकला। उसे इन्स्पेक्टर ने अपने कब्जे में किया। बण्डल को हाथ में लेकर इन्स्पेक्टर ने पूछा—'यह रकम कहाँ से हथे लगी हजरत?'

रामचन्द्र बोल उठा—'ये नोट अभी रमेश ने लाकर दिये हैं।'

इन्स्पेक्टर हँस कर बोला—'यह तो मुझे मालूम है। लेकिन तुम कैसे 'रिवोल्यूशनरी' हो कि इतनी जल्दी भेद खोल दिया। अपने दोस्त को फँसा कर खुद बचना चाहते हो।'

इतना कह कर इन्स्पेक्टर ने रमेश की ओर एक रहस्य पूर्ण दृष्टि डाली। इसके पश्चात् इन्स्पेक्टर ने कांस्टेबलों से कहा—'इन चारों को थाने पर ले चलो, मैं एक घण्टे के अन्दर वहीं आता हूँ। (रमेश से) तुम्हें मेरे साथ चलना पड़ेगा।

× × × ×

रमेश के पिता अपने बाहरी कमरे में बैठे थे। उनके पास ही तीन-चार व्यक्ति बैठे थे। उसी चोरी के विषय में वार्तालाप हो रहा था। इसी समय सब-इन्स्पेक्टर रमेश को साथ लिये हुए पहुँचा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्स्पेक्टर को देख कर रमेश के पिता ने पूछा—'कहिए दारोगा साहब, कुछ पता लगा?'

'जरा अलग चलिए तो बताऊँ।'

रमेश के पिता उठ कर इन्स्पेक्टर तथा रमेश-सहित एक दूसरे कमरे में गये। इन्स्पेक्टर ने कमरे का द्वार बन्द करके जेब से नोटों का बंडल निकाला और उसे रमेश के पिता के सामने रख कर कहा—'लीजिये, यह अपना रुपया और यह रुपयों का चोर।' इतना कह कर उसने रमेश का हाथ पकड़ कर उनके सामने कर दिया।

रमेश के पिता अवाक् होकर इन्स्पेक्टर तथा रमेश का मुँह ताकने लगे। रमेश सिर झुकाये मूर्ति-वत् खड़ा रहा। रमेश के पिता बोले—'क्या इसी का काम था?'

'जी हाँ।'

'मुझे विश्वास नहीं होता दारोगा साहब! क्या इसने यह बात स्वीकार कर ली है?'

'अभी स्वीकार करते हैं।'

इतना कह कर इन्स्पेक्टर ने अपनी जेब से एक कपड़े का टुकड़ा निकाला। इसके पश्चात् उसने रमेश की कमीज के बटन खोल दिये। नीचे की कमीज के ऊपर कपड़े का टुकड़ा रख कर इन्स्पेक्टर बोला—'देखिये यह टुकड़ा इस कमीज से मिलता है?'

'हाँ मिलता है, परन्तु...'

रमेश के पिता की बात काट कर दारोगा साहब बोले—'ठहरिये!'

इसके पश्चात् उन्होंने कमीज के दामन का कोना देखा—'चारों कोने देखने पर एक कोना फटा हुआ निकला और उस फटे हुए स्थान पर वह टुकड़ा 'फिट' हो गया।' रमेश के पिता ने पूछा—'यह टुकड़ा आपको कहाँ मिला?'

'आपके सोने वाले कमरे की खिड़की की नीचे-वाली दहलीज में एक कील निकली हुई है। यह टुकड़ा उसमें फँसा हुआ था। मैं सवेरे जब मौका देखने आया था तब मुझे यह मिला था। मैं उसी समय समझ गया था कि यह किसका काम है। परन्तु उस समय यदि मैं इनसे पूछ-ताछ करता तो इतनी आसानी से पता न लगता। मैंने इनके पीछे खुफिया का आदमी लगा दिया था। वह इनके पीछे-पीछे गया और जब ये मकान के अन्दर गये तब उसने मुझे खबर दी। मैंने एक भिखमंगे को सिखा कर भेजा। उसने दरवाजा खुलवाया तब मैंने इन्हें और इनके साथियों को गिरफ्तार किया। (रमेश से) क्यों यही बात है न?'

रमेश ने सिर हिला कर स्वीकार किया।

'तो अब क्या होगा दारोगा साहब?'

'होगा क्या! आपका रुपया मिल गया। चोर आपका लड़का ही निकला। अब इस पर क्या मुक-दमा चलवाइयेगा?'

'नहीं, इस पर भला क्या मुकदमा चलवाऊँगा। (रमेश से) वाह बेटा! खूब घर में ही शिकार खेला।'

'यह अच्छा हुआ कि घर से ही श्रीगणेश किया इसलिए बच भी गये, नहीं तो बड़े घर की हवा खानी पड़ती। अच्छा, अब आप इन्हें संभालियेगा। मुझे उम्मीद है कि अब इनके दिमाग से 'रिवोल्यूशनरी' बनने का खब्त दूर हो जायगा। इन्होंने सवेरे मुझसे बड़े जोर के साथ कहा था कि यह काम सिर्फ रिवोल्यूशनरी ही कर सकता है।'

'अच्छा इनके साथियों का क्या होगा?'

'उन सबको मैं जानता हूँ। वे सब शरीफ घरानों के लड़के हैं। उनमें से एक भी रिवोल्यूशनरी तो क्या, रिवोल्यूशनरी की दुम भी नहीं है। उन्होंने इनसे रुपया ऐंठने के लिए यह सब स्वांग रचा था। उन्हें भी चेतावनी देकर छोड़ दूँगा। उनके खिलाफ और कोई बात है भी नहीं। (रमेश से) साहबजादे रिवोल्यूशनरी बनने का खब्त दिमाग से निकाल डालो। यह तुम जैसों का काम नहीं है। अच्छा रुखसत! आदाब अर्ज!'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक हास्यपूर्ण गुजराती कहानी

'सौराष्ट्र की सासें मारवाड़ की सासों से कम नहीं हैं।'

सास-ससुर-सम्मेलन

अनुवादक, कुमारी उषा कोविद साह

[१]

आज मुझे जगने में कुछ विलम्ब हो गया है, ऐसे विचार मात्र से ही मेरे रोंगटे खड़े हो गये। बैरिन घड़ी भी साढ़े सात बजा चुकी थी। आज तो अपना काम तमाम है, मैंने सोचा। नीचे सास जी मेरे आगत-स्वागत की प्रतीक्षा में खड़ी होंगी, यह तो निश्चित् ही था और साथ ही आज मुझ पर गाली-गलौज की मूसलधार वृष्टि होगी, यह भी सुनिश्चित था। मेरी दृष्टि के समक्ष मेरी सास जी का दिव्य स्वरूप तांडव नृत्य करने लगा।

मैं किसी तरह अपने आपको सम्भालती हुई नसेनी उतरने लगी। पैर थरथराते थे, एक दम शिथिल हो गये थे, किन्तु फिर भी भरसक प्रयत्न कर स्थिर तो नहीं होने दिये।

मैं नीचे तो पहुँच गयी। मेरी सास मेरी प्रतीक्षा में खड़ी तो थीं, किन्तु···किं···तु—ईश्वर! क्या मैं यह स्वप्न तो नहीं देख रही थी? अरे, स्वप्न में भी मेरी सास जी के ऐसे स्वरूप की कल्पना मात्र भी नितान्त गगन कुसुमवत् थी, जब कि मैं उस स्वरूप में उनके प्रत्यक्ष-दर्शन प्राप्त करने को सौभाग्य-शालिनी हुई थी। यद्यपि मैं अभी तक स्वप्न और सत्य के विभ्रम में थी। मुझे अभी तक अपने आप पर विश्वास नहीं था, कि यह मेरी विनिद्रा-वस्था है।

मैंने क्या देखा, वे खड़ी थीं सास जी! परन्तु नित्य प्रति के सादे भेष में नहीं, जो कि एक लाल साड़ी और काली चोली वे धारण करती थीं—जब से मेरे श्वसुर जी का विदेह हुआ था, इस घर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे पदार्पण के पूर्व। बगुले के पंख-सी श्वेत साड़ी और वैसी ही श्वेत चोली धारण किये, और एक हस्त में ध्वज और दूसरे में कुछ कागजात पकड़े, वे कटिबद्ध खड़ी थीं। मुझे आश्चर्य हुआ कि ध्वज की जो लकड़ी थी, बेलन था। और ध्वज भी अपना राष्ट्रीय ध्वज नहीं था, गांधी जी का चर्खा वाला भी नहीं था। अरे, हाँ! जरा गौर करने पर मुझे स्मरण हो आया कि वह ध्वज का टुकड़ा मेरी कोरी साड़ी में से फाड़ा हुआ था। वह साड़ी लगभग आज से आठ दिन पहले उन्होंने मुझे ला दी थी। किन्तु दूसरे दिन ही मेरी सास को न जाने कहाँ से पता चल गया और तब मुझे उनकी वाणी-श्रवण का सौभाग्य प्राप्त हुआ ही था, परन्तु साथ-ही-साथ बुढ़िया ने उनको भी—'बीबी का गुलाम...औरत के पीछे लट्टू हुआ है! शाहजादी के घर में आते ही दूसरे जिन्दे हैं या मर गये, इसका ख्याल कर सके भी—नहीं करता! हम यहाँ छः महीने से दो साड़ी पर ही गुजारा कर रहे हैं और उस हरामजादी ने साड़ियों से दो-दो पेटियां भर रक्खी हैं फिर भी उसी के लिए और साड़ी खरीदते हुए तुझे लाज न आयी, बेशर्म इत्यादि-इत्यादि, सुश्राव्य वाणी का निज पुत्र को श्रवण करा कर अपना मातृत्व अधिकार सिद्ध किया था। उस साड़ी को इस प्रकार फाड़ डाला गया है, यह देख कर मुझे दुःख हुआ।

'आज घर का सारा काम-काज तुम ही सम्हालना विमल! मैं एक भी काम को न छुऊँगी।' मुझे खड़ी देख कर वे बोलीं—'आज हमारी इस्टराइक है।' और मेरे हाथ में एक कागज थमा कर, वे शीघ्रता से वहाँ से चल दीं।

हमेशा बीमार रहने वाली, अपने आपको बीमार कहने वाली बुढ़िया में इतने उत्साह और शक्ति का सञ्चार कैसे हुआ, यह मेरी समझ में न आया। यह सब एक पल भर में ही हो गया। यदि मेरे हाथ में उनका दिया हुआ कागज न होता और अब तक उनके चलने का पगरव मुझे सुनायी देता न होता, तो मैं इस घटना को सत्य समझने की धृष्टता कदापि न करती। अस्तु, मैंने अपने विचार-प्रवाह को रोककर वह कागज पढ़ना प्रारम्भ किया। उसमें ऊपर बड़े सुवर्णाक्षरों में छपा हुआ था—'श्री अखिल भारतीय श्वश्रू श्वशुर परिषद् का प्रथम वार्षिकोत्सव।'

मुझे हँसी आयी। ऐसा नाम मैंने अपने जीवन में पहली मर्तबा सुना। फिर आगे लिखा था—'दिनांक २५-५-५४ की दोपहर को ३-३० बजे कस्तूर बाई हाल में महा माननीया वयोवृद्धा, तपोवृद्धा, ज्ञानवृद्धा, चरित्रवृद्धा श्रीमती विद्यावती देवी 'न्यायाम विषारद' की अध्यक्षता में, श्री अखिल भारतीय श्वश्रू-श्वशुर परिषद् के प्रथम वार्षिक समारम्भ का आयोजन किया गया है।'

इस अवसर पर हमारे हर एक प्रांत के प्रतिनिधि उपस्थित रहेंगे। वे सभी अपना अनुभव आपको कह सुनाएंगे। अतएव हम नगर के सर्व सास-ससुरों से अनुरोध करते हैं, कि वे नियत सभा समय के पाँच-मिनट पूर्व ही अपना स्थान ग्रहण करें और हमारी सभी सासों से ऐसी प्रार्थना है कि वे अपने सम्पूर्ण दिन का सदुपयोग अपना परम कर्तव्य समझ कर शुभ्र वस्त्र में सुसज्जित हो, सभा-प्रचारार्थ ही करें।' नीचे लिखा था—'भवदीय, 'प्रमुख'।'

अब वस्तुस्थिति मेरी समझ में आयी। चलो, इस सभा के कारण मुझे तो सास जी के कोप से छुटकारा मिला। मैंने कुछ शान्ति का अनुभव किया सत्य होते हुए भी मुझे इन सब बातों पर विश्वास नहीं आ रहा था।

रसोई करते-करते मैंने विचार किया कि मैं भी काम-काज से झटपट निवृत्त होकर सभा-भवन में पहुँच जाऊँगी।

[२]

कितना भी किया, किन्तु कुछ देर हो ही गई। मैं जब वहाँ पहुँची तब मुझे विदित हुआ कि परिषद का वार्षिक अहवाल पढ़ा जा चुका है। मुझे इसका अफसोस हुआ। मैंने देखा, तो सारा हाल वृद्ध-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृद्धाओं से खचा-खच भर चुका था। सारा वायु-मण्डल चहचहाट से गूँज उठा था। सामने मध्य की एक कुर्सी पर अध्यक्षा जी विराजमान थीं। उन का तन उनके व्यायाम-विषारद होने की आगाही देता था। उनके बायें और दाहिने दो कुर्सियों पर क्रमशः एक वृद्ध और वृद्धा सुशोभित थे। अध्यक्षा की कुर्सी के सामने एक टेबुल था, उस पर चित्र-विचित्र चित्र-चित्रित मखमली जाजम थी। ठीक मध्य में एक फूलदान पड़ा था।

अध्यक्षा ने अपना हाथ पटका टेबुल पर। फल-दान गिरते-गिरते बच गया। 'शान्ति पकड़ो!'

सब पत्थर पर पानी, गड़बड़ी कुछ भी कम न हुई। सभाध्यक्षा खड़ी हुईं और बोलीं—'अब इस संस्था के प्रमुख लाला लल्लूलाल ललितलाल इस परिषद के ध्येय, उद्देश्य और कार्य-पद्धति पर कुछ प्रकाश डालेंगे।'

बायीं ओर की कुर्सी पर बैठे हुए सज्जन नमस्कार करते हुए खड़े हुये—'मेरी प्यारी सासों और ससुरों में······।' सभा में एक दम कोलाहल मच गया। मैं चौंक पड़ी, देखा तो कितने ही स्त्री-पुरुष खड़े हो गये थे। 'हरामखोर!' एक आवाज आई।

'साला बदमाश है, लफङ्गा है!' दूसरी आवाज आयी—

'क्या हम सबने अपनी लड़कियां इस प्रमुख के बच्चे के साथ ब्याही हैं, जो हम सबको सास और ससुर कह कर बुलाता है? कमीना कहीं का!' एक साथ बीसों आवाजें आयीं।

'मारो-मारो!' एक आवाज आयी। कुछ खड़े हो गये। परिस्थिति एक दम बिगड़ गयी थी। प्रमुख साहब का चेहरा तो ऐसा हो गया था मानो उन्हें जबर्दस्ती सेर भर अण्डी का तेल पिला दिया गया हो। अध्यक्षा ने क्रोध में हाथ पटके टेबुल पर। गुलदान गिर पड़ा नीचे, लेकिन टूटा नहीं। 'शान्ति पकड़ो, शान्ति पकड़ो! उनसे बोलने में भूल हो गई आप उन्हें क्षमा प्रदान कर दें।' अध्यक्षा बोलीं।

मुझे अचानक मेरी एक गुजराती सहेली की बात याद हो आयी। उसने कहा था कि श्रोता-गण तीन प्रकार के होते हैं। पहिला प्रकार जो कि वास्तव में सुनने के लिये ही आता है और वे लोग वास्तविक श्रोता होते हैं। दूसरा प्रकार है सरोता का, सरोता माने कैंची। ये लोग कैंची लेकर ही सुनने के लिये आते हैं और उससे वक्ता के भाषण को काटने का कार्य करते हैं। तीसरा प्रकार है 'सोता' का जो प्रारम्भ से आखिर तक निद्रा देवी की गोद में आराम फरमाते हैं। यहाँ तीनों प्रकार के श्रोता-गणों की उपस्थिति थी। मेरी पड़ोस वाली बुढ़िया अचानक कोलाहल होने से जाग गयी थी, और इधर-उधर भौचक्की-सी देखने लगी थीं।

अध्यक्षा का हाथ पटकना बिलकुल निरर्थक न गया। यद्यपि कोलाहल अब भी कम न हुआ था, फिर भी सभी बैठते जा रहे थे। प्रमुख ने फिर अपना भाषण चालू किया—'मुझे क्षमा कर दें। मैं आपका क्षमाप्रार्थी हूँ, मुझसे प्रमाद-वश भूल हो गयी।'

'जाओ कर दिया!' एक आवाज आयी। सारा हाल हँसी से गूँज उठा। उन्होंने फिर बोलना शुरू किया—'सज्जनों और माताओ! इस संस्था का जन्म आज से एक वर्ष पूर्व ही हुआ था और इतने अल्प समय में इस संस्था ने जो प्रगति की है, वह भारत के सास-ससुरों से अविदित नहीं। एक समय था कि जब भारत की कुलवधुएँ सास का खिलाया खाना खाती थीं और सास का पिलाया पानी पीती थीं। सास-ससुरों की आज्ञा का अक्षरशः पालन होता था और यहाँ तक की वे गृहलक्ष्मियां अपने सास-ससुरों की सेवा-चाकरी सत्यांतः करण पूर्वक करने में अपने वधू होने का साफल्य और स्त्री-जन्म को सार्थक मानती थीं। कहने का मतलब कि वे केवल सास-ससुर का एक खिलौना मात्र थीं।'

'किन्तु सदुःख कहना पड़ता है, कि आज की हमारी वे कुल ललनाएँ बिलकुल बदल गयी हैं। परन्तु वास्तव में हमारे भोलेपन और हमारी असा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वधानी ने उन लोगों को बदल जाने का मौका दिया दिया है। अभी 'युग धर्म' के किसी अङ्क में छपा था कि किसी गांव में बहू के कारण एक सास ने आत्म-हत्या कर ली। बताइये भला यह किस्सा काहे की आगाही देता है ?

हमारे लिए यह कितने शर्म की बात है, लज्जा की बात है। क्या आपने किसी बिल्ली को कुत्ते को मारते देखा है? किन्तु आज वही हो रहा है। आज एक बहू अपनी सास को अपने अधिकार में रखती है। आप कहेंगे, यह सब दोष उन बहुओं का है, किन्तु मैं यह कदापि स्वीकार न करूँगा। यह सब दोष हमारा है, हमारी भोली-भाली सासों की असावधानी का है। आज-कल की हमारी सासें उन की सासों द्वारा दिये गये उत्तराधिकार का बराबर उपयोग न कर बहुओं के प्रति रहमदिली दिखाने लगीं और फलस्वरूप उन लोगों द्वारा इस थोड़ी-सी सहानुभूति और दया का नाजायज फायदा उठाया गया है।'

'जिस कुल दीपक का लालन-पालन मां अपने तन और मन से करती हैं। बाप अपना खून-पसीना एक कर कमा कर लाता है। उसका भरण-पोषण करता है, पढ़ाता है। उसी दिल के टुकड़े को बहू आते ही मां-बाप से छीन लेती है। यह कितना अन्याय है। खास कर सौराष्ट्र महाराष्ट्र आदि प्रांतों में ऐसा अक्सर देखा जाता है। घर में सास को अकेली छोड़ कर आज की बहुएँ घूमने जाया करती हैं, सिनेमा देखने के लिये जाया करती हैं! और हमारी सासें चुप हैं। अरे यहाँ तक भी देखा गया है कि महाराष्ट्र के कई शहरों में तो, उदाहरण के लिये पूना, वे गैर-मर्दों के साथ टहलने जाया करती हैं, अपने पतिदेव को घर छोड़ कर! यह सब दोष हमारी सासों का है। उन्होंने अपनी बागडोर ढीली छोड़ दी है, इसका यह नतीजा है। अब तो यह सब अधमता की पराकाष्ठा हो गयी। अब हमारी सासों को जागृत करना नितान्त आवश्यक हो गया है। उनके दिलों में श्वश्रू-कर्तव्य जो कि हमारी पूर्व की सासें पालन करती थीं, ज्योति पुनः प्रदीप्त करना अनिवार्य हो गया है। और इसके लिए हम में संगठन होना जरूरी है। संगठन ही कार्य साधना का एक मात्र उपाय है और इसी हेतु इस परिषद का जन्म हुआ है। बहुओं द्वारा हमारे सास-ससुरों पर गुजारे जाने वाले जुल्मोसितम के प्रति विद्रोह, यह इस संस्था का उद्देश्य है। घर-घर जाकर हर एक सासों से मिलना, उनको उनके कर्तव्य की याद दिलाना यह हमारी कार्य पद्धति है। आज तक हमारी इस संस्था के सौ कार्यकर्ता हैं, जो भिन्न-भिन्न प्रांतों में जाकर अपना कार्य निस्वार्थ कर रहे हैं। आशा है आप सब लोग भी इस संस्था की तन-मन और धन से सेवा करेंगे। अच्छा तो अब बहुत हो चुका, अतः मैं अब आपसे बैठ जाने की आज्ञा लेता हूँ।' और वे अपनी कुर्सी पर बैठ गये। सारा हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। इतने जोर की तालियां मैंने पहले कभी नहीं सुनी थीं।

ऐसा मानने के लिए भी मेरा मन तैयार नहीं था कि श्रोताओं को प्रमुख का प्रवचन बेहद पसन्द आया हो; क्योंकि मेरे आस-पास की लगभग सभी वृद्धाएँ काना-फूसी करने में ही सारा समय निमग्न रहीं। तो क्या जोर की तालियां सुन्दर वक्तृत्व की सूचना है? मैंने सोचा, प्रायः श्रोतागण जोर से तालियां इसीलिये बजाते हैं कि उन्हें वक्ता की बकवास से छुटकारा मिला। पड़ोस वाली बुढ़िया तालियों की आवाज से पुनः जग गयी थी।

'अब हमारी मारवाड़ की प्रतिनिधि श्रीमती रतनबाई रतलाम वाली आपसे दो शब्द कहेंगी।' अध्यक्षा बोलीं। एक चश्माधारी वृद्धा ने टेबुल के पास खड़ी होकर बोलना प्रारम्भ किया—'बहनों और भाइयों! प्रमुख श्री ने अपने लम्बे भाषण में हमारी कुल वधुओं द्वारा हम लोगों के प्रति जो अत्याचार हो रहे हैं, उनके जो उदाहरण दिये हैं वास्तव में हमारे लिये लज्जा-जनक है। किन्तु मुझे अपने मारवाड़ पर नाज है क्योंकि वहाँ की आधु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निक बहुओं में और पुराने काल की बहुओं में अभी तक कोई खास अन्तर नहीं हुआ। आज भी मारवाड़ की बहुयें सास की आज्ञा के बिना कदम नहीं उठा सकतीं। प्रमुख श्री के कथनानुसार पूना में वे गैर मर्द के साथ टहलने जा सकती हैं; किन्तु हमारे देश में उनको दरवाजे के बाहर कदम रखने का हुक्म नहीं है। मुझे यहाँ यह देख कर अत्यन्त दुःख हुआ कि खैर यहाँ की बहुओं ने घूँघट को तो तिलांजली दे ही दी है, किन्तु यहाँ तक कि वे बीच बाजार से बिना सिर पर ओढ़े गुजर जाती हैं। हमारे मारवाड़ में तो उनको अगर आंगन में कुत्ता भी बैठा हो तो उसका भी घूँघट निकालने पर विवश किया जाता है। मैं तो यही कहती हूँ कि भारत के प्रत्येक प्रांत की सासों को मारवाड़ की सासों का आदर्श दृष्टि समक्ष रख कर अपनी बहुओं को मारवाड़ की-सी बहुएँ बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।' ऐसा कह कर वे अपने स्थान पर चली गयीं।

फिर एक बार भवन तालियों की धड़धड़ाहट से गूँज उठा। अध्यक्षा खड़ी होकर बोलीं—'अब आप हमारी सौराष्ट्र की प्रतिनिधि श्रीमती भागी बहन का भाषण सुन सकेंगे।'

'बकिये, बकिये! आप क्या बकना चाहती हैं?' एक आवाज आयी। एक कहकहा मच गया। वे बोलीं—'मैं कुछ यहाँ प्रमुख साहब की तरह बकने नहीं आयी हूँ···! मैं कहती हूँ प्रमुख साहब ने जो सौराष्ट्र का उदाहरणार्थ लिया है, उनकी बिलकुल अज्ञानता है। सौराष्ट्र की सासें कोई मारवाड़ की सासों से कम नहीं हैं। मैं अपने ही घर का उदाहरण देती हूँ। मेरे घर में चार बहुएँ हैं। मैं सबको अपने इशारों पर नचाती हूँ। एक दिन मैं बाजार से घर लौट रही थी, तब वहाँ पर मुझे एक मेरी पहचान वाली औरत मिली। उसने मुझे बताया कि वह बेसन माँगने के लिए मेरे घर गयी थी। वहाँ मेरी छोटी बहू ने उससे यह कह दिया था कि घर में बेसन नहीं है। यद्यपि मुझे यह पता था कि मेरे घर में बेसन नहीं है, मैं उसे अपने साथ फिर घर ले आयी। फिर घर पहुँच कर मैंने स्वयम् अपने मुख से कहा कि मेरे घर में बेसन नहीं है। फिर उसी दिन मैंने अपनी छोटी बहू को लड़के के हाथ से अच्छी तरह पिटवाया, इस कारण कि क्यों उसने मेरी आज्ञा के बिना उस औरत से कहा था कि घर में बेसन नहीं है। मारवाड़ की सासों से हम सौराष्ट्र की सासें कम नहीं हैं, किसी भी हालत में यह सिद्ध करने के लिए क्या मेरे घर का यह उदाहरण काफी नहीं है?'

'काफी क्या चाय भी है! मेहरबानी कर अब आप बैठ जाइये।' एक आवाज आयी। पुनः कहकहा मच गया। अध्यक्षा ने अपना हाथ पटका टेबुल पर दूसरे हाथ से गुलदान पकड़ कर।

'अब मैं आपसे बैठ जाने की इजाजत लेती हूँ।' ऐसा कह कर वे चली गयीं। अध्यक्षा खड़ी हुईं— 'श्रीमती अचला देवी चटर्जी हमारी बङ्गाल की प्रतिनिधि आपसे कुछ कहेंगी।'

एक पतली लम्बी स्त्री टेबुल के पास आकर बोलने लगीं–'आप विश्वास करें या न करें, केवल कदाचित् मारवाड़ ही हमारे प्रांत से बढ़ सकता है, शेष अन्य सभी प्रान्तों से हमारा बङ्गाल ही बढ़ कर है। मेरे इकलौते बेटे के लिये मैं तीसरी बहू घर में लायी हूँ। पहली दो बहुओं में से एक तो जल कर मर गई और दूसरी कुएँ में गिर कर। अन्य प्रान्तों में तो विधवा-विवाह, विवाह-विच्छेद आदि चालू भी हो गया है, लेकिन हमारा प्रान्त प्रायः इससे अलिप्त ही रह पाया है। मैं मानती हूँ कि यहाँ के कलकत्ता आदि जैसे शहरों की सासों ने अपनी लगाम ढीली छोड़ी है। और पुनर्विवाह आदि होने लगे हैं। किन्तु इसे शीघ्र ही रोका जायगा। हम कुछ सासों ने रोकने का बीड़ा उठाया है। अच्छा तो अब नमस्ते! मैं आपका अधिक समय बिगाड़ना नहीं चाहती।'

वे अपने स्थान पर चली गयीं अपना भाषण समाप्त करके। सभा में अब कुछ कोलाहल बढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। ऐसा लगता था कि अब सभी के धीरज का अन्त आ गया है। पहले तो मुझे ऐसा विचार आया था कि इन अनपढ़ सासों में इतनी वक्तृत्व-शक्ति कहाँ से आ गयी? फिर आप ही आप समझ गया कि घर में बहुओं के समक्ष दी गई लेक्चर-बाजी के कारण ही इन लोगों की प्रवचन-शक्ति का इतना विकास हुआ है।

अध्यक्षा खड़ी होकर बोली--'अब आप हमारी बिहार की...।' मुझे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि वे अचानक पुतले की तरह स्थिर क्यों हो गयीं? मुँह में से पूरा शब्द भी न निकलने पाया था और आँखें सामने के दरवाजे पर स्थिर हो गयी थीं...।

'ऐ रांड! द्वार पर खड़ी हुई एक बुढ़िया गरजी, तू यहाँ मरी है! चुड़ैल! मुझसे कह कर गयी कि मैं संडास जा रही हूँ और तू यहाँ कुर्सी पर आ डटी है!! ठहर, जरा तू भाग कर कहाँ जायगी मेरे हाथ से......।'

मैंने चकित होकर देखा तो अध्यक्षा कुर्सी छोड़ कर नीचे बैठी हुई स्त्रियों को पैर तले कुचलती हुई दरवाजे की ओर भाग रही थीं। सारी सभा में हाहाकार मच गया। मैंने भी अब यहाँ अधिक ठहरना मुनासिब न समझा और वेग से घर की ओर डग भरने लगी।

? प्रश्न-पिटारी ?

पुनः प्रयत्न कीजिये

प्रश्न—मैं सत्रह वर्ष की थी, जब मेरा विवाह हुआ था। ससुराल आई तो पति ने मेरा बड़ा तिरस्कार किया। कहा, यह सुन्दर नहीं है और घर से चले गये। फिर तभी घर लौटे जब मैं मायके चली आई। साल भर बाद सुना कि उन्होंने दूसरा विवाह कर लिया है। मेरी ओर से गुजारे का मुकदमा चलाया गया और परिणाम स्वरूप मुझे अब तक १०) रुपया महीना मिल रहा है। इस घटना को १० वर्ष हो गये। अब सुना कि उनकी द्वितीय पत्नी दो छोटे बच्चों को छोड़ कर स्वर्गवासिनी हो गई हैं। इस दुःख में मैं उनकी कुछ सहायता करना चाहती हूँ पर किस प्रकार करूँ?

उत्तर—क्या यह सम्भव हो सकता है कि आप के पिता या आपकी ओर से कोई अन्य व्यक्ति उनसे मिले और आपकी मनस्थिति से उन्हें अवगत करावे। उन्होंने कम से कम दूसरा विवाह करके यह तो देख ही लिया होगा कि सुन्दरता स्थायी वस्तु नहीं है। साथ ही अपने धैर्य से जो कुछ सहा है उसके कारण उन पर आपका कुछ प्रभाव तो होगा ही। सम्भवतः इस समय वे भी वैसे ही अकेलेपन का अनुभव कर रहे होंगे जैसे कि आप कर रही हैं, सो हमारी राय तो यह है कि आप एक बार पुनः प्रयत्न करें।

बच्चे का दूध फेंकना

प्रश्न—मेरा बच्चा अक्सर दूध पीते ही उसे फेंक देता है या कय कर देता है। क्या करूँ?

उत्तर—यह इस बात का सुबूत है कि आवश्यकता से अधिक दूध उसको मिल रहा है और वह अपच का शिकार है। यह भी हो सकता है कि आपका दुग्ध अधिक पुष्ट है और वह उसे पचा नहीं सकता। या यह कि एक श्वांस में ही वह सारा दूध पी लेता है। इसका उपाय यही है कि बच्चे को दूध कम पिलाया जाय, पिलाते समय रह-रह कर, छाती उसके मुँह से अलग कर ली जाय और चार-चार घंटे के बजाय, दो एक दिन दूध पिलाने का समय और भी बढ़ा दिया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झगड़े का निपटारा

पारिवारिक कहानी

लेखिका, कुमारी सुशीला कुमारी

[१]

'संसार के आलसी और भुलक्कड़ व्यक्तियों में तुम भी अपना एक विशेष स्थान रखती हो। क्या तुम्हें यह नहीं मालूम था कि वह समाचार आवश्यक था। इसीलिए मैंने तुम से उसे उतारने के लिए कहा था। लेकिन नहीं···तुमने तो कहा कि मेरी याददास्त बहुत मजबूत है अब बताओ नीलू कहाँ गई तुम्हारी वह...!'

बेचारी नीलिमा सहमी बिल्ली की तरह रमेश के इस गुस्से पर दौड़ी-दौड़ी अपने शृङ्गारदान के पास गई परन्तु वहाँ भी उसे समाचार न मिला। यह ठीक था कि उसने कहीं मोड़ कर के रख दिया है परन्तु अब इस वक्त उसे याद न रहा। उसने सुना अब भी रमेश उसी तरह बड़बड़ा रहा था लेकिन थोड़ी देर में वह थक गया और नीलिमा भी डर के मारे चुप रही।

उसने रमेश की ओर देखा तो अब वह शान्त हो चुका था। और कुर्सी पर बैठा आराम कर रहा था। उसके मुख पर विषाद की गहरी रेखायें झलक रही थीं।

'मैं बहुत लज्जित हूँ मुन्नू के पापा, मुन्नू ने आज न जाने कहाँ से चोट लगा ली है और उसके साथ मुझे जरा डाक्टर के यहाँ जाना है। मुझे याद है कि मैंने उस समाचार को लिखा है और कहीं रख दिया है, मुझे आशा है कि मैं उसे ढूँढ़ दूँगी।' नीलम ने व्यथित होकर रमेश से कहा।

रमेश ने कोई जवाब न दिया और नीलिमा चुपचाप लौट गई। जैसे ही वह पीछे मुड़ी कि रमेश ने उसका हाथ पकड़ लिया। रमेश के मुख पर से गुस्सा काफूर हो चुका था रमेश ने देखा नीलिमा के हाथ में 'परियों की रानी' किताब थी। निश्चय ही अपने भोलेपन से वह अपने को उस समय परियों की रानी महसूस कर रही थी क्योंकि उसके तीनों बच्चे उसके पास खड़े होकर बरबस यह आग्रह कर रहे थे कि वह उन्हें कहानी सुनाये।

उसने रमेश से अपना हाथ छुड़ा लिया और बच्चों में उलझ गई जिनमें से एक तो सो रहा था और दो अपने गुलाबी गालों से माँ से अठखेलियां कर रहे थे। नीलिमा ने उनको बहुत प्यार किया और अन्त में थपकियाँ देकर सुला दिया।

[२]

बच्चों के सो जाने पर उसकी अन्तर वेदना ने उसे यह सोचने पर बाध्य किया कि निश्चय ही वह रमेश के लिए उपयुक्त पत्नी नहीं है। वह बहुत कम कार्यों में रमेश को सहयोग देती है और यदि 'वह'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकाकी रहता तो शायद ज्यादा प्रसन्नता में रहता उसे लगा कि वह सबों को छोड़ कर अपने मायके चली जाये, परन्तु ममता उसे बाध्य कर देती और वह फिर जकड़ी रहती उसी बन्धन में।

× × ×

'अम्मा! मैंने कहा न कि मेरा फ्राक फटा है।'

मंजू ने धीरे से कहा—'क्या तुम बहरी हो अम्मा।'

उसने मंजू को चुप कराया और उसे दूसरा नया फ्राक दिया, परन्तु जब वह ऊपर गई तो देखा अभी तक रमेश छोटी बच्ची के साथ सो रहा था।

वह खिड़की पर खड़ी हो गई। दूर क्षितिज तक उसे धुँधली रेखा दिखाई पड़ी। बादलों में छिपा सूर्य अपनी किरणें धीरे-धीरे ऊपर फेंक रहा था और सारा शहर प्रकाश से पूर्ण हो गया था।

वह नीचे गई, नहाया और मंजू को भी नहलाया। आज उसने गुलाबी धोती पहनी थी। उसे यह धोती न जाने क्यों बहुत पसन्द आती थी लेकिन यह धोने से फट गई थी और वह उसे बदलना चाहती थी। वह इन्हीं विचारों में डूबती-उतराती रमेश को जगाने चली गई कि स्नान के लिये पानी गर्म है।

छोटी बच्ची जग गई थी और मुँह में अँगुली डाल कर चूस रही थी। साथ ही साथ अपने हाथ-पैर भी पटकती जाती थी। बच्ची बहुत सुन्दर थी और नीलिमा को उस पर गर्व था।

नीलिमा उठी और पास में रखे शृङ्गारदान के सामने खड़ी होकर अपने बाल सँवारे तत्पश्चात् अपने सजाये कमरे को देखने लगी। निश्चय ही वह कमरा बहुत अच्छी तरह सजा था।

[३]

रमेश एक बजे दफ्तर से लौटता था और उसी समय नीलिमा भोजन तैय्यार रखती थी। रमेश आज देर से लौटा। अतः नीलिमा उसकी बाट देखती रही। दोनों खाना खाने बैठे। नीलिमा ने बच्चों को खाना खिला कर सुला दिया था।

'नीलिमा! आज भोजन बड़ा स्वादिष्ट बना है।' रमेश ने मुस्कराते हुए कहा।

नीलिमा के मुख मण्डल पर हँसी आ गई। भला किसे अपनी प्रशंसा पर गर्व न होता। किन्तु दोनों खा भी न पाये थे कि किसी ने दरवाजा खटखटाया।

नीलिमा ने रमेश से कहा—'आप खाइये मैं जाती हूँ खोलने।' यह कह कर नीलिमा चली गई। दरवाजा खोला तो नीलिमा के चेहरे का रङ्ग फक हो गया। उसने देखा, उसका बचपन का साथी राकेश था। परन्तु उसने अपने को हताश न होने दिया। और कहा आइये बैठिये, मैं उनको भेजती हूँ यह कह कर नीलिमा चौके की ओर चली गयी। रमेश से उसने बताया और अन्त में रमेश वहाँ पहुँचा।

'कहिए कैसे आये।' रमेश ने पूछा।

'मैं जरा इलाहाबाद जा रहा हूँ, रास्ते में आप का मकान पड़ता था मैंने कहा चलो जरा नीलिमा से भी मिल लूँ इसीलिए आपको कष्ट दिया, राकेश ने कहा।

'अरे नीलू! खाना आपके लिये भी लाओ?' रमेश ने कहा।

'अच्छा आई।'

नीलिमा ने पानी दिया। राकेश ने हाथ-मुँह धोया और नीलिमा ने थाली सामने कर दी।

नीलिमा के स्मृति पटल पर एक-एक करके बीती बातें छा गयीं।

नीलिमा को कभी तो राकेश के ऊपर बुरी तरह गुस्सा आता था परन्तु कभी-कभी उसे प्यार भी आता था। उसे अपने जीवन की पिछली बातें याद आने लगीं। उसकी विचार मुद्रा को राकेश ने ही आखीर में भग्न किया। उसने नीलिमा की ओर देखा। कितनी दुबली हो गई है।

'तुम तो बहुत बदल गई हो नीलिमा! परन्तु फिर भी तुम बड़ी उत्साही हो अभी तक तुम्हारा उत्साह नहीं गया।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीलिमा को हँसी आ गयी। उसने राकेश से कहा—'देखो ये तीनों तुम्हारे सामने ही खड़े हैं।'

नीलिमा ने माँ-बाप का हाल पूछा और शीला के बारे में पूछा। फिर नीलिमा आश्चर्य में बोली—

'तुम यहाँ आ कैसे गये? कहाँ जा रहे हो?'

'मैं तो इलाहाबाद में नौकरी करने जा रहा था रास्ते में तुम्हारा घर पड़ता था। सोचा, तुम से मिलते चलें? ठहरने का इरादा तो नहीं था परन्तु फिर भी रमेश का आग्रह नहीं टाल सका?'...

'हाँ! नीलिमा तुम तो सुखी हो परन्तु मैं शीला को देखता हूँ तो दुख होता है।'

छोटी बच्ची रोने लगी और नीलिमा ने उसे मंजू की गोद से लेकर चुमकारना शुरू किया। राकेश ने बच्ची को चुमकार-पुचकार कर शान्त किया।

प्रातः ही राकेश न जाने कितने उपहार इन छोटे बच्चों के लिए लाया। साथ ही वह नीलिमा के लिए भी एक अच्छी-सी साड़ी लाया। परन्तु नीलिमा ने उसे न जाने क्या सोचकर अस्वीकार कर दिया। उसने नीलिमा के जीवन की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा नीलिमा को इतना भाग्यवान पति पाने पर बधाई दी और कहा—

'नीलिमा निश्चय ही अब तुम बिलकुल परिवर्तित हो गई हो। परन्तु फिर भी तुम अब बहुत सुन्दर लगती हो। तुमने तीन रत्नों को अपने घर में पाला है और इतना भाग्यशाली पति पाया।' नीलिमा ने राकेश के प्रति कुछ विशेष ध्यान न दिया। परन्तु फिर भी राकेश प्रशंसा के पुल बांध रहा था।

[४]

राकेश ने नीलिमा के साथ पिकनिक का आयोजन किया। नीलिमा राकेश के इस आग्रह को टाल न सकी और शाम को नीलिमा अपने दोनों बच्चों को रमेश के पास छोड़ कर चल दी। उसने बच्चों को लाख बार मना किया था कि वह पापा के पूछने पर न बतायेंगे कि अम्मा कहाँ गई है। परन्तु बच्चे तो बच्चे हैं। भरी समाज में ही बच्चों को चिल्लाने से कौन रोक सकता है। बड़ी लड़की ने अपने पापा से बता दिया कि अम्मा आज राकेश मामा के संग घूमने गयी हैं। बच्चे राकेश को मामा ही कहते थे।

रमेश ने अपने मन को शान्त कर लिया। परन्तु फिर भी उससे रहा न गया। रमेश ने फिर अपने को संयमी रखा क्योंकि राकेश का आज आखिरी दिन था और कल ही उसे अपने नौकरी पर जाना था क्योंकि देर बहुत हो गई थी।

राकेश चला गया! परन्तु रमेश उससे खुल कर कुछ कह न सका। उसके चले जाने के पश्चात् उसने नीलिमा को बुलाया। नीलिमा बेचारी कांप गई न जाने आज उसे क्यों भय लग रहा था। भय और लज्जा से वह दबी जा रही थी। उसने यही सोचा, अच्छा होता यदि वह राकेश के साथ घूमने न जाती। परन्तु फिर भी वह इस भय से कि रमेश कहीं नाराज हुये तो और शामत आयेगी चल दी।

रमेश ने चट उसे देखते ही कहा—'क्यों नीलू आज तो तुम्हें कोई दोस्त घूमने के लिये लिवाने न आयेंगे।'

'आप कैसी बातें कर रहे हैं, नीलिमा ने डरते हुये कहा।'

रमेश ने उसे पास बुला कर कहा—'देख नीलू! मुझे तो ऐसा लग रहा था कि उसका झुकाव तेरी ओर है। मैं तुझे बहुत प्यार करता हूँ और मुझे ऐसा गुस्सा लग रहा था कि मैं उसे मार डालता परन्तु न जाने क्या सोचकर शान्त रह गया।'

'जैसे आप मुझे प्यार करते हैं—वैसे इस संसार में आप ही एक मनुष्य हैं जिसे मैंने प्यार किया है, आपको ऐसी बहकी-बहकी बातें नहीं करनी चाहिये।'

रमेश के मुख पर मुस्कराहट आ गई, नीलिमा हँस दी और चल दी उस छोटी बच्ची को गोद में लेकर। रमेश ने लड़के को गोद में लिया और नीलिमा से कहा—'चलो नीलू आज कोई चल चित्र देख आया जाय।'

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध-विषय

गृहिणी-गोष्ठी

आज कल देश में जिधर देखिये उधर ही एक नयी संस्था खुल रही है। लो मैंने भी गृहिणी-गोष्ठी नाम की एक संस्था खोली है। इसकी बैठकें महीने में एक बार अन्तिम रविवार को होती हैं। समय है—दिन में दो बजे से ४ बजे तक। पहली गोष्ठी का विवरण दे रही हूँ।

रविवार ३० मई

माता जी ने स्वर्गीय रवीन्द्रनाथ ठाकुर का यह भजन गाया—

यदि तोर डाक सुने केऊ न आसे तबे
एकला चलो रे,
एकला चलो एकला चलो एकला चलो रे!

यह भजन सस्ता साहित्य मण्डल द्वारा प्रकाशित गांधी डायरी सन् १९५२ में छपा है। भजन काफी बड़ा है पर मैं इतना ही दे रही हूँ।

माता जी ने यह डायरी सन् १९५१ के अन्त में खरीदी थी। आज ३० मई सन् ५४ है पर डायरी कोरी की कोरी है। मैंने पूछा माता जी आपने इसमें कुछ लिखा नहीं तो बोलीं—'डायरी निजी चीज होती है और फिर स्त्री की डायरी! किसी के हाथ पड़ जाय तो? सो मैंने इसे कोरी की कोरी रहने दिया है।'

'तब इससे लाभ क्या हुआ?'

माता जी बोलीं—'इस डायरी में हर तिथि के पन्ने में गांधी जी का एक विचार छापा गया है। मेरा खयाल है कि एक दिन पढ़ने के लिये एक विचार काफी है। गांधी जी के ये विचार अमूल्य हैं और अमर हैं। सो यह डायरी भी अमर है। इसे मैं एक धर्म ग्रन्थ के तौर पर इस्तेमाल करती हूँ। लो गांधी जी का विचार सुनो।'

माता जी ने पढ़ कर सुनाया—'खलबली के बिना जीवन बहुत नीरस चीज बन जायगा।...इसलिये जीवन की विषमताएँ सह लेने में ही समझदारी है।'

आज की गोष्ठी में कोई आयी नहीं थीं। बस माता जी थीं और मैं थी। शायद इसी से दुःखी हो कर माता जी ने श्री रवीन्द्रनाथ का भजन गाया था। गांधी जी का विचार भी उनकी मनोस्थिति के अनुकूल था।

मैंने रामायण का पाठ किया और ठीक ४ बजे गोष्ठी समाप्त की।

महिलाओं के लिये स्नातकोत्तर चिकित्सा सम्बन्धी प्रशिक्षण

उत्तर प्रदेश सरकार की एक योजना के अनुसार महिला मेडिकल अफसरों के लिये आगरे के लेडी लायल एण्ड डफरिन अस्पताल में एक स्नातकोत्तर प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किया जा रहा है।

सरकार का विचार है कि इस राज्य में महिला डाक्टरों द्वारा महिलाओं को चिकित्सा की सुविधाएँ पहुँचाने के कार्य में प्रसार हो जाने के कारण यह आवश्यक हो गया है कि महिला अधिकारियों को प्रसव विज्ञान तथा स्त्री रोग विज्ञान के स्नातकोत्तर कोर्स के अध्ययन का अवसर प्रदान किया जाय ताकि उन्हें इन विषयों में हाल में ही हुई नयी खोजों तथा अन्वेषण कार्य की जानकारी प्राप्त हो सके और साथ ही साथ उन्हें चिकित्सालय के प्रशासन, स्टाक रखने तथा एन्टीनेटल, पोस्ट नेटल तथा परिवार नियोजन केन्द्रों को चलाने की व्यवहारिक ट्रेनिंग मिल जाय।

आगरे का लेडी लायल एण्ड डफरिन अस्पताल उत्तर प्रदेश का महिलाओं का सबसे बड़ा अस्पताल है और इसमें २०० रोग शय्या हैं। उक्त स्नातकोत्तर प्रशिक्षण की योजना इसी अस्पताल में चालू की जायगी जिसके अधीन महिला मेडिकल अफसरों को ६-६ की टोलियों में ६ मास की ट्रेनिंग दी जायगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और इस प्रकार वर्ष भर में १२ महिला डाक्टरों को ट्रेनिंग मिल जायगी।

इस योजना के हेतु लेडी लायल एण्ड डफरिन अस्पताल में ३८ शय्याओं के अलावा एक जच्चा-बच्चा वार्ड का निर्माण किया जायगा जिसमें एक प्रसव कराने का कमरा, एक जनरल वार्ड, डाक्टर का कमरा, विश्राम गृह, एक ड्रेसिंग रूम, एक परीक्षा रूम तथा एक आपरेशन थियेटर होगा।

महिला अधिकारियों की पोशाक

१—औपचारिक तथा समारोह के अवसर पर एक सीधी-सादी गम्भीर रङ्ग की साड़ी जिसमें साधारण ढङ्ग का किनारा हो सकता है।

२—सायंकालीन प्रीति भोजों तथा अन्य अवसरों पर साड़ी या सलवार कमीज और दुपट्टा।

३—कार्यालय की पोशाक बिना किनारे की या साधारण किनारे की प्लेन सूती या सिल्क की साड़ी या सलवार, कमीज और दुपट्टा या स्कर्ट और ब्लाउज जिनकी वह पोशाक है।

उपर्युक्त कपड़ों का रङ्ग और डिजाइन बहुत अधिक भड़कीला न होना चाहिए। कार्यालय में पहनी जाने वाली साड़ियों और ब्लाउज के रङ्ग गम्भीर रङ्ग के होने चाहिए और ब्लाउजों की लम्बाई पूरी होनी चाहिए। सलवार कमीज स्कर्ट और ब्लाउजों के सम्बन्ध में भी इन्हीं बातों का ध्यान रखना चाहिए। इनका कपड़ा स्वदेशी होना चाहिए और यदि सम्भव हो सके तो हाथ का कता और बुना होना चाहिए।

शिक्षित महिलाओं से अपील

हमारे यहाँ एक कन्या पाठशाला है। उसमें वर्तमान समय में लगभग १७० बालिकाएँ शिक्षा पा रही हैं। किन्तु दुःख इस बात का है कि सुयोग्य शिक्षिकाओं के बिना उनकी शिक्षा अधूरी रहती है। अतः मैं आशा करता हूँ कि इस कार्य में हाथ बटाने के लिये शिक्षित महिलाएँ कम से कम २-४ यहाँ आने को तैयार होंगी। उनकी प्रत्येक सुविधा का ध्यान रखा जायगा। आशा है इस क्षेत्र में संलग्न बहनें मेरे पास पत्र भेज कर अपनी उदारता का परिचय देंगी। निवेदक—

हरिप्रसाद फोगला मन्त्री

श्री कन्या पाठशाला, तिनसुकिया, आसाम

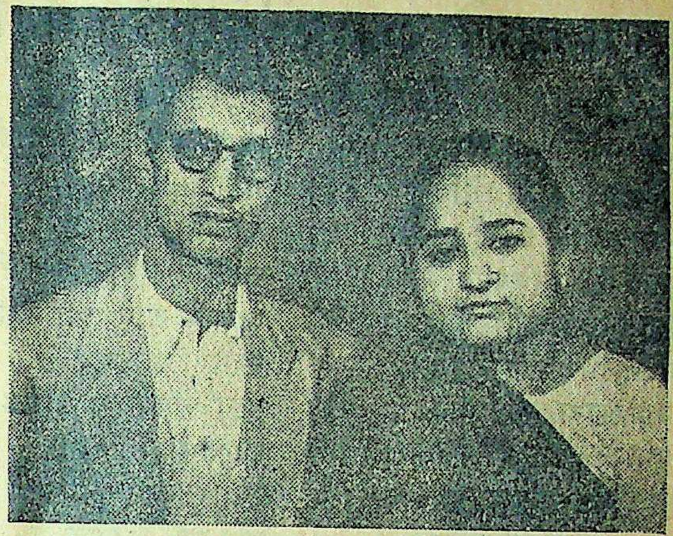

शुभ विवाह

'काशी निवासी श्री बृजरतनदास छबीलदास नागर बी० काम का शुभ विवाह बांदा में 'दीदी' की संरक्षिका कुमारी सरला देवी मेहता सुपुत्री श्री लक्ष्मणकरण वि० मेहता, एडवोकेट, बाँदा (उ० प्र०) के साथ सुचारु रूप से सम्पन्न हुआ।'

निजाम की कैद में २०० कुमारियाँ

निजाम हैदराबाद के शाही महल में विवाह के योग्य दो सौ युवतियां नजरबन्दी की हालत में रह रही हैं। इस आशय का एक प्रार्थना-पत्र श्री बी० जी० केसकर नामक एक वकील ने सिकन्दराबाद के जिलाधीश को दिया है। मालूम हुआ है कि जिलाधीश ने पुलिस कमिश्नर को मामले की जाँच करने की आज्ञा दे दी है। वकील ने अपनी दरख्वास्त में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुपया कमाने का ढङ्ग सिखाने वाली हिन्दी भाषा की प्रसिद्ध पुस्तकें

कटाई सिलाई शिक्षा—हर प्रकार के नये-नये फैशनों के कपड़े काटना व सिलाई करना सीखिये ३)	आयल इञ्जन गाइड ६)	रेडियो गाइड ४।।)
एम्ब्रायडरी (कढ़ाई) शिक्षा ४)	क्रूड आयल इञ्जन गाइड ६)	क्रस्टल रेडियो सैट बनाना २)
बुनाई शिक्षा (स्वेटर आदि) ४)	घड़ी साजी शिक्षा ३।।)	वर्कशाप गाइड फिटर ट्रेनिंग ४)
धुलाई ड्राई क्लीनिंग शिक्षा ३।)	फोटोग्राफी शिक्षा ३)	खराद शिक्षा टर्नर गाइड ३)
मोटर मिकेनिक गाइड ६)	सरल हिन्दी इङ्गलिश टीचर २।।)	इलैक्ट्रिक गाइड ६)
साइकिल मरम्मत गाइड ३)	ताश के जादू तथा खेल २।।)	इलैक्ट्रिक वायरिंग ५)
मिमारी शिक्षा (राजगीरी) १०)	वशीकरण मन्त्र विद्या २।।)	बेकरी बिस्कुट आदि बनाना ३।)
गृह उद्योग—लगभग २५० घरेलू उद्योग-धन्धों का वर्णन ४)	वृहद् कोकशास्त्र सचित्र ४)	रंग-बिरंगी आतिशबाजियाँ ३।)
अचार चटनी मुरब्बे बनाना ३।)	पहली सुहाग रात २।।)	आधुनिक साबुन शिक्षा ३।।)
फिल्मी हार्मोनियम गाइड ३)	रति रहस्य (कामकला) ४)	हर प्रकार की स्याहियाँ बनाना ३।)
बूट पालिश बनाना ३।)	पति पत्नी पथ-प्रदर्शक ३)	सरल उर्दू-हिन्दी टीचर २।।)
सुगन्धित तेल व इत्र बनाना ३।)	असली तेजी मन्दी सट्टा ५)	फिल्मी अप्सरा एलबम २।।=)
पुराने छापे का असली इन्द्रजाल ३)	मुँह देखने के शीशे बनाना ३।)	एलोपैथिक डाक्ट्री गाइड ५)
दक्षिण का जादू २।।)	लव लैटर्स (प्रेम के गुप्त पत्र) २।।)	एलोपैथिक इन्जेक्शन बुक ५)
बैट्री विज्ञान (बैट्रियाँ बनाना) २।।)	कारपेंट्री शिक्षा १०)	कम्पाउण्डरी शिक्षा ३।।)
	ज्योतिष शास्त्र ६)	वृहद् बूटी प्रचार (सचित्र) ३)
	पामिस्ट्री (हाथ रेखा ज्ञान) ६)	जर्राही प्रकाश ४।।)
	फिल्म एक्टिंग गाइड २।।)	आयुर्वेदिक चिकित्सा सागर ४।।)

—: प्रत्येक पुस्तक का डाक-व्यय पृथक है :—

पुस्तकें वी० पी० द्वारा मँगवाने का पताः— } काटेज इण्डस्ट्री (DA-6) पी०बी० १२६२ अंगूरी बाग, देहली—६

लिखा है कि निजाम का महल एक प्रकार का जेल है, जिसमें तीन सौ स्त्रियां और एक सौ पुरुष गुलामों की जिन्दगी गुजार रहे हैं। इन स्त्रियों में दो सौ तो विवाह करने लायक हैं। ऐसा कहा जाता है कि ये युवतियां निजाम की दासियों से उत्पन्न पुत्रियां हैं। और किसी भी हालत में विवाह नहीं करने पातीं।

वस्त्रों की धुलाई

ऊनी कपड़ों को धोकर यदि खुरदरे तौलिए पर फैला दिया जाय तो वे सिकुड़ते नहीं! उन्हें बहुत कस कर निचोड़ना भी नहीं चाहिये। इन कपड़ों को यदि गरम पानी में उबाला है तो ठंडा पानी नहीं डालना चाहिये।

१—कपड़ों का मैल निकालने के लिए उन्हें तांबे के बड़े बर्तन में उबालना चाहिए। बर्तन के ऊपरी भाग पर मोटा तौलिया या कम्बल रखना चाहिये, जिससे वह भाप सोख ले, बाहर न निकलने दे।

२—नाजुक लेस के कपड़ों को धोते हुए गरम पानी में सफेद चीनी के दो-चार चम्मच डाल देने चाहिए। इससे कपड़ा कड़ा हो जाता है।

३—बहुत मैले-कुचैले कपड़े धोते हुए पानी में थोड़ा-सा जैतून का तेल मिला दो। इससे मैल बहुत जल्दी छुटकर ऊपर आ जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामाजिक कहानी

उपेक्षिता

लेखिका, श्रीमती अमिताकुमारी बोस

टीणी, वीना, इला, मध्याह्न में ताश खेलने बैठी थीं। करुणा हारी हुई पार्टी को प्रोत्साहन देती थी। पतिदेव दफ्तरों में और घर में स्त्री राज्य। इसी समय बच्चे खेलते हुए आये। एक कहने लगा—'माँ! माँ! दाढ़ी वाला एक ज्योतिषी आया है। सबने देखा, द्वार पर एक बूढ़ा-सा ज्योतिषी खड़ा है। गले में रुद्राक्ष की माला पहने है। हाथ में एक पुस्तक भी लिए खड़ा है।'

अनेक सुन्दर सार्टिफिकेट प्राप्त थे। ज्योतिषी बोला—'अपना भाग्य परीक्षा करके आजमाओ। राजा महाराजा के सार्टिफिकेट मुझे प्राप्त हैं।'

करुणा एक दम बोल उठी—'ना बाबा! अब भाग्य परीक्षा की आवश्यकता नहीं है। आप जा सकते हैं। ज्योतिषी की वाणी सुनने में कौतूहल तो लगता है किन्तु विश्वास और अविश्वास में द्वन्द मच जाता है।'

विवाहिता टीणी बोल उठी—'ना दीदी हाथ दिखाओ ना, देखें तो ज्योतिषी क्या कहता है। साथ में वीना और इला भी आग्रह कर कहने लगीं हमारी भी इच्छा है 'दीदी'।' सबका आग्रह देख कर ज्योतिषी को अन्दर बुलवाया।

ज्योतिषी बरामदे में बैठ गया। वीना बोली—'इला पहले तू अपना हाथ दिखा।' इला बोली—'नहीं टीणी पहले तू दिखा।' टीणी को ज्यादा दिन नहीं हुए शादी को किन्तु उसका पति उच्च शिक्षा के लिये विदेश गया है। टीणी यहाँ जेठ जिठानी के पास घूमने आयी हुई थी। ज्योतिषी ने थोड़ी देर तक हाथ देखा फिर बोला—'तुम्हारा भाग्य अच्छा है। तुम राजरानी बनोगी। पतिदेव बहुत बड़े पद पर होंगे।' इत्यादि! आनन्दित हो टीणी ने ज्योतिषी को १) रुपया दे दिया।

वीना से कहा—'तुम्हारा सन्तान भाग्य बहुत अच्छा है किन्तु उसमें कुछ विपद है शांति पूजा करनी चाहिए।' मुख मलीन हो गया।

इला से कहा—'धर्म में रुचि है। स्वास्थ्य खराब रहेगा। सन्तान जीवित नहीं रहेगी। स्वामी का भाग्य अच्छा है।' यह बातें कर किसी को खुश और किसी को ना खुश कर दिया।

दीदी तुम भी अपना हाथ दिखाओ ना। टीनी कहने लगी। करुणा ने आपत्ति की, मगर किसी ने न सुनी। तरुणी ने आग्रह कर ज्योतिषी के सामने अपनी दीदी का हाथ रख दिया। ज्योतिषी ने गम्भीर भाव से करुणा की ओर देखा। फिर कहने लगा—'आपका भाग्य बहुत खराब-सा है। आपके ऊपर शनिदेव की दृष्टि है। आपको ईश्वर पर विश्वास है, आप जिसकी प्रतीक्षा में हैं उससे आप शीघ्र मिलेंगी।'

करुणा ने अपना हाथ खींच लिया। सबने दक्षिणा देकर ज्योतिषी को विदा किया। सब अपने-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने भाग्य की चर्चा करने लगीं। बीना कह रही थी 'दीदी' ज्योतिषी ऐसा क्या कह गया; जिससे आप उदास हो गयी हैं।

करुणा कुछ देर तक चुप रही। फिर कहने लगी—'बहन मेरी भाग्य कहानी क्या सुनती हो। मेरी तरह कई अभागिन इस प्रकार का जीवन व्यतीत कर रही हैं।'

शैशवकाल से ही मैं मातृहीना हूँ। पिता जी ने दूसरी शादी कर ली। सौतेली मां मुझसे स्नेह नहीं करती थी। उसी के कारण मैं पितृ-स्नेह से भी वञ्चित रह गई। बाल-विधवा बुआ ने मुझे यत्न से पाल-पोश कर बड़ी किया। तेरह वर्ष की उम्र में मेरे पिता मेरी शादी की बात पक्की कर आये। वे मुझे जल्दी से जल्दी अपने संसार से निकाल कर दूर फेकना चाहते थे। मेरे जेठ जी शादी के पूर्व मुझे देखने के लिये पधारे। पड़ोसिन रञ्जा भाभी ने मुझे शृङ्गार कर मेरे दुर्गुणों को छिपा दिया। मेरा काला मुख और भी सुन्दर हो गया। जेठ जी पसन्द कर शादी की बात पक्की कर आशीर्वाद दे चले गये।

शुभ क्षण या अशुभ क्षण शादी हो गयी। शादी के समय दूल्हा से 'शुभ दृष्टि' के समय आँखें चार हुई थीं। वही मेरी प्रथम और शेष दृष्टि थी। शेष रात में विवाह का मुहूर्त था। सम्बन्धी लग्न मण्डप में बैठे रहे। इसी कारण दूल्हा से मैं बातचीत न कर सकी। दूसरे दिन अपना घर छोड़ कर ससुराल रवाना हुई। ससुराल में वधू वरण के समय की याद आकर मुझे अब भी कम्पित कर देती है।

दूर देश से की गई रेल यात्रा और पथ श्रम से म्लान मुख, मैले कपड़े पहने थी। वधू वरण के समय सास ने मेरा घूँघट उठा कर देखा और जोर से चिल्लाने लगी। मर गये! यह कैसी बहू पसन्द की है। सास के कर्कश कण्ठ से मेरा शरीर कांप रहा था। छोटी ननद ने घूँघट उठा कर देखा—'ओ मां, बड़े भैया तो प्रेतनी को व्याह कर ले आये हैं।' कोई दूसरी कहने लगी—'देखो इस समय ऐसा नहीं कहते। वधू बालिका है। उसे वरण कर घर में ले जाओ।' सास मुँह पिचकाती हुई वधू को घर में ले गयी।

स्नान के समय ननद कहने लगी—'माँ जल्दी आओ। भाभी के हाथ पर कैसा दाग है।' सास जल्दी से आ गयी। मेरा शरीर कपड़ों से ढँका था अतः यह दाग किसी को भी दिखाई नहीं दिया। सास ने मेरा हाथ उठा कर कहा—'यह दाग कैसा है।' मैंने डर से कहा, थोड़े दिन पूर्व मेरे कपड़ों में आग लग जाने की बात कही। दवा लगाने के बाद दर्द तो ठीक हो गया किन्तु दाग नहीं मिटा।' सास के मुँह से निकल पड़ा—'मेरे सुन्दर लड़के के भाग्य में ऐसी काली प्रेतनी बँधी थी और फिर उसका हाथ जला हुआ। तुम्हारे बाप की अक्ल कहाँ गयी थी। हमसे सब बातें छिपा कर रखीं। सब ठग बन गये हैं। वाह री दुनियां! मैं तो अपने लड़के की दूसरी शादी करूँगी।'

सब कुछ छोड़ कर मैं ससुराल आई थी। वहाँ गाली और इस तरह की बात सुन कर मेरी छाती धड़धड़ करने लगी। क्या खाना और क्या पीना। पिता का वही घर सुखमय प्रतीत होने लगा था। सौतेली मां का अनादर इन लांछनों से कहीं अधिक अच्छा था।

सोहाग रात में ननद मुझे सोने के कमरे में छोड़ गई। डर से कांपते हुए मैंने कमरे में प्रवेश किया। सेज पर स्वामी बैठे थे। जैसे ही मैंने प्रवेश किया वे घर छोड़ कर चल दिये। मैं धरा पर गिर पड़ी, वहीं रुदन करती रह गई।

इसके बाद करुणा थोड़ी देर तक चुप रही। फिर धीरे-धीरे आगे कहने लगी। जीवन का अधिकांश भाग अब तो बीत चुका है। अब परलोक की अपेक्षा में हूँ। शादी के बाद मैं पितृआलय को नहीं गयी। स्वामी के संसार में ही हूँ। दो युग बीत गये। हम दोनों साथ रहते हैं, किन्तु आज तक उनके साथ एक दिन के लिये भी वार्तालाप या दृष्टि विनिमय नहीं हुआ। मेरी सास ने दूसरी शादी करने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बड़ा अनुरोध किया किन्तु उन्होंने न तो दूसरी शादी की और न मेरे साथ सम्पर्क ही रखा। स्वामी की कमाई पर ही हम प्रतिपालित हैं, यद्यपि जेठ के लड़के लड़की को भी मैं सम्भालती हूँ। घर का काम काज सब मैं ही करती हूँ। अब बहिन तुम ही कहो कैसा मेरा जीवन है। भगवान ने मुझे कैसा रूप दिया जिसे देख कर कोई खुश नहीं होता। मैं किसी के जीवन की मानस प्रतिमा नहीं। न मुझे देख कर किसी ने काव्य-रचना की। न मेरे अभाव में किसी के हृदय में विरह अग्नि जली। न किसी ने मेरी याद में दो आंसू बहाये। मैं किसी की प्रियतमा नहीं हूँ परन्तु मैं साधारण गृह लक्ष्मी भी न बन सकी। न किसी शिशु ने आकर मेरे बुभुक्षु मातृ हृदय के आवेग को शान्त किया। किसी बालक के कोमल कण्ठ से निकली हुई मीठी आवाज 'मां'! सुनने को मेरा हृदय तड़फता रहता है।

पति द्वारा अनादृता, उपेक्षिता सम्मान-हीना एक कुरूपा नारी हूँ। मेरे स्वामी हैं, गृह है, फिर भी मैं रिक्ता हूँ, भाग्य हीना हूँ। किसका दोष जिस शिल्पी ने गढ़ा है उसका दोष।

तुम लोग पूछ रही हो कि मैं किसकी प्रतीक्षा में हूँ। मैंने अपने जीवन में प्रति दिन जिसे पुकारा है, जिसकी आराधना की है। वह है 'मृत्यु'। वही आ कर मेरे जीवन के सारे दुःखों को नष्ट कर देगी। मुझे ऐसा लगता है कि मैं जिसकी प्रतीक्षा में हूँ वह शीघ्र ही आ रही है—'वही चिरवांछित मृत्यु।' इतना कह करुणा हँस पड़ी। किन्तु वह हँसी मर्म-भेदी रुदन की परिचायिकी थी। सब तरुणियों की हँसी एक दम लोप हो गई। सब स्तब्ध थीं। करुणा की आँखों में आँसू थे। जो एक-एक करके भूमि पर गिर रहे थे। जिनमें उसका सब कुछ था।

गीत

लेखिका,
कुमारी पुष्पलता अस्थाना एम० ए०

ढल गई मृदु रात भर कर
लालिमा नभ की दिशा में
और सपने गा उठे फिर
प्रात की झिलमिल निशा में

एक तारा रह गया पर—
तुम न आये, तुम न आये

अर्चना के फूल मेरे
देख लो मुरझा रहे हैं
नयन सावन घन भरे से
निरत जल बरसा रहे हैं

दीप जल कर बुझ गया पर
तुम न आये, तुम न आये।

शून्य पथ की धूल मुझसे
कह रही—अब लौट जा तू
तोड़ दे सपने सुहाने
अश्रु पी औ लौट जा तू

श्वास धूमिल हो गई पर
तुम न आये, तुम न आये।

—

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई किताबें

मानवता के झरने—

लेखक—श्री गणेश वासुदेव मावलंकर, प्रकाशक सस्ता साहित्य मण्डल नई दिल्ली, और हिन्दुस्तानी प्रचार सभा वर्धा, आकार—डबल क्राऊन १६ पेजी, पृष्ठ १३६, मूल्य १।।) रुपया।

लेखक महोदय भारतीय लोक-सभा के अध्यक्ष हैं। इसमें आपने उन खूनियों का चरित्र अङ्कित किया है जिनकी उनसे जेल में भेंट हुई थी। प्रत्येक कथा से यह बात ध्वनित होती है कि इन खून के अपराधियों को वकीलों ने फाँसी से बचाने के लिए झूठ बोलवाया था। श्री मावलंकर ने उनसे सत्य का सहारा लेने का आग्रह किया। इसके परिणाम स्वरूप कुछ तो छूट गये और जो नहीं छूट सके उनमें इतना ज्ञान पैदा हो गया कि वे मृत्यु को भगवान की एक देन समझ कर उसका सहर्ष स्वागत करने के लिए तैय्यार हो सके।

मूल पुस्तक मराठी में लिखी गई थी। मराठी से गुजराती में अनुवादित हुई। श्री काका कालेलकर की प्रेरणा से गुजराती से यह हिन्दी अनुवाद सम्भव हो सका।

जीवों की दुनियाँ—

लेखक—श्री सुरेशसिंह, प्रकाशक, प्रकाशगृह कालाकांकर उत्तर प्रदेश, पृष्ठ ४०, मूल्य १) रुपया।

श्री कुँअर सुरेशसिंह जी हिन्दी के सुयोग्य लेखक हैं। आपने पशु-पक्षियों के जीवन का विशेष रूप से अध्ययन किया है और इस सम्बन्ध में अनेक पुस्तकें लिखी हैं। प्रस्तुत पुस्तक में आपने अपने विषद ज्ञान के बल पर जीवों के क्रम-विकास और उनकी प्रवित्तियों का रोचक वर्णन किया है। पृथ्वी पर जीव कैसे उत्पन्न हुए, उनका विकास कैसे हुआ। समुद्री जीव, कीड़े, मकोड़े, मगर, कछुए, मेढक, मछलियाँ, चिड़ियाँ, बन्दर, हिरन, बैल आदि जीव किस प्रकार उत्पन्न हुए और अपना जीवन-यापन करते हैं, आदि बातें सरल संक्षेप और रोचक शैली में लिखी हैं।

—सुशीला कुमारी

भारतीय वीराङ्गना—

(प्रथम, द्वितीय भाग) संकलन कर्ता श्री महालचन्द बयेद, प्रकाशक ओसवाल प्रेस, १८६ क्रास स्ट्रीट कलकत्ता-७। मूल्य २।।) व २।) क्रमशः।

प्रत्येक पुस्तक में २७ भारतीय वीराङ्गनाओं के चरित अङ्कित हैं। अधिकांश चरित कल्याण के नारी अङ्क से लिये गये हैं। पुस्तक दोनों भाग पठनीय है।

राजसिंह चरित्र—

लेखक, ठाकुर केशरीसिंह बारहठ। प्रकाशक, ओसवाल प्रेस, १८६ क्रास स्ट्रीट कलकत्ता-७, पृष्ठ संख्या लगभग २००। मूल्य सजिल्द मूल्य २।।) रु०।

लेखक महोदय व्रजभाषा के अच्छे कवि हैं। आपके लिखे हुए घनाक्षरी व्रजभाषा के प्राचीन काव्य का स्मरण दिलाते हैं। आपने प्रताप चरित, अमरसिंह राठौर आदि पुस्तकें लिख कर अच्छी ख्याति प्राप्त की है। प्रस्तुत पुस्तक में महाराणा राजसिंह का चरित अङ्कित है, किस प्रकार उन्होंने रूप नगर की राजकुमारी चारुमती से विवाह करके औरंगजेब से उसकी रक्षा की। इस युद्ध में राजपूतों ने कैसी वीरता दिखलाई और कैसा बलिदान किया यह पढ़ते ही बनता है।

लेखक का दृष्टिकोण ऐतिहासिक होते हुए भी राष्ट्रीय है। अतएव इसमें जो हिन्दू मुसलिम बैर-भाव आ गया है उस सम्बन्ध में वे कहते हैं:—

मुसलमीन या समय के, करहु क्रोध न तात।
हौं तो यामें लिख रह्यो, सत्रह सौ की बात॥
शासन जो अवरङ्ग को, तुम सों नहिं अज्ञात।
वाके दुष्परिणाम के, भुगत रहे फल भ्रात॥

नोट—समालोचनार्थ पुस्तकों की दो प्रतियां आनी चाहिए।

—श्रीनाथसिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक, श्री तेजबहादुर 'अनाथ'

दुखान्त कहानी

मोहजाल

मैं उसे जानता हूँ। अच्छी तरह जानता हूँ। मैंने तब से उसे देखा है जब वह एक दम नंगा घूमा करता था और आज भी देख रहा हूँ। वर्षों के संघर्षमय जीवन ने उसे इतना नहीं रुलाया जिस तरह आज वह बच्चों की तरह बिलख-बिलख कर रो रहा है। आज वह अपने जीवन का अवशेष हार गया है, अब केवल मौत की कल्पना में कुछ पल अपनी बेबसी पर जी खोल कर हँसने-हँसाने के लिये रह गया है। वह कलाकार था, अब भी कला उससे दूर नहीं है। वह लेखक था, लेकिन पेट की ज्वाला ने उसे स्वयम् 'कारबन कापी' बना दिया है, वह क्या करे। कहीं काम भी नहीं मिलता। जहाँ जाता मालिक यही कहते, 'हमें इन्टलेकचुअल' की जरूरत नहीं है। कलाकार हो, बाबूगीरी नहीं कर सकते।' वह कलाकार है इसलिए फावड़ा कुदार नहीं चला सकता, बाबू नहीं बन सकता—वह इन्सान नहीं है क्या ? या दूसरों की तरह वह हाड़-मांस का नहीं है, रेशम का बना है ?

कल जिसने हँस कर दिन बिताये हैं आज वही केवल बूट पालिश के लिए चलते-फिरते असंख्य पथिकों के जूतों पर नजर गड़ाये सिर्फ पेट की हीनता पर बर्बस खीज रहा है। फांसी के मुजरिम से यह कह देना कि कल तुम्हारी फांसी है उसके लिए कितना सुखद होगा, क्योंकि अपने जीवन का निश्चित अन्त तो मालूम हो गया उसे लेकिन केवल आशा की धूमिल कल्पना में भटकते हुए निरीह मानव जन को इस तरह भरमाना तेरे लिए शोभा नहीं देता, भगवान। मानव यदि तेरी तरह हो जाय तो फिर तेरा क्या होगा ? तुझे सुरक्षित रखने के लिए मानव अपना बलिदान देता है और तू है कि अपनी क्रूरता से बाज नहीं आता।

मगर गोपी तेरी यह दशा मानव के निर्मम हृदय को पिघला नहीं सकती और इस बरसात में पालिश करवाता ही कौन है ! भगवान ने स्वयम् ही अपना कारखाना खोल दिया है। मूसलाधार बारिश में जूते आप से आप ही चमक रहे हैं और फिर उस की पालिश के आगे तेरी पालिश किस काम की। जा कहीं डूब मर ! तुझसे भीख भी तो मांगनी नहीं आती, फिर तू जेबें कैसे काट सकता है। अरे ! भले मानुष इस दुनियां में दिल की सफाई ही सब कुछ नहीं है, हाथ की सफाई भी जरूरी है और जो यह सब कुछ भी नहीं कर सकते वे तेरी तरह मूर्ख हैं, निकम्मे हैं, अभागे और दलित हैं। अरे जा भी जा-जा कहीं......।

'अरे-अरे यह क्या...।'

'मैं...! मैं वही कर रहा हूँ जो दूसरों ने किया है। आत्म हत्या।'

'लेकिन यह पाप है भाई...।'

'अगर यह पाप है तो पढ़ना क्या है। डिग्रियां लेना...विद्या सीखना...यह सब क्या है...क्या है बताइये ?'

'.....' कोई उत्तर नहीं था उनके पास।

'आप चुप हैं ? शायद मेरी बातें आपको बकवास लगी हैं। शायद उस भोलू की तरह आप मुझे भी पागल समझ रहे हैं। मगर महाशय मैं पागल नहीं हूँ। मेरा ऊपरी दिखावा दिखावा है, अन्दर क्या है आप भी नहीं जानते। मैंने धूप भी देखी है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और बरसात भी, लेकिन यह वारिश मेरे लिये मौत का फरमान लेकर आई है। मैं रह कर भी क्या करूँगा...जी कर क्या करूँगा...।'

'ऐसा नहीं कहते, भाई !···तुम अकेले ही हो ?'

'जी नहीं ! घर पर माँ है, बहनें और पत्नी है... पत्नी।' वह रो पड़ा।

'मुझे दुःख है मैंने ऐसा प्रश्न किया।'

'दुःख की कोई बात नहीं। पहली बार रोने में बड़ा आनन्द आता है···। जरा सी देर के लिये दिमाग घूम गया था। सोचता हूँ अभी कुल पांच ही महीने तो हमारे ब्याह के हुए हैं। ऐसा लगता है संसार की गर्दिश में फँस कर जिन्दगी का रस सूख कर राख हो गया है। तीन महीने हो गये मैंने घर की कोई खबर ही नहीं ली। मैंने कुछ भी तो नहीं भेजा है वहां। इतने पैसे ही नहीं रहे जो एक पत्र लिख कर जीने और मरने का हाल पूछता। वे मेरी तरफ मुँह बाये चिड़ियों के बच्चों की तरह कुछ खाने के लिए बैठी होंगी और···। मैं अब जीना नहीं चाहता···जीना नहीं चाहता...।'

'लेकिन मर कर फिर इसी दुनियां में आना होगा। चलो मेरे साथ···।' और रास्ते भर वे उसे समझाते रहे। घर आकर जी भर के नहाने को मिला, धुले कपड़े मिले और जब तरह-तरह की चीजें खाने के लिए सामने आयीं तब वह फिर रो पड़ा। घर की मालकिन उसकी व्यथा की तह तक पहुँच गई और आँखें पोंछती हुई चुपचाप बाहर निकल गयीं। महाशय जी भी पीछे-पीछे निकल गये और जब शाम को वह सोकर उठा तो सामने महाशय जी खड़े उसकी ओर निहार रहे थे।

'सो चुके...!'

'जी... ।'

'मैं सोचता हूँ तुम घर जाकर सब लोगों को यहीं ले आओ......।'

'........'

'देखो मैंने सारा प्रबन्ध कर दिया है।'

'.........'

'कपड़ों के बकस, फल और मिठाई की टोकरी सब गाड़ी में रखी है और यह कुछ रुपये हैं खर्चे के लिये···।'

'मगर इतना सब किस लिये···।'

'अरे भई···घर जा रहे हो न ! कैसा पड़े और आखिर लौट कर तो तुम आओगे ही...।' वे स्वयं स्टेशन पहुँचाने आये। विदाई के समय उनकी आँखें सजल हो गयीं। यह भी शायद उनका मोह था जिसका अर्थ उन्हें भी नहीं मालूम था। पूरे तीन महीने बीस दिन के बाद गोपी घर आया। रात के दस बज रहे थे। आकाश में काले-काले बादल मण्डरा रहे थे—जमा हो रहे थे और इस सन्नाटे में उनकी हलकी-हलकी गड़गड़ाहट वातावरण को और भी नीरव बना रहे थे। खिड़की से झांक कर देखा अन्दर अन्धेरा था। लालटेन में तेल नहीं होगा शायद। और रात में हल्ला मचाना भी असभ्यता थी लेकिन ममता ने सभ्यता की परवाह नहीं की। वह लगा कुण्डी पीटने। मुहल्ले वाले जाग गये पर घर वाले नहीं उठे। पल भर में एक भीड़-सी लग गयी, दरवाजा तोड़ा गया मानों स्वर्ग का द्वार खुल गया। झटपट लालटेन भी आ गई। उस फीकी रोशनी में लोगों ने देखा कलाकार का सारा परिवार नयी बधू के साथ दुनियां का मोहजाल तोड़ कर कब की दूसरी यात्रा को जा चुका था। वहाँ कौन था अब ! लोगों ने कहा। बेचारी औरतें भूखों मर गयीं···।' लेकिन गोपी की स्मृतियों का पहाड़ तो बालू की भीत की तरह उसी दम ढह कर रह गया। उसने बकस के सारे कपड़े उन्हें उन निर्जीव पंजरों को बारी से पहिना दिये, सारा फल सारी मिठाई कमरे में बिखेर दी और नोटों को मां के सिरहाने रख कर घर से बाहर निकल गया। किसी ने सुना किसी ने नहीं भी।

'भगवान जहाँ तू उन्हें ले गया है यह सब चीजें भी लेता जा, उन्हें जरूरत होगी। मैं मरूँगा नहीं, मर कर तेरी सूरत नहीं देखनी है। मुझे तुझसे नफरत है, उतनी ही जितनी कि तुझे मुझसे है, समझा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहेली बूझो❀

पाँच खसम, द्रौपदी नहीं,
युगल जीभ, नहिं साँप।
चित्र वर्ण, बिल्ली नहीं,
रहे गुणिन के साथ।

[न बूझ सको तो इस पृष्ठ के अन्त में देखो]

बुरी संगत

एक मनुष्य अपने लड़के को सदा बुरी संगत में रहते देख कर बहुत दुःखी रहता था। एक दिन उसने एक आदमी को आम ले जाते देखा। उसने उससे थोड़े से आम ले लिये। फिर उसने उनको अपने लड़के को देकर कहा कि कल ये सब तुम्हारे हो जायँगे। इनमें एक आम गला हुआ भी था। दूसरे दिन सवेरे जब उसने उनको खाना चाहा, तो देखा तो कि सब खराब हो गये हैं। तब उसने अपने पिता से यह बात कही।

उसके पिता ने उसको जवाब दिया—'मेरे लड़के! जैसे, यह एक खराब आम था, और उसने सब आमों को खराब कर दिया। उसी तरह तुम भी बुरी संगत में रहने से शीघ्र ही खराब हो जाओगे।'

वह लड़का बहुत शर्माया और फिर कभी बुरी संगत में नहीं गया।

चुटकुले

(१)

पिता—'चुप क्यों है ? जवाब क्यों नहीं देता ?'

बेटा—'आप ही ने तो कल डांटा था कि बड़ों को जवाब नहीं देना चाहिए।'

(२)

मैजिस्ट्रेट—क्यों जी तुमने इनकी जेब में हाथ क्यों डाला ?

चोर—साहब क्या करता ठंड लग रही थी।

बबली (आयु ८ महीना) पुत्री मेजर नौनिहालसिंह, श्रीमती कृष्णा कुमारी, फीरोजपुर

(३)

एक आदमी ने अपनी धोती कुएँ पर सुखाई जो कुएँ में गिर गयी।

वह खूब खुश हुआ और बोला—'अगर कहीं मैं इसे पहने होता तो यह मुझे लेकर गिर पड़ती।'

(४)

पिता—'कैलाश ! तुम बड़े शैतान हो। कुछ पढ़ते-लिखते नहीं हो। मैं तुम्हारी शादी नहीं करूँगा और न कुछ खाने को दूँगा बल्कि कान पकड़ कर निकाल दूँगा।'

कैलाश—'मेरा लड़का तो मुझे खाना देगा ही आप दें या न दें।'

❀ कलम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दीदी की फाइल

दीदी की सन् १९५३ की बारहों मास की पूर्ण फाइल

६) रुपये में प्राप्त कीजिये। इस फाइल में 'दीदी' का गृह-प्रबन्ध अङ्क भी है, जो अलग से नहीं मिल सकता।

मैनेजर दीदी कार्यालय

इलाहाबाद—२

हर भाषा में कच्ची-पक्की दीवार पर सुन्दर विज्ञापन के लिए लिखें

विश्व-वन्धु आर्ट

पता—विश्ववन्धु-मु० धरनीपुर विसियां
पो०—गम्भीरपुर, (जिला आजमगढ़)
यू० ०

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यापिकाएँ चाहिए

जो हिन्दी इङ्गलिश में विशेष योग्यता रखती हों। सिलाई, बुनाई, कढ़ाई, खेल, ड्रिल आदि कार्य दक्षता से कर सकें। कम से कम १० वर्ष का अध्यापन अनुभव रखती हों। शीघ्र आवेदन करें।

प्रधान मन्त्री
श्री कन्या पाठशाला
तिनसुकिया (आसाम)

विवाह-विज्ञापन

एक क्रिश्चियन महिला आयु ३२ वर्ष जो उत्तर प्रदेश में अध्यापिका हैं, एक ऐसे क्रिश्चियन युवक से विवाह करना चाहती हैं जो उच्च वर्ण हिन्दू से ईसाई हुआ हो। पता बाक्स नं० ३ मार्फत 'दीदी' इलाहाबाद-२

सफेद कोढ़

की पेटेंट दवा मूल्य ५) रुपया

विवरण पत्र मुफ्त मँगावें।

वैद्य बी० आर० बोरकर, आयुर्वेद भवन
मु० पोस्ट मँगरूलपीर, जिला—अकोला
(बेरार) मध्य प्रदेश

स्त्री रोगों की जड़

मासिक धर्म का ठीक समय पर न होना बाँझपन, रक्त हीनता, क्षय, कैन्सर आदि घातक रोग क्यों होते हैं? इसलिये कि गर्भाशय, डिम्बकोष आदि जननेन्द्रिय विकार युक्त और रोग ग्रस्त हो जाते हैं, उनकी स्वाभाविक क्रिया नष्ट हो जाती है और ठीक दवा ठीक समय पर नहीं की जाती।

यदि आप नीरोग रह कर सुखी जीवन बिताना चाहती हैं तो—

संजीवनी

का सेवन कीजिये। तीस वर्ष के अनुभव के बाद प्रसिद्ध चिकित्सक की अनुभूत यह नवीन औषधि संजीवनी स्त्री रोग का अमोघ अस्त्र है।

रोग निदान और सेवन-विधि औषधि के साथ भेजी जाती है।

मूल्य—१ शीशी (एक महीने के सेवन के लिए) ३), २ शीशी ५।।), ४ शीशी १०) रुपया डाक व्यय अलग।

कृष्णा होमियोपैथिक चिकित्सालय, ४६४-सुभाषनगर, इलाहाबाद-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महान् पुरुषों और लेखकों की कृतियाँ

श्री जवाहरलाल नेहरू–लिखित

विश्व इतिहास की झलक २१)
राष्ट्रपिता २)
मेरी कहानी ८)
हिन्दुस्तान की समस्यायें २।।)
लड़खड़ाती दुनिया २)
पिता के पत्र पुत्री के नाम ।।।)
राजनीति से दूर २)
हमारी समस्याएँ (२ भाग) १)

श्री राजेन्द्रप्रसाद–लिखित

आत्मकथा १२)
बापू के कदमों में ५)
गांधी जी की देन १।।)
गांधी-मार्ग ≈)

राजगोपालाचार्य–लिखित

महाभारत-कथा ५)
कुब्जा सुन्दरी २)
शिशु पालन ।।)

श्री विनोबा भावे–लिखित

शान्ति-यात्रा १।।)
विनोबा के विचार (दो भाग) ३)
गीता-प्रवचन सजिल्द १।।।)
सर्वोदय-विचार १≈)
स्थितप्रज्ञ-दर्शन १)
स्वराज्य-शास्त्र ।।।)
विचार-पोथी १)
जीवन और शिक्षण २)
सर्वोदय का घोषणा-पत्र ।)
सर्वोदय के सेवकों से ।)
भूदान-यज्ञ ।)

श्री प्रेमचन्द : उपन्यास

अहंकार २।।)
कर्मभूमि ५)
गबन ४)
गोदान (संक्षिप्त) ४)
निर्मला १।।)
सेवासदन ४)
प्रतिज्ञा २)
वरदान २)
मङ्गलसूत्र २)

श्री प्रेमचन्द : कहानियाँ

कफन २)
ग्राम्य-जीवन की कहानियाँ २)
जंगल की कहानियाँ ।।)
नवनिधि १।।)
पाँच फूल १)
प्रेम द्वादशी १)
मानसरोवर (आठ भाग) प्रत्येक का ३)
राम चर्चा २)
समर यात्रा १।।)
सप्त सुमन १)
हिन्दी की आदर्श कहानियाँ २।।)

श्री शरतचन्द्र : उपन्यास

श्री कान्त ४)
बड़ी दीदी १।।)
मझली दीदी ।।।)
देहाती समाज २।।।)
गृहदाह ४)
लेन-देन ३।।)

नवविधान ।।≈)
बैकुण्ठ का बिल ।।।)
ब्राह्मण की बेटी १।)
छुटकारा १।।)
पंडित जी २)
परिणीता १।।)
अरक्षणीया ।।≈)
स्वामी १)

टालस्टाय–लिखित

मेरी मुक्ति की कहानी १।।)
हमारे जमाने की गुलामी ।।।)
प्रेम में भगवान २)
जीवन-साधना १।)
बुराई कैसे मिटे ? १)
स्त्री और पुरुष १)
बालकों का विवेक ।।।)
कलवार की करतूत ।)
हम करें क्या ? ३।।)
सामाजिक कुरीतियाँ २)
धर्म और सदाचार १।)
अन्धेरे में उजाला १।।)

क्रोपाटकिन–लिखित

रोटी का सवाल ३)
नवयुवकों से दो बातें ।≈)

नोट—४) रुपया या कम की पुस्तकें मँगायें तो पूरा मूल्य मनिआर्डर से पेशगी भेजें। अधिक की मँगाने पर चौथाई मूल्य पेशगी भेजना चाहिए। डाक व्यय अलग से लगेगा।

पता—'दीदी' कार्यालय कटरा, इलाहाबाद–२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुनी हुई उत्तम पुस्तकें

धार्मिक ग्रन्थ

सचित्र हिन्दी महाभारत (वेदव्यास के महाभारत का अक्षरशः सचित्र अनुवाद १० जिल्दों में)	८०)
हिन्दी महाभारत (द्विवेदी)	६)
श्रीमद् भागवत (दो भागों में)	१६)
श्री वाल्मीकीय रामायण (दो भागों में)	१३)
श्री रामचरित मानस (श्यामसुन्दर दास की टीका सहित)	१२)
विनय पत्रिका	४)
कवितावली	२।।)
कुण्डलिया रामायण	४)
तुलसी रत्नावली	१।।)

श्रेष्ठ ग्रन्थ

प्रार्थना प्रवचन (दो भाग गांधी जी)	५।।)
राम नाम की महिमा	१)
बापू की कारावास कहानी (सु० नैय्यर)	१०)
पांचवें पुत्र को बापू का आशीर्वाद	८)
सर्वोदय तत्व दर्शन	७)
भारतीय संस्कृति	३।।)
कांग्रेस का इतिहास (२ भाग)	३०)
गृह विधान	१०)
आधुनिक भारत	५)
भारत के स्त्री रत्न (३ भाग)	७।।)
प्रवासी की आत्म कथा	८)
जगत सेठ	६।।)
भारतीय सिक्के	५)
भारतीय वेष-भूषा	१२)
नेहरू अभिनन्दन ग्रन्थ	३०)
उत्तरी भारत की सन्त परम्परा	१२)
भारत में गाय	१३)
महादेव भाई की डायरी (२ भाग)	१६)
सयानी कन्या से	१)
सरदार पटेल के भाषण	५)
स्त्री पुरुष मर्यादा	१।।।)
हमारी बा	२)

स्वास्थ्य (महेन्द्रनाथ पांडेय लिखित)

ज्वर चिकित्सा	२।।।)
ग्रन्थि और ग्रन्थि प्रणाली के रोग	१)
पाचन प्रणाली के रोग	२)
तीनों एक साथ	६)
फलाहार चिकित्सा	२।।)
स्वास्थ्य के लिए शाक तरकारियाँ	२)
मठा उसके गुण तथा उपयोग	१)
आँख का अचूक इलाज	२)
जुकाम	१।।)
शहद के गुण और उपयोग	।।।)
भोजन ही अमृत है	१।।।)
मधुमेह चिकित्सा	।=)
तपेदिक	४)
जीवन तत्व	१।।)
दूध-चिकित्सा	४)
हमारे बच्चे	१।।।)
बच्चों के रोग और उनका इलाज	२)
प्रमेह-विवेचन	२)
कब्ज और मलावरोध	।।)

नोट—पृष्ठ ३४२ का नोट देखें।

पता—'दीदी' कार्यालय कटरा, इलाहाबाद-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

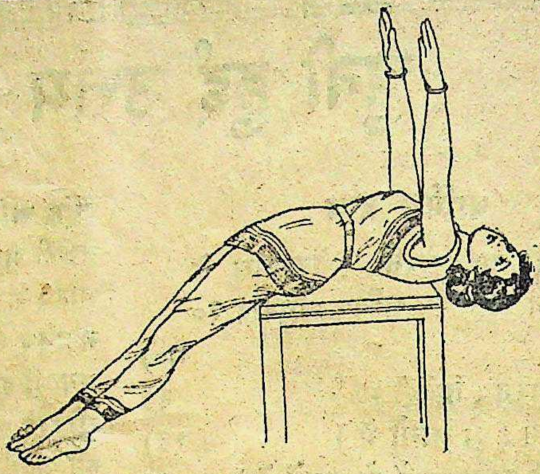

स्वास्थ्य और सौंदर्य ॥)

इस पुस्तक में चित्रों सहित वे सब व्यायाम बताए गए हैं जिनको अपने एकान्त कमरे में ५ से १५ मिनट तक रोज करके स्त्रियाँ पूर्ण स्वस्थ और सुन्दरी बन सकती हैं। इसके अलावा इसमें सौंदर्य वृद्धि की ओर भी ऐसी बहुमुल्य सलाहें दी गई हैं जो आपको अन्यत्र न मिलेंगी।

केश विन्यास ॥)

यदि कोई कहे कि बालों को धन्नी में बाँध कर भूलने से बाल बढ़ेंगे तो स्त्रियाँ अपने बालों को बढ़ाने के लिए यह कष्टकर उपाय करने को तैयार हो जायेंगी। जैसा कि नार्वे की यह स्त्री कर रही है। परन्तु यदि आप यह पुस्तक पढ़ें तो सहज ही केश रहस्य समझ जायेंगी और आपके केश सघन, सुचिक्कन और दीर्घ हो जायेंगे।

१) मनिआर्डर से भेज कर दोनों पुस्तकें घर बैठे मँगाइए। वी० पी० नहीं भेजी जायगी।

पता—'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीदी के संरक्षक

१—श्रीमती राजकुमारी ठोलिया, उज्जैन २००)
२—श्री मुकुटबिहारीलाल श्रीवास्तव, बिरलापुर ”
३—कुमारी कमल सहाय, आरा ”
४—श्रीमती रतनदेवी सुखानी झुमरी तलैया ”
५—श्रीमती आकाश कामिनी अग्रवाल आगरा ”
६—श्री हेमप्रभादेवी तापड़िया, जसवन्तगढ़ १५०)
७—श्रीमती सरलादेवी वृ० नागर बनारस १२८)
८—श्री सेठ बल्देवदास मूँधड़ा, कलकत्ता १००)
९—श्रीमती स्नेहलता नेवाटिया, बम्बई ”
१०—श्रीमती चन्द्रावती एस० कानोडिया, बम्बई ”
११—श्रीमती सरलादेवी डागा, कलकत्ता ”
१२—श्रीमती निर्मला गोविल, आगरा ”
१३—श्री रानी लक्ष्मीकुमारी चूंड़ावत, रावतसर ”
१४—श्रीमती सावित्री बाँगड़, कलकत्ता ”
१५—श्री विन्दुवासिनीदेवी सकलानी, देहरादून ”
१६—श्रीमती कृष्णादेवी मन्त्री, बम्बई ”
१७—श्रीमती मोहिनी तापुड़िया, बम्बई ”
१८—कु० अरुणा कुमारी जायसवाल, हैदराबाद ”
१९—श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी करहल ”

'दीदी' के नियम

(१) 'दीदी' मासिक पत्रिका है। इसका वार्षिक मूल्य ६) और एक प्रति का ।।) है। वार्षिक मूल्य कार्य्यालय में पहुँचते ही ग्राहक का नाम रजिस्टर में दर्ज हो जाता है और पत्रिका जानी शुरू हो जाती है।

(२) रुपया पैसा, वार्षिक मूल्य और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र आदि प्रेमलता देवी संचालिका 'दीदी' कार्य्यालय, इलाहाबाद २ के पते से भेजना चाहिए।

(३) पत्र-व्यवहार करते समय ग्राहकों को अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये। पत्र-व्यवहार का पता यह है—संचालिका 'दीदी' कार्य्यालय, इलाहाबाद—२।

(४) 'दीदी' हर महीने में पहली तारीख को प्रकाशित हो जाती है। पहली तारीख के आसपास यदि 'दीदी' आपको न मिले तो आपको तुरन्त अपने डाकघर से पूछना चाहिये। अगर पता न लगे तो १५ तारीख के भीतर संचालिका 'दीदी' इलाहाबाद को लिखना चाहिये।

(५) यदि एक-दो मास के लिये पता बदलवाना हो तो डाकखाने से प्रबन्ध कर लेना चाहिए। यदि साल भर या अधिक काल के लिये पता बदलवाना हो तो उसकी सूचना मय ग्राहक नम्बर के हमें देनी चाहिये।

(६) लेख, फोटो, बदले के पत्र, समालोचना के लिये पुस्तकें सम्पादक 'दीदी' इलाहाबाद के पते से भेजना चाहिये।

(७) न छपने की हालत में वे ही लेख वापस किये जायँगे जिनके साथ आवश्यक स्टाम्प होगा।

(८) 'दीदी' में विज्ञापन छपाना हो तो उसके नियम अलग से मँगावें। पर यह ध्यान रखें, 'दीदी' में अश्लील व झूठे विज्ञापन नहीं छापे जाते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'दीदी' मुझे क्यों प्रिय है—

पिछले कई वर्षों से मैं दीदी की ग्राहिका हूँ। परिवार के व्यय को आय के अन्दर रखने के लिये मुझे कुछ भी क्यों न करना पड़े, पर मैं अपनी इस प्यारी पत्रिका से नाता नहीं तोड़ूँगी। इसका मूल्य तो इसके विशेषज्ञों की उन सलाहों में ही वसूल हो जाता है जो इसमें आती रहती हैं। यह 'दीदी' पढ़ते रहने का ही फल है कि मेरा घर आनन्द-दायक, मेरी रसोई रुचिकर, मेरा शृङ्गार आकर्षक और मेरा शिशु स्वस्थ दीखता है।

'दीदी' ने मुझे प्रिय पत्नी, आदरणीय माता और एक अच्छी सहेली बना दिया है। 'दीदी' का वार्षिक मूल्य ६) रुपया है। इतनी उपयोगी पत्रिका केलिए यह मूल्य कुछ नहीं है।

पता—मैनेजर 'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद–२

अपने प्यारे बच्चे के लिये

बा ल बो ध

मँगाइये !

यह बालक-बालिकाओं का सबसे सस्ता और अच्छा मासिक पत्र है। इसकी अधिकांश कहानियाँ श्री श्रीनाथसिंह लिखते हैं, जिनकी सरल और रोचक शैली बच्चों को बहुत पसन्द है। वार्षिक मूल्य सिर्फ ३) रुपया है।

मैनेजर—'बालबोध', इलाहाबाद–२

मुद्रक और प्रकाशक श्रीनाथसिंह 'दीदी' प्रेस, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

6000
२५/३/७७

दीदी

जुलाई
१९५४
।।)

गुरुकुल-पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीदी

प्रधान सम्पादिका
श्रीमती यशोवती तिवारी

सम्पादिका-समिति
महा माननीया श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित
रानी लक्ष्मीकुमारी रावतसर
श्रीमती रत्नकुमारी एम० ए०
श्रीमती कमला शिवपुरी बी० ए०, बी० टी०
श्रीमती चन्द्रकान्ता जेरथ बी० ए०
श्रीमती रजनी पनिकर एम० ए०
कुमारी विद्यावती साहित्य रत्न

प्रबन्ध सम्पादक—श्री श्रीनाथसिंह

पत्र व्यवहार का पता—
प्रेमलता देवी संचालिका 'दीदी' कार्यालय
इलाहाबाद नं० २

विषय-सूची

कहानियाँ

१—हित-अनहित [श्री आर० आर० सर्वटे] ३५०
२—सोने की गठरी [श्री 'स्वतन्त्र'] ... ३५५
३—मातृ-हीना [कुमारी बीरबाला सिंह] ३६२
४—साहसी छात्रा [कुमारी सत्या गुप्ता बी० एस-सी०, बी० टी०] ... ३६६
५—भगेलू डाकू [श्री बुद्धिसागर वर्मा बी० ए०, एल० टी०] ... ३७०
६—बिछुड़े हृदय [श्री श्रीनाथसिंह] ३७७
७—परीक्षा [श्री प्रभा हृदप, बी० ए० आनर्स] ३८४
८—ढलती साँझ [श्री तेज बहादुर 'अनाथ'] ३८६

लेख

१—योरपीय महिलाएँ [प्रो० आशाराम विश्वविद्यालय, प्रयाग] ... ३४६
२—कढ़ाई की कला सीखिये ! [कुमारी सुशीला कुमारी] ... ३४६
३—घर की सजावट में चित्र [कुमारी पुष्पलता अस्थाना एम० ए०] ... ३५३
४—विषैले जीवों से बचाव [श्रीमती शिवनयना मैहता] ३५६
५—वस्त्रों की धुलाई का दिन [एक पाठिका] ३७५
६—दहेज की समस्या ३६३

कविताएँ

१—गीत [देवेन्द्रकुमार बख्शी 'देव' बी० ए०] ३५८
२—गद्यगीत [चन्द्रकांता त्रिपाठी] ... ३७४

फुटकर

१—बच्चों को सँवारिये ... ३४८
२—राष्ट्र के सात विकार ... ३६१
३—स्कोगन ने ऋण कैसे चुकाया ! ... ३६५
४—वेणी-बन्धन ३८३
५—सुन्दर दांत [कमला दीक्षित] ... ३८५

स्तम्भ

१—अपने विचार ३४५
२—रसोई ३७६
३—नयी किताबें ३८६
४—प्रश्न पिटारी ३६०
५—विविध विषय ३६१
६—बच्चों का पृष्ठ ३६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलाहाबाद
जुलाई, १९५४

दीदी

वर्ष १५
संख्या ७

महिलाओं की पत्रिका

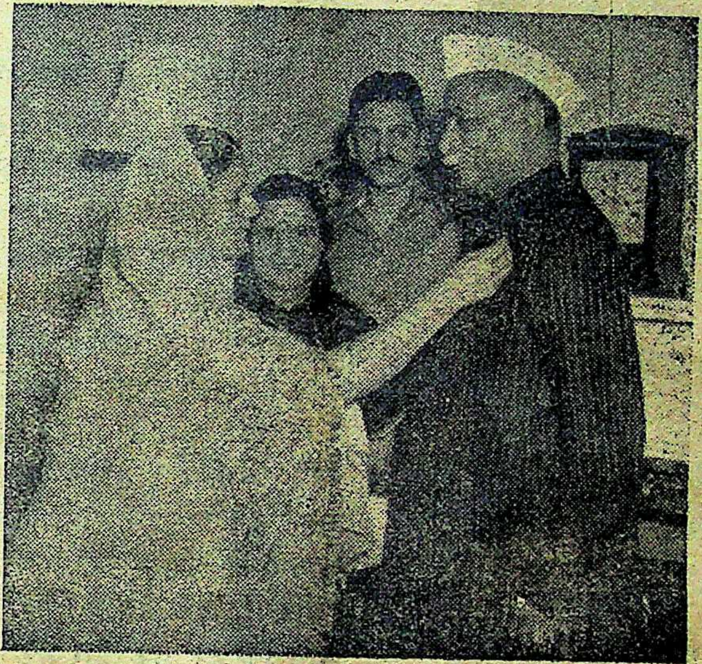

गत मास में हमारे राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी शिमला पधारे। वहाँ उन्होंने अनेक सार्वजनिक कार्यों में अपना योग प्रदान किया। २ जून को पश्चात् रेडक्रास सोसाइटी की सदस्याएँ अपनी संस्था के लिए चन्दा इकट्ठा करती हुईं उनकी सेवा में भी उपस्थित हुईं। यह चित्र उसी अवसर का है। चित्र में श्रीमती भण्डारी उन्हें 'रेडक्रास फ्लैग' भेंट करती हुईं दिखाई पड़ रही हैं।

हमें हर्ष है कि कढ़ाई की कला सिखाने वाली जो लेख माला हमने जून की 'दीदी' में आरम्भ की है उसका अनेक बहनों ने स्वागत किया है। कइयों ने लिखा है कि प्रथम लेख ने ही उन्हें सुई के रूप में एक अच्छी सहेली से परिचय करा दिया है और उनकी जून की दीरघ दोपहरियां बड़े आनन्द से कटीं। इस लेख माला का दूसरा लेख इस अङ्क में छापा जा रहा है, तीसरा जो और भी उपयोगी होगा आगामी मास में छपेगा।

श्रीमती शिवनयना मेहता सुगृहिणियों के लिये उपयोगी लेख लिखने में बड़ी कुशल हैं, 'दीदी' के गताङ्क में भोजन और स्वास्थ्य पर इनका लेख बहुत पसन्द किया गया। इस अङ्क में इन्होंने सर्प, बिच्छू, भिड़, मधुमक्खी और मच्छड़ आदि के आक्रमण और विष से बचने के उपाय बताये हैं। वर्षाकाल में इन विषैले जीवों का जोर और भी बढ़ता है अतएव आशा है, इस लेख को पाठिकाएँ खास तौर से पढ़ेंगी और उपयुक्त अवसर के लिए इसे सुरक्षित रखेंगी।

'दीदी' के इस अङ्क में कहानियों के चुनाव में बड़ी सावधानी बर्ती गई है। प्रत्येक कहानी पाठिकाओं के सम्मुख एक नया दृष्टि कोण उपस्थित करती है। इनमें सर्वोत्तम 'ओ हेनरी' की हित-अनहित शीर्षक कहानी है।

'दीदी' के गताङ्क में कुमारी उषा कोविद साह की सास-ससुर-सम्मेलन शीर्षक कहानी छपी है जो उनकी स्वयम् की लिखी हुई है। गुजराती से अनुवादित नहीं, जैसा कि हमने इङ्गित किया है। इस भूल के लिए हम क्षमा चाहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योरपीय महिलाएँ

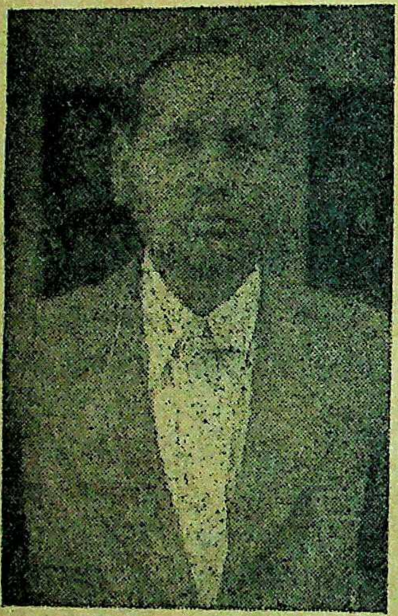

लेखक,
प्रो० आशाराम, विश्वविद्याल, प्रयाग

प्रोफेसर आशाराम जी प्रयाग विश्वविद्यालय में राजनीति के अध्यापक हैं। जुलाई सन् १९५३ में ये विश्व अध्यापक कान्फ्रेन्स में भाग लेने के लिए वियाना गये थे। तत्पश्चात् आठ मास तक योरप के विभिन्न देशों— सोवियत, चैकोस्लोवाकिया, पोलैन्ड, ब्रिटेन, फ्रांस, इटली, स्विटजरलैण्ड और जर्मनी आदि-में भ्रमण करते रहे। हाल ही में ये स्वदेश लौटे हैं। इस लेख में आपने योरपीय महिलाओं की वर्तमान स्थिति का वर्णन किया है।

शेक्सपीयर ने किसी स्थान पर कहा है—'ऐ नारी, तू एक रहस्य है।' भारत में स्त्री की दुनिया आज भी बहुत कुछ अलग है। बचपन से बुढ़ापे तक उसको पुरुष से अलग रखने का प्रयत्न किया जाता है। वह चाहे कितना भी काम करे, आखिर को मुँह देखा ही है। कमाई तो पुरुष ही करता है। अतः हमारे लिए तो स्त्री आज भी रहस्य ही है।

कुछ दिन पहिले योरप में भी यही हाल था। परन्तु आज की परिस्थिति भिन्न है। यहाँ से अन्दाज नहीं हो सकता कि उसका जीवन कैसा हो सकता है। वह पुरुष (पति अथवा सम्बन्धी नहीं) अथवा उस से अलग स्वतन्त्र रूप से काम करती है। उसने दफ्तरों, अस्पतालों, स्कूलों, कल-कारखानों, दुकानों रेल, मोटर और बसों में काम करना शुरू कर दिया है। कहीं-कहीं पुलिस और फौज तक में पाई जाती हैं। होटल और रेस्तोरां (भोजनालय) में अक्सर काम करती हैं। हाँ, वे भारी काम से अभी तक अलग हैं। परन्तु मशीनों ने काम हल्का कर उसका गुलामी से उद्धार कर दिया है। लड़कों की भाँति लड़कियाँ भी अनिवार्य शिक्षा की अधिकारी हैं और आठ-दस वर्ष तक योरप के सभी देशों में वे स्कूल जाती हैं। लगभग प्रत्येक ही देश में अध्यापकों में स्त्रियों का बहुमत है। क्योंकि वे न केवल लड़कियों के स्कूल में हैं, वहाँ तो केवल स्त्रियां ही हैं, लड़कों के स्कूलों में भी उनका बहुमत है।

इसके क्या अर्थ हो सकते हैं, इसका अन्दाज लगाइये। वयस्क होने पर वे भी कमाने और वेतन पाने लग जाती हैं। माता-पिता को कन्या के लिये वर नहीं ढूंढना पड़ता। वे इसको सहन भी नहीं कर सकतीं। बचपन से ही मुहल्ले, स्कूल, गिरजे, दफ्तर, मिल या फैक्टरी में वे पुरुष को जानने लग जाती हैं। आपको शायद बुरा लगे। परन्तु इस स्वतन्त्रता का भी त्याग करने को वे तैयार नहीं। पुरुष मित्र, पति नहीं, के साथ सिनेमा, नाटक, नाच और गाने आदि में जातीं और उसके साथ सन्ध्या-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल के कई घन्टे बिता सकती हैं। घनिष्ट मित्रता होने पर विवाह भी कर लेती हैं। लेकिन जीवन-पर्यन्त काम करना और स्वतन्त्र रहना चाहती हैं। हाँ, बच्चा पैदा होने पर विवश हो काम छोड़ना और कुछ दिन बच्चे की देख-रेख करनी पड़ती है। परन्तु समाजवादी देशों में इसके लिए ढाई मास की सवैतनिक छुट्टी और बच्चों के लिए काम के स्थान पर क्रेचे और किंडर गार्टन का प्रबन्ध है। पच्छिमी योरप में, इसी भय से अधिकांश स्त्रियां दो-तीन बच्चों से अधिक पैदा नहीं करना चाहतीं। विभिन्न देशों में बच्चे पैदा होने पर आप पर टैक्स कम हो जाता है अथवा पारिवारिक भत्ता भी मिलने लगता है। समाजवादी सभी देशों में यह व्यवस्था है।

योरप की स्त्रियों के समक्ष में नहीं आता कि आखिर घर पर रोटी कैसे बनाई जा सकती है। वे तो बनी-बनाई डबल रोटी खरीद लाती हैं। मिठाइयाँ भी बाजारू होती हैं। बहुत-सी चीज बनी बनाई बाजार में मिल जाती हैं। सवेरे ही चाय, डबल रोटी, मक्खन और मुरब्बे आदि का नाश्ता कर मियां-बीवी दोनों ही काम पर निकल जाते हैं। बच्चों की देख-रेख कोई बूढ़ी आया, सम्बन्धी, क्रेचे किंडर गार्टन अथवा स्कूल करते हैं। काम के घण्टे दो घण्टे बाद मिल-फैक्टरी, दफ्तर के कैन्टीन या (भोजनालय) अथवा पास की दुकान में एक चाय या काफी के प्याले के साथ एक-दो टुकड़ा डबल रोटी खा लिया जाता है। दोपहर का खाना भी सस्ते दामों पर वहीं मिल जाता है। दो घण्टे बाद दुपहर बाद की चाय भी वहीं पी ली जाती है। काम के बाद रास्ते में कुछ खाते पीते कुटुम्ब के प्राणी इकट्ठे हो जाते हैं। रात का खाना घर पर बनता है और कुटुम्ब एक साथ बैठ कर खाता है। यह खाना भी क्या? किसी न किसी प्रकार का शोरबा, मांस और आलू, मिठाई और चाय या काफी। उसके पहिले, साथ, बाद में या तीनों ही बार शराब। बिजली या गैस के साफ-सुथरे चूल्हों में खाना मिनटों में बन जाता है। लेकिन हाँ, रात का खाना अधिकांशतः स्त्रियां ही बनाती हैं। पुरुष मदद भर कर देते हैं।

शुक्र, शनिश्चर, इतवार में से किसी एक दिन और सम्भव हो तो तीनों ही दिन कुटुम्ब रात का खाना किसी होटल या रेस्तोरां में खाना चाहता है। वहाँ रात के आठ बजे से एक दो बजे और कहीं-कहीं उसके बाद भी नाच-रङ्ग रहता है। परन्तु यह हर एक के लिए सम्भव नहीं।

जब उनको पता चलता है कि भारतीय नारी का मुख्य कार्य तीन बार घर का खाना बनाना और घर-बार बच्चों की देख-भाल करना है और वे अपना विवाह करने के लिये स्वतन्त्र नहीं, तो उन के समक्ष में नहीं आता और माता-पिता, भाई-भतीजे और भारतीय जैसे कौटुम्बिक जीवन की तो कल्पना कठिन है। अलग घर बना कर रहना विवाह की शर्त जैसी है। हाँ सप्ताह एक दो बार माता-पिता के दर्शन के लिए भी बच्चे चले जाते हैं, परन्तु सास-बहू के झगड़े से वे अलग ही रहना चाहते हैं।

इसके यह अर्थ नहीं कि योरप भर में स्त्रियां स्वतन्त्र और समान बन चुकी हैं। ब्रिटेन तक में सरकारी कानून द्वारा उनको कम वेतन दिया जाता है। घरों में आज भी लड़कियों का दर्जा लड़कों से कुछ कम है। सभी स्त्रियों को काम मिलना कठिन होता है। प्रसव काल के लिए सवैतनिक छुट्टी और अस्पताल, क्रेचे आदि का प्रबन्ध नहीं। अतः घर पर रहना पड़ जाता है। इसके विपरीत सोवियत आदि समाजवादी देशों में स्त्रियों को पूर्ण समानता और स्वतन्त्रता दी गई है।

गर्व से सिद्ध किया जा सकता है कि इससे पुरुष स्त्री के बीच कलह होगा, घर की शान्ति भङ्ग हो जायगी। परन्तु कदाचित् वे एक दूसरे को अधिक समझते और शान्त रहते हैं।

हाँ, वहाँ स्त्रियों का आन्दोलन है। वे अपने अधिकारों की मांग और रक्षा के लिए सगठित हैं। वे शान्ति के लिए भी उत्सुक हैं। क्योंकि आज भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों को सँवारिये

छोटे बच्चे अच्छी पोशाक से प्रसन्न होते हैं। उनमें उत्साह बढ़ता है और वे भद्र-व्यवहार करने लगते हैं।

बच्चों के वस्त्र कीमती न हों पर वे रङ्गीन हों और अच्छी तरह सिले हुए हों तथा उनके शरीर में फिट बैठें।

बालक-बालिकाओं के लिए ऐसी पोशाकों के कुछ नमूने यहाँ दिये जाते हैं। थोड़ा भी ध्यान देने से आप स्वयम् ये पोशाकें घर में तैयार कर सकती हैं।

—योरपीय महिलाएँ—

सेनाओं की पहिली पंक्ति में लड़ाका सिपाही पुरुष ही है। और योरप के देश हर दस वर्ष ही नहीं हर वर्ष लड़ाई में उलझे रहते हैं। हाँ, पुरुषों की संख्या कम हो गई है। घर-घर पिता, पुत्र अथवा पति युद्ध में काम आ चुके हैं। अतः वे शान्ति के युद्ध की सैनिक बन गयी हैं।

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कढ़ाई की कला सीखिये !

लेखिका, कुमारी शसुीला कुमारी

इस लेखमाला का पहला लेख गत मास की 'दीदी' में प्रकाशित हो चुका है जिसमें कढ़ाई की सरल विधियाँ बतायी थीं।

किनारा नुमा कढ़ाई

यह कढ़ाई इस प्रकार की जाती है कि वस्त्र पर एक चौड़ी रेखा या पट्टी-सी प्रतीत हो।

हेरिंग बोन स्टिच

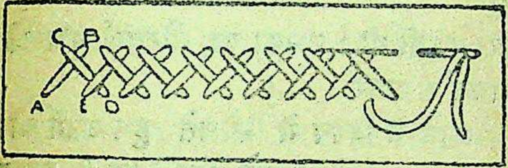

(१)

किनारा नुमा कढ़ाइयों में यह कढ़ाई सबसे अधिक प्रचलित है। इसका प्रयोग किसी वस्त्र पर जोड़ की सिलाई को छिपाने के लिए किया जाता है और या तो सजावट के लिए किया जाता है। इस कढ़ाई को बाएं ओर से दाहिनी ओर को दो कल्पित रेखाओं के बीच से ले जाते हुए करना चाहिए। (देखिये चित्र नं० १) बिन्दु ए पर वस्त्र के नीचे से सुई निकालिये और सुई को दाहिनी ओर थोड़ा हट कर ऊपर की रेखा पर बिन्दु बी पर चुभोइये और फिर इसे बायीं ओर सी पर निकालिये। फिर सुई को नीचे वाली रेखा पर बिन्दु डी पर चुभोइये और ई पर निकालिये। अब यहाँ से इसी क्रिया को इसी प्रकार जहाँ तक आवश्यकता हो दोहराती चली जाइये। इसमें सबसे अधिक ध्यान इस बात पर देना चाहिए कि सम्पूर्ण कढ़ाई क्रम बद्ध हो।

शैम हेम स्टिच

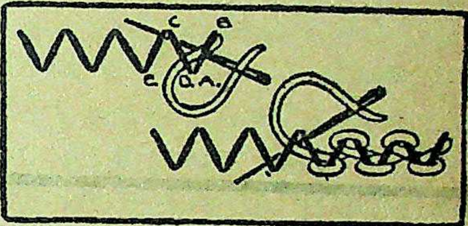

(२)

इस कढ़ाई का आधार वास्तव में ऊपर लिखी हुई कढ़ाई का ही एक प्रकार है; परन्तु यह दाहिनी ओर से बायीं ओर को की जाती है। (देखिये चित्र नं० २) बिन्दु ए पर वस्त्र के नीचे से सुई निकालिये। और बिन्दु बी पर चुभोइये, बिन्दु सी पर निकालिये डी पर चुभोइए। फिर ई पर निकालिये। इसी तरह करती चली जाइये। तब दूसरा धागा इन आधार की सीवनों पर इस तरह सुशोभित किया जाता है कि वह सिवाय कढ़ाई के प्रारम्भ और अन्त के और कहीं भी उस वस्त्र में न चुभे जिसमें कि कढ़ाई की जाती है जैसा कि चित्र में दिखाया गया है। यह कढ़ाई चोली के जोड़ों पर या इसी प्रकार के अन्य वस्त्रों पर सीवनों को सुन्दरता के साथ ढकने के लिए की जाती है। किनारी के रूप में भी इसका प्रयोग किया जाता है।

आगामी लेख में ब्लैंकेट स्टिच और काज की कढ़ाइयों का वर्णन किया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अँग्रेजी-कथाकार ओ० हेनरी
की एक सुन्दर
कहानी

हित-अनहित

अनुवादक, श्री आर० आर० सर्वटे

जान ने काऊंटर पर पैसे फेंके और एक डबल रोटी मांगी। उसके चेहरे पर अपनी दृष्टि गड़ाये हुए ही काऊंटर पर बैठी लूसी ने एक कागज में रोटी बांधी और वह उसके हाथ में दे दी। रोटी मिलते ही जान जल्दी-जल्दी होटल से बाहर निकल पड़ा जब तक वह दृष्टि से ओझल न हो गया। लूसी काऊंटर पर बैठी हुई उसी की ओर बराबर देखती रही थी। इसी समय एक ग्राहक ने काऊंटर पर पैसे डाले और लूसी को अनिच्छा से असहाय होकर वहां से अपनी दृष्टि हटा लेने के लिये विवश होना पड़ा। फिर भी उसी के विचारों में खोई हुई थी वह।

लूसी उस छोटे-से होटल की स्वामिनी थी। उस के होटल में कई लोग भोजन किया करते थे। कई लोग काऊंटर पर पैसे देकर रोटियां ले जाया करते थे। पर उनके बारे में वह कभी कोई विचार न किया करती थी। वह भली और उसका व्यवसाय भला यही स्वभाव था उसका। परन्तु जान को देख कर उसके इस स्वभाव में महान् परिवर्तन हो गया था। उसकी दृष्टि के सम्मुख हमेशा जान की आकृति घूमा करती थी। उसका वह गौरवर्ण घुँघराले केश, आकर्षक अधर......!

जान के विषय में सोचते हुए उसने चौंक कर मन-ही-मन अपने आपसे पूछा—'अं? यह क्या? मैं उसका नाम तक नहीं जानती। फिर उसके विषय में विचार क्यों करती हूँ?'

उसने फिर काऊंटर पर सिक्कों की खनखनाहट सुनी। वह चौंकी। एक ग्राहक पूछ रहा था—'लूसी किस विचार में खोई हो इस तरह? कुशल तो है?'

लूसी होश में आयी और गाल-ही-गाल में मुस-करा दी। ग्राहक ने रुपया दिया। खायी चीजों के दाम काट कर लूसी ने उसे रेजगारी लौटा दी। ग्राहक ने पैसे अपनी जेब के हवाले किये और वह चल दिया।

[२]

दूसरे दिन लूसी ने रोज की अपेक्षा होटल कुछ जल्दी खोल दिया। एक ग्राहक ने भीतर आकर पूछा—'क्यों लूसी, आज क्या बात है? बड़ी जल्दी होटल खोल दिया तुमने?'

'हाँ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'क्यों ?'

'यों ही।'

'यों ही का मतलब ?'

'सिर क्यों खा रहे हो ? एक बार कह दिया न ? योंही-योंही-योंही।'

ग्राहक अपनी हमेशा की जगह पर जाकर बैठ गया। लूसी काऊंटर पर बैठ कर बाहर रास्ते की ओर देखने लगी। दूर से जान को आते हुए देख कर उसके मन की कली खिल गयी। उसके चेहरे पर आनन्द की रेखायें उमड़ पड़ीं। अनजाने उसके दोनों हाथ केशों पर पहुँच गये। उसने उन्हें सम्हाला फ्राक झटकार कर ठीक कर लिया। दोनों कुहनियां काऊंटर पर टिका दीं। हाथ के पंजों में चिबुक स्थिर कर वह जान के स्वागत के लिये तैयार होकर बैठ गई।

जान आया। हमेशा की तरह उसने पैसे काऊंटर पर रख दिये और रोटी मांगी। लूसी ने रोटी कागज में बांध कर पैकेट उसके हाथ में देते हुए पूछा—'तुम्हारा नाम क्या है ?'

'तुम्हें मेरे नाम से वास्ता ? बतला दूँगा किसी दिन ?'

'आज बताने में कोई हर्ज है क्या ?'

'नहीं।'

'तो फिर बता दो न—क्या नाम है ?'

'मेरा नाम है जान।'

'थैंक्स।'

परन्तु लूसी के थैंक्स सुनने को जान वहाँ था कहाँ ? पैकेट हाथ में पड़ते ही उसने कभी का अपना रास्ता पकड़ लिया था।

[३]

लूसी की होटल से डबल रोटी ले जाना जान का नित्य का कार्यक्रम था और अब रोज जल्दी होटल खोल कर जान की प्रतीक्षा में बैठे रहना लूसी का नित्य का कार्यक्रम हो गया था। दूर से जान को आते देखती तो उसके कपोलों पर ललाई फैल जाती। रोटी बांधकर पैकेट जान के हाथ में देते हुए उसे बड़ी धन्यता मालूम होती थी।

दिन प्रति दिन जान के प्रति लूसी का आकर्षण बढ़ रहा था। इस आकर्षण का प्रणय में तो रूपान्तर न हो जायगा......?

एक दिन लूसी के मन में एक विचार उठा—'जान मेरे पास से रोज रोटी ले जाता है। वह उसे सूखी ही खाता होगा ? गरीब होगा बिचारा। बड़ी मुश्किल से पेट भर रहा होगा ? मक्खन के लिये पैसे कहाँ से लायगा बिचारा अरे रे, बिचारा सूखी खाता है ? यदि मैं ही रोज़ उसकी रोटी में थोड़ा मक्खन भी लगा दिया करती, तो मेरी कौन बड़ी हानि हो जाती ? अरे रे मुझे यह बात पहले से ही क्यों न सूझी ? अब मैं उसकी रोटी में मक्खन लगा दिया करूँगी।' उसने मन-ही-मन यह निश्चय कर लिया।

[४]

दूसरे दिन दूर से जान को आते हुए देख कर लूसी झटपट उठ कर खड़ी हो गयी। उसने एक अच्छी-सी रोटी काटी और उसमें खूब मक्खन लगा दिया। फिर उसे कागज में ठीक तरह से लपेट कर एक सुन्दर पैकेट बनाया और उसे अपने पास रख लिया। इसके बाद उसके होटल में आने की बाट जोहने लगी।

जान काऊंटर के पास आया तो वह बोली—'आओ जान, आज देखो कितनी अच्छी रोटी दे रही हूँ तुम्हें—तुम देखते ही खुश हो जाओगे। पर हाँ, इसके लिये मैं कुछ इनाम लूँगी—समझे बाबू जी ?' इतना कह कर अधरों पर मन्द स्मित की रेखाएँ फैलाये उसने रोटी का पैकेट जान की तरफ बढ़ा दिया। हमेशा की तरह लूसी की ओर जरा भी ध्यान न देते हुए जान ने वह पैकेट ले लिया और चलता बना।

लूसी को अब बड़ी खुशी हो रही थी। उसके चेहरे पर सन्तोष की मुस्कराहट झलक रही थी। वह आज फूली नहीं समाती थी। वह मन में सोचने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगी—'घर जाकर जान पैकेट खोलेगा और एकदम आश्चर्यचकित हो जायगा। कई दिनों के बाद हो सकता है कि शायद जीवन में पहली बार ही वह मक्खन लगी रोटी खायगा। मक्खन-चुपड़ी रोटी के प्रत्येक टुकड़े को खाते हुए वह मेरी याद करेगा। वह मन में कहेगा—'कितनी चतुर है मेरी लूसी ?' कल होटल में आकर कहेगा—'लूसी तुम कितनी चतुर हो ?' और मैं भी कहूँगी—'हाँ, तुम भी कितने अच्छे हो जान ? पर तुमने इतने दिनों तक मुझसे क्यों नहीं कहा ? अजी बड़े बेवकूफ हो, सूखी रोटी ही खाते रहे ?' इसके बाद वह अपना हाथ आगे बढ़ायेगा और उसमें मेरा हाथ लेकर उसे प्रेम से दबायेगा। इसके बाद...... ।'

इस प्रकार के सुख स्वप्न में लूसी खोयी हुई थी। उसने जान को होटल की ओर आते देखा। यह सोच कर कि अब उसका स्वप्न साकार होगा, वह उल्लसित हो गई। फिर एक बार उसने अपने केश सम्हाले। कपड़े झटकार कर ठीक-ठाक कर लिये और अधरों पर मुस्कराहट फैला कर वह उसकी प्रतीक्षा करने लगी।

जान के काऊंटर पर आते ही लूसी ने उससे कहा—'क्यों जान, रोटी अच्छी थी न ? लाओ मेरा इनाम।'

क्रोधातिरेक से जान ने रोटी का पैकेट काऊंटर पर फेंक दिया। उसका मुँह क्रोध से तमतमा गया था। वह झल्लाकर बोला—'लूसी, तुमने आज मेरा सत्यानाश कर दिया लूसी...।'

उसका वह आवेश देख कर लूसी घबरा गयी। उसका इस प्रकार रौद्र रूप वह आज पहली बार ही देख रही थी। मुझसे क्या भूल हो गई है, यह वह नहीं समझ पा रही थी। वह भय से आकुल हो गई।

'मैंने तुमसे हमेशा की तरह सूखी रोटी मांगी थी। फिर तुमने मक्खन लगा कर रोटी क्यों दी ?' जान गर्ज कर बोला—'इसके कारण मेरी जो हानि हुई है, इसका जिम्मेवार कौन है ?'

'इस तरह नाराज क्यों होते हो ? मेरी समझ में ही नहीं आता कि आखिर तुम्हारा मतलब क्या है ?' लूसी ने घबरा कर कहा—'उलटे मैंने तो मक्खन लगा कर रोटी दी थी...।'

'वही तो भूल की तुमने। इसीलिये तुमने मेरी जिन्दगी को धूल में मिला दिया।'—जान का क्रोध आँखों से उतर कर अब उसके स्वर में आ गया था।

'परन्तु इसमें आप इतने नाराज क्यों हो रहे हैं ? क्या नुकसान हो गया आपका ? ऐसी कौन-सी चीज नाश हो गई आपकी ?'—लूसी ने कहा।

'नाराज होने की बात ही है।' जान गुस्से में बोला ?

'तुम क्या कर बैठीं ? तुम्हें कुछ पता है इसका ? मैं एक चित्रकार हूँ। एक प्रदर्शनी के लिये मैं एक चित्र बना रहा था। मुझे विश्वास था कि मेरा वह चित्र सर्वश्रेष्ठ होगा और उस पर मुझे प्रथम पुरस्कार प्राप्त होगा। पेन्सिल की बनी लकीरों को पोंछने के लिये मैं सूखी डबल रोटी के टुकड़ों का उपयोग किया करता था—और आज—आज तुमने रोटी में मक्खन चुपड़ कर मेरे चित्र को बरबाद कर दिया। मेरी आशाएँ मेरी आकांक्षाएँ मिट्टी में मिला दीं। इसके लिए जिम्मेवार कौन है ?—बोलो ?'

लूसी की आँखें आँसुओं से भर गयीं। उसके चेहरे पर भय की छाया अब भी फैली हुई थी।

—('कर्मवीर' से)

माता और पुत्री

जबलपुर की एक ३५ वर्षीया महाराष्ट्रियन महिला श्रीमती शीलावती बलवन्त जोशी तथा उनकी पुत्री कुमारी यमुना जोशी ने साथ ही साथ बम्बई बोर्ड के पूना-केन्द्र से मैट्रिक परीक्षा पास की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर की सजावट में चित्र

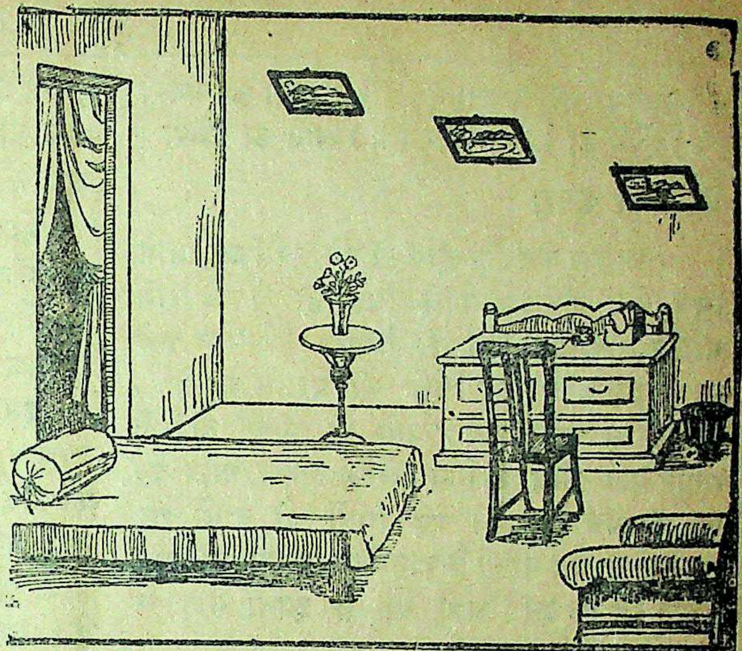

लेखिका,
कुमारी पुष्पलता अस्थाना एम० ए०

घर की सजावट में चित्रों का भी एक विशेष स्थान है। जिस प्रकार से मेज, कुर्सी, पलंग और फूलदान इत्यादि यथा स्थान ही भले मालूम देते हैं उसी प्रकार विभिन्न चित्र भी उपयुक्त स्थान पर ही अधिक शोभा देते हैं। दीवारों पर अस्तव्यस्त ढङ्ग से टांगे हुए चित्र कमरे की छटा को बढ़ाने के अतिरिक्त कुछ कम ही कर देते हैं। और फिर आज-कल वह भी समय नहीं रहा कि नये पुराने सभी चित्रों को दीवार के सिरे पर एक लम्बी पंक्ति में टांग कर एक अच्छी खासी प्रदर्शिनी-सी लगा दी जाये।

आज का युग ज्यों-ज्यों विज्ञान की ओर बढ़ रहा है, मनुष्य का हृदय उतना ही कला की ओर! वह प्रत्येक वस्तु में कला चाहता है, उसे कलात्मक दृष्टिकोण से देखता है और उसमें आकर्षण खोजता है। यह बात दूसरी है कि किसी में यह भावना अधिक होती है और किसी में कम। किन्तु कला का प्रेमी मनुष्य सदा से रहा है।

वैसे तो संसार की कोई भी वस्तु रेखाओं में बांध देने पर चित्र ही कही जायेगी, किन्तु यहाँ हमारा प्रयोजन केवल उन चित्रों से है जिन्हें साधारण मनुष्य आसानी से अपने घरों में सजा सकता है और ये चित्र हैं प्रकृति और पुरुष के!

घर को चित्रों से सजाने के पूर्व हमें सर्व प्रथम इन बातों का विचार कर लेना चाहिए कि चित्र किस प्रकार का है, उसे किस स्थान पर लगाना उपयुक्त होगा, तथा दीवारों और चौखटों का रङ्ग क्या है?

मुख्य रूप से चित्र दो प्रकार के होते हैं—कैमरे द्वारा खींचे हुए तथा हाथ से चित्रित किये हुए। पहले स्त्रियां काढ़े हुए चित्रों से भी घरों को सजाती थीं, किन्तु आज-कल उसकी प्रथा नहीं रही।

यदि सच पूछा जाये तो इङ्गलैण्ड, जर्मनी, इटली चीन और जापान ऐसे देशों में लोग अपने घरों में हाथ से ही बनाये हुए चित्र लगाते हैं, परन्तु भारत में प्रत्येक जन-साधारण को यह सुविधा प्राप्त नहीं। अतएव उनके पास जो भी चित्र हैं उन्हें वे इस ढङ्ग से लगा सकते हैं कि वे देखने में सबको भले मालूम दें।

विभिन्न कमरों के लिये हमें भिन्न-भिन्न प्रकार के चित्रों का चुनाव करना चाहिए। साधारणतः हमारे घरों में तीन कमरे ऐसे होते हैं जिनमें चित्रों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को सजाया जा सकता है—(१) बैठने का कमरा (२) सोने का कमरा और (३) खाने का कमरा।

बैठने का कमरा

प्रायः इस कमरे में हाथ से बने हुए चित्र, भाव चित्र, व प्राकृतिक दृश्यों के चित्र ही लगाये जाने चाहिए। वे कला पूर्ण हों, जिससे आने-जाने वाले भी आपकी रुचि और चित्रों की प्रशंसा कर सकें। बारीकी से बनाये गये चित्रों को लम्बी डोरी के सहारे कुछ नीचे टांगिये (लगभग पांच और छः फुट की ऊँचाई पर)। बड़े चित्रों को उनसे कुछ ऊपर लगाइये। परन्तु वे स्पष्ट दिखाई देने चाहिए। ध्यान रहे कि इन चित्रों का रङ्ग इतना गाढ़ा न हो, जो नेत्रों में खटके।

इसके अतिरिक्त कैमरे द्वारा कलात्मक दृष्टिकोण से खींचे गये चित्रों को भी बैठक में जहाँ-तहाँ सजाया जा सकता है जैसे अँगीठी, पुस्तकों की अलमारी व छोटी तिपाई पर। किन्तु ये चित्र बहुत ही सुन्दर चौखटों में जड़े होने चाहिए। यदि धातु के चौखटे हों तो ज्यादा अच्छा है। इस स्थान पर बच्चों के सुन्दर चित्र भी अच्छे लगेंगे। अनावश्यक चित्रों व कलेन्डरों से घर को भरने का प्रयास न कीजिये। विशेष कर बैठने के कमरे में चित्रों की संख्या दस-बारह से अधिक नहीं होनी चाहिये।

सोने का कमरा

अपनी रुचि के अनुसार आप इस कमरे में कोई भी चित्र लगा सकती हैं, परन्तु अधिकतर मित्रों, निकट सम्बन्धियों तथा आदर्श पुरुषों के ही चित्र सोने के कमरे में लगाये जाते हैं, जिसमें दिन भर की थकान का बोझ लेकर जब आप अपने शयनागार में पहुँचे तो अपने प्रिय मित्रों की मधुर स्मृति में डूब कर सो जायें और उठते ही आपके सम्मुख आपके आदर्श पुरुष का चित्र हो, जिसके पद-चिन्हों पर आप चलना चाहती हैं। प्रातःकाल का यह अवलोकन आपको जीवन पथ पर अग्रसर होने के लिये दिन भर प्रेरणा देता रहेगा। यदि आप किसी देवी-देवता के उपासक हैं तो इस स्थान पर उसका चित्र भी लगाया जा सकता है।

भोजन का कमरा

भोजन के कमरे में प्रायः सह चित्र, भोज-चित्र सामाजिक चित्र, पारिवारिक चित्र तथा विनोद प्रिय चित्र ही अधिक शोभा देंगे। किन्तु इस कमरे में चित्र बहुत कम संख्या में लगाइये।

इन कमरों को सजाने के उपरान्त भी यदि कुछ चित्र बच रहें तो उनमें से अच्छे-अच्छे छोटे चित्रों को छांट कर आप उन्हें अपनी शृङ्गार मेज, रेडियो तथा अन्य मेजों पर सुन्दरता से सजा सकती हैं। प्रायः शिक्षित घरों में सह चित्रों की अधिकता होती है। यदि आपका घर पर्याप्त बड़ा है तो आप इन चित्रों को अपने यहाँ की गैलरी में थोड़े-थोड़े अन्तर पर एक पंक्ति में लगा सकती हैं।

चित्रों को लगाते समय हमें उनके पृष्ठावरण, चौखटे तथा दीवारों के रङ्गों का भी विशेष ध्यान रखना होगा। चित्र का पृष्ठावरण उसके रङ्ग पर जँचता हुआ होना चाहिए। कभी-कभी भद्दे रङ्ग के पृष्ठावरण से अच्छे रङ्ग के चित्रों की भी शोभा जाती रहती है, और कभी-कभी सुन्दर चौखटों में मामूली चित्र भी सुन्दर दीख पड़ते हैं। चौड़े-चौड़े चौखटों में जड़े हुए चित्र अच्छे नहीं मालूम देते। चित्र जितना ही छोटा हो उसका चौखटा उतना ही बारीक होना चाहिए। साथ-साथ हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जिन दीवारों पर चित्र लगाये जायें उनका रङ्ग चित्र सौंदर्य के प्रतिकूल न हो। कमरे की दीवारें यदि किसी हल्के रङ्ग की हैं तो उन पर किसी भी रङ्ग के चौखटों वाला चित्र खप जायेगा किन्तु सफेद दीवारों के लिये हल्के रंगों वाला चौखटा ही उचित होगा।

यदि इन सब बातों का विचार करके आप अपने घर को चित्रों से सजायेंगी तो आप स्वयम् अनुभव करेंगी कि इस प्रकार आपके घर की छवि कितनी अधिक बढ़ जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक पिता की कहानी जिसने अपने पुत्र को सोने की गठरी लाने के लिये परदेश भेजा।

सोने की गठरी

मूल लेखक, जान विलकिन्स

अनुवादक, श्री 'स्वतन्त्र'

[१]

अमृत लाल शहर की सड़कों और गलियों में चलने का अभ्यस्त था। शहर में रहते वर्षों व्यतीत हो चुके थे। वहाँ के व्यस्त जीवन के कारण वह नियमित समय पर सड़कों और गलियों में दिखाई देता था।

आज वह अपने गाँव वापस जा रहा था। उस के पैर तीव्रता से आगे बढ़ते जा रहे थे। बाजरे के खेतों में से होता हुआ वह जा रहा था। जिस पतली सड़क से होकर वह जा रहा था उसके दोनों ओर खेत थे। सड़क आगे जाकर एक तरफ मुड़ती, फिर कुछ मीलों के बाद दूसरी ओर मुड़ती। मगर अमृतलाल धीरज के साथ आगे बढ़ता जा रहा था। ऐसी घुमावदार सड़कों पर चलने में अवश्य ही काफी समय लग जाता है। मानसून का समय था, फिर भी वर्षा जोरों की नहीं हो रही थी। रिम-झिम पानी बरस रहा था।

एकायक एक तूफान तेजी के साथ आया। तूफान से वह घबड़ाया नहीं। उसे आनन्द आने लगा। आकाश पर बिजली चमकी। बादलों ने गर्जना की। बादल की गरज पहले धीमी और फिर बहुत तेज, जैसे किसी देवता का प्रकोप हो। वायु की तीव्रता से खेत के पौदे झुके जा रहे थे। मनुष्य पशु और पेड़ सभी झोंके के कारण गिरने-गिरने से बचते। जब वायु का झोंका खतम हो गया और घने बादल आकाश के दूसरे स्थानों पर पहुँच गये, चाँद उग आया। प्रकृति के इन परिवर्तनों को देख कर अमृतलाल को प्रसन्नता हुई। उसने सोचा कि इस लीला को देख कर ऐसा कौन व्यक्ति है जो उत्साहित न होगा, जो ऊँची उड़ान की कल्पना न करेगा और साथ ही जो अपने को तुच्छ नहीं समझेगा।

कलकत्ता जैसे बड़े शहर में २० वर्षों तक रह चुकने के कारण अमृतलाल कुछ-कुछ दार्शनिक हो गया था। यद्यपि वह जानता था कि वह कोई बड़ा विचारक नहीं था। परन्तु इन वर्षों में उसने जो अनुभव प्राप्त किये थे उनसे वह जान गया था कि संसार में सभी वस्तुओं का अन्त है मृत्यु। मनुष्य-मात्र के जीवन का मार्ग वह उतना नहीं समझ सका जितना प्रकृति की वस्तुओं के क्रम को। अपने मालिक के मकान की छत पर बैठ कर जब वह आकाश के तारों की ओर देखता, उसे सब कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अद्भुत या जादू-सा लगता। वह सोचता कि प्रकृति के ये सब कार्य कितनी सुगमता से हो जाते हैं, बिना मनुष्य की सहायता के।

अमृतलाल धरती का एक प्राणी था। उसके बाप-दादों ने धरती के ही सहारे अपनी जीविका चलाई थी। लाल-भूरे पृथ्वी ही से रोटी-दाल चलती थी। बड़े उत्साह के साथ वे दाने-दाने की परवाह करते, बोते, उगाते और काटते। जीना भी एक बहुत बड़ा कार्य है—परिश्रम से, इसे उसके बाप दादे जानते थे। अमृतलाल ही एक ऐसा था जिसने परिवार भर के लोगों से अलग मार्ग चुना। परिवार को छोड़ कर वह कलकत्ता जैसे बड़े शहर के साहसी जीवन को अपनाने आया था। उसे यह भी नहीं मालूम था कि इन बीस वर्षों में उसके माता-पिता, भाई-बहनों का क्या हुआ—वे जीवित थीं या इस संसार से कूच कर गयीं। उसे कुछ नहीं मालूम था। उसने उन्हें कोई पत्र भी तो नहीं लिखा था। पत्रों को पढ़ भी कौन सकता था?

[२]

दूर उसने एक रोशनी देखी। वह जानता था कि यह रोशनी उसके गाँव से आ रही है। क्योंकि चारों ओर मीलों और कोई गाँव नहीं था। अपने गांव की पुरानी स्मृतियाँ उसके मस्तिष्क में आने लगीं। उसे ऐसा लगा मानों कल ही वह इस मार्ग से होता हुआ गांव के बाहर जा रहा था। अन्धेरे में उसे केवल एक ही रोशनी दिखाई दे रही थी। अन्धेरा बढ़ता जा रहा था। उसने सोचा कि गांव वाले अगर कलकत्ता जैसे बड़े शहर की जगमगाहट देख पावें तो उन्हें कितना आश्चर्य होगा। चौरंगी के विज्ञापनों के ऊपर प्रकाश डालने वाली (नियन) बल्बों की रोशनी को देख कर उन्हें कितना आश्चर्य होगा—वे उसे घन्टों देखते रह जायँगे, आपस में बातचीत करने लगेंगे। गांव वालों के लिये उस बड़े शहर की रंगीनी एक दैवी चमत्कार की बात होगी।

एक क्षण के लिये उसने सोचा कि वह वापस चला जाय, जहाँ से वह आ रहा था। मगर अँधेरा काफी हो गया था, वह कई मील चला आया था। साथ ही साथ वह थक भी काफी गया था। अब उसको चलना सुगम था क्योंकि बाजरे के खेतों के पार हो चुका था। अब वह उस पुरानी पतली राह पर चल रहा था जो उसे सीधे उसके घर पहुँचाने वाली थी।

गांव की चौहद्दी पर पहुँच चुकने पर वह फिर एक बार ठिठक गया। उसके मस्तिष्क में एक सन्देह उत्पन्न हुआ। उसने वापस लौट जाना चाहा। उस ने सोचा कि वह बिना अपने गांव वालों से मिले वापस लौट जाय। एक कुतिया भूँक रही थी। भौंकने की आवाज ने मानों उसके गांव पहुँच जाने की सूचना दे दी। मगर सारा गांव उजाड़-सा दिखाई दे रहा था। सभी अपनी-अपनी झोपड़ियों में थे। वे खाना बना रहे थे और दिन भर खेत में काम करते समय जो छोटी-मोटी घटनायें घट चुकी थीं उन पर बात-चीत कर रहे थे।

अमृतलाल चलता गया। हवा में एक अजीब, मगर परिचित सुगन्ध थी। गांव के घरों में खाना बन रहा था-खाने की सुगन्ध फैल रही थी। पुरानी रीति से बनाये जाने वाले खाने की सुगन्ध शहर के मसालेदार भोजन की सुगन्ध से कहीं अच्छी थी। वह रुका और फिर अपने पिता की झोपड़ी में प्रवेश कर गया।

[३]

एक बूढ़ी औरत, जिसकी कमर झुकी हुई थी, आग के पास बैठी हुई थी। वह धीरज के साथ दाल की बटलोई में कलछुल चला रही थी। अमृतलाल के आगमन की आवाज सुन कर उसने अपना सिर ऊपर उठाया। अपना मुँह पोंछते हुए वह अपनी आँखों की शक्ति से यह जानने का प्रयत्न करने लगी कि कौन व्यक्ति उसके सामने खड़ा था। उसने धुआं को दूर करने की कोशिश की, पंखा झला कर, अन्त में पहचान की एक दृष्टि ने उसके चेहरे को आलोकित कर दिया। वह मुस्कुराई। उसका मुँह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुलने से, बिना दाँत वाले पान के रङ्ग-से रंगे जबड़े दिखाई देने लगे।

'मेरे लाल!' उसने कहा—'क्या तू मेरा लाल है?'

'हाँ मां।' उसने कहा। बुढ़िया उसके पास आई और अपनी मटमैली बांहों से उसे अपने गले से लगा लिया। अमृतलाल ने उसके सिर पर दृष्टि फेरी। मां से उसने रीति के अनुसार कुछ शब्द कहे। मगर उसे बड़ी निराशा हुई। क्या यही उस की माँ थी, उसे विश्वास नहीं हो रहा था। पिछली बार जैसा उसने अपनी माँ को पाया था वैसा ही चित्र वह इन वर्षों में खींच रहा था। अब वह बूढ़ी हो चली थी और हर समय कांपती थी। अमृतलाल उससे दूर हो गया। बूढ़ी मां के नेत्र अश्रु पूर्ण हो गये मगर उसका हृदय तनिक भी नहीं विचलित हुआ।

माँ के पास जमीन पर बैठ कर उसने पूछा—'और मेरे पिता? कहाँ हैं वह?'

'वह शीघ्र ही आ रहे हैं। वह आग के लिये कंडियां लेने गये हैं।'

तब उसके पिता आये। उसका (पिता) व्यवहार मां के व्यवहार से भिन्न था। इन वर्षों में मां पिता के और हृदयों में अपने पुत्र के प्रति अनुराग की मात्रा एक ही नहीं थी। पिता में अधिक परिवर्तन नहीं हुआ था। उसने अपने पुत्र को देखा किन्तु उससे मिलने के लिये दौड़ा नहीं। कंडी वाले झोले को सावधानी से रख कर वह खड़ा हो गया।

'तुम वापस आ गये, मेरे पुत्र?' उसने कहा।

'हाँ पिता जी, मैं वापस आ गया।' अमृतलाल ने कहा।

'तुम्हें देख कर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है।' परन्तु अमृतलाल ने उसके चेहरे पर झूठ की झलक के साथ घृणा की छाया भी देखी।

उस रात को सोने के पहले उन्होंने आपस में बातचीत किया। अमृतलाल को यह जानते देर न लगी कि पिता उसके आगमन से प्रसन्न नहीं है। उसने इसका कारण ढूँढ़ने का प्रयत्न किया। कुछ देर के लिये झोपड़ी से बाहर बैठे रहे। रात की अन्धकार में तीनों बात कर रहे थे। पानी बरसना खतम हो चुका था और आकाश पर तारे चमक रहे थे। अमृतलाल की माँ ने कलकत्ता जैसे बड़े शहर के बारे में कई प्रश्न किये। उसने यह भी पूछा कि अभी तक वह वहाँ क्या करता रहा है? उसके पिता चुपचाप बैठे हुए थे। एक पत्थर को अपनी हथेली पर रख कर अपनी उँगलियों से उसे साफ कर रहे थे। उसकी हरकत में कुछ ऐसा था जिससे उसके पुत्र में यकायक एक घृणा उत्पन्न हो गयी।

काफी देर की मौन को भंग करते हुए अमृतलाल ने अपनी माँ से पूछा—'मां, बताओ, क्या तुम मुझे स्वर्ण से भी अधिक प्रेम करती हो?' स्वर्ण शब्द को सुनते ही पिता ने अपनी आँख ऊपर उठाई और पत्थर के टुकड़े को गिरा दिया।

'क्या कहा? सोना?' उसके पिता ने कहा। अपनी आँखों में चमक और शब्दों में कम्पन लाते हुए।

'मेरे लाल!' अमृतलाल की माँ ने कहा—'संसार भर में पृथ्वी के अन्दर से आज तक जितना सोना निकाला गया है उससे भी कहीं अधिक मैं तुमसे प्रेम करती हूँ।'

'और तुम, पिता जी?'

'मेरे पुत्र! अपने मांस और रक्त को छोड़ कर मैं सोने से कैसे प्रेम कर सकता हूँ?'

अमृतलाल ने थोड़ी देर तक अपने बूढ़े पिता की ओर गौर से देखा। थोड़ी देर के लिये उनकी आँखें एक दूसरे से मिलीं। अन्त में पिता की आँखें नीची हो गयीं।

अगर ऐसी बात है, अमृतलाल ने यकायक खड़े होते हुए कहा—'तो तुम्हें इसकी आवश्यकता न पड़ेगी।' वह कुएँ पर गया और एक बण्डल को कुएँ में फेंक दिया। पानी में धम्म से गिरने की आवाज सुन कर वह अपने पिता की ओर मुड़ा और कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'यह जिसे मैंने कुएँ में फेका है मेरी पन्द्रह वर्षों के परिश्रम का फल था। लेकिन चूँकि अब मैं तुम्हारे पास हूँ और तुम मेरे पास हो, अब इसकी कोई आवश्यकता नहीं हो सकती।' जमीन पर बैठे हुए पिता के कानों में उसके शब्द गये, है न पिता जी?'

'हाँ मेरे पुत्र, ठीक है।' पिता की आवाज में क्रोध भरा हुआ था।

[४]

उस रात को अमृतलाल जब सोने के लिये गया उसके हृदय में एक अद्भुद चमक थी। उसे लग रहा था मानों वह किसी उच्च भावना के संसार में पहुँच गया था। कई घंटे तक वह जागता रहा, अपनी झोपड़ी के ऊपर बने हुए घास-फूस की छत को देखते हुए। अन्त में उसने अपने नेत्र बन्द किये और उसे नींद आ गयी।

सुबह उसकी नींद खुली। चारपाई पर लेटे हुए ही उसने अपनी करवट बदली। उसने देखा कि उसकी मां अब भी सो रही थी। उसके बगल में जहाँ उसके पिता को होना चाहिये था, एक स्थान खाली था। अमृत लाल उठा और झोपड़ी के बाहर गया। झोपड़ी और कुएँ के बीच जो पतला मार्ग था उसमें से होकर वह कुएँ पर पहुँच गया। एक दुबला पतला मुर्गी का बच्चा उसके सामने से होकर गुजरा। अमृत लाल ने अपने पैर से उसे हटा दिया।

कुएँ में एक बाल्टी थी। जिस रस्सी से वह कुएँ में लटकी हुई थी, हवा के कारण रस्सी इधर-उधर झूम रही थी। अमृत लाल ने रस्सी को ऊपर खींच लिया। रस्सी छोटी थी, इतनी कि पानी के सतह तक नहीं पहुँच सकती थी। रस्सी के आखिरी ओर पर गट्ठी थी।

अमृत लाल ने कुएँ में झांक कर देखा, नीचे काले छेद की ओर गौर से। वहां, जैसा कि उसे पहले से ही आशा थी, उसके पिता की लाश तैर रही थीं।

गीत

लेखक, श्री देवेन्द्रकुमार बख्शी 'देव' बी० ए०

दर्द है मेरे हृदय में किन्तु क्या है, क्या बताऊँ?

लुट गये अरमान लाखों,
छिप गये हैं जान लाखों।
काल - चक्राघात खाकर
मिट गये इन्सान लाखों।

ढह गये पर्वत हजारों धूल बन कर इस धरा पर,
तब कहो निज जिन्दगी की क्षुद्रता मैं क्या दिखाऊँ?

रोज हैं बरबाद होते,
सैकड़ों उपवन हृदय के।
चाह – फूलों को करोड़ों,
मिटाते कीड़े समय के।

रोज की बरबादियों के बीच गुलशन की चमन की
आज अपनी चाह-कलि का करुण क्रन्दन क्या सुनाऊँ?

अवनि से भी ले बड़प्पन,
ये सितारे टूटते हैं।
दिखा क्षण भर अतुल गरिमा
शून्यता में डूबते हैं।

सबेरे की रवि-किरन संग सितारों का राज्य मिटता
मृत्तिका का दीप कैसे ज्योति का वैभव जताऊँ?

पल रही हैं आत्मायें
कण्टकों के पथ विकल में।
जल रहे चेतन - अचेतन
दुःखद पीड़ा के अनल में।

जगत का जीवन जलन-मय जलजला की ज्वाल पल-पल
आग की इस सृष्टि में क्या जलन की गाथा सुनाऊँ?

दर्द है मेरे हृदय में किन्तु क्या है क्या बताऊँ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषैले जीवों से बचाव

लेखिका, श्रीमती शिवनयना मैहता

वैसे तो काटने वाले जीव-जन्तुओं से संसार भरा पड़ा है। परन्तु उन सब में विष नहीं होता। जैसे भिड़, मधुमक्खी और मच्छर आदि के काटने से कष्ट तो अवश्य होता है, परन्तु ये घातक नहीं होते। बिच्छू के डंक मारने से कष्ट अधिक होता है परन्तु घातक वह भी नहीं के बराबर है। सर्प का विष सबसे अधिक घातक है। कुत्ते के काटने से भी भयङ्कर परिणाम होते हैं। क्योंकि यह सभी चीज कष्टदायक होती हैं और आये दिन ऐसी घटनाएँ घटती हैं इसलिये इनका उपचार अवश्य सीखना चाहिए।

मच्छर के काटने पर

मच्छर की काटी हुई जगह को यदि जरा-सी असावधानी से खुजला दें तो वह भी एक बड़ा घाव बन सकता है। इसलिए इसकी काटी हुई जगह को कभी न खुजलाएँ। यदि कष्ट अधिक हो तो सोडियम बायकार्बनेट में थोड़ा पानी मिला कर उसका लेप कर दें। मलेरिया बुखार भी मच्छर की एक देन है। इसका इलाज कुनीन है। मलेरिया के दिनों में किसी डाक्टर की सलाह लेकर कुनीन लेते रहना चाहिए। लम्बी जुराबें पहनें, पूरी आस्तीन की कमीज पहनें, जहाँ तक हो सके सभी अंगों को ढक रखें। रात को मच्छरदानी लगा कर सोयें। इस प्रकार आप मच्छरों के काटने से बचे रहेंगे। वैसे तो कई प्रकार के तेल भी बाजार में मिलते हैं जिनके लगाने से मच्छर नहीं काटते।

भिड़ या मधुमक्खी

भिड़ या मधुमक्खी के काटने पर भी सोडियम बायकार्बनेट का लेप कर लें। यदि बहुत-सी मक्खियों के हमले के कृपा पात्र हों तो गुनगुने पानी के टब में सोडियम बायकार्बनेट डाल कर उसमें कुछ देर बैठें। यदि फिर भी कष्ट असहनीय हो तो डाक्टर की सलाह लें।

बिच्छू

बिच्छू के काटने से कष्ट बहुत होता है। काटी हुई जगह पर स्पिरिट लगा दें। कई लोग कद्दू का डंठल भी घिस कर लगाते हैं।

सर्प

सर्प का काटना सबसे घातक है। सबसे पहले तो इनसे बचने का उपाय करना चाहिए। ये अधिकतर हाथ-पाँव पर ही काटते हैं। इसलिए जङ्गल में या किसी और जगह जाना हो जहाँ सर्प का भय हो तो पांव में पूरी लम्बाई के चमड़े के जूते पहनें और हाथों में भी चमड़े के दस्ताने। बिना भली प्रकार देखे धरती या पेड़ पर न बैठें और न हाथ रखें। परन्तु काट ही ले तो सबसे पहले यह देखें कि सर्प किस प्रकार का है। उसकी पहचान करें (क्योंकि सभी सर्प विषैले नहीं होते) फिर उस का उपचार करें। काटे हुए व्यक्ति को तुरन्त लिटा देना चाहिए ताकि शरीर में रक्त प्रवाह की गति धीमी पड़ जाय और विष को रक्त में फैलते देर लगे, फिर जहाँ पर काटा हो वहां से जो भाग हृदय की ओर पड़ता हो कस कर बांध दें। बीस-बीस मिनट के पश्चात् एक मिनट के लिये बन्धन जरा ढीला कर दें और फिर कस दें। जैसे-जैसे सूजन ऊपर को चढ़ती हो वैसे-वैसे बन्धन को भी ऊपर की ओर सरकाते रहें। बन्धन के लिए उस समय जो कुछ मिले उसी से काम लेना चाहिए क्योंकि इसमें शीघ्रता की बड़ी आवश्यकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन्धन बांध चुकने पर तेज चाकू या उस्तरे को उबाल कर या आग में तपा कर कीटाणु रहित कर लें फिर घाव और उसके आस-पास की जगह को स्पिरिट या पोटाशियम परमेंगनैट के घोल से धोकर आइयोडिन लगा दें। तत्पश्चात् चौथाई इञ्च गहरा और आधा इञ्च लम्बा × इस आकार का घाव कर दें। ये घाव डङ्क के चिन्ह पर होना चाहिए। फिर घाव को दोनों ओर से दबा कर रक्त बहने दें (विष मारने के लिये घाव में पोटाशियम परमैगनेट के दाने भी मल सकते हैं।) इसके बाद एक खाली बोतल या ग्लास लेकर उसमें जरा-सा कागज का टुकड़ा जलाएँ ताकि गरम होने पर उसकी हवा निकल जाय। इस बोतल या ग्लास को घाव के मुँह पर लगा दें। ठंडा पड़ने पर वह घाव को चूस लेगा, कई लोग तो घाव को मुँह से चूस कर थूक देते हैं। परन्तु चूसने वाले को बड़ी ही सावधानी से काम लेना चाहिए। चूसने के बाद पोटाशियम परमैगनेट के घोल से भली प्रकार कुल्ला करना चाहिए। यदि सूजन अधिक हो तो पहले घाव के आस-पास कुछ और घाव कर दें। काटे हुए व्यक्ति को पूरा आराम देना चाहिए और गर्म रखना चाहिए। यदि पी सके तो गरम दूध या चाय दें परन्तु कोई नशीली वस्तु का सेवन न कराएँ। उसे हिम्मत न हारने दो मीठी-मीठी बातें करके साहस बढ़ाते रहो। यदि सांस बन्द होने लगे तो कृत्रिम रीति से सांस लाओ, यदि अस्पताल या किसी दूसरे स्थान पर ले जाना चाहो तो उठा कर ले जाना चाहिए। यदि ऐसा न करेंगे तो चलने से रक्तप्रवाह की गति तेज हो जायगी और विष रक्त में शीघ्र मिल जायगा। फिर तो डाक्टर के लिये भी समस्या जटिल हो जायगी।

विषैले सर्प भी अनेकों प्रकार के होते हैं। उन की पहचान हर एक व्यक्ति को आनी चाहिए। उन की चार प्रकार से परीक्षा हो सकती है। पेट देख कर, पीठ से, सिर के ऊपरी भाग से और चेहरे के दोनों ओर देख कर। विषैले सर्प के चिन्ह—

वायपर—अधिक लम्बे नहीं होते। दाँत खोखले होते हैं।

एसिल वायपर—ये वायपर जाति में सबसे लम्बा और सबसे विषैला होता है। रङ्ग कुछ-कुछ गुलाबी खाकी होता है। पीठ पर तीन बराबर लाइनें चित्तियों की होती हैं। चित्ती हीरे के आकार की होती हैं। सिरे सफेद होते ह।

एकिस कैरिनाटा—लम्बाई दो फीट से अधिक नहीं होती सिर तीर के आकार का होता है। ऊपर काली लकीर से घिरा तीर के आकार का होता है। ऊपर काली लकीर से घिरा तीर के आकार का सफेद धब्बा होता है।

पिट वायपर—पेड़ पर रहता है। नथने और आँख के बीच में गड्ढा होता है। चेहरे के दोनों तरफ चकत्ते होते हैं। औरों से कम विषैला होता है।

कोलू ब्राइन—बहुत बड़े और विषैले होते हैं। उनके दांत दानेदार होते हैं।

साधारण कोब्रा—लम्बाई लगभग ६ फुट होती है। चौड़ा फन होता है और फन पर ऐनक का निशान होता है। बहुत विषैला होता है।

किंग कोब्रा—यह बहुत लम्बा होता है। फन चौड़ा होता है, बनावट साधारण कोब्रा जैसा पर ऐनक का निशान नहीं होता। बहुत ही विषैला होता है।

साधारण क्रेट—इसकी पीठ पर सफेद रङ्ग की बहुत-सी चाप खींची रहती है। पूँछ की ओर अधिक गहरी होती है। अति विषैला होता है। पीठ के बीच में बड़े चकत्तों की कतार होती है।

बैंडड-क्रेट—छः फुट तक लम्बा होता है। शरीर का रङ्ग पीला होता है और शरीर के चारों ओर काले रङ्ग की धारियां होती हैं।

जिस साँप के पेट पर दुम तक एक ओर से दूसरी ओर तक तिरछी धारियाँ होती हैं वे विषैले साँप होते हैं। शेष चिन्ह ऊपर की परीक्षा से देखे जा सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुत्ते का काटना

अब रहा कुत्ते का काटना इसके भी बड़े भयंकर परिणाम होते हैं सो सबसे पहले इससे बचने का यत्न करना चाहिए। या तो बच्चों वाले घर में कुत्ता पालना नहीं चाहिए क्योंकि बच्चे ही उसे अधिक थपथपाते, पुचकारते रहते हैं और इस प्रकार कई बार हाथ-मुँह कटवा बैठते हैं। और यदि कुत्ता पालना हो तो कुत्तों की बीमारियों के विषय में जानकारी अवश्य होनी चाहिए। उन्हें यह भली प्रकार याद रखना चाहिए कि कुत्तों में रैबीज के आरम्भ में क्या-क्या लक्षण होते हैं।

रैबीज बड़ी भयंकर और घातक बीमारी होती है। ये बीमारी कुत्तों, गीदड़ों, भेड़ियों, घोड़ों, बन्दरों इत्यादि में पायी जाती है। रोगी जानवर के काटने या किसी घाव आदि को चाटने से ये बीमारी मनुष्यों को हो जाती है। ये छूत का रोग है। इस रोग के विष में छोटे कीटाणु रोगी जानवरों के थूक में रहते हैं, इसीलिए जहाँ-जहाँ उनका थूक लगता है वहाँ ये कीटाणु साथ जाते हैं। जहाँ ऊपर की चमड़ी जरा-सी फटी हो वहाँ से होकर शरीर में प्रवेश कर जाते हैं।

कुत्ते के काटने पर (चाहे वह नीरोग क्यों न हो) तुरन्त घाव को धोकर टिंक्चर आयोडिन लगा दें और सूखने पर पट्टी बाँध दें। यदि घाव गहरा हो तो कार्बोलिक एसिड लगा दें। इससे कीटाणु मर जाते हैं। पोटाशियम परमैंगनेट के दाने या उसका गाढ़ा-गाढ़ा घोल भी लगाया जाता है। सिलवर नायट्रेट और तेज नाइट्रिक एसिड भी लगाया जा सकता है। परन्तु जल्दी में ये चीजें घरों में मिलनी कठिन हैं।

काटने वाले कुत्ते को बँधवा दें ताकि वह किसी और को न काट सकें और डाक्टर उसकी जांच कर सके। यदि कुत्ता साफ पागल मालूम हो तो उसे मरवा दें, परन्तु उसके भेजे की जांच जरूर करवायें, इससे रैबीज पहचानने में बड़ी सहायता मिलती है। यदि कुत्ता काट कर भाग गया हो तो यही समझना चाहिए कि वह पागल था और उसका उपचार करायें। कुत्तों में रैबीज की बड़ी पहचान यह है कि कुत्ता अचानक बीमार हो जाता है। या तो कुत्ता चुपचाप बेहोश-सा पड़ा रहता है या उसमें पागलपन के लक्षण दीखने लगते हैं और थोड़े समय बाद मृत्यु हो जाती है। बिना छेड़े काटने को दौड़ता है। बहुत बेचैन हो जाता है। भौंहें सिकुड़ जाती हैं।

ऊपर लिखी घटनायें तो हमारे देश में नित्य ही घटती रहती हैं। इनके लिए हमेशा हमें तैयार रहना चाहिए। इन विषैले जानवरों के काटते ही सबसे पहले डाक्टर को सूचना देनी चाहिए। साधारण लोग जितना भी करें डाक्टर की बराबरी तो कर नहीं सकते। हाँ वैसे थोड़ी बहुत सहायता अवश्य कर सकते हैं। परन्तु उस थोड़ी-बहुत सहायता का मूल्य तो उससे पूछिये जिस पर बीती हो।

राष्ट्र के सात विकार

महाभारत में व्यास जी ने राष्ट्र के सात विकारों का उल्लेख किया है, जिनसे राष्ट्र की श्री क्षीण होती है। वे ये हैं:—

१—जहाँ शासक कुकर्मी और अपने कर्तव्य के प्रति विमुख हों?

२—जहाँ राष्ट्र में खूब चोरियाँ होती हों।

३—जहाँ व्यापारियों का व्यवहार छल पर आश्रित हो।

४—जहाँ न्यायालय में अपराधियों को दण्ड न दिया जाता हो।

५—जहाँ निरपराधों को सजा मिलती हो।

६—जहाँ युद्ध के अतिरिक्त अन्य प्रकार से हिंसा को प्रश्रय दिया जाता हो।

७—जहाँ राज्य के कर्मचारियों द्वारा प्रजा का शोषण हो। —शांति पर्वः ७३, ११–१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करुण पर सुखान्त

कहानी

मातृ-हीना

लेखिका, कुमारी वीरबाला सिंह

[१]

कहते हैं परिश्रम का फल मीठा होता है। पर बेचारी सरला के लिये यह उतना ही असत्य ठहरता था जितना कि यह सत्य है। तड़के सवेरे से अर्ध रात्रि तक कार्य करने के पश्चात् उसे मीठे फल के रूप में मिलती कड़ुवी गालियों की बौछार तथा व्यंग व अपमान भरे शब्द और इन्हीं को अपनी साधना का वरदान समझ, अंचल में प्रेम पूर्वक स्वीकार कर सरला निद्रा देवी के अङ्क में विश्राम करती।

बचपन में माँ की मृत्यु क्या हुई सरला की सारी जीवन सरिता ही जैसे मरुस्थल में बहने लगी। सौतेली मां की झिड़कियाँ, गालियाँ और मार खा-खा कर ही वह इतनी बड़ी हो गयी थी कि माँ के प्यार के लिये तड़पे। माँ का प्यार...यह उसकी कल्पना से बाहर की वस्तु थी। उसका मातृ-स्नेह शून्य मन 'माँ' कहने को तड़फता पर किससे... लाचार थी वह। पिता से उसे स्नेह मिला था पर वह निश्छल सरल स्नेह कहाँ जो उसके मातृ-स्नेह रिक्त हृदय-घट को भर दे। पर अब तो वह उससे भी वञ्चित थी क्योंकि पिछले वर्ष पिता की मृत्यु भी तो हो चुकी थी। अब तो घर में सौतेली माँ कृष्णा और सौतेले आठ वर्षीय भाई लल्लू को छोड़ कर कोई भी न था।

बर्तन मांजने से लेकर घर को झाड़ना-बुहारना तक वही करती थी। गाय-भैसों को सानी देना उन के गोबर को फेंकना तथा जङ्गल से लकड़ी, घास लाना आदि कार्य उसी के जिम्मे थे। इतने कार्य करने पर भी कृष्णा को ऐसा महसूस होता कि मानो सरला ने कुछ किया ही नहीं, बैठी है और सारा कार्य जैसे वही कर रही है। उसके हृदय में यह सोच कर आग-सी लग जाती और वह तोप के गोले के समान गालियों की बौछार करने लगती मानो उस की हृदय-ज्वाला गाली उगलने से शान्त हो जाती हो।

सरला पर इन वाक्य वाणों का कोई प्रभाव ही न होता। वह इस तरह अपने कार्य में लगी रहती जैसे कुछ हुआ ही न हो। अथवा उसे जैसे इस विषय पर सोचने को समय ही न हो।

जङ्गल में घास काटते समय अथवा लकड़ियाँ बटोरते समय उसके हाथ इस तेजी से चलते कि साथ की औरतें आश्चर्य से देखते रह जातीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपस में कहतीं—'देखो कैसी जल्दी कर रही है।' 'अरे मौसी का डर जो लग रहा होगा।' दूसरी कहती।

'हाँ बेचारी की तकदीर ही फूटी है तभी तो माँ-बाप दोनों से ही हाथ धो बैठी है। आज इसकी मां होती तो क्या ऐसी खराब दशा होती इसकी। खेलने खाने के दिनों में इतना काम कर रही है।' फिर निश्वास लेकर कहतीं—'अपनी माँ अपनी ही होती है और सौतेली माँ सौतेली ही।'

उनकी इन बातों को सरला चुपचाप सुनती उस का हृदय भर उठता आँखें डबडबा जातीं वह सोचने में निमग्न हो जाती। कैसी होगी माँ! यदि आज वह होती तो सचमुच में कैसा होता। क्या वह भी अन्य लड़कियों की तरह खेलती रहती। वह लल्लू को जी भर कर प्यार करती आदि। तभी कृष्णा की याद आ जाने से वह अचानक चौंक जाती और लग जाती शीघ्रता के साथ अपने कार्य करने में।

[२]

उस दिन सावन की पूनो थी और रक्षा-बन्धन का पवित्र दिन। सरला ने अपना काम जल्दी-जल्दी निपटा लिया। नहा-धोकर वह टीका करने और राखी बाँधने के लिये लल्लू को ढूँढ़ने लगी पर वह दिखा नहीं। घर में उसे न पाकर वह आकुल होकर आवाज देने लगी—'भैया! भैया कहाँ हो? इधर आना।'

आज वह कितनी प्रसन्न थी। उसने सोचा था कि वह भी विमला आदि लड़कियों की तरह अपने भाई के हाथ में राखी बाँधेगी, माथे में रोली लगायेगी। कितनी अच्छी लगेगी राखी लल्लू के नन्हें-नन्हें हाथों में। उसे क्या पता था कि उसकी कल्पना का महल अभी प्रबल झंझावात के आने से धूल में मिल जायेगा और उसकी आशा-कलिका निममता पूर्वक कुचल दी जायेगी।

कृष्णा ने यह सुना और बोली—'क्यों री कल-मुँही कौन-सा काम है तेरा लल्लू से, जो चिल्ला रही है।'

'मौसी लल्लू को राखी बाँधनी थी तभी बुला रही हूँ।' सरला ने धीरे से उत्तर दिया।

यह सुनना था कि कृष्णा आग बबूला हो गई बोली—'हाँ बड़ी भैया वाली बनी है। माँ-बाप को खाकर अभागिनी की भैया पर नजर है। चली है भैया पर प्यार दिखाने, हे भगवान टीका करने के बहाने न जाने कौन-सा उस पर जादू-टोना करने चली थी।' यह कह कृष्णा ने सरला के हाथ से रोली आदि का थाल छीन कर बाहर को फेंक दिया और सरला को बाहर को धक्का देते हुए बोली—'जा गाय भैंसों को सानी दे।'

इतने में ही लल्लू दौड़ता हुआ आया और हर्षित होकर सरला से लिपट कर बोला—'दीदी! दीदी! हरी की दीदी ने उसे अच्छी-अच्छी राखी पहनायी है, तुम भी मुझे राखी पहनाओ ना! लाल हरी सभी पहनाना। मैं तो दोनों हाथों में पहनूँगा तभी उसकी नजर सरला के मुँह पर गई। अरे तुम क्यों रो रही हो दीदी! क्या तुम्हारे पास राखी··· वाक्य पूरा भी न हुआ था कि कृष्णा अन्दर से दनदनाती आयी और लल्लू का हाथ खींच कर बोली—'यह नागिन है नागिन! खबरदार यदि इसके साथ रहा तो?' लल्लू कुछ न समझा और मुँह ताकने लगा।

सरला चुपचाप भयभीत कदमों से सानी देने चली गयी। वहाँ एकान्त में उसके आँसू अविरल गति से निशङ्क होकर बह चले। उसके मानस-सागर में तूफान-सा आ गया और विचारों की आँधी उठने लगी। उसने ऐसा कौन-सा अपराध किया जिससे मौसी ने उसे ऐसे शब्द कहे। वह लल्लू को राखी ही तो बाँधने चली थी, क्या उसे इतना भी अधिकार नहीं कि वह लल्लू को प्यार कर ले। अच्छा कोई बात नहीं मैं अब से लल्लू को प्यार नहीं करूंगी। क्या हुआ सोच लूंगी मेरे भाई भी नहीं है। उसकी विचार धारा शीघ्र ही मां पर आकर केन्द्रित हो गयी। आज माँ होती कैसा होता। वह लल्लू को टीका करती राखी पहनाती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके साथ हँसती बोलती। उसका यह जीवन भी क्या है? वह जी रही है केवल जीने के लिये। न माँ बाप का प्यार और न भाई बहिनों का स्नेह। हाँ स्नेह-शून्य दीपक की ही तरह तो वह निष्प्राण होकर जल रही है। क्या फायदा ऐसे जीवित रहने से। मरना तो इससे कहीं अच्छा है। मरने के बाद उसे अपनी माँ भी मिल जायेगी। हाँ-हाँ वह वहीं जायेगी जहाँ उसकी माँ है।

उसकी यह विचार-धारा अविछिन्न होकर बह ही रही थी कि अचानक कृष्णा की आवाज सुनकर टूट गई। आँसुओं को पोंछ वह शीघ्रता से उठी। घर के पास पहुँची भी न थी कि कृष्णा ने चिल्ला-कर कहा—'पानी की एक बूँद भी नहीं है जा जल्दी से पानी ला।'

अस्तु गागर लेने के लिये वह रसोई घर में घुसी, पर अचानक उस पर गाज-सी गिर पड़ी। आँखें आँसुओं से भरी होने के कारण तथा तेज धूप में से आने के कारण उसे कुछ दिखा नहीं था और जो दूध से भरा लोटा जमीन में रखा था वह ठोकर लगने से उलट गया और सारा दूध बिखर गया था।

बस लोटे का उलटना क्या था कि कृष्णा के क्रोध में बाढ़-सी आ गई। उसने बेलना उठा कर सरला के सिर पर दे मारा। आँखों से क्रोधाग्नि की चिनगारियाँ फूट पड़ीं—'कलमुँही तुझे मौत नहीं आती है। काल भी तुझे देख डर गया है। आँखें फूट गई हैं दिमाग आसमान पर चढ़ गया है। हमारा सर्वनाश करने को तुली है। घर को नष्ट करने में लगी है। राक्षसी है, राक्षसी खाने की ताक में होगी। निकल जा घर से डूब मर नदी में, बड़ब-ड़ाते हुए कृष्णा अन्दर को चली गई।'

क्षण भर ही में यह सारा कांड हो गया। सरला पाषाणवत् जहाँ की तहाँ ही रह गई। गालियों की इस अजस्र वर्षा से वह सुन्न हो गई। फिर उसने घड़ा उठाया और नदी की ओर चली गई।

[३]

बरसात के दिन थे। सरिता अपने पूर्ण वेग से पर्वत घाटियों को गुँजाती, लहरों से अठखेलियाँ करती मद मत्त युवती की भाँति इठलाती नर्तन करती हुई बढ़ी चली जा रही थी। पानी स्वच्छ दर्पण की भाँति दिख रहा था। बड़ी-बड़ी तीव्र लहरें कगारों को नदी का सन्देश सुना रही थीं, बड़ा ही मनोरम दृश्य हो रहा था।

तट के पास बैठ सरला ने अपने घावों को पोंछा और रक्त को धोया। उसके आँसुओं का सागर हृदय अग्नि में जल कर सूख चुका था। उसने मरने का दृढ़ निश्चय कर लिया था। उसे लगा कि लहरें उसे अपने पास आने का निमन्त्रण दे रही हैं और सरिता स्वागत गान गा रही है।

अस्तु वह उठी, दो कदम आगे को बढ़ाये। फिर उसने अपने चारों ओर गर्दन घुमाई। कुछ दूर पर बालक आँख मिचौनी खेल रहे थे, लल्लू आँखों में पट्टी बांधे उन्हें पकड़ रहा था। कितना अच्छा लग रहा है वह। सभी बालक इधर-उधर दौड़ते सरला की ओर आ रहे थे। वह वर्तमान भूल उनका खेल मग्न होकर देखने लगी। उसे लगा कि वह भी उन्हीं के खेल में सम्मिलित है। वह भी इधर-उधर दौड़ रही है। हँस रही है और प्रसन्नता से किलकारियाँ कर रही है। तन्मय हो गई थी सोचने में वह।

अचानक एक तेज चीख से उसकी समाधि टूट गई। उसने चौंक कर आवाज का अनुसरण करते हुये दृष्टि फेरी तो उसका हृदय धकधका उठा। सारे शरीर में कँपकँपी छा गई और क्षण भर वह स्तब्ध रह गई। लल्लू धोखे से नदी में गिर गया था। तीव्र धारा में लहरों के थपेड़े खा कर वह उठ गिर रहा था। इतनी देर में वह सरला के सामने तक बह कर आ गया था।

सरला ने क्षण भर में ही अपने मन में जो निश्चय किया उसके अनुसार आव देखा न ताव उस बरसाती उमड़ती हुई नदी में कूद गई। नदी में कूदने का अर्थ था प्राणों से हाथ धोना। पर जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृत्यु का आलिंगन करने ही वाला हो उसको मरने से क्या डर।

निमिष मात्र में ही सरला लल्लू तक पहुँच गई और उसके कमीज का छोर सरला ने कसकर पकड़ लिया। पर नदी की तेज धारा को काट कर बढ़ना उसके लिये अत्यन्त ही कठिन हो रहा था। तट की ओर बढ़ने के लिये वह अथक परिश्रम कर रही थी। इस वक्त उसके हाथ में दो जानें थीं अपनी तथा लल्लू की, मजबूती से छोर को पकड़ वह जी जान से बढ़ने की कोशिश कर रही थी, उसके हाथ पैर जवाब दे रहे थे अंग-अंग शिथिल हो रहा था पर फिर भी वह किसी ईश्वरीय प्रेरणा से बढ़ रही थी।

अब तट कुछ ही दूर रह गया था पर सरला को न लहरों का कोलाहल सुनाई दे रहा था न कृष्णा की चीखें और न ग्रामवासियों का हल्ला। किनारे पर आते ही वह थकने से निश्चेष्ट व चेतना शून्य हो गयी।

[४]

जब सरला की चेतना लौटी तो उसने एक अपरिचित कोमल कर का अपने माथे में स्पर्श पाया, कितने मूक स्नेह की उस कर से अविरल वर्षा हो रही थी, इसी स्नेह के लिये ही तो प्यासी है वह काश! वह जीवन भर इसी स्नेह-तरु की छाया पाती रहती। इस स्वप्न मय संसार से यथार्थ जगत में न जाती।

अचानक किसी ने प्यार से सरला, सरला पुकारा, अत्यन्त ही आश्चर्य से सन्देह युक्त हो कर उसने आँखें खोली तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ कि यह सत्य है। कृष्णा सिरहाने पर बैठी उसके माथे पर स्नेह से हाथ फेर रही थी। कितनी ममता और मातृत्व झलक रहा था उसके मुँह पर, सरला आश्चर्य से देखते रह गयी।

वह उठने लगी पर कृष्णा ने उसे पकड़ कर लिटा दिया। बेटी तू बहुत थकी हुई है। तेरे सिर में भी चोट लगी हुई है। लेटी रह, तूने आज लल्लू को बचा दिया, मेरे घर को नष्ट होने से सँभाल लिया मैंने तुझे बहुत दुःख पहुँचाया। तू मेरी जीवन···कृष्णा ने बात पूरी भी न की थी कि सरला इन स्नेह सिक्त शब्दों को सुन कर मतवाली सी हो गयी और गद-गद हृदय व रुँधे कण्ठ से 'मौसी' चीख पड़ी।

'नहीं' नहीं मैं तेरी मौसी नहीं माँ हूँ बेटी। तू मुझसे माँ कहना कठोर हृदय कृष्णा मातृत्व से परिपूरित हो उठी थी, पुत्र के प्राण बचाने वाली पर।

सरला अचानक ही इतने स्नेह धन के बोझ को न सम्भाल सकी और भावावेश में 'माँ' 'माँ' कहती हुई कृष्णा के आँचल में मुँह छिपा कर सिसक पड़ी।

उसे लगा कि उसने संसार-सरिता को पार कर अपनी मृतक माँ को पा लिया है।

स्कोगन ने ऋण कैसे चुकाया!

स्कोगन विदूषक ने एक दिन सुना कि महारानी एलिजाबेथ उसके मकान के पास से होकर गुजरेंगी। महारानी से उसने एक बार पाँच सौ पौण्ड उधार लिये थे। महारानी के बारम्बार मांगने पर भी इस ऋण को चुकाने में उसे भारी कठिनाई हो रही थी।

स्कोगन ने एक अर्थी तैयार कराई और मृतकवत् उस पर लेट गया। स्कोगन के सिखाये हुए लोग अर्थी लेकर महारानी की सवारी के पास से गुजरे।

महारानी ने पूछा—'यह अर्थी किसकी है?'

उन्हें बताया गया—'आपका प्यारा सेवक स्कोगन मर गया।'

महारानी ने कहा—'हैं! क्या यह ठीक है कि स्कोगन अब इस संसार में नहीं रहा? बेचारा बहुत अच्छा आदमी था। मुझे उससे पांच सौ पौण्ड लेने थे परन्तु अब मैं मुआफ करती हूँ।'

ये शब्द सुनकर स्कोगन उठकर बैठ गया। फिर आकर प्रणाम करके महारानी से बोला—'आप जैसी अच्छी महारानी का मैं हृदय से धन्यवाद करता हूँ। आपने मुझ पर इतनी बड़ी कृपा की है कि उसके कारण मैं मरने के बाद फिर जी उठा हूँ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहसी छात्रा

कालेज की छात्रा गीता के सामने प्रश्न उपस्थिति हुआ कि वह अपना स्वाभिमान छोड़े या ३ वर्ष के लिये पढ़ना छोड़े ? और उसने.........

लेखिका, कुमारी सत्या गुप्ता बी० एस-सी०, बी० टी०

[१]

आसमान में घनघोर वर्षा करने वाले बादल हटने लगे थे। बादलों के रंगों में परिवर्तन हो गया था। धूप की रङ्गत बदल गई थी। चारों तरफ धान के खेत लहरा उठे थे, वृक्षों की जड़ों में हरियाली आ गई थी। ऐसा सुहाना दिन होस्टल के विद्यार्थियों के लिये और विशेष कर लड़कियों के लिये बड़ा महत्वपूर्ण त्यौहार होता है। हर कमरे में चाय पकौड़ी बनने लगते हैं और साथ ही लता मंगेशवर, गीता राय व मुकेश के गानों की पहिली दो तो कभी आखिरी दो पंक्तियों को बड़े मदभरे कण्ठों से गाया जाता है।

ऐसी ही एक खुशनुमा शाम थी। गीता के कमरे में महफिल गर्म थी। तभी चपरासी ने गीता को आवाज लगाई और कहा कि वार्डन साहिबा बुला रही हैं। यह कोई विशेष बात न थी वार्डन साहिबा तो बुलाती ही रहती थीं पर दुःख तो इस बात का था कि महफिल में विघ्न तो पड़ गया था। महफिल को जोश देने वाली गीता जो जा रही थी।

गीता वार्डन साहिबा के पास पड़ी कुरसी पर जा कर बैठ गई क्योंकि मामला जरा गम्भीर-सा जान पड़ता था। वार्डन साहब मिसेज वर्मा कुछ सेकेण्ड तक तो गीता की ओर देखती रहीं फिर एक नोटिस उसकी ओर बढ़ा दिया। पहले तो गीता की कुछ समझ में नहीं आया; उसके हाथ कांपने लगे और मुख पीला पड़ गया। पर गीता बहुत हिम्मत वाली लड़की थी। आज जो वह विद्यालय पार कर के महाविद्यालय में आ गयी थी तो यह सब उसकी हिम्मत का ही परिणाम था। वह झट से बोली—'नहीं यह कभी नहीं हो सकता मैं ऐसा न होने दूँगी। मिसेज वर्मा मैं जरा प्रिन्सिपल साहब से अभी मिलना चाहती हूँ। अगले सोमवार को ही तो मेरी रसायनिक शास्त्र के प्रेक्टिकल की परीक्षा है क्या आप मुझे जाने देंगी ?'

मिसेज वर्मा जी स्वयम् इस घटना से काफी दुःखी जान पड़ती थीं। बोलीं—'चलो मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ। तुम घबराओ मत प्रिन्सिपल बहुत समझदार व दयालु हैं विशेष कर वह हम लोगों के साथ तो कभी इतनी कठोरता करते नहीं हैं और फिर तुम तो उनकी चाहती विद्यार्थी हो।'

गीता ने इस बात का कोई उत्तर न दिया। केवल सहानुभूति पाकर दो छोटे-छोटे अश्रु उसके पीले गालों पर लुढ़क आये जिनको भी उसने झट से पोंछ लिया और उसी तरह प्रिन्सिपल साहब के बँगले में पहुँची। भाग्यवश प्रिन्सिपल साहब मिल गये।

गीता व मिसेज वर्मा ने प्रिन्सिपल साहब को प्रणाम किया और बैठ गयीं चुपचाप।

चुप्पी को तोड़ते हुए प्रि० साहब ने कहा—'आज तुमने यह कैसी धृष्टता दिखलाई है ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'देखिये प्रि० साहब ! जहाँ तक मैं समझती हूँ मैंने कोई भ्रष्टता नहीं की।'

'तुमने मि० चोपरा का भौतिक शास्त्र की प्रयोग शाला में अपमान किया।'

'जी नहीं, बिलकुल नहीं।'

तो फिर क्या चोपरा झूठ बोल रहे थे ?'

गीता सन्न थी। कुछ देर सोचने के पश्चात् उसने कहा—'देखिये और तो कुछ भी बात नहीं हुई। केवल इतना अवश्य हुआ था कि परसों मैंने और मेरे साथी कैलाश ने नया प्रयोग प्रकाश में से आरम्भ किया था। वह ठीक आ ही नहीं रहा था इसीलिये हम दोनों मि० चोपरा से समझने गये पर उन्होंने उस समय तो मना कर दिया और पांच मिनट के पश्चात् ही कैलाश को बुला कर समझा दिया। ऐसा तो सदैव ही करने का उनका स्वभाव है पर क्योंकि अब परीक्षा काफी नजदीक है अतः मुझे क्रोध आ गया। मैंने होस्टल में आकर उनकी प्रेमिका कैलाश की उपस्थिति में खूब उनको बुरा भला कहा और फिर तो वह बातें उनके कानों तक पहुँचनी ही थीं। पर इस बात को लेकर तो वह मेरे साथ कुछ कर ही नहीं सकते थे। इसलिये आज जब मैं प्रयोग कर रही थी तो शायद मैं किसी बात पर मुस्कराई थी तो झट अवसर पाकर मुझे सारी कक्षा के सामने डांट कर बोले—'मैं देख रहा हूँ तुम मेरी ओर मुँह बना कर हँस रही हो ? क्या लिखा है मेरे मुँह पर ?'

झूठी बात पर मुझे बड़ा क्रोध आया और मैंने कहा—'आपकी ओर तो न कभी मैं देखती हूँ और न आज ही देखा है और न हँस ही रही हूँ।'

वह कड़क कर बोले—'चुप करो। कक्षा से बाहर चली जाइये।'

मैं चली आई। कुछ देर रोती रही और फिर चुप हो गयी और शायद भूल भी जाती।

प्रिन्सिपल—'अगर ऐसा है तो तुम ही पहिले मेरे पास क्यों न आईं, मैं तभी सारी कक्षा से पूछ कर फैसला करवा देता।'

'प्रिन्सिपल साहब ! मैंने यह नहीं सोचा था कि यह बात इतनी गहरी शत्रुता का रूप ले लेगी।' और यह बातें तो इस कालिज की प्रति दिन की हैं खैर ! अब तो दिन कट ही रहे हैं। मिसेज वर्मा ने बड़ी तीक्ष्ण दृष्टि से गीता की ओर देखा।

कुछ चिढ़ कर प्रिन्सिपल साहब बोले—'पर तुम मेरे सम्मुख ही मेरे विद्यालय की बुराई कर रही हो तो बाहर क्यों न करती होगी, आखिर को अपराध तुम्हारा भी है। तुमने कक्षा के बीच में अपने अध्यापक का अपमान किया है।'

गीता भी बहुत उत्तेजित हो बोली—'नहीं मैं उन्हें अपना अध्यापक नहीं समझती। जिसके लिये मेरे दिल में कुछ इज्जत नहीं है, मैं बनावटी तौर पर ऊपरी मन से उसकी इज्जत नहीं कर सकती।'

'क्यों तुम उन्हें सम्मान क्यों नहीं दे सकती।'

'जो अध्यापक हमें बहन या बेटी न मान कर सड़क या गली में हमारा रास्ता रोक कर खड़ा हो जाये, जो हमारे लिये सड़कों पर अश्लील बातें बोलें क्या हम उनकी इज्जत करें।'

प्रि०—'क्या ऐसा भी है। खैर ! अपराध तुम्हारा है। गीता के अनुसार मनुष्य को अपने अपराध का भागी होना चाहिए दूसरे का नहीं। क्योंकि मि० चोपरा का दर्जा तुमसे ऊँचा है इसलिये तुम्हें उनसे लिखित क्षमा मांगनी होगी। तभी तुम परीक्षा में बैठ सकती हो वरना नहीं।'

'मैं ऐसे गीता के नियमों को मानने को तैयार नहीं हूँ और मैं बिना किसी अपराध के क्षमा नहीं मांग सकती।'

मिसेज वर्मा मानों किसी गहरी नींद से जाग गयी हों। बोलीं—'गीता ! यह तुम क्या कह रही हो। यह तुम्हारे भविष्य का प्रश्न है। क्षमा मांगने से मनुष्य कभी छोटा नहीं होता। तुम प्रिन्सिपल साहब की बात मान जाओ।'

'नहीं, मिसेज वर्मा ! जिसकी मैं इज्जत नहीं करती उससे क्षमा मांगने को मैं कुछ महत्व नहीं देती।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रिन्सिपल—'मैं तुम्हारी निर्भयता व तुम्हारे उत्साह को देख कर बहुत प्रसन्न हूँ। आशा है किसी दिन यह तुम्हें जीवन में सहायक होंगे। पर मैं अपनी नोटिस रद्द नहीं कर सकता। अब होस्टल जाओ। कल तक और सोच लेना।'

[२]

गीता चुपचाप उठ कर चली आयी मिसेज वर्मा के साथ। दोनों ही दुःखी थीं। एक अपने निजी दुःख से और दूसरी सहानुभूति-वश। गीता के पास अब सोचने को कुछ न था। अब तो उसे यही देखना था कि जल्दी से जल्दी कौन-सी गाड़ी जाती है, अनूप शहर को।

अगले दिन शाम को गीता का सामान तांगे पर रक्खा जा रहा था। उस समय तक गीता होस्टल व कालिज का सब सामान ठीक कर चुकी थी और साथ में तीन वर्ष तक किसी भी विश्वविद्यालय में प्रवेश न कर सकने की सनद भी ले चुकी थी।

गीता कालिज की मुख्य व योग्य छात्राओं में से थी, इसलिए यह खबर शीघ्र ही सारे कालिज में फैल गयी। कोई मि० चोपरा को बुरा-भला कहता था कोई प्रिन्सिपल साहब को दोष देता था और कुछ ऐसे भी थे जो गीता व गीता के भाग्य की शिकायत करते थे। सारांश यह कि जितने मुँह उतनी बातें। प्रत्येक मनुष्य की अपनी अलग राय थी। अपनी-अपनी बुद्धि थी।

जब तक गीता कालिज में थी बहुत से लड़के व लड़कियां उससे घृणा करते थे और सच पूछो तो ईर्ष्या ही समझो। कुछ लड़के डरते थे कि कहीं गीता उनसे अधिक नम्बर न ले जाय, कुछ लड़कियाँ उस के रूप से डाह करती थीं और कुछ जलती थीं कि प्रोफेसर लोग गीता की क्यों इतनी प्रशंसा किया करते हैं। सबके अपने-अपने कारण थे। पर अब जब गीता जा रही थी शायद कभी न आने के लिये, तो उन सबको कुछ वेदना का आभास होने लगा; क्योंकि गीता के स्नेह व मित्रता के समीरण में एक ऐसा आकर्षण था कि सब ही जो-जो भी उसके पास आता था बन्ध जाता था चाहे गीता बन्धे या न बन्धे। होस्टल की छात्राओं को तो कुछ अधिक ही महसूस हो रहा था क्योंकि होस्टल में सबका मन लगाने में गीता का ही हाथ था। महफिल उस के बिना सूनी थी। कमजोर लड़कियों को भी पढ़ाई में काफी सहायता उससे ही मिलती थी।

गीता का तांगा तैयार था उधर गाड़ी का समय भी हो रहा था। कितने ही काले-काले नयनों में से पानी गिर कर बह रहा था। गीता से जो लड़की गले मिलने लगती हटने का नाम ही न लेती। समय हो रहा था। इसलिए गीता ने आँखों में पानी व हृदय में मूक प्यार एक दृष्टि उठा कर अपने कमरे की ओर देखा और सबकी ओर हाथ जोड़ कर तांगे पर बैठ गई। मानों वह ससुराल जा रही थी। जब पुराने घर से नाता टूट कर सदैव के लिये एक नये घर से नया नाता बन्ध जाता है। जहाँ मां-बाप लड़की को सारी उमर भर के लिये भेज देते हैं और अपने दर्शन देने की आशा तक से लड़की को वञ्चित कर देते हैं। होस्टल की एक-एक वस्तु में जीवन को सञ्चार करने वाला कहीं दूटा जा रहा था। तांगा दूर निकल गया। धीरे-धीरे नजरें उधर से हटने लगीं। सब सोचने लगे जब सब लोग छुट्टियों में घर जाते थे तो गीता सबको कितना हँसाती थी। कितने अच्छे गाने गाती थी और मिसेज वर्मा का दिया हुआ नाश्ता कैसे छीन-झपट कर खाती थी। फिर एक दम नीरवता होस्टल पर छा गई।

उधर गीता चली जा रही थी अन्धकार की ओर। तीन वर्ष तक घर में कैसे बैठेगी और पढ़ेगी भी तो क्या और कैसे? पिता वृद्ध हैं तीन वर्ष में तो क्या से क्या हो जाता है। अचानक घर पहुँचेगी तो सब क्या कहेंगे? कहीं पिता जी कुछ और ही न समझ लें। तीन वर्ष का भीषण दंड तो किसी भीषण अपराध वाले को ही मिलता है फिर कोई उसपर कैसे विश्वास करेगा? चलो मां तो अपनी बच्ची पर विश्वास करेगी ही उसी तसल्ली के सहारे सारा रास्ता कट गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर के दरवाजे पर जब पहुँची तो सब से पहिले पिता जी से ही टक्कर हो गई। बड़ी हैरानगी से पूछा—क्यों बेटा क्या परीक्षा जल्दी समाप्त हो गई? कैसे आ गई वह? गीता कुछ न बोली। उनका मुख देख कर पिता जी डर कर बोले 'बोल तो क्या बात है? क्या हो गया'। पर गीता बिना उत्तर दिये अन्दर की ओर भागी। अपनी मां की तलाश में जहां सारी दुनिया की शरण छूटने पर भी बच्चों के लिये स्थान रहता है।

अधिक दिन नष्ट न करके गीता ने सन्तोष किया, अरमानों को कुचल जाने दिया और आकांक्षाओं का गला घोंट दिया। अपने हृदय के करुण क्रन्दन को अनसुना कर दिया। और एफ० ए० की तैयारी आरम्भ कर दी। तीन वर्ष में गीता ने घर पर ही पढ़ कर बी० ए० कर लिया और फिर कालिज से बी० टी० कर लिया और चार साल में गीता की अध्ययन लीला समाप्त हो गई।

[३]

गीता अध्यापिका बन गई। गवरमेन्ट की नौकरी मिल गई, सेकेन्ड हैडमिस्टरेस की। गीता काम बड़े परिश्रम से करती। परिश्रम व बुद्धि से काम करने वालों के लिये उन्नति के मार्ग सदा ही खुले रहते हैं। छः साल के पश्चात मुख्य अध्यापिका बन गई। सारे स्कूल में उसका रोब था और सारे नगर के बड़े मुख्य मनुष्यों में वह मानी जाने लगी।

बोर्ड की परीक्षाएँ आरम्भ हो चुकी थीं। एफ०ए० व बी० ए० की छात्राओं की सुपरवाईजर गीता को बनाया गया। अभी परीक्षा भवन का काम समाप्त कर के गीता अपने दफ्तर में जाकर बैठी ही थी कि चपरासी ने खबर दी कि कोई उनसे मिलने आया है।

एक प्रौढ़ सज्जन ने प्रवेश किया और आदरपूर्वक हुआ सलाम के पश्चात कुरसी पर बैठ गये। गीता कुछ चौंकी; मानों उसे कुछ याद आ गया हो। पर मालूम होता था कि यह पुरुष गीता को तनिक भी न पहिचाता था। गीता फिर बोली—'कहिए मैं आपकी क्या सेवा कर सकती हूँ।'

वह बोले—'कल जो आपने कृष्णा चोपरा नाम की बी० ए० के विद्यार्थी की परीक्षा भवन में रिपोर्ट लिख कर यूनिवर्सिटी को भेजी है उसी के विषय में मैं आया हूँ। कृपया लड़की के भविष्य पर कुछ ध्यान दीजिये।'

गीता ने कुछ मुस्करा कर कहा—'विद्यार्थी के भविष्य पर ध्यान देना तो आजकल के अध्यापक अपना कर्तव्य नहीं समझते, पर मैं तो जो भी मुझ से बन पड़ेगा करने को तैयार हूँ।'

'मुझे आपसे ऐसी ही आशा थी हमें एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए। मैं खुरजा में एम० पी० कालिज का प्रिन्सिपल हूँ और यह मेरे एक घनिष्ट मित्र की लड़की है, उनका कल तार गया था; उनकी सहायता करने आया हूँ।'

गीता ने बरबस हँसी रोकी और बोली—'वह तो मैं भली प्रकार जानती हूँ पर आप भी तो कुछ करिये।'

'मैं तो सब काम ठीक कर चुका हूँ। अब तो केवल आप पर है। आपको एक बहुत मामूली काम करना होगा।'

'क्या?' कहिये।

'यही कि आपको यूनिवर्सिटी को लिखना होगा कि वह रिपोर्ट गलती से कृष्णा की कापी के साथ जुड़ गई थी। कृष्णा निर्दोष है।'

'तो मुझे थोड़ा झूठ बोलना पड़ेगा।'

'हाँ, जरा सा तो......।'

'पर प्रिन्सिपल साहब मैं तो दो वर्ष तक आप की छात्रा रही थी सन् १६४६ व १६५० में। मुझे आपने शायद पहिचाना नहीं। मेरा नाम है गीता चड्ढा।' गीता में झूठ बोलना महा पाप लिखा है फिर मैं कैसे बोल सकती हूँ और आप तो स्वयम् गीता के इतने भक्त हैं आप......।'

वह बिना कुछ कहे बाहर चले गये। गीता अब हँसी। प्रिन्सिपल साहब का मुख पीला पड़ गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भयानक डाकू से भिड़ने वाली
एक वीर स्त्री की
कहानी

भगेलू डाकू

लेखक, श्री बुद्धिसागर वर्मा बी० ए०, एल० टी०

[१]

दोपहर का समय है। रामसिंह कान्स्टेबिल शाहजहाँपुर स्टेशन पर अपनी ड्यूटी पर हाजिर है। उसे न धूप की परवाह है और न गरमी का ख्याल। एकाएक उसे पुलिस इन्स्पेक्टर का हुक्म मिला। ड्यूटी बदला कर कोतवाली पहुँचा। बड़े दारोगा को अदब से सलाम कर रामसिंह एक ओर चुपचाप खड़ा हो गया। इन्स्पेक्टर साहब ने हुक्के के दो-चार कश खींच कर कहा—'रामसिंह तुम जानते हो भगेलू डाकू ने इस जिले में कितना ऊधम मचा रक्खा है। उसे गिरफ्तार करने के लिए हम लोगों ने क्या-क्या उपाय नहीं किये, किन्तु वह हरामजादा किसी भाँति काबू में नहीं आता। उस दिन तो तुमने ऐसा फांसा था कि वाह वा! किन्तु एक जरा-सी गफलत हो गई और वह निकल गया। वैसा मौका तो अब शायद ही मिले। तुम्हारे सिवा और किसी में इतनी हिम्मत भी नहीं थी कि उस मूजी से भिड़ता। उसका फाँसना और आग में कूदना एक ही बात है रामसिंह! बेटा उस दिन फँस जाते तो सारी चालाकी निकल जाती। लेकिन कब तक छिपेगी केरी पत्तों की आड़ में। मैं तो उसे जिन्दा या मुर्दा गिरफ्तार किये बगैर छोड़ता नहीं।'

राम०—हुजूर, सुना है सरकार ने उसकी गिरफ्तारी के लिए कुछ इनाम भी मुकर्रर कर दिया है?'

दारोगा—हाँ भगेलू को गिरफ्तार करने वाले को १०००) नकद दिये जाने की घोषणा निकली है। पद वृद्धि भी होने की सम्भावना है, क्योंकि सरकार भगेलू की हरकतों से बहुत तङ्ग आ गई है। उसकी इस हिम्मत को तो देखो कि सरकारी खजाने पर, बड़े साहब के पड़ाव पर, लाट साहब की कोठी पर तक अकेला ही पहुँच जाता है और किसी को कानों कान खबर तक नहीं होती। हथियार बन्द सिपाही पहरे पर खड़े ही रह जाते हैं!......हाँ तो जिस काम के लिये तुम्हें बुलाया है, वह तो सुन लो (चारों ओर देख कर बहुत धीरे से) आज विश्वस्त सूत्र से पता चला है कि २-३ दिन से भगेलू इसी शहर में आया है। आज रात में हम लोग चुपचुपाते उसे गिरफ्तार करने चलेंगे। तुम्हारे बिना पूरी सफलता होना कठिन है। मैंने अब्दुल जब्बार से भी कह दिया है। तुम भी १० बजे रात को तैयार होकर आ जाना। देखना इसकी कहीं कानों कान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खबर न होने पावे, नहीं तो बना बनाया मामला बिगड़ जायगा।

रामसिंह ने कहा—'हुजूर कैसी बातें करते हैं जिस सरकार का नमक खाया है उसके लिये यह शरीर तो क्या मन और धन सभी कुछ अर्पण है आप निश्चिन्त रहें मैं ठीक समय पर आ जाऊँगा, आज कायर भगेलू इस वीर क्षत्री की भुजाओं से निकल कर जा नहीं सकता।'

रामसिंह ने झुक कर सलाम किया। और कदम बढ़ाता हुआ अपने घर पहुँचा।

[२]

रामसिंह अपने साथियों में वीरता के लिये प्रसिद्ध था। इतना साहस, इतनी फुरती, इतनी जवां मर्दी तो शायद ही पुलिस के किसी विरले कर्मचारी में हो। यही कारण था सारे अफसर उसे आदर और सम्मान की दृष्टि से देखते थे।

रामसिंह के घर में केवल तीन प्राणी थे। उस की स्त्री कमला और उसकी एक मात्र अष्ट वर्षीया कन्या 'निर्मला' सुशीला कमला की आयु लगभग २५ वर्ष की थी। वह एक कुलीन क्षत्रिय वीर की एक मात्र कन्या थी। बाल्य काल में उसकी शिक्षा-दीक्षा भी साधारणतया अच्छी हुई थी। अभी दो ही वर्ष हुए उसके माता-पिता अतुल धनराशि छोड़ कर प्लेग का शिकार हो गये थे। उस सारी सम्पत्ति का अधिकार भी रामसिंह और कमला को ही प्राप्त हुआ। दोनों का समय बड़े सुख चैन से बीतने लगा 'निर्मला' ही चिरवांछित एक मात्र सन्तान थी। अतः उसका लालन-पालन भी बड़े प्यार दुलार से होता। माता-पिता उस फूल-सी सुकुमार कन्या पर फूले नहीं समाते। दिन भर के काम के बाद जब रामसिंह घर आता तो निर्मला दौड़ कर उसकी गोद में बैठ जाती और अपनी रूप माधुरी एवम् अमृतमयी वाणी से उसके हृदय की कली-कली विकसित कर देती। रामसिंह अपनी सारी थकावट भूल जाता। स्नेह पीयूष को पीकर उसमें नयी स्फूर्ति आ जाती।

[३]

सायंकाल का समय है। भगवान मरीचि माली अस्ताचल की ओर प्रयाण कर चुके हैं। सभी कामकाजी लोग दिन भर के थके-मांदे घर लौट रहे हैं। दुकानों और सड़कों पर प्रकाश रश्मियाँ जगमगा रही हैं। देवालयों में शङ्ख ध्वनि और आरती गान हो रहा है। रामसिंह अपने आंगन में चारपाई पर लेटा हुआ बांयें हाथ से धीरे-धीरे पङ्खा झल रहा है। गम्भीर मुख मुद्रा स्पष्ट कह रही है कि वह किसी गहरे विचार सागर में गोते लगा रहा है। सहसा उसे किसी बात की याद आ गयी और वह चौंक पड़ा। घड़ी में देखा तो ८ बज कर ४५ मिनट जा चुके हैं। हड़बड़ा कर उठ बैठा, और बोला-'जल्दी से कुछ खाना-वाना बना दो, आज हमें १० बजे ड्यूटी पर जाना है। अभी तक ख्याल नहीं किया, देखो समय थोड़ा रह गया है पुलिस की नौकरी ठहरी काम बहुत जरूरी है। एक मिनट की भी देर होने से काम बिगड़ जायगा। न हो, कुछ दोपहर का रक्खा हो वही खा लें।'

कमला को बड़ा आश्चर्य हुआ कि आज यह असाधारण ड्यूटी कैसी। रोज तो रात को कहीं नहीं जाया करते। पति-भक्ता, युवती प्रेममयी रमणी के लिये दिन भर की ड्यूटी के बाद घर आये हुए पति का रात्रि में कहीं बाहर जाना एक प्रकार से असह्य हो जाता है। कमला को पति की यह ड्यूटी बहुत खली। किन्तु सती महिला अपने सत्पति के शुभ संकल्प में बाधक होने की अपेक्षा अपना मन मसोस कर रह जाना कहीं श्रेयस्कर समझती है। उसने भोजन तैयार किया। रामसिंह ने खा-पीकर कपड़े पहने और चलने को तैयार हुआ, कमला ने पान का बीड़ा देते हुए कहा—'नाथ! कब तक लौटोगे? रात अँधेरी है। अकेले इस घर में रहा नहीं जाता।' स्नेह वत्सला भोली-भाली निर्मला दौड़ कर पिता की टांगों में लिपट गई और न जाने के लिए अनेक प्रकार से अनुनय-विनय करने लगी। रामसिंह क्या जानता था कि विधि का विधान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसा है। वह कन्या की इस असाधारण जिद्द पर भी क्रुद्ध हो गया। उसने आवेश में कन्या को पास पड़ी हुई चारपाई पर डाल कर पत्नी से कहा—'लो इसे लो। हमें देर होती है। १० बजना चाहता है। तुम भीतर से कुण्डी चढ़ा लो। मैं १ बजे तक आ जाऊँगा। चिन्ता मत करना।'

रामसिंह चला गया। कमला ने द्वार बन्द कर लिया। निर्मला रोते-रोते सो गई। कमला को नींद नहीं आई।

[४]

लगभग १२ बजा होगा। रात्रि की निस्तब्धता भयङ्कर रूप धारण करती जा रही थी। एकाएक कमला ने द्वार पर कुण्डी खटकने का-सा शब्द सुना वह उठ कर बैठ गयी। ध्यान-पूर्वक सुना। एक बार फिर कुण्डी खटकी। उसने कहा—'कौन ?'

उत्तर में फिर कुण्डी खटकी। शायद पतिदेव आ गये। पुलकित वदना, प्रसन्न लोचना कमला कुण्डी खोलते हुए बोली—'मैं तो बाट ही जोह रही थी।' आगन्तुक परिचित की भाँति भीतर प्रवेश करता चला गया। कमला को शङ्का करने का कोई कारण भी न था, उसने शान्ति पूर्वक द्वार बन्द किया और भीतर आते हुए विनोद पूर्ण स्वर में बोली—'क्यों जी, बोलते क्यों नहीं। क्या मैंने पहली ही खटक पर कुण्डी नहीं खोली। इसीलिए गुस्सा हो गये। अच्छा देखें कब तक नहीं बोलोगे ?'

यह कह कर विनोदनी कमला उसके अत्यन्त निकट तक गयी। किन्तु सहसा एक अपरिचित व्यक्ति की भयानक, दानवी और कुत्सित मूर्ति देख कर सहम गयी। उसके सर में चक्कर-सा आने लगा। उसने चिल्ला कर मुहल्ले वालों को पुकारना चाहा। किन्तु अपरिचित कठोर हाथों ने उसका मुँह दबा दिया। बेचारी अबला कर ही क्या सकती थी ? हाथ पैर मारने पर भी न छूट सकी।

आगन्तुक ने कहा—'जो कुछ माल-असबाब जहाँ कहीं रक्खा हो, सीधे-सीधे मुझे बता दो नहीं तो अपनी खैर मत समझना, कोई कर्म बाकी न छोड़ूँगा।'

अब कमला को यह समझने में देर न लगी कि यह दुष्ट क्यों भीतर घुस आया है। वह अपनी असावधानी पर बहुत पछताई। उसे बड़ा भय लगने लगा। किन्तु बुद्धिमती कमला सम्हल गई। उसने कहा—'केवल इतनी-सी बात के लिये मुझे क्यों तङ्ग करते हो। मैं अपनी कुञ्जियां तुम्हें दिये देती हूँ। जो चाहो ले लो।'

कमला को छोड़ कर वह नराधम अलग खड़ा हो गया। और उत्तेजित होकर बोला—'जल्दी बताओ अन्यथा तुम्हारे सतीत्व की भी खैर नहीं है मैं शत्रु को अपमानित करने के लिये घृणित से घृणित नारकीय कर्म करने से भी नहीं हिचकता। याद रक्खो तुम मेरे पंजे से छुट नहीं सकती। स्त्री फिर भी अबला होती है। पहले तो उस पापिष्ट के पर्वताकार भयङ्कर शरीर को देख कर बहुत भय-भीत हुई। उसकी इच्छा हुई कि यदि पृथ्वी फट जाती तो उसी में समा जाती। किन्तु असहाया-वस्था ने वीर क्षत्राणी को वीर बना दिया वह विच-लित नहीं हुई। उसने गम्भीरता पूर्वक कहा—'अच्छा उस बरामदे से थोड़ा पुआल उठा लाओ, मैं चिराग जला कर कुञ्जी ढूँढ़ दूँ। अँधेरे में तुम्हें भी ठीक पता न चलेगा।' लोभी स्वार्थी एवम् धन लोलुप पुरुष प्रायः विवेक-हीन हो जाते हैं वह पुआल लाने चला। इधर कमला झट बगल वाली कोठरी में घुस गई और उसने भीतर से कुण्डी चढ़ा ली।'

[५]

एक साधारण स्त्री के हाथों इस प्रकार परास्त होना उस वीर छत्रधारी नराधम को एक बार ही असह्य हो उठा। उसका शरीर मारे क्रोध के जलने लगा। आँखों से आग बरसने लगी। उसने बल-पूर्वक किवाड़ों पर कई बार चार प्रहार किया। कमला को बहुत कुछ डराया-धमकाया किन्तु वह टस से मस न हुई। उसने किवाड़ों को उखाड़ डालने का भरसक प्रयत्न किया किन्तु उसमें कुलावे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जड़े हुए थे। अब उसकी क्रोधाग्नि और भी प्रचण्ड हो उठी, इतने में निर्मला जो अब तक आंगन में सोयी हुई थी, जग पड़ी उसे इस भयङ्कर कांड की क्या खबर। उसने माता को पुकारा यह पिशाच झट उसी ओर झपटा। अबोध बालिका सहम गई, उसने भय कम्पित स्वर में एक बार अपने पिता को पुकारा, फिर माता को पुकारा। किन्तु स्नेहमय मधुर शब्दों के स्थान पर उसके कोमल कलेवर पर कठोर चपेटाघात हुआ।

'अब भी किवाड़ खोल दे नहीं तो लड़की जीती न पायेगी।' जननी का हृदय दया से ओत-प्रोत होता है। कमला ने सोचा किवाड़ खोल दूँ। एक बार उसने कुण्डी पर हाथ भी रक्खा, किन्तु फिर कुछ सोच कर रुक गई। उधर कन्या का हृदय वेधी चीत्कार दिल दहलाये देता था।...'हाय पिता जी मुझे न मारो! अच्छा आज छोड़ दो, अब कभी बाहर जाने से तुम्हें न रोकूँगी। हाय मां! मुझे बचा ले। पिता तुम मुझे क्यों मारते हो।'

कमला को काठ मार गया। उसके हाथ-पाँव फूल गये। बदहवास होकर पागलों की भांति कोठरी में इधर-उधर घूमने लगी। अन्धेरे में दीवाल से उसका सिर टकरा गया। आंखें घूम गयीं किंकर्तव्य विमूढ़-सी होकर वहीं बैठ गई।

कमला किवाड़ खोलने ही जा रही थी कि उसने इस प्रकार काम चलता न देख कर बालिका को भूमि पर पटक दिया। गरीब बालिका के मुँह से लम्बी चीख निकली और एक चटाखे का शब्द हुआ। बालिका की चीख बन्द हो गयी। कमला ने समझा वह मर गयी। कमला के मुख से भी एक जोर की चीख निकल गयी और वह मूर्च्छित होकर गिर पड़ी।

इधर नराधम हत्यारे ने देहली के नीचे से सुरङ्ग खोदना प्रारम्भ कर दिया। करीब था कि सुरङ्ग आरपार हो जाय कि इतने में कमला फिर कुछ सचेत हुई। उसने देखा कि अब उसकी इज्जत-आबरू की भी कुशल नहीं है। वह उठ बैठी। अपनी एक मात्र प्यारी पुत्री के नृशंस हत्यारे के रक्त की प्यासी कमला अब साक्षात् चण्डी के रूप में परिणित हो गई। उसे अपना दुःख भूल गया। प्रतिकार की भीषण ज्वाला भभक उठी।

क्रोधान्ध होकर अबला कहलाने वाली सबलायें जो कुछ भी ठान देती हैं उसे ब्रह्मा भी रोकने में असमर्थ हैं। अस्तु उसे एक कोने में रखे हुए आम काटने के बड़े सरौते की याद आ गयी। चुपके से उठी और उसे खोल कर बैठ गई।

थोड़ी देर में सुरङ्ग पार हो गया। भीतर जाने भर का रास्ता भी साफ हो गया। नराधम पातकी की बांछें खिल गयीं। देखें अब तुम्हें कौन बचाता है। बुला अपने खसम को! ज्यों ही सिर भीतर हुआ कमला के सरौते की धार ठीक सिर के ऊपर पड़ी। क्रोध के आवेश में बल दूना हो जाता है सरौता पूरा खोपड़ी में घुस गया। एक नहीं, दो नहीं, तीन नहीं, कमला ने पूरे चार वार किये। भेजा निकल पड़ा। खोपड़ी चूर-चूर हो गई। हत्यारा वहीं ठण्डा हो गया। कमला का हृदय भी कुछ ठण्डा हो गया।

[६]

रामसिंह दारोगा जी के साथ ४ बजे तक घात में रहा। बहुत कुछ सर मारा, किन्तु खुफिया की रिपोर्ट गलत निकली। भगेलू नहीं मिला।

चार बजे रामसिंह घर आया। पुकारते-पुकारते हैरान हो गया। महल्ले वाले जग गये, किन्तु भीतर से आहट तक न सुनाई दी। निदान सीढ़ी लगा कर मकान में प्रवेश करना पड़ा। घर का वीभत्स दृश्य देख कर उसके होश उड़ गये। आंगन में पुत्री का छिन्न-भिन्न शरीर रक्त में डूबा हुआ छटपटा रहा है। कोठरी की दहलीज के नीचे एक सुरङ्ग है। उसमें एक निर्जीव भयङ्कर शरीर आधा बाहर निकला हुआ पड़ा है। किन्तु कमला का कहीं पता नहीं। यह रहस्य उसकी समझ में न आया। कोठरी को भीतर से बन्द पाकर उसने कमला को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुकारा। भीतर से गम्भीर स्वर में उत्तर मिला—'कौन है ?'

राम०—मैं आ गया, दरवाजा खोलो। यह क्या देख रहा हूँ।

कमला—तुम कौन हो ?

राम०—क्या तुमने मुझे नहीं पहचाना ? मैं ही तुम्हारा स्वामी रामसिंह। मैं घबरा रहा हूँ। शीघ्र खोलो।

कमला—तुम कोई भी क्यों न हो, मुझे विश्वास नहीं आता। मैं कुण्डी नहीं खोल सकती। एक बार धोखा खा चुकी हूँ अब नहीं।

राम०—अच्छा कब तक न खोलोगी ? तुम्हें मेरा विश्वास कैसे होगा।'

कमला—जब तक स्वयम् कलेक्टर साहब घटना-स्थल पर न आवेंगे।

रामसिंह भागा हुआ पुलिस स्टेशन पहुँचा। बड़े दारोगा को सारी कैफियत सुनाई। दारोगा जी और इन्सपेक्टर पुलिस मौके पर पहुंचे। मरणासन्न लड़की अस्पताल भेजी गई। कप्तान साहब को सूचना दी गई वह भी आ उपस्थित हुए। किन्तु रहस्य का पता किसी को भी न था। वे आगे बढ़े और कमला को आश्वासन देते हुए बोले—'देखो, तुम डरो मत, किवाड़ खोल दो और इस सारी घटना का रहस्य बतलाओ।' पर कमला इतना डर गई थी कि उसने दरवाजा न खोला।

निदान जिलाधीश की भी मोटर आयी। रामसिंह के घर पर दर्शकों की भीड़ लगी हुई थी। साहब ने आते ही सारे दर्शकों को बाहर निकाल दिया। कमला को साहब के आने की सूचना दी गई। बड़ी मुश्किल से कमला ने दरवाजा खोला। रक्त के छींटों ने बता दिया कि खूनी यही स्त्री है। सुरङ्ग से लाश निकाली गई। लाश को देख कर पुलिस के सारे कर्मचारी चकित हो गये। लाश भगेलू बदमाश की थी। रामसिंह से शत्रुता का बदला लेने आया था, यहाँ उल्टे लेने के देने पड़ गये।

पहले तो पुत्री की दशा और रामसिंह को देख कर कमला फूट-फूट कर रोयी। किन्तु कुछ देर में स्वस्थ होने पर उसने सारी घटना कह सुनाई। सब ने आश्चर्य-चकित होकर कमला के साहस व धैर्य और बुद्धि की एक स्वर से प्रशंसा की। जिस भगेलू पर साल भर से वारन्ट गिरफ्तारी जारी था पुलिस वालों ने जिसे पकड़ने के लिये क्या-क्या प्रयत्न नहीं किये थे। वही प्रसिद्ध भगेलू एक अबला नारी के हाथों मारा गया और बुरी तरह मारा गया। साहब बहुत प्रसन्न हुए।

उस वीर बाला को सरकार की ओर से पुरस्कार मिला। रामसिंह की पद-वृद्धि हुई और वह पुलिस सब-इन्सपेक्टर बना दिया गया।

—

गद्यगीत

रूप गन्धा चम्पा ! मैं समझी तुम उपवन में श्याम की राधा आई हो, या किसी की अनुराधा हो। तुम रजनी गन्धा से अधिक सफल हो, वह चाँदनी रात्रि के सुहावने एकान्त में अपनी रूप छटा छिटका कर कुटिल काल को बुलाती है, और अपने उन्मत्त लोभी से बदला लेती है, उसके जीवन से खेल कर। और तुम हो कि रूप गन्ध से भरा होकर भी पूरी तरह खिलती और झूमती हो, तुम्हें जरा भी भय और सङ्कोच नहीं कि मैं क्या हूँ ? मैं जान गई, तुमने मधुकर जैसा लोभी जीव को जो निकट आने से वञ्चित कर रक्खा है, वह यदि आ पाता तो तुम्हें रस हीन बना पराग बिखेर कर, अपनी क्रूरता का परिचय देकर तुम्हारा काल राही हो जाता और तुम अपने को मिटी हुई पातीं। सत्य है कि तुम्हारा अनुरागी जीवन में निष्कण्टक विचर सकता है, काल की क्रूरता भी रूप गन्ध से फीकी पड़ कर शर्मा जाती है।

—चन्द्रकांता त्रिपाठी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्त्रों को धुलाई का दिन

लेखिका, एक पाठिका

प्रत्येक परिवार में बच्चों के कपड़े या नित्य के उपयोग के कपड़े जैसे तौलिया आदि रोज धोबी के यहाँ नहीं डाले जा सकते। खास कर छोटे बच्चों के कपड़े तो धूल में हमेशा ही गन्दे होते रहते हैं। जैसे मेरे परिवार में ये मैले वस्त्र निकलते हैं वैसे ही हर परिवार में छोटे बच्चों के वस्त्र या रसोई घर में काम आने वाले कपड़े निकलते होंगे। अतएव इन वस्त्रों की सफाई के लिए एक दिन नियत कीजिये।

रविवार का दिन तो छुट्टी का दिन होता है। उस दिन परिवार के लोगों के साथ बैठने या घूमने फिरने का अवसर मिलता है। अतएव मैंने इस काम के लिये मङ्गलवार का दिन चुना है। उसी दिन मैंने अपने घर को धोबी का घर बनाया है।

एक रात पहले

सोमवार की रात को मैं सारे वस्त्र एकत्रित कर लेती हूँ। सूती कपड़े, ऊनी कपड़े, लिनेन की कमीजें छोटे या बड़ों की, रसोई घर में काम आने वाले वस्त्र सिल्कन कपड़े सबको अलग-अलग करके रख लेती हूँ। तत्पश्चात् उनमें जो वस्त्र फटे होते हैं या उनमें मरम्मत करनी होती है, या उसकी बटन टूट गई होती है, तो उस रात को आराम से बैठ कर सिल लेती हूँ।

रात्रि में मैं सफेद कपड़ों को ठण्डे पानी में डाल देती हूँ और रूमाल वगैरा जिसमें कि हाथ पोंछने के गन्दे दाग पड़ जाते हैं, पानी में जिसमें थोड़ा नमक डाल देते हैं भिगो देती हूँ ये कपड़े रात भर भीगते रहते हैं।

धोने का दिन

मङ्गल को मैं जरा जल्दी उठती हूँ। नाश्ता वगैरा जल्दी तैयार करके, सबको नाश्ता करवा कर स्वयम् खा-पीकर अपने काम में लग जाती हूँ। एक ओर मैं गर्म होने के लिए चूल्हे पर पानी चढ़ा देती हूँ। पानी उबलने पर एक चम्मच कपड़ा धोने वाला सोडा डाल देती हूँ। सब सूती कपड़ों को उसमें डाल देती हूँ। करीब आधे घन्टे के बाद निकाल लेती हूँ।

सूती कपड़े

सूती वस्त्र खास कर सफेद कपड़ों को हल्के हाथों से साबुन लगा कर धोती हूँ और फिर साफ पानी में धोकर डाल देती हूँ।

रंगीन वस्त्र

रंग-बिरंगे भड़कीले कपड़ों को मैं हल्के गर्म पानी से जिससे कि उसका रंग न छूटे साबुन लगा कर धोती हूँ जिससे उसकी मैल निकल जाती है और तब साफ पानी बाल्टी में भर कर उसमें धोकर निचोड़ कर सूखने के लिए डाल देती हूँ।

ऊनी वस्त्र

ऊनी वस्त्रों की धुलाई में जरा सावधानी बर्तनी चाहिए। जरा गर्म पानी में साबुन काट कर या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

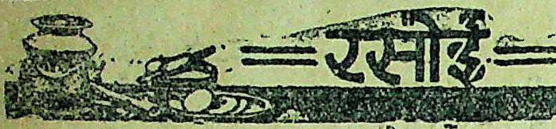

की मीठी चटन।

सामग्री—आमों का लच्छा (मोटा विसा हुआ) तीन सेर, चीनी तीन सेर, नमक आधपाव, अधकचरी सौंफ छटांक भर, लौंग बड़ी इलायची व जीरे का चूर्ण दो तोले, कुटी लाल मिच दो चम्मच और अजवाइन एक तोला।

विधि—आम के लच्छों में नमक मिलाकर चार पांच घंटे धूप में रख दीजिये। पानी छूटने पर हल्के हाथों लच्छा निचोड़ कर निकाल लीजिये और उसी पानी में चीनी मिला कर किसी कलईदार या लोहे के बर्तन में चढ़ा एक तार की चाशनी बनाइये। फिर उसमें आमों के लच्छों को डाल कर धीमी आंच पर चलाती रहिये। घंटे भर बाद सब मसाले डाल कर देर तक पकाइये। जब चटनी पक कर लाल हो जाये तो उतार कर और ठंडा करके मर्तबान में भर दीजिये। यह खाने में अति स्वादिष्ट होगी।

—पुष्पलता अस्थाना एम० ए०

लीची का हलुआ

दो सेर लीची लेकर उसका छिलका बीज अलग कर दो। सिल पर गूदा बारीक कर लो। एक पाव घी डाल कर गूदे को खूब भून लो। अब एक सेर दूध डाल कर चलाती जाओ। जब तक कि गाढ़ा न हो जाय। अब तीन पाव चीनी डाल दो, फिर किशमिश, गरी, पिस्ता, इलायची डाल दो। हलुआ तैयार हो गया। बहुत ही ला जवाब होता है।

खीरनी

दो सेर दूध पतीली में रख कर पकाओ। एक पाव चावल धोकर पहले सुखा लो जब दूध उबलने लगे तब चावल को हाथ से मसल कर घी में भून कर दूध में डाल दो। जब दूध में चावल अच्छी तरह पक जाय तब उसमें मेवा डाल दो। ठंडा होने पर चीनी, गुलाब जल डाल दो। ठंडा होने पर जम जायेगा। तब खाने के काम में लाओ। यह बरसात की बड़ी चीज है।

—कुमारी शकुन्तला शाही

मूली का रायता

अंश—दही आधी छटाँक; मूली १ (छोटी); स्वाद के अनुकूल नमक। बघार के लिये सरसों चाय की आधी चम्मच और तेल चाय की एक चम्मच।

विधि—दही को चला लीजिये, मूली धो लीजिये और खुर्च लीजिये। खुर्ची हुई मूली को दही और नमक के साथ मिला लीजिये। सरसों और तेल के साथ बघार दे लीजिये।

घोल डाल कर ऊनी कपड़ों को उसमें डाल कर कुछ देर तक रहने देती हूँ। मैल उसमें रह जाती है फिर साफ पानी में हाथ से हल्के-हल्के दबा कर डाल देती हूँ।

सल्कन वस्त्र

सिल्कन के भी वस्त्र ज्यादातर साबुन के घोल में ही धोये जाते हैं और उसी तरह हल्के-हल्के हाथों से दबा कर डालती हूँ, उन कपड़ों के साथ जबरदस्ती नहीं करती हूँ नहीं तो वे झिनझिने हो जाते हैं।

बच्चों के वस्त्र

छोटे बच्चों के वस्त्र बहुत जल्दी गन्दे होते हैं, क्योंकि वे सदा धूल में खेलते रहते हैं। उन कपड़ों को गर्म पानी में जो कि खौलता हो उसे थोड़ा ठंडा करके काट कर थोड़ा साबुन डाल कर उसमें कपड़ों को डाल देती हूँ और बाद में उसे निकाल कर फीच कर डाल देती हूँ।

मैंने आपको अपने वस्त्रों के धोने के नियम इस लेख द्वारा बता दिये, आशा है आप भी इससे अवश्य कुछ लाभ उठा सकेंगी।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामांजक सुधार की कहानी

बिछुड़े हृदय

लेखक, श्री श्रीनाथसिंह

[१]

जब मैं बम्बई के दादर स्टेशन पर रेल-गाड़ी से उतरा, मेरे पास एक भी पैसा न था। पैसा लेकर मैं घर से चला ही न था। और, सच बात यह थी कि घर में भी पैसा नहीं था। गरीबी की मार से घबरा कर मेरे गाँव के बहुत-से लोग बम्बई भागे थे, और वहाँ से पैसे वाले होकर लौटे थे। जब वह समय आ गया कि दो-दो दिन चूल्हा न जला, और मांगे से कहीं भीख न मिली, तब मैंने अपनी मां से बम्बई जाने का प्रस्ताव किया। मुझे याद है, वह मुझे इतना प्यार करती थीं, जितना कौशल्या ने राम को और यशोदा ने कृष्ण को किया होगा। पर यह बात हमारे इतिहास में है कि माताएँ अपने बेटों की उन्नति में बाधक नहीं होतीं। बिदा के समय मेरी माता की आँखों में आँसू आ गये, पर कलेजा कड़ा करके मुझे जाने दिया। मेरी स्त्री मायके में थी। मैंने उसका मुँह तक नहीं देखा था, और न शायद उसी ने मेरा मुँह देखा था।

स्टेशन से निकल कर शहर में जाने पर बम्बई की सड़कों पर मैंने जो कोलाहल देखा, उस समय मेरे हृदय में उससे कम कोलाहल नहीं था। मेरा शरीर बम्बई की सड़क पर परिस्थिति की झाड़ू खा कर, एक असहाय कूड़े की भाँति, इधर-से-उधर लुढ़क रहा था और मेरे हृदय में एक दूसरा बम्बई शहर बस और उजड़ रहा था।

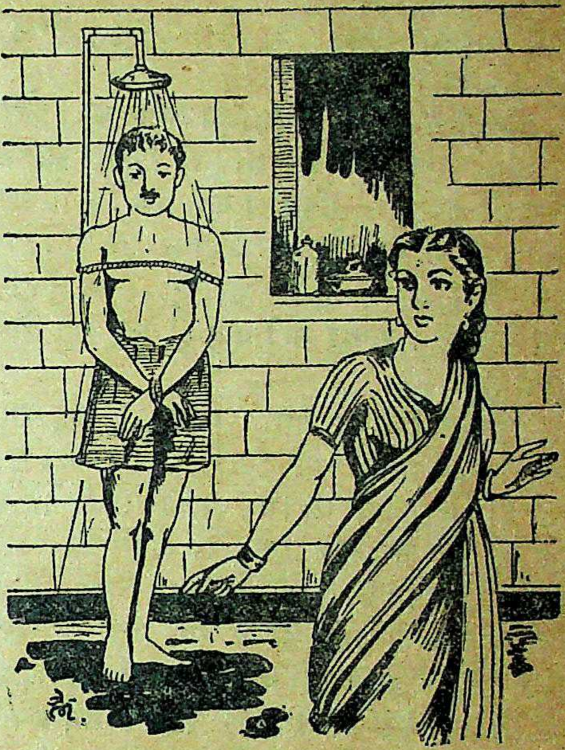

'मैं उस स्त्री के वश में हो गया।'

मैं सोच रहा था, यदि मैं रुपये वाला होकर बम्बई से लौटूँगा तो गाँव पहुँचने पर मुझे अपना वह अनादर देखने को न मिलेगा, जो अब तक मिलता रहा है। मेरी माता को दरवाजे-दरवाजे हाथ फैलाना और तिरस्कृत होना न पड़ेगा। ठाट-बाट के साथ एक बार फिर दूल्हा बनकर ससुराल जाऊँगा, और स्त्री को पालकी में बिदा करा लाऊँगा सैकड़ों मित्रों तथा परिचितों को दावत दूँगा और बड़ी चहल-पहल करूँगा। परन्तु बीच-बीच में हृदय में यह ख्याल भी आ जाता था कि यदि मैं रुपये वाला होकर न लौटूँगा, तो क्या होगा! इस ख्याल के आते ही मेरे रोंगटे खड़े हो जाते थे, और मेरे हृदय की गति रुक-सी जाती थी।

मैं थोड़ी ही दूर गया था कि मुझे एक परिचित स्वर सुनाई पड़ा। मुझे जान पड़ा, जैसे कोई मेरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम ले-लेकर पुकार रहा है—'सरजू! सरजू! सरजू तिवारी!'

मैंने पीछे मुड़ कर देखा। बाबादीन था। कोट-पैंट, बूट-हैट सब कुछ डाटे था। वह मुस्करा रहा था और कह रहा था—'तिवारी महाराज! मैं तो समझता था, तुम गाँव छोड़ कर कहीं न जाओगे। गाँव वालों में मैं सबको भुला चुका हूँ, सिर्फ तुम्हारी याद बनी थी। शायद मेरी याद ही तुम्हें यहाँ खींच लायी।'

वह मुझसे लिपट गया। असल में यह काम मेरी तरफ से होना चाहिए था, क्योंकि अब तक ऐसा ही होता आया था। पर उसकी साहबी पोशाक देख कर मुझे साहस न हुआ कि अपने उस चिर-परिचित बचपन के साथी से लिपट जाऊँ। मेरा कुर्ता फटा, धोती मैली, पैर में जूता नहीं, सिर पर टोपी नहीं। मैं सोच रहा था, सम्भव है, बाबादीन कुछ बोले पर देखने वाले क्या कहेंगे। मैंने अपने को उससे छुड़ाया और धीरे से कहा—'बाबादीन! यहाँ, इस सड़क पर मुझसे दूर ही रहो। मैं दलित तिरस्कृत ब्राह्मण हूँ। गरीबी ने मेरा सबस्व अपहरण कर लिया है। मुझे यहाँ कोई नहीं जानता, पर तुम्हारे सैकड़ों परिचित होंगे। कोई देखेगा तो क्या कहेगा कि बाबादीन के ऐसे ही मित्र हैं!'

बाबादीन ने मुझे अपनी बाँहों में और भी अधिक दृढ़ता से आबद्ध करते हुए कहा—'सरजू! बचपन की याद है। चमार का बेटा होने के कारण मुझे कोई लड़का अपने पास बैठने तक न देता था। पंडित जी मुझे दूर से पढ़ाते थे, और जहाँ मैं जाता था, सब चिल्लाते थे—,छूना मत।, एक तुम' केवल तुम, मुझे छूने से नहीं झिझकते थे। मुझे अपने बराबर समझते थे, मुझे अपने साथ खिलाते थे। और तुम्हारी मा? वह ब्राह्मण की औरत होते हुए भी मुझे अपने कटोरे में दूध-भात दे देती और कहती थी—'सब में एक ही राम रम रहा है, एक ही जीव बोल रहा है, मुझे याद है, वह मेरा मुँह तक चूम लेती थीं। मेरे बचपन के उस मरु-प्रदेश में तुम और तुम्हारी मा मेरे लिये एक निर्मल, स्वच्छ जल के सोते के समान थे। वे दिन क्या कभी भूल सकते हैं। क्यों वह वह मजे में हैं न?'

मैंने संक्षेप में बाबादीन को अपनी सारी कथा कह सुनाई—

सब कुछ सुनकर बाबादीन ने एक दीर्घ निःश्वास ली। उसे मालूम था कि मेरी माता मुझे कितना प्यार करती थी। यहाँ तक कि मेरे ही कारण वह बाबादीन-जैसे चमार के लड़के को भी घर में आने देती थी, और कोई भेद नहीं मानती थी। बाबादीन से मुझसे बड़ा मेल था। तब मैं छोटा बच्चा था। जानता नहीं था कि चमार और ब्राह्मण में क्या भेद है। और मेरी मा ने मेरे सामने कभी भेद की दीवार खड़ी भी नहीं की। जिस बात में मुझे सुख मिलता, उसमें उसकी सम्मति कैसे न होती। मैं और बाबादीन दोनों ने साथ-साथ हिन्दी मिडिल पास किया था।

इस के बाद ही बाबादीन बम्बई भाग आया। तब से आज दस वर्ष बाद, मेरी उसकी भेंट हुई।

मैंने उसके चेहरे की तरफ देखा। वह एक विचित्र प्रकार के ध्यान में मग्न था। मुझे जान पड़ा, जैसे वह इन भूली बातों को एक-एक करके याद कर रहा है और मन-ही-मन कह रहा है 'मेरी प्यारी मां मेरे बगैर कैसे रहेगी?'

उसके मन का भाव ताड़ कर मैंने कहा—'बाबादीन! मा को यह निश्चित था कि यदि गांव में रहूँगा, तो भूखों मर जाऊंगा। इसलिये उसने मुझे बम्बई चला आने दिया कि शायद बच जाऊँ, और यदि न भी बचूँगा, तो उसकी आंख के सामने तो मरूंगा। उसमें भूख सहने की अपार शक्ति है। मेरा खयाल है, केवल पानी पीकर वह महीनों रह सकता है। मैं जल्दी इसलिये भी भागा कि मा के हाथ कभी कुछ लगा, तो वह उसे मेरे मुँह में डालने के बजाय स्वयं अपनी क्षुदा-ज्वाला के हवाले कर देगी।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल-पत्रिका

बाबादीन चुपचाप सब सुनता रहा। विकट-से-विकट परिस्थिति का सामना करने का बल उसमें बचपन ही से था। मुझे जान पड़ा, वह मेरे लिये कुछ करना चाहता है, मेरे सम्बन्ध में अपना कोई कर्तव्य निश्चित करना चाहता है। दूसरे ही क्षण मुझे अपना अनुमान सत्य प्रतीत हुआ। उसने मेरा हाथ पकड़कर कहा—'चलो, घर चलें। बाकी बातें वहीं होंगी।'

[२]

जब हम बाबादीन के मकान पहुँचे, चिराग जल चुके थे। वह हमें एक बहुत बड़े मकान के तिमंजिले पर, जिसकी बिजली के प्रकाश-युक्त अगणित खिड़कियाँ मेरी ओर झाँकती-सी प्रतीत हो रही थीं, ले गया। मैंने प्रतापगढ़ के सिवा कोई शहर देखा न था, और मैंने कभी बम्बई की ऐसी कल्पना की नहीं थी, जैसा कि वह मुझे दिखाई पड़ा। बम्बई शहर में भी जिस मकान में वह मुझे ले गया, वह उस रात मुझे महल-सा प्रतीत हुआ। पहले मैंने समझा यह सारा मकान उसी का है, पर उसने मुझे बताया कि उसके अधिकार में सिर्फ दो कमरे हैं।

जब उन कमरों में से एक में मैं एक कुर्सी पर बैठा और सामने के आइने में मुझे अपनी धूलि-धूसरित, मैली-कुचैली, सूरत दिखाई पड़ी, तब मैं अत्यन्त संकुचित हुआ। रास्ते में मैंने एक सड़क के दोनों ओर लेटे हुए अगणित बे-घरबार आदमियों को देखा था। मन में आ रहा था कि बाबादीन से कहूँ कि मुझे वहीं चला जाने दो, रात-भर पड़ा रहूँगा, सवेरे लौट आऊँगा, पर बात मुँह तक आकर रह गई। उसी समय मैंने एक अभूतपूर्व दृश्य देखा। यों तो बम्बई में जो कुछ देख रहा था, मेरे लिये सभी अभूतपूर्व था, पर बाबादीन के घर में पहुँच कर जो कुछ देखा, उसके लिये मैं बिलकुल तैयार न था।

मैंने देखा। एक परम सुन्दरी युवती—जिस रास्ते से हम आये थे, उसी से आकर—बाबादीन से लिपट गई और बार उसका मुँह चूमने लगी। मैंने प्रतापगढ़ के राजा साहब के यहाँ नाचने वाली कुछ वेश्याओं को देखा था, पर इतना निलज्ज व्यवहार करते उन्हें भी नहीं देखा था। मैं उस कमरे में कोई छिपने का स्थान देखने लगा। मैंने मन में सोचा, शायद इस स्त्री ने मुझे नहीं देखा। मैं उठ कर खड़ा हो गया। बाबादीन जानता था कि मैं ऐसी परिस्थिति के लिए कितना अनभ्यस्त हूँ। मेरी घबराहट देख कर एकाएक उससे बोला—

'डियर लवली! आज मैं तुमसे अपने एक अत्यन्त घनिष्ठ मित्र का परिचय कराता हूँ इस संसार में मेरा यही मददगार और स्नेही रहा है। इसके कपड़ों की परवा न करो। यह असल में लाल है और अपनी गुदड़ी-समेत तुम्हारे घर में उपस्थित है।'

उस परम सुन्दरी नवयौवना ने अपना हाथ मेरी ओर बढ़ाया। वह मुझसे हाथ मिलाना चाहती थी। इतनी सुन्दरी स्त्री के इतना निकट आने का यह पहला ही अवसर था। कृष्ण और सुदामा की कथा मैंने पढ़ी थी। मुझे जान पड़ा, मैं सुदामा हूँ, और साक्षात् रुक्मिणी मेरा अभिवादन करने के लिये उपस्थित हैं। मेरा शरीर रोमांचित हो उठा। मैं भूल गया कि मैं कहाँ हूँ। बाबादीन ने कहा—'सरजू मैं जानता हूँ तुमने कभी किसी स्त्री से हाथ नहीं मिलाया, पर यहाँ यही कायदा है। कम-से-कम मेरी खातिर यहां सब कुछ करने के लिये तैयार रहो।'

मैंने हाथ बढ़ा दिया। उस स्त्री का हाथ कितना कोमल कितना सुख कर, कितना उत्तेजक और कितना बल-वर्द्धक था, यह मुझे उसी क्षण प्रतीत हो गया। मैं सुना करता था, स्त्री की मुस्कराहट हजारों मर्दों के जीवन का लक्ष्य बदल देती है और उन्हें नर्क से निकाल कर स्वर्ग में फेंक देती है। आज उस बात को स्वयम् अपने जीवन में चरितार्थ होते अनुभव कर रहा था। मुझे जान पड़ा, मेरे मन, शरीर, दृष्टि सब की नये सिरे से रचना हो रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे कानों में उस स्त्री का कोकिल-स्वर गूँज उठा—'प्यारे, मैं तुम्हारे मित्र के बारे में और कुछ जानना चाहती हूँ।'

बाबादीन ने संक्षेप में मेरी कहानी कह सुनाई। जब वह कह चुका, तब मैंने देखा, उस स्त्री के नेत्र अश्रु से परिपूर्ण हो रहे हैं। मुझे उसके आँसुओं में साक्षात् अपनी माता के दर्शन हुए, जब वह बोली—'मिस्टर तिवारी, अब आप अपनी तकलीफों का खातमा समझिये। हम लोग आपको सुखी बनाने के लिए जो कुछ भी कर सकेंगे; करेंगे। सबसे पहले आप चलिये, स्नान कीजिये और कपड़े बदलिये।'

वह मुझे 'बाथ-रूम' में ले गई। बाहर से उसने दरवाजा बन्द करके कहा—'अपने कपड़े उतार कर उस सामने वाली खिड़की से सड़क पर फेंक दो।'

उस समय मुझे लगा, जैसे किसी ने मुझे बांध कर पानी की धार के नीचे खड़ा कर दिया हो। मैं उस स्त्री के जैसे वश में हो गया। जो-जो वह कहती गई, मैं करता गया। मैंने साबुन से खूब मल कर स्नान किया और तौलिये से खूब रगड़-रगड़ कर बदन पोंछा। उसने मुझे बाबादीन की एक कमीज और पाजामा पहनने के लिये दिया। इस प्रकार कुछ ही मिनटों में मैं बिलकुल बदल कर उस कमरे से निकला। अब जब मैं उस आराम-कुर्सी पर बैठा, और सामने आइने में अपनी सूरत दिखाई पड़ी, तब मुझे आश्चर्य हुआ जान पड़ा मैं उस कमरे की सजावट की वस्तुओं में से एक हूँ और जो फटे-पुराने कपड़े पहने सड़क पर घूम रहा था, वह मेरा स्वप्न-मात्र था।

बाबादीन ने कहा—'तिवारी महाराज! अब जरा मेरी भी कहानी सुन लो।'

वह स्त्री बोली—'ठहरो, पहले चाय तैयार कर लूँ।'

वह चिल्लाने लगी—'ब्वाय! ब्वाय!'

पता नहीं, एक छोटा लड़का किस कोने में, कहाँ छिपा था, फुर्ती के साथ दौड़ता हुआ आया और बड़े अदब के साथ बोला—'हुजूर!'

'स्टोव जलाओ, चाय तैयार करना होगा।'

'बहुत खूब।'

लड़का फुर्ती से अपने काम में लग गया। अब बाबादीन और मैं दोनों सफेद तौलिये से ढकी एक छोटी मेज के सहारे आमने-सामने बैठे थे। उस स्नेहशीला नारी ने चीनी-मिट्टी के प्यालों में क्या उँड़ेला, चाय या अपनी मुस्कराहट, यह मैं ठीक-ठीक नहीं बता सकता और उस शाम को क्या-क्या चीजें मेरे गले के नीचे उतरती चली गयीं, इसका भी मुझे ज्ञान नहीं। पर जो कुछ हो रहा था, मेरे लिये अभूतपूर्व था और अत्यन्त सुखदायक। बाबादीन ने कहना शुरू किया—'तुम मुझे जिस हालत में देख रहे हो, इसमें लाने वाली यही स्त्री है। यह मेरी पत्नी, मेरी माता, मेरी सहेली, मेरी गुरु, सब कुछ है। कभी-कभी तो मुझे ऐसा जान पड़ता है कि यह मेरी ही आत्मा है, जो इस प्रकार मानव-शरीर धारण करके मेरी सहायता को आ पहुँची है। इस का नाम 'लवली इवनिंग सन' है। यह अँगरेजी का शब्द है। इसका अर्थ है, 'सन्ध्या का प्रिय सूर्य' इस से मेरी तब भेंट हुई थी, जब मेरे जीवन-काल की सन्ध्या आ पहुँची थी और निशा—घोर निशा, अनन्त निशा—आने में थोड़ी ही देर थी।

'तुम जानते हो, मैं बम्बई के लिये किस प्रकार भागा, और तुमसे अच्छा कोई नहीं जान सकता, क्योंकि तुम स्वयम् उसी प्रकार भागे थे। खैर, मैं बम्बई पहुँचा। कुली-कबारी का जो भी काम मुझे मिला, मैं करने और किसी प्रकार जीवन बिताने लगा। परन्तु मेरा ख्याल तब भी था और अब भी है कि चमार के घर जन्म लेने का यह अर्थ नहीं कि आदमी हमेशा पद-दलित और तिरस्कृत बना रहे। अच्छे कपड़े न पहने, अच्छे आदमियों की संगत न करे, अपना विकास न करे। मैंने अनुभव किया कि मेरी उन्नति में सबसे बड़ी बाधा मेरी जाति है। हिन्दू लोग मुझे हमेशा दुरदुराते रहे। तुम यह देख ही चुके हो कि चमार न होता, तो घर बैठे ही स्कूल मास्टरी मिल जाती। यहाँ भी मैंने मास्टरी पाने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कोशिश की, पर जैसे ही कोई सुनता कि मैं चमार हूँ, वह गालियों से मेरा सत्कार करता और कहता कि चमार था, तो पढ़ने क्यों चला था, जा कहीं मेहनत-मजदूरी कर। तुम्हारी तरह मैं भी लाड़-प्यार से पला था। लाड़-प्यार न होता तो पढ़ाया-लिखाया ही क्यों जाता।

मोटा काम करने की मेरी आदत न थी, और मेरे योग्य काम मिलना मुश्किल था। मैंने सोचा था कुछ सेठ-साहूकारों के यहाँ निजी तौर पर लड़के पढ़ाऊँगा, पर वह भी असम्भव प्रतीत हुआ। मास्टरी का डौल न लगते देख मैंने इस खयाल से कि कोई मुझे अपना निजी नौकर बना ले, अपने को अहीर घोषित किया। पर मेरी उन्नति में अहीर होना भी बहुत सहायक न हुआ। मैंने खूब सोचा खूब अनुभव किया कि हिन्दू धर्म में रह कर मैं अपनी उन्नति नहीं कर सकता। इसलिये नहीं कि उस धर्म में कोई बौद्धिक या आध्यात्मिक अभाव है बल्कि इसलिये कि उच्च वर्ग के लोग निम्न वर्ग के लोगों को आत्मविकास का कोई अवसर ही नहीं देना चाहते। औरों की नहीं जानता, बहुत-से चमार हिन्दू-धर्म में ही मस्त पड़े हैं, पर मुझे ऐसा ही प्रतीत हुआ। इसलिये मैं एक दिन सन्ध्या समय एक गिरजे में गया और पादरी से बोला—'साहब मुझे ईसाई बना लीजिये, मैं हिन्दू नहीं रहना चाहता।' वह पादरी लवली की मां का बड़ा मित्र था। अपने साथ वह मुझे लवली के घर लाया। मैं हिन्दू के रूप में मर चुका था। मेरे जीवन का सन्ध्याकाल आ पहुँचा था और निशा, घोर निशा के आने में कुछ बाकी नहीं था। पर लवली से भेंट हो जाने के कारण जीवन की वह काली सन्ध्या सुन-हरी हो उठी और तब से सन्ध्या का यह 'प्रिय सूर्य' मुझे अब तक बराबर प्रकाश दे रहा है, मार्ग दिखा रहा है। आगे जो कुछ हुआ लवली को मालूम है और यह कहानी इसी के कहने की है।'

बाबादीन ने लवली का हाथ अपने हाथ में ले-कर उसकी उँगलियों को मृदु भाव से चूमते हुए कहा, 'डियर, अब तुम तिवारी महाराज से आगे की कहानी बयान करो और मैं अपने काम पर जाऊँ।' प्रति दिन सन्ध्या समय वह एक धनी ईसाई के लड़कों को हिसाब पढ़ाने जाता था। वह खटपट करता हुआ नीचे उतर गया और लवली ने मुझसे कहना आरम्भ किया—

'मेरी माँ एक बड़े उच्च वंश की ब्राह्मण-महिला थी। वह अपने मां-बाप की अकेली सन्तान होने से उन्हें अत्यन्त प्यारी थी। मेरी मां ने इस संसार को अच्छी तरह से समझ भी न पाया था कि वह अकेली रह गई। उसके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया। उन्हीं दिनों एक उच्च वंश के ब्राह्मण युवक से उसका प्रेम हो गया। उस युवक ने उससे विश्वास दिलाया कि वह उसके साथ अवश्य विवाह कर लेगा परन्तु जब मां के पेट में मैं आई, तब उसने विवाह करने से इनकार कर दिया और मां को यह सलाह दी कि वह मेरा गला घोंट डाले। संसार उनके गुप्त प्रेम की बात न जानेगा और वह आगे भी चलता रहेगा। मां ने यह स्वीकार न किया और वह युवक किसी प्रकार इस विपत्ति में मां का साथ देने को राजी न हुआ। उसे अकेली छोड़ न जाने कहाँ चला गया। तब मां को अपमानित और लज्जित करने के लिये मैं आई। पहले तो मां ने सोचा, मेरा गला घोंट डाले, और उस विश्वासघाती प्रेमी की इस अन्तिम स्मृति को—मुझको—मिटा दे, पर उसे दया आई, उसने मुझे जीवित रहने दिया। उसकी बिरादरी के लोगों ने उसका सामाजिक बायकाट कर दिया। न कोई उससे बोलता, न उसके घर आता। जब उसने देखा, हिन्दू समाज निर्दय है और वह उसमें एक असहाय पक्षी के समान पतित पड़ी है और यावज्जीवन इसी प्रकार छटपटा कर मरना है, तब वह ईसाई हो गई। जिन पादरी साहब के साथ तुम्हारे मित्र पहले पहल मेरे घर आये थे, वे मेरी मां के परिचितों में थे। मां ने उन से अपना सारा दुःख कहा और उन्होंने उसे ईसाई हो जाने की सलाह दी। नये धर्म में आ जाने पर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां को कोई मानसिक शांति मिली या नहीं, यह तो मैं नहीं कह सकती, पर उसे सहानुभूति और स्नेह खूब मिला। मैं ईसाई लड़कियों के साथ खेल-पढ़कर बड़ी हुई और मेरे विवाह की समस्या मां के हृदय में उदय हो रही थी कि हमारे दो व्यक्तियों के परिवार में मेरे प्यारे बाबादीन का प्रवेश हुआ। हिन्दू-धर्म को मां ने अत्यन्त तिरस्कृत होने पर छोड़ा था और यही कारण बाबादीन के भी हिन्दू-धर्म छोड़ने का था। इसलिये मां के हृदय में उसके लिये सहानुभूति का समुद्र लहरा उठा और उसका परिणाम हुआ मेरा और बाबादीन का ब्याह।

'मिस्टर बाबादीन का यह कहना सच है कि मैं उनकी गुरु भी हूँ। मैंने ही उनको अँगरेजी पढ़ाई और योरोपियन ढङ्ग से रहने का तरीका भी बताया मुझे दुःख है, मेरी मां अब नहीं रही, पर हमें संसार में सुख और शांति-पूर्वक जीवन व्यतीत करने योग्य बना गयी है।'

[३]

मैंने देखा, मां का स्मरण आते ही लवली की आँखों में आंसू आ गये। मुझे भी अपनी मां का ध्यान आ गया था और मेरी आँखें भी जल-पूर्ण हो गयीं। इस प्रकार हम दोनों एक दूसरे से बिना कुछ बोले बड़ी देर तक गम्भीर बने चुपचाप बैठे रहे। मैं अपने गाँव में ही यह देख चुका था कि हिन्दू-धर्म किसी को माफ नहीं करता और मनुष्य इतना निर्बल है कि उससे पग-पग पर भूलें हो सकती हैं। मैं सोचने लगा, क्या हिन्दू-धर्म में कोई सुधार नहीं हो सकता, क्या वह थोड़ा भी उदार नहीं हो सकता।

इसी समय नीचे सीढ़ी से फिर किसी के आने की आहट मालूम हुई। मैं और लवली दोनों सावधान हो गये, पर वह बाबादीन था। लवली ने आगे बढ़ कर उनके मृदुल होठों पर एक गर्म चुम्बन अङ्कित करते हुए कहा—'डियर, तुम इतनी जल्दी क्यों लौट आये?'

बाबादीन ने कुछ उत्तर नहीं दिया। वह अत्यन्त उदास था और मृत्यु की-सी भयानकता उसके मुखमण्डल पर अङ्कित हो रही थी। उसके पीछे एक देहाती स्त्री भी थी, जो उसी प्रकार मैले-कुचैले कपड़े पहने थी, जैसे मैं पहन कर आया था। वह बाबादीन की विवाहिता स्त्री थी, जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था और न मुझे मालूम ही था कि ऐसी भी कोई स्त्री इस संसार में है। गरीबी की मार से, भूख प्यास से व्याकुल होकर जीविका की खोज में वह भी बम्बई भाग आयी थी कि शायद कुछ मेहनत-मजदूरी मिल जाय।

यह भीषण समस्या थी। लवली ने कुछ उत्तेजित होकर और आँखों में जल भर कर कहा—'प्यारे, तुमने मेरे साथ विवाह करने के पूर्व बतलाया क्यों नहीं कि तुम विवाहित हो?'

बाबादीन ने कहा—'डियर, इसे विश्वासघात न समझो। मैं मन में यह संकल्प कर चुका था कि जब मैं ईसाई हूँगा, तब हिन्दू-समाज में मेरे जितने रिश्ते हैं उन्हें छोड़ दूंगा। स्त्री के अलावा मेरे माता-पिता सभी हैं और मैं सबका परित्याग कर चुका हूँ, मेरा ख्याल था कि मेरी स्त्री ने दूसरा ब्याह कर लिया होगा, पर यह मेरे नाम पर बैठी रही और आज मुझे सड़क पर भटकती हुई मिली।'

वह जो मैली-कुचैली स्त्री आई थी, उसने लवली के चरणों पर सिर रख दिया और कहा—'मेम साहब, नाराज न हों, यह मेरा ही कसूर है। मैं अपने इष्ट देवता ठाकुर जी से सदैव मनाती थी कि हे ईश्वर मेरे पति को, जहाँ वह रहें सुख से रक्खो। मेरा मन कहता था कि उन्होंने अपनी जात बदल डाली होगी और उच्च-वंश की कन्या के साथ विवाह कर लिया होगा। वही हुआ। मैं यह सब देख कर बहुत खुश हूँ। मैं उनके सुख में कांटा बनने नहीं आई हूँ। मैं उनके लायक थी भी नहीं। मेहनत-मजदूरी करके पेट पाल लूँगी। तुम किसी तरह की चिन्ता न करो।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर लवली का स्वभाव था दूसरों को सुख पहुँचाना। उसने उस स्त्री को उठा कर हृदय से लगा लिया और उसे 'बाथ-रूम' में ले जाकर उसके साथ भी वही व्यवहार किया, जो कुछ समय पहले वह मेरे साथ कर चुकी थी। दूसरे क्षण मैंने देखा कि स्वच्छ वस्त्र पहन लेने से और लवली की सहानुभूति पा जाने से वह चमार की कन्या भी खिल उठी और उस स्थान के लिये उतनी अप्रिय नहीं है, जितनी वह पहले प्रतीत हुई थी।

बाबादीन अब भी सिर नीचा किये चुपचाप बैठे थे। लवली ने कहा—'डियर, चिन्ता न करो, मैं तुम्हें तलाक दे दूँगी, और तुम्हारी जो सहायता हो सकेगी, करूँगी।'

बाबादीन ने सिर उठाकर कहा, 'लवली! डियर लवली!' वह आगे बोल न सका। हमें जान पड़ा जैसे वह सिर के बल सन्ताप के कुएँ में कूद पड़ा है, और उसमें के निकालने की किसी में सामर्थ्य नहीं।

कुछ क्षण चुप रहने के बाद लवली बोली—'ईसाई-धर्म हिन्दू-धर्म के कम कठोर नहीं। इसमें एक पुरुष के दो स्त्रियाँ कदापि, किसी भी अवस्था में, नहीं हो सकतीं।'

मेरे मुँह से निकल गया, 'हिन्दू हो जाओ!'

'क्या यह सम्भव है ?' लवली बोली।

बाबादीन ने उसी दिन एक समाचार-पत्र में कुछ पढ़ा था। उसने लवली के हाथ में लाकर वह समाचार-पत्र रख दिया, और एक खास स्थान पर पढ़ने के लिये कहा। पढ़कर लवली कुछ मुस्कराई, और बोली—'सचमुच, क्या यह सम्भव है ?'

[४]

दूसरे दिन हम सब लोग शुद्धि सभा के दफ़्तर में बैठे हुये थे, और मन्त्री हमें समझा रहे थे—'हिन्दू-समाज ने अपने सब बन्धन ढीले कर दिये हैं। अछूत और जाति-पाँति के भेद बड़ी शीघ्रता के साथ मिटाये जा रहे हैं। जो भाई बिछुड़ गये, दूसरे धर्मों में चले गये या चले जाना चाहते हैं, उन्हें हिन्दू-समाज सब प्रकार की सुविधाएँ देने के लिये तैयार है, और उनकी प्रत्येक शिकायत दूर करने का पक्का वादा करता है।'

लवली ने पूछा—'क्या हिन्दू समाज उन पुरुषों को भी अपने अन्दर रख सकता है, जिनके दो स्त्रियाँ हों ?'

'बेशक, और उन स्त्रियों को भी रख सकता है, जिनके अनेक पति हों।'

'तो हम हिन्दू बनने के लिये तैयार हैं।' लवली ने कहा—'हमें आज ही हिन्दू बना लीजिये।'

इस घटना के दो वर्ष बाद हम सब गांव लौटे और अपनी पत्नी को विदा कराने जब बाबादीन को लेकर मैं अपनी ससुराल गया, तब वहां किसी ने मेरे और बाबादीन के एक साथ बैठकर भोजन करने पर आपत्ति नहीं की।

वेणी-बन्धन

भारतीय वेणी-बन्धन का यह नमूना यहाँ सुश्री वीणा पुरोहित ने उपस्थित किया है। इसमें वेणी एक विशाल वृत्ताकार जूड़े में गूँथी गई है और उसे चांदी के एक बड़े आभूषण और चांदी की घुन्डियों से सजाया गया है।

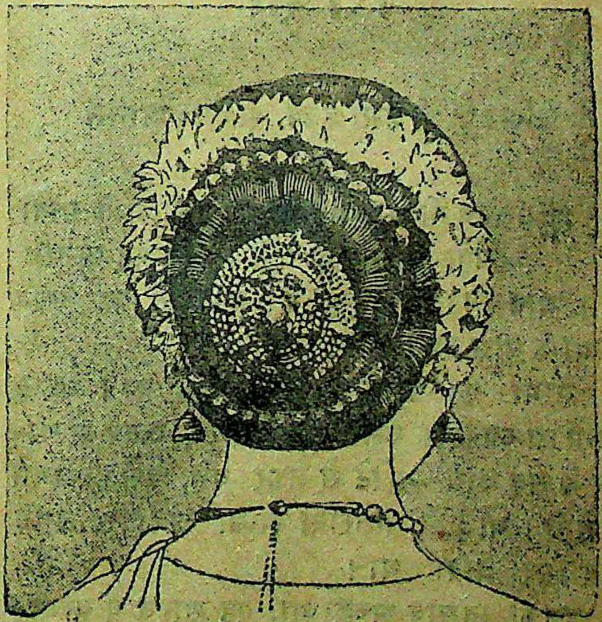

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'यदि मैं तुम्हारे लिए कुछ कर सकूँ ?'

परीक्षा

लेखिका, श्री प्रभा हडप, बी० ए० आनर्स

कमलनयनी चार वर्ष की थी, तभी उसके माता पिता की मृत्यु हो गयी। अब वह अनाथ थी। माता-पिता की मृत्यु के उपरान्त वह अपने मामा के पास रहने लगी।

मामा का परिवार काफी बड़ा था। घर के लोगों का व्यवहार उसके साथ सन्तोष-जनक न था। घर के सब कार्य—छोटे से लेकर बड़े, उसे ही करने ते थे। थोड़े में, नौकरानी का-सा व्यवहार उसके साथ किया जाता था।

उसका स्वभाव अच्छा था, वह शान्त व गम्भीर प्रकृति की थी। उसने सब कष्टों व अत्याचारों को धैर्य के साथ वहन किया। उसने उफ तक न की। वह सफेद साड़ी व चोली पहना करती थी। उसके कमल रूपी नयन तथा मुखाकृति पर तेज होने के कारण वह अतिशय आकर्षक दिखाई देती थी।

उसके मामा की एक लड़की थी जिसका नाम मृगनयनी था। वह सुन्दरी ही न थी अपितु अतिशय सुन्दर थी। अपनी सुन्दरता पर उसे गर्व था। जिसके कारण सहज ही कहा जा सकता है कि वह गर्विष्ठा थी। वह राजसी ठाट-बाट के साथ रहती थी। कभी किसी भी प्रकार का काम घर का अथवा स्वयम् का अपने हाथों वह न किया करती थी। कपड़े बदलना, बालों को आधुनिक प्रकार से सँवारना तथा आभूषणों को पहिनना, यही कार्य वह दिन भर किया करती थी।

मृगनयनी के बड़े भाई का एक मित्र था। वह धनवान, नवयुवक था, उसका नाम सुन्दर था। उस का आना-जाना इस घर में अतिशय था। उसे धनवान तथा सुन्दर देख कर जो कि मृगनयनी की कल्पना के बाहर थी, वह आकर्षित हो, निश्चय की कि वह सुन्दर के साथ विवाह कर अपना जीवन राजसी ठाट-बाट के साथ व्यतीत करेगी।

एक दिन वह सुन्दर के पास गई और बोली—'मैं तुम्हें चाहती हूँ और मैं तुम्हारी पत्नी बनना चाहती हूँ।' प्रति उत्तर में सुन्दर कुछ भी न बोला, अपितु शान्त रहा व मन-ही-मन वह सोचने लगा—'मेरे प्रति उसके हृदय में जो प्रेम है, उसकी मैं परीक्षा करूँगा।'

सुन्दर पर प्रथम दृष्टि पड़ते ही कमलनयनी उस पर आकर्षित हो, मोहित हो गयी थी। अपने विशुद्ध प्रेम रूपी अंकुर को उसने अपने हृदय में, अश्रुओं सींच कर सुरक्षित रखा, यह गुप्त रहस्य उसके तक ही सीमित रहा।

[२]

एक दिन, सुन्दर मृगनयनी के घर आया, पागल के समान सिर के बाल उलझे व बिखरे हुये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे, कपड़े मैले व फटे हुए थे, उसके आकर्षक चेहरे पर दाढ़ी बढ़ी हुई थी।

वह मृगनयनी के समीप गया और करुण-स्वर में बोला—'मैंने अतिशय गलती की कि जो अपने दुश्मनों पर विश्वास किया, जिसके फलस्वरूप मैं इस अवस्था में पहुँचा हूँ। आज मेरे समीप एक पैसा भी नहीं है, एक-एक कौड़ी के लिये मुहताज हूँ।'

मृगनयनी अतिशय चकित हो गई। उसने स्वप्न में भी कल्पना न की थी कि उनका भाग्य इतनी जल्द उजड़कर वह भाग्य-हीन हो जावेगी।

'मैं एक गरीब युवक हूँ। क्या तुम अब मेरे साथ बिवाह करोगी?' सुन्दर ने नम्रतापूर्वक पूछा।

कोमल-सा, नरगीस सा लम्बा चेहरा तथा गर्विष्ट मुखाकृति वाली मृगनयनी क्रोधित हो, नेत्रों से ज्वाला निकालती हुई, सुन्दर की ओर एक टक दृष्टि से देखते हुये, चिल्लाकर वह बोली, 'ऐ भीख-मंगे! इस घर के बाहर निकल जा। तुझसे इतनी धृष्टता, जो तू मुझसे बिवाह के बारे में कहता है?'

'तूने मुझसे विवाह का प्रस्ताव किया था—सुन्दर ने उसे याद दिलाते हुये कहा।

'तुम उस समय धनवान थे,—मृगनयनी ने कहा 'और मैं धनवान तथा प्रतिष्ठित लोगों को ही चाहती हूँ।'

यह सुन, सुन्दर उसके कमरे से बाहर जाने को ही था कि उतने में कमलनयनी कमरे के अन्दर आई। सुन्दर को देखकर कल्पनातीत दुखित हुई जो कि उसकी मुखाकृति पर अङ्कित हो उठी।

'आखिर यह सब कैसे क्या हो गया?'—वह दुखी स्वर से पूछ बैठी।

मेरे पास जो कुछ था वह सब मैं खो बैठा और अब मैं 'सड़क वासी' बन गया हूँ।'—सुन्दर ने उत्तर। दिया मृगनयनी कमरे में उपस्थित थी।

'मुझे अतिशय दुख है, तुम्हारे प्रति पूर्ण रूप से सहानुभूति है......' कमलनयनी ने कहा, उस समय उसकी नेत्रों से अश्रु बिन्दु झलक रहे थे। करुणा तथा सहानु-भूति प्रगट हो रही थी। 'मैं चाहती हूँ कि तुम्हारे कुछ मदद आ सकूँ। कृपाकर कहो यदि मैं तुम्हारे लिये कुछ कर सकूँ?'

उसके स्नेह-भरे शब्द सुन्दर के हृदय में जाकर अङ्कित हो गये। उसका निश्चल व विशुद्ध-प्रेम उसे बदले में अनुरागित किये बिना न रह सका।

'तुम मेरे साथ बिवाह करोगी। कमलनयनी?' उसने पूछा।

'हाँ' कहकर कमलनयनी ने लज्जा के साथ अपने रक्त-रंजित कमलरूपी मुख को फेर लिया। आखिर लज्जा शील जो वह थी।

सुन्दर ने सम्पूर्ण रहस्यमयी कथा आदि से अन्त तक कमलनयनी को कह सुनाई। 'मैं यहाँ पर इस वेष भूषा में, मृगनयनी की परीक्षा लेने आया था।' वह बोला। और दूसरे ही दिवस वे विवाह-बद्ध हो गये। उनका व्यवहार एक-दूसरे के साथ तथा अन्य लोगों के साथ इतना अच्छा था कि वे अपने दिवस आनन्द के साथ व्यतीत करने लगे।

सुन्दर दांत

दाँत सौन्दर्य के लिये मोती-से स्वच्छ शुभ्र बहुत ही जरूरी हैं। कृपया उनकी विशेष परवाह कीजिये। प्रातः हो सके तो कोई अच्छा मंजन या टूथ पेस्ट इस्तेमाल कीजिये। पश्चात् एक चुटकी चूर्ण फिट-किरी का लेकर एक ग्लास कुनकुने पानी में डाल दीजिये और उससे कुल्ला कीजिये। दांतों की सुन्द-रता प्रायः नष्ट होने का कारण विटामिन सी तथा बी और कैलशियम की कमी होती है। अतएव इन चीजों की शरीर में वृद्धि कीजिये।

रात में सोते वक्त एक बार नमक मिले पानी से कुल्ला अवश्य कीजिये। उपरांत सरसों का तेल मसूड़ों पर हल्के-हल्के लगा कर सो जाइये। करीब एक महीने बाद ही आप देखेंगी कि आपके दांत कितने स्वच्छ हो चले हैं।　—कमला दीक्षित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढलती सांझ

लेखक, श्री तेज बहादुर 'अनाथ'

[१]

शाम हो चली थी। जङ्गल उस पार जाने के लिये कोई सवारी गुमटी पर नहीं थी। एक रिक्शा था सिर्फ जिस पर पंडित लोचन प्रसाद पहले ही से जमें हुए थे। हाँ, एक की जगह अभी खाली जरूर थी। ज्यादा देर नहीं लगी। पंडित जी ने जमुना को आवाज देकर बुला लिया—

'अरी जमुना उस पार जायगी क्या ?'

जमुना पास आकर बोली—'हाँ, पंडित जी! जाऊँगी तो सही......।' लेकिन रिक्शे वाले की सूरत देख कर वह आना-कानी करने लगी। लेकिन पंडित जी ने बिठा ही लिया।

'अरी इसी पर चली चल। इसके बाद दूसरी कोई सवारी मिलने की भी नहीं, समझी।' बगल में बैठ गई वह। रिक्शा वाला चल पड़ा। तराई का जङ्गल था इसलिए भयानक जानवरों का भय सदा ताजा बना ही रहता था। महीने में एक दो मुसाफिरों की जान जरूर जाती फिर भी रास्ता बन्द नहीं होता और अगर पंडित जी ने कुछ देर और की होती तो वह रिक्शा भी नहीं मिलता। इसलिए वे जजमानी में पहुँचने की खुशी में बड़े मगन होकर जमुना से बातें कर रहे थे—

'तू क्यों जा रही है री उस पार...?'

'सहेली से मिलने, शादी है!'

'सुना है तेरी शादी भी ठीक हो गई है...।'

'नहीं तो...!'

क्यों ?'

'मैं ब्याह नहीं करूँगी...?'

पंडित जी फिर आगे कुछ नहीं बोले। रिक्शा अपनी चाल से चला जा रहा था। जङ्गल के ठीक बीच से वह रास्ता गया था। चारों तरफ देवदार के पेड़ और अन्दर घनी झाड़ियों से सारा जङ्गल भरा पड़ा था। गीदड़ और शेर दोनों के शिकार लिए लोग यहाँ आया जाया करते थे। हाँ, शिकार के दिनों में जङ्गल में जरूर चहल-पहल रहा करती है। लेकिन इस समय पंडित जी चुपचाप बैठे यजमान के घर बने हुए तरह-तरह के पकवानों की मधुर कल्पना में व्यस्त थे और जमुना जङ्गल के भयानकपन पर विचार कर रही थी—लेकिन रिक्शेवाला तो यही सोच रहा था कि दिन भर के बाद दो सवारी भी मिली तो उसमें से एक फोकट। पंडित जी ने रिक्शेवाले को भी अपना यजमान बना लिया था और इसीलिए संत में रिक्शे की सवारी का आनन्द ले रहे थे पत्तों की खड़खड़ाहट ने पंडित जी की विचार धारा तोड़ दी। वे बोले—'तू कब लौटेगी री.....?'

'कल शाम।'

'तो इसी रिक्शे पर लौट आना, समझी।' और फिर रिक्शेवाले से कहने लगे—

'अरे साधू कल शाम को इसे आना है..तू वापस पहुँचा देगा.....?'

'पहुँचा दूंगा...।'

'पैसे पूरे देगी...।'

'कोई बात नहीं...। लेकिन सूरज डूबने से पहले सराय पर आना होगा। उसके बाद मैं इन्तजार नहीं करूँगा...।' और बातों ही बातों में गयादीन की सराय भी आ गयी। पंडित जी तो झोला-झंपड़ सम्भालते हुए लम्बे हुए और जब जमुना टेंट से पैसे निकाल कर देने लगी तो साधू बीच ही में बोल पड़ा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन वह रुका ......और उसे उतार कर........

'रहने दीजिये...वापसी में दे दीजियेगा...।' उसने रिक्शा मोड़ लिया—वह भी चली गयी, पीछे मुड़ कर भी नहीं देखा। रिक्शेवाले ने दिन भर सराय में काट दी और जब एक प्याला चाय पीकर सराय के बाहर आया तो देखा जमुना इन्तजार कर रही थी। वह चुपचाप रिक्शे पर बैठ गयी।

'ले चलूँ या कोई और सवारी बिठा लूँ?' उस ने पूछा।

'नहीं ले चलो...!' और वह चल पड़ा। फिर वही जङ्गली रास्ता, वही पेड़—वही सब कुछ, कुछ दूर आने पर साधू ने पूछा—

'आपको डर तो नहीं लग रहा है?'

'नहीं!' अकड़ कर बोली वह।

'तो आप शादी क्यों नहीं कर रही हैं...?'

'तुमसे मतलब...।'

'मतलब है तभी तो पूछता हूँ...।'

'अकेली जान बदमाशी करना चाहते हो।' जमुना ने रुख देख कर कहा।

'चाहूँ तो बहुत कुछ कर सकता हूँ जमुना! लेकिन मैं आवारा नहीं हूँ, समझीं।'

'तो यह सब कहने का मतलब?'

'मतलब! तुम क्या नहीं जानती? वर्षों से आस लगाये बैठा हूँ। तुम्हारे ही कारण भोला और लल्लू से झगड़ा हुआ। तुम्हारी ही वजह से मैंने फैक्ट्री की जमी-जमाई नौकरी छोड़ी—मैं दर-दर का भिखारी बना, कङ्गाल कहलाया। पढ़ना-लिखना छोड़ दिया—सब कुछ छोड़ दिया और अब कोल्हू के बैल की तरह दिन रात रिक्शा चलाता हूँ और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम पूछती हो मतलब ! साफ-साफ कह दो जमुना कि तुम मुझसे प्रेम नहीं करती...आज साफ-साफ कह दो···मैं गांव छोड़ कर निकल जाऊँगा कहीं...।' उसने रिक्शा भी रोक दिया—वह घबराई।

'यह क्या चलते क्यों नहीं !'

'पहले जबाब दो···' और उसने जमुना का हाथ पकड़ लिया। वह तिलमिला कर रह गई। मगर हाथ न छूटा। खींचा तानी भी हुई मगर साधू का लोहे का हाथ था कहां छूटता भला ! आव न देखा ताव उसने उसके हाथ में इतनी जोर से दांत काटा कि गहरा घाव हो गया। हाथ भी छूट गया और पैदल ही भागी। बादल गरजने लगा था। उसने रिक्शा दौड़ाया और जैसे पास आया शेर ने जोर से दहाड़ा। समय न था। साधू ने पहले तो उसे चढ़ाया, फिर आप भी उसी पेड़ पर चढ़ गया। इतने में बारिश भी भरमरा कर होने लगी। इस बारिश में जानवरों के भगदड़ की आवाज बड़ी भयंकर लग रही थी—खुद उसी पेड़ के नीचे एक शेर एक घन्टे तक बैठा रहा। ऐसी दशा में ऐसी भयानक और जोखिम रात में पेड़ से उतरना समझदारी नहीं थी। दोनों ने जाग कर उसी पेड़ पर रात भर काटा और सबेरा पूरी तरह हो गया तब जाकर नीचे उतरे और रिक्शे पर भागे। साधू रास्ते भर चुप था अपने रिक्शे की घंटी की तरह। रास्ता बीता जङ्गल छूटा और गुमटी भी आई लेकिन वह रुका नहीं। रुका जमुना के घर के सामने और उसे उतार कर वह अपनी झंपड़ी में आया। दिन भर बिना कुछ खाए पिये ही वह पड़ा रहा। औंधा खरहरी खाट पर। हाथ पर कोई दवा भी नहीं लगाई। पड़ा पड़ा वह सो गया।

धीमे-धीमे सांझ भी ढल गई और इसी बीच लुक छिपकर जमुना भागी-भागी आई। सिर पर हाथ रखते ही वह डर सी गई।

'अरे तुम्हें तो बुखार है···' फिर उठकर ढिबरी जलाई और पास आकर लगी जगाने—

'साधू···ओ साधू···'

'कौन·····'

'मैं···जमुना···।'

'आप···।'

'नहीं···तुम···'

'कैसे।'

'खाना और मरहम लेकर आई हूँ···'

तुमने क्यों तकलीफ की जमुना। मुझ अभागे के लिये ऐसा ही होना चाहिये। मैंने गलती की और उसकी सजा मुझे मिली··तुम्हारा इसमें कोई दोष नहीं, जमुना...तुमने क्यों तकलीफ की... ।'

'तकलीफ कैसी...यह तो मेरा फर्ज है...और तुम मुझे रोकने वाले कौन होते हो जी।'

'मैं कोई भी तो नहीं हूँ जमुना इसीलिये तो कहता हूँ यह सब माया जाल क्यों .. । तुम जाओ जमुना···कोई देख लेगा तो तुम्हारी बदनामी होगी ···मैं क्या रिक्शा है, यहां नहीं तो वहां चलाऊँगा। लेकिन तुम औरत हो...। और यह घाव ! यह तो मेरी जिन्दगी की अन्तिम निशानी है जो मेरे ही साथ जायगा......' और उस ढिबरी के धुँधले प्रकाश में भी जमुना ने उसके आंसुओं को देख लिया। उससे न रहा गया—

'बस करो साधू । मतु मुझे जी भर के मारो-काटो लेकिन इस तरह मत कहो···इस तरह मत कहो, साधू।' और उसके पैरों से लिपट गई। दोनों रो रहे थे।

'दीदी' के संरक्षक बनिये !

१००) या अधिक भेज कर 'दीदी' के संरक्षक बनिये। ५ वर्ष बाद यह रकम आप वापस पा सकेंगे और जब तक यह रकम वापस न पायेंगे पत्रिका आपको निःशुल्क मिलती रहेगी। साथ ही 'दीदी' के पृष्ठों में उपयुक्त स्थान पर संरक्षक के रूप में आपका नाम छपता रहेगा।

—सञ्चालिका 'दीदी'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई किताबें

पानी की दीवार—

लेखिका—श्रीमती रजनी पनिकर, प्रकाशक—राजहँस प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ १५६, आकार—डबल क्राऊन १६ पेजी। सजिल्द, मूल्य ३) रुपया।

श्रीमती रजनी पनिकर हिन्दी की एक सुयोग्य लेखिका हैं। हिन्दी-साहित्य प्रेमियों ने आपके प्रथम उपन्यास का प्रसन्नता पूर्वक स्वागत किया। यह उपन्यास 'पानी की दीवार' आपका द्वितीय नवीन उपन्यास है जो अब तक के हिन्दी उपन्यासों में एक नवीनता की झलक देता है।

प्रस्तुत उपन्यास के पात्र नीना, राजकुमार, दिलीप, केशव और करुणा हैं। मुख्यतः इसमें दो पात्र ही विशेषता रखते हैं 'नीना' और 'दिलीप' जो नायक और नायिका कहे जा सकते हैं।

नीना एक अविवाहित नवयुवती चित्रकर्त्री है। जिसे शिमला में एक स्कूल में चित्रकला शिक्षिका के रूप में जाना पड़ता है। शिमला में उसकी पहचान दिलीप जो एक अध्यापक हैं और विवाहित हैं से होती है। नीना का बचपन का साथी राज है जो वर्तमान में विदेश गया हुआ है अतः उसकी अनुपस्थिति में नीना दिलीप की ओर आकर्षित होती है। राज का नीना का पत्र व्यवहार चलता रहता है। राज और दिलीप में उसकी नजरें समानता देखती हैं और वह वहाँ रह कर दिलीप का साथ करती है। उसके जीवन में इस समय तीन प्राणी चक्कर काटते हैं—राज, दिलीप और उसकी पत्नी करुणा। इसी मानसिक तर्क-वितर्क को लेखिका ने बड़े रोचक ढङ्ग से चित्रित किया है। उसके मन में जो अन्तर द्वन्द होता है उसका भी वर्णन लेखिका ने बड़े मनोवैज्ञानिक ढङ्ग से किया है। अन्त में उस स्कूल का प्रिन्सिपल नियुक्त होकर 'राज' उसका बचपन का साथी वहाँ आ जाता है और दिलीप वहाँ से दूर चला जाता है। उपन्यास की भाषा सरल और प्रवाहपूर्ण है। पाठक एक बार उपन्यास उठा कर फिर छोड़ने की इच्छा नहीं करता। —सुशीला कुमारी

नैनीताल—

यह नियोजन पुस्तक माला—१ सूचना विभाग उत्तर प्रदेशीय सरकार ने प्रकाशित की है। इस पुस्तक में नैनीताल जिले का परिचय, जिले की उन्नति के लिए क्या किया जा चुका है और क्या किया जायगा आदि बातें विस्तार के साथ बताई गई हैं। पुस्तक के अन्त में नैनीताल जिले का एक बड़ा मान चित्र भी दिया गया है। इस पुस्तक की प्रस्तावना में कहा गया है कि अन्य जिलों के सम्बन्ध में भी ऐसे ही विवरण प्रकाशित किये जायँगे।

जहाँ हम इस प्रकाशन की प्रशंसा करते हैं वहीं यह भी कहना चाहते हैं कि बजाय पृथक्-पृथक जिलों में नियोजन के कार्यों का विवरण प्रकाशित करने के सरकार विभिन्न क्षेत्रों में राज्य भर में किये गये विकास के कार्यों का पृथक्-पृथक् विवरण प्रकाशित करती तो अधिक अच्छा होता।

चार नयी पत्रिकाएँ—

हाल ही में हिन्दी में चार नयी पत्रिकाएँ प्रकाशित होने लगी हैं जो अपना विशेष महत्व रखती हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं:—

प्रकाशन समाचार, दिल्ली।
हिन्दी प्रचारक, बनारस।
भारती, ग्वालियर।
प्रसाद, बनारस।

प्रकाशन समाचार और हिन्दी प्रचारक में हिन्दी के नव प्रकाशनों की चर्चा रहती है। इन दोनों पत्रिकाओं से निश्चय ही हिन्दी के पाठकों को नये प्रकाशनों की जानकारी होगी और वे अपने मन की पुस्तकों का चुनाव कर सकेंगे।

'भारती' और 'प्रसाद' दोनों उच्च-कोटि के साहित्यिक पत्र हैं। भारती के प्रधान सम्पादक श्री जगन्नाथ 'मिलिन्द' और 'प्रसाद' के सम्पादक श्री बेढब बनारसी हैं। हम इन चारों पत्रों का स्वागत करते हैं। —श्रीनाथसिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

?प्रश्न-पिटारी?

प्रेम विवाह

प्रश्न—मैंने इस वर्ष एम० ए० फाइनल किया है। गत दो वर्षों से मेरे विवाह का प्रश्न टाला जा रहा है। कारण यह है कि मैं जाति के बाहर प्रेम विवाह करने का निश्चय कर चुकी हूँ और माता जी, जिन्होंने स्वयं प्रेम विवाह किया था, मुझे यह विवाह करने से रोक रही हैं, कहती हैं यदि मैंने यह विवाह किया तो वे मेरा मुँह न देखेंगी। मैं बड़ी चिन्ता में हूँ कि क्या करूँ ? क्या कोई मार्ग है कि मैं यह विवाह भी कर सकूँ और माता जी का आशिर्वाद भी प्राप्त कर सकूँ।

उत्तर—हमारी राय में आपको इस सम्बन्ध में कोई निश्चय करने से पहले अपनी माता जी से राय लेना आवश्यक था। सम्भव है वे तैयार हो जातीं। आप की माता जी ने प्रेम विवाह किया है अवश्य। पर उनका भी पत्र हमें प्राप्त हुआ है जिससे प्रकट होता है कि उन्होंने जाति के बाहर प्रेम विवाह नहीं किया है। वे बहुत दुखी हैं। आपका सर्व प्रथम कर्त्तव्य यह है कि पहले अपनी प्यारी माता को सुखी बनावें और उसके बाद उनकी स्वीकृति और आशीर्वाद इस विवाह के लिये प्राप्त करें। यदि उनकी स्वीकृति अभी न मिले तो धैर्य से उसकी प्रतीक्षा करें। जल्दी न करें। सम्भव है समय बीतने पर वे आप के दृष्टि कोण को अपना लें या आप ही अपना विचार बदल दें !

अंधौरियां

प्रश्न—मैं अंधौरियों से बहुत त्रस्त हूँ। क्या उपाय करूँ ?

उत्तर—अँधौरियों का एक मात्र कारण है। शरीर का दीर्घ काल तक पसीने से तर रहना या पसीने से तर कपड़ों को बार-बार बिना धोए सुखाए पहनना। अतएव जब-जब पसीना हो, पंखे की हवा का सहारा लें जिससे पसीना सूखता रहे और शरीर से लगे रहने वाले वस्त्र जब एक दिन पसीने से भीग जायें तब उन्हें दूसरे दिन बिना धोए सुखाए न पहनें। इससे अँधौरियों का जोर कम हो जायगा। इतने पर भी वे निकल ही आवें तो खड़िया मिट्टी में थोड़ी फिटकिरी खूब महीन पीस कर दिन में कई बार लगावें।

मासिक धर्म में पीड़ा

प्रश्न—मासिक धर्म के समय मेरे पेड़ू में बहुत पीड़ा होती है। क्या करूँ ?

उत्तर—जब पेड़ू में पीड़ा हो गर्म पानी की बोतल से पेड़ू सेकें, आपको आराम मिलेगा। इसके अतिरिक्त अपना स्वास्थ्य सुधारें। कब्ज से बचें गहरी नींद सोएँ, प्रातः टहलें, खूब ताजा पानी पिएँ तो कुछ दिनों में स्वास्थ्य बढ़ने से यह रोग स्वयं दब जायगा।

गर्मी के दस्त

प्रश्न—मेरी बच्ची ढाई साल की है। आज कल उसे दिन में हरे, पीले तीस दस्त तक हो जाते हैं। बेचारी सींक सी हो गई है, लगता है बचेगी नहीं। बहुत दुखी हूँ।

उत्तर—बच्ची को यथा शक्ति शीतल स्थान में रखें दूध में पानी मिला कर दें। वह भी हजम न हो तो दूध फाड़ कर जो पानी बचे वह दें। प्रति दिन प्रातः सायं चाय का दो या तीन चम्मच सौंफ का अर्क किसी अत्तार के यहां से मँगा कर, थोड़ा पानी मिला कर व ग्लूकोस से मीठा करके दें।

—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध-विषय

रहीम के संस्मरण में

हाल में ही राजधानी में संसदीय हिन्दी-परिषद ने हिन्दी-साहित्य के अमर कवि अब्दुल रहीम खानखाना का स्मृति-दिवस बड़े समारोह के साथ मनाया। यह समारोह नई दिल्ली में निजामुद्दीन की समाधि के निकट बनी हुई रहीम की समाधि के समीप राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में मनाया गया था। इस अवसर पर प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू व श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन भी पधारे थे।

कवि रहीम खानखाना सम्राट् अकबर के नव रत्नों में से एक रत्न थे। राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्हें हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए कहा कि रहीम तत्कालीन हिन्दी-साहित्य के प्रतीक थे। वे केवल फारसी भाषा के ही उद्भट विद्वान् नहीं थे, अपितु हिन्दी और संस्कृत के भी पंडित थे। उनमें राष्ट्र कवि के सभी गुण वर्तमान थे तथा वे कृष्ण भक्त सूरदास और श्रीराम-भक्त गोस्वामी तुलसीदास जैसे उच्च श्रेणी के कवियों में से थे। रहीम की अनेक रचनाओं का उदाहरण देते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि रहीम की काव्य-धारायें ईश्वर-भक्ति का अमृत बहा रही हैं।

श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन ने अमर कवि को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए कहा कि साहित्य-प्रेमी समाज ने विभिन्न धर्मावलम्बी साहित्यिक पुरुषों की रचनाओं में धार्मिक भेदभाव को सदा पृथक् रखा है। आपने बड़ी दृढ़ता के साथ यह कहा—'जब तक हिन्दी भाषा का अस्तित्व रहेगा, तब तक रहीम के नाम का सदा श्रद्धा और प्रेम के साथ स्मरण किया जायेगा।' अन्त में राष्ट्रपति तथा प्रधान मन्त्री ने उनकी समाधि पर पुष्प मालायें चढ़ायीं।

महिलाओं का सचल दल

उत्तर प्रदेश राज्य के मुख्य मन्त्री ने महिलाओं का एक सचल दल बनाने की मंजूरी दी है। इस दल में पौष्टिक तत्वों तथा गृह विज्ञान की विशेषज्ञाएँ होंगी। यह दल ग्राम्य क्षेत्रों का दौरा करेगा।

उपर्युक्त योजना फलों तथा खाद्य विज्ञान में प्रसार सेवा के नाम से प्रसिद्ध नव योजना का एक अङ्ग है। सम्प्रति प्रदेश में उक्त प्रकार के तीन दल हैं जो गांवों का दौरा करते हैं तथा फलों के संरक्षण की शिक्षा देते हैं। घरों में खपत के लिये वे लागती मूल्य पर फलों को डिब्बों में बन्द करके रखने का भी काम कर देते हैं।

विचार है कि आगामी वर्ष तक २८ सचल दल बनाये जायंगे। पटियाला तथा पूर्वी पञ्जाब राज्य सङ्घ तथा नैपाल ने भी उत्तर प्रदेश सरकार से उक्त प्रकार की सेवा चालू करने के निमित्त प्राविधिक सहायता प्राप्त करने का अनुरोध किया है।

भारतीय अधिकतर मिठाइयां तथा अनाज खाते हैं। उनमें फलों तथा वनस्पतियों के प्रयोग का रिवाज कम है। इन सचल दलों का उद्देश्य प्रदेश भर में वनस्पतियों तथा फलों का सन्देश पहुँचाना है।

लखनऊ में तलाक

लखनऊ का समाचार है कि वहाँ गत मास में लगभग ४० स्त्रियों ने तलाक की अनुमति प्राप्त की। इनकी शिकायत थी कि इनके पति शराबी या जालिम और निर्दयी हैं। जनवरी से अब तक १०० स्त्रियों को तलाक की अनुमति मिल चुकी है।

झांसी में सती

झांसी से ६० मील दूरी पर स्थित एक गांव में एक १८ वर्षीया राजपूत बाला अपने पति की मृत्यु के बाद सती हो गई। अपने सम्बन्धियों द्वारा मना करने पर भी जब वह अपने पति की चिता पर आ बैठी, तब उसके दर्शनों के लिए निकटवर्ती गांवों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्धनों को धनवान बनाने वाली हिन्दी भाषा की प्रसिद्ध पुस्तकें

क्रस्टल रेडियो सैट बनाना	२)	अचार चटनी मुरब्बे बनाना	३।)	खेती बागबानी-शिक्षा	३)
फिल्मी हार्मोनियम गाइड	३)	रंगाईधुलाई ड्राई क्लीनिंग शि०	३।)	हरप्रकारकी स्याहियाँ बनाना	३।)
तबला, सितार, बाँसुरी गाइड	३)	आधुनिक साबुन शिक्षा	३॥)	मोटर मिकैनिक गाइड	६)
पुराने छापे का असली इन्द्रजाल	३)	पति पत्नी पथ-प्रदर्शक	३)	साइकिल मरम्मत गाइड	३)
दक्षिण का सच्चा जादू	२॥)	एलोपैथिक डाक्टरी गाइड	५)	सिलाई मशीन मरम्मत	३)
अकबर बीरबल विनोद	२॥)	एलोपैथिक इन्जेक्शन बुक	५)	मिमारी शिक्षा (राजगीरी)	१०)
फोटोग्राफी शिक्षा	३)	कम्पाउण्डरी शिक्षा	३॥)	बैट्री विज्ञान (बैट्रियाँ बनाना)	२॥)
साबरी तन्त्र सेवड़े का जादू	२॥)	पशु चिकित्सा	३)	आयल इञ्जन गाइड	६)
असली तेजी मन्दी सट्टा	५)	घर का वैद्य	२॥)	क्रूड आयल इञ्जन गाइड	६)
ज्योतिष शास्त्र	६)	जादूगरी शिक्षा	५)	घड़ी साजी शिक्षा	३॥)
पामिस्ट्री (हाथ रेखा ज्ञान)	६)	सचित्र बूटी-प्रचार वैद्यक	३)	ट्रैक्टर गाइड	६)
असली पुराना कोकशास्त्र	४)	पेटेण्ट औषधें और भारतवर्ष	४)	कारपेन्ट्री शिक्षा (बढ़ई काम)	१०)
पहली सुहाग रात	२॥)	आयुर्वेद चिकित्सा साग(	४॥)	हर प्रकार के रेडियो बनाना	४॥)
लव लैटर्स	२॥)	दाईगीरी शिक्षा	४)	वर्कशाप गाइड फिटर ट्रेनिंग	४)
रति रहस्य (कामकला)	४)	सिनेमा मशीन आप्रेटर गाइड	५)	खराद शिक्षा टर्नर गाइड	३)
जादू मिस्मरेजम	३)	गृह उद्योग (२५० घरेलू धन्धे)	४)	इलैक्ट्रिक गाइड	६)
कटाई सिलाई शिक्षा	३)	हर प्रकारके बूट पालिश बनाना	३।)	इलैक्ट्रिक वायरिंग	५)
अपटुडेट फैशन बुक	२॥)	सुगन्धित तेल व इत्र बनाना	३।)	सरल हिन्दी इंग्लिश टीचर	२॥)
एम्ब्रायडरी (कढ़ाई) शिक्षा	४)	मुँह देखने के शीशे बनाना	३।)	सरल हिन्दी-उर्दू टीचर	२॥)
बुनाई शिक्षा (स्वेटर आदि)	४)	बेकरी बिस्कुट आदि बनाना	३।)	वृहद् चित्रकारी शिक्षा	४॥)
नवीन वृहद् पाकशास्त्र	४)	रंग-बिरंगी आतिशबाजियाँ	३।)	फिल्म एक्टर बन जाओ	२॥।)

—: प्रत्येक पुस्तक का डाक-व्यय पृथक है :—

पुस्तकें वी० पी० द्वारा मंगवाने का पता:— } काटेज इण्डस्ट्री (DA-7) पी०बी०१२६२ अंगूरी बाग, देहली—६

एक समूह एकत्रित हो गया। बालिका की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थनायें की गयीं।

पुलिस ने बालिका के ससुर तथा पति के भाइयों को गिरफ्तार कर लिया है।

आभूषण दान

बम्बई में श्री जयप्रकाश नारायण ने महिलाओं से सम्पत्ति दान देने की जो अपील की थी उसका अच्छा प्रभाव पड़ा है। तीन महिलाओं ने ५००)-५००) के आभूषण सम्पत्ति दान में दिये हैं। एक महिला ने अपने सोने का कड़ा दान में दिया तथा इस धन से कुआं खुदवाने की इच्छा प्रगट की।

मलेरिया से मृत्यु

भारत में लगभग ७ करोड़ ५० लाख व्यक्ति मलेरिया से पीड़ित होते हैं और इससे हर वर्ष लगभग ७ लाख व्यक्तियों की मृत्यु होती है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दहेज की समस्या

विमला तिवारी बी० ए० ने आत्म-हत्या करके हमारा ध्यान दहेज की प्रथा की ओर आकृष्ट किया है। इस प्रथा का अन्त कैसे हो, इस सम्बन्ध में हमारे पास अनेक लेख और सुझाव आये हैं। सब को छापना यहाँ सम्भव नहीं है। कुछ के आवश्यक अंश हम यहाँ उद्धृत करते हैं :—

दहेज का बायकाट हो

गत माह की 'दीदी' में कुमारी विमला तिवारी का, दहेज न दे सकने के अभाव से पिता के दुःख से मुक्त करने के लिये, आत्म-हत्या का यह समाचार जान कर वास्तव में दुःख हुआ। मगर सोचने पर ऐसा लगा एक सुशिक्षित कन्या का बलिदान व्यर्थ नहीं जायेगा।

ऊँची शिक्षा वाले बड़ी-बड़ी कोठियों वालों को सोचना होगा!

वर्तमान समय में सारे देश भर में दहेज प्रथायें भयानक राक्षसी (दानवी) का रूप धारण कर लिया है। यों ही तो सर्व साधारण वर्ग की आर्थिक स्थिति चिन्ता जनक रहती है। उसमें भी आज कल रहन-सहन शिक्षा-दिक्षा का खर्च भी बढ़ गया है। ऐसी स्थिति में मध्यम-वर्गीय पिता लड़कियों के लिये 'दहेज' कहाँ से से लावें! बड़ी ही दर्दनाक स्थिति है। घर खर्चा शिक्षा-प्रतिष्ठा और दहेज के पाटों मे मध्यम वर्ग निर्दयता से पीसा जा रहा है।

दहेज समस्या को सुलझाने (मिटाने) के लिये कुछ सुझाव लिख रही हूँ।

(१) 'दहेज' विरोधी हर एक कुमार-कुमारियाँ तथा माता-पिता यह दृढ़ प्रतिज्ञा करें कि हम दहेज न देंगे न लेंगे।

(२) हर एक दहेज विरोधी व्यक्ति प्रतिज्ञा करें कि हम किसी ऐसी शादी में शरीक न होंगे, जहाँ दहेज दिया या लिया गया हो।

(३) श्रीनाथसिंह जी के इस सुझाव से सहमत कि कन्यायें उच्च डिग्रियां, ऊँची नौकरियों और धनवानों को न देखें, बल्कि चरित्रवान्, स्वस्थ कम पढ़े पर योग्य युवकों से सहर्ष शादी करें। ऐसे युवक काफी हैं।

(४) दहेज विरोधी संस्था की स्थापना की जायें जिसका सञ्चालन कर्मठ व्यक्ति करें।

—श्रीमती बजाज, चांदा म० प्र०

विवाह की नयी व्यवस्था की जाय

दहेज की कुप्रथा ने हमारे समाज में ऐसा जड़ पकड़ लिया है कि इस समस्या को हल करने के अब तक जितने भी प्रयास किये गये हैं, सबकी इसने अवज्ञा की है। इस प्रथा का अन्त क्योंकर किया जाये, इस पर भिन्न-भिन्न मत प्रकट किये गये हैं, पर इस समस्या के हल के अब तक जितने भी मार्ग बताये गये हैं, साधारणतः अधिक भावना से ओत-प्रोत हैं और यदि उन्हें सुन्दर आदर्श मान भी लिया जाये, तो भी वे अभ्यासिक नहीं हैं।

साधारणतः इस प्रकार के विचार प्रकट किये जाते हैं कि जो लड़के तिलक लिये बिना विवाह करने को तैयार नहीं होते, उनसे कोई भी लड़की विवाह न करे। इस काय-क्रम को कार्यावाहित करने के लिये एक बहुत दृढ़ संगठन की आवश्यकता है।

उन भाग्यवानों से, जिनके पास तिलक देने के लिये पैसे हैं, उनसे यह आशा करना की वे हमें सहयोग देने के लिये अपनी पुत्रियों को अविवाहित रक्खेंगे, केवल एक भ्रम मात्र है।

कुछ लोग विधान-सभा एवम् व्यवस्थापिका-सभाओं द्वारा कानून बनवा कर इस प्रथा का अन्त करना चाहते हैं। इस प्रकार का प्रयास बिहार की सरकार ने 'डावरी रेस्ट्रेन एक्ट' पास करके किया, पर परिणाम कुछ न हुआ। आज भी बिहार में तिलक उसी प्रकार लिया और दिया जाता है, जैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज से चार वर्ष पूर्व 'डावरी रेस्ट्रेन एक्ट' पास होने के पहले लिया और दिया जाता था। समाज की रीति को कानून द्वारा परिवर्तित कर देने के किसी प्रयास को अब तक सफलता नहीं मिली है। इसका उदाहरण हम लोगों ने 'शारदा एक्ट' में देखा और 'डावरी रेस्ट्रेन एक्ट' में देख रहे हैं।

कुछ लोग इस विचार के समर्थक हैं कि यदि सुशिक्षित कन्यायें, वे पढ़े पुरुष से विवाह करने लगें और यह दृष्टिकोण अपना लें की बी० ए० पास लड़की के अनुरूप वर बी० ए० या एम० ए० पास व्यक्ति ही नहीं, तो वरों का अभाव न रह जाये और दहेज मांगने वाले बी० ए० घर बैठे ही रह जायें। पर इस सुझाव को स्वीकार करने के पूर्व यह आवश्यक है कि हम विचार करें की एक डिग्री प्राप्त या सुशिक्षित कन्या का एक अनपढ़ से विवाह करने का सिद्धान्त कैसा है। क्या एक सुशिक्षित कुमारी के लिये एक अनपढ़ व्यक्ति अनुरुप वर है ?

कुछ अपवादों को छोड़ कर, हर अनपढ़ पुरुष की मनोवृति का आधार होगा 'ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी', और हर सुशिक्षित लड़की के मनोवृति का आधार होगा कि पुरुष और नारी, एक ही लड़ी की दो कड़ी है, अतः एक सुशिक्षित कन्या का, बे-पढ़े व्यक्ति से विवाह करने का सिद्धान्त सुन्दर एव ठोस नहीं है।

अब हम इस पर विचार करेंगे कि तिलक की कुप्रथा को अन्त करने का अभ्यासिक मार्ग क्या हो सकता है ?

हमारे यहाँ विवाह में रुपयों का व्यर्थ व्यय बहुत अधिक होता है। इसके फलस्वरूप विवाह करने के लिये किसी भी पक्ष को बहुत अधिक रुपयों की आवश्यकता होती है। अपने इस आवश्यकता की पूर्ति लड़के पक्ष के लोग अधिक से अधिक तिलक लेकर करते हैं।

सरकार का जन-सम्पर्क विभाग, विवाह की नयी व्यवस्था को प्रचलित एवम् सर्व प्रिय बनाने के लिये बहुत व्यापक स्तर पर प्रचार करे और इस प्रचार का एक भाग, वर्तमान विवाह व्यवस्था के विरुद्ध घृणा पैदा करना भी हो। लड़कियों की जो संस्थायें हैं, वे शिक्षित लड़कियों को सङ्गठित करें और यह प्रयास करें की हर शिक्षित लड़की अपने माता-पिता से विवाह की नयी व्यवस्था द्वारा विवाह करने की माँग करे। वे लोग प्रेम-विवाह को प्रेरित कर भी, विवाह की नयी व्यवस्था को प्रचलित बना सकती हैं। हर सरकारी नौकरी करने वाले कुमार के लिये यह आवश्यक कर दिया जाये कि वह विवाह की नयी व्यवस्था द्वारा विवाह करे और जनता के दृष्टि में जो बड़े लोग हैं, उनसे नेतागण व्यक्तिगत-प्रार्थना करें कि वे विवाह के नये ढङ्ग को अपनावें। इस प्रकार एक मजबूत जनमत तैयार कर लेने के पश्चात् एक कानून द्वारा वर्तमान वैवाहिक व्यवस्था की वैधानिक स्वीकृति छीन ली जाये।

इस प्रकार हर दिशा से प्रयास कर यदि हम विवाह में होने वाले व्यर्थ व्यय को मिटा कर तिलक के आर्थिक आवश्यकता का अन्त कर दें तभी इस कुप्रथा का अन्त हो सकता है अन्यथा नहीं।

—मिथिलेश कुमार सिनहा, जमुई

गरीब से ब्याह करो

आप विचार कीजिये कि अगर अपनी पुत्री के शादी में आप कम से कम एक हजार रुपया दहेज देते हैं तो एक ही हजार बरातियों आदि के स्वागत में तथा ऊपरी खर्चे में खर्च हो जाता है। इस तरह से दो हजार रुपया मामूली लड़के के लिये खर्च किया जाता है। अगर यही दो हजार रुपया किसी गरीब लड़के के साथ शादी करके बचाकर गरीब को किसी धन्धे में लगा दिया जाय तो गरीब लड़के की आर्थिक दशा सुधार कर शिक्षित पुत्री के कारण वह शिक्षित होकर स्त्री-पुरुष आपस में मिल कर सुखी रहेंगे और स्वतन्त्र होकर देश का भी उत्तम कार्य कर सकते हैं।

जगदम्बा सहाय श्रीवास्तव, कानपूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों का पृष्ठ

प्रश्न दो—उत्तर एक

नीचे दो-दो प्रश्न एक साथ दिये जा रहे हैं। पर इनका उत्तर एक ही है। सोचो, अक्ल काम न करे तो इस पृष्ठ के अन्त में देखो।

(१)
पथिक क्यों नहीं सोया।
मेम क्यों नहीं गयी।

(२)
औरत क्यों न नहाई।
सितार क्यों न बजाई।

(३)
पथिक प्यासा क्यों।
गधा उदास क्यों?

(४)
रोटी क्यों जली।
माला क्यों खड़ी।

(५)
घोड़ा क्यों अड़ा।
पान क्यों सड़ा।

गज्जू-मल्लू

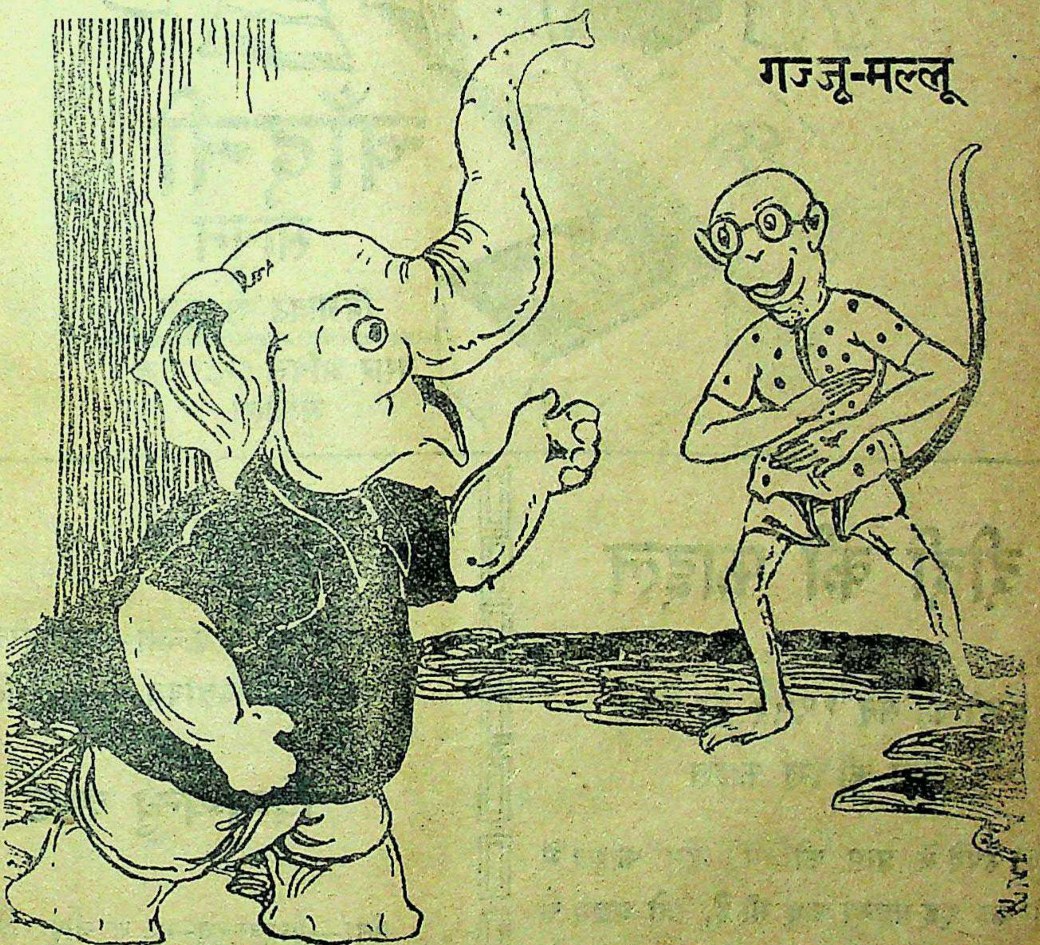

दो लड़के हैं गज्जू मल्लू दोनों जैसे हाथी बन्दर।
दोनों बात-बात पर लड़ते घर के बाहर घर के अन्दर।

उत्तर—(१) साया न था। (२) परदा न था। (३) लोटा न था। (४) फेरी न थी। (५) फेरा न था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीदी की फाइल

दीदी की सन् १९५३ की बारहों मास की पूर्ण फाइल

६) रुपये में प्राप्त कीजिये। इस फाइल में 'दीदी' का गृह-प्रबन्ध अङ्क भी है, जो अलग से नहीं मिल सकता।

मैनेजर दीदी कार्यालय

इलाहाबाद—२

हर भाषा में कच्ची-पक्की दीवार पर सुन्दर विज्ञापन के लिए लिखें

विश्व-बन्धु आर्ट

पता—विश्वबन्धु—मु० धरनीपुर विसियां
पो०—गम्भीरपुर, (जिला आजमगढ़)
यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1

वेतन दिवस
आपकी बचत
का दिन है

अपना धन लगाइये

१२- वर्षीय नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट्स में
इनकी अवधि पूरी होने पर ४'१६ प्रतिशत वार्षिक ब्याज मिलता है

१०-वर्षीय ट्रेजरी सेविंग्स डिपोज़िट्स में
इनपर ३'५ प्रतिशत वार्षिक ब्याज मिलता है

पोस्ट आफिस सेविंग्स बैंक डिपोज़िट्स में
यहाँ १०,००० रुपये तक की धरोहर पर २ प्रतिशत वार्षिक ब्याज मिलता है (संयुक्त हिसाब रखने पर २०,००० रुपये तक पर)

१०-वर्षीय नेशनल प्लान सर्टिफिकेट्स में
इनकी अवधि पूरी होने पर ४'५ प्रतिशत वार्षिक ब्याज मिलता है

प्रत्येक दशा में ब्याज पर आयकर
नहीं लगेगा

AC 558

आपका लाभ: देश की समृद्धि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अध्यापिकाएँ चाहिए

जो हिन्दी इङ्गलिश में विशेष योग्यता रखती हों! सिलाई, बुनाई, कढ़ाई, खेल, ड्रिल आदि कार्य दक्षता से कर सकें। कम से कम १० वर्ष का अध्यापन अनुभव रखती हों। शीघ्र आवेदन करें। प्रधान मन्त्री

श्री कन्या पाठशाला तिनसुकिया (आसाम)

बर चाहिए

एक २६ वर्षीया बाल विधवा ब्राह्मण कन्या के लिये। पता—

बाक्स नं० ४ दीदी, इलाहाबाद

सफेद कोढ़

की पेटेंट दवा मूल्य ५) रुपया

विवरण पत्र मुफ्त मँगावें।

वैद्य बी० आर० बोरकर, आयुर्वेद भवन मु० पोस्ट मँगरूलपीर, जिला—अकोला (बेरार) मध्य प्रदेश

स्त्री रोगों की जड़

मासिक धर्म का ठीक समय पर न होना बाँझपन, रक्त हीनता, क्षय, कैन्सर आदि घातक रोग क्यों होते हैं? इसलिये कि गर्भाशय, डिम्बकोष आदि जननेन्द्रिय विकार युक्त और रोग ग्रस्त हो जाते हैं, उनकी स्वाभाविक क्रिया नष्ट हो जाती है और ठीक दवा ठीक समय पर नहीं की जाती।

यदि आप नीरोग रह कर सुखी जीवन बिताना चाहती हैं तो—

संजीवनी

का सेवन कीजिये। तीस वर्ष के अनुभव के बाद प्रसिद्ध चिकित्सक की अनुभूत यह नवीन औषधि संजीवनी स्त्री रोग का अमोघ अस्त्र है।

रोग निदान और सेवन-विधि औषधि के साथ भेजी जाती है।

मूल्य—१ शीशी (एक महीने के सेवन के लिए) ३), २ शीशी ५॥), ४ शीशी १०) रुपया डाक व्यय अलग।

कृष्णा होमियोपैथिक चिकित्सालय, ४६४—सुभाषनगर, इलाहाबाद—२

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

भारतीय कसीदा

लेखक { जगदीश मित्तल, कमला मित्तल

सुरुचि-सुमुद्रण की आदर्श इस पुस्तक में उच्च आफसेट कागज पर छपे कसीदे के लिये विभिन्न भारतीय कलाओं से चुने २१५ नमूने, सर्वश्रेष्ठ इटालियन आर्ट पेपर पर प्राचीन भारतीय कसीदों के १८ हाफटोन चित्र, ७ रंगीन रेखाचित्र और ३२ पृष्ठ की ठोस पाठ्य सामग्री।

आकार डबल डिमाई (९"×११") मूल्य १५), आर्ट पेपर पर छपा विशेष संस्करण २०) रु०

प्राप्ति-स्थान {

प्रकाशक— सुरुचि प्रकाशन 'कनक', हिमायत नगर, हैदराबाद

मुख्य वितरक— राजकमल प्रकाशन १, फैज बाजार, दिल्ली

स्वास्थ्य सम्बन्धी पुस्तकें

(श्री महेन्द्रनाथ पांडेय लिखित)

ज्वर चिकित्सा	२॥)
ग्रन्थि और ग्रन्थि प्रणाली के रोग	१)
पाचन प्रणाली के रोग	२)
तीनों एक साथ	६)
फलाहार चिकित्सा	२॥)
स्वास्थ्य के लिए शाक तरकारियाँ	२)
मठा उसके गुण तथा उपयोग	१)
आँख का अचूक इलाज	२)
जुकाम	॥)
शहद के गुण और उपयोग	॥)
भोजन ही अमृत है	१॥)
मधुमेह चिकित्सा	।=)
तपेदिक	४)
जीवन तत्व	१॥)
दूध-चिकित्सा	४)
हमारे बच्चे	१॥)
बच्चों के रोग और उनका इलाज	२)
प्रमेह-विवेचन	२)
कब्ज और मलावरोध	॥)

डाक व्यय अलग

स्काउटिंग-गाइडिंग की

श्री कृष्णनन्दन प्रसाद लिखित प्रामाणिक पुस्तकें

स्काउट-गाइड के गाने और निनाद—इस संग्रह में १४५ गाने और कविताएँ तथा २० निनाद संगृहीत हैं। पृष्ठ-संख्या १४४, मूल्य १)

गाँठें—गाँठें-फाँसें, बन्ध तथा साँठें, रज्जुशीर्ष-रक्षिका और बन्धन की १०६ रेखा-चित्रों से सुसज्जित हिन्दी की एक मात्र पुस्तक। मूल्य ॥=)

स्काउटिंग-गाइडिंग की उत्पत्ति और प्रसार—मूल्य ॥)

समाज स्वास्थ्य और दुर्घटनाए—इसमें समाज-स्वास्थ्य, सेवा-सुश्रूषा, पहली सहायता, अग्निकांड में सेवा आदि का वर्णन है। मूल्य १)

खेल-पद्धति—इस पुस्तक में बाली-बाल, कबड्डी, खो-खो, कुश्ती और रस्साकशी के नियम व ढङ्ग बताये गये हैं। मूल्य ॥=)

दौड़-कूद-प्रक्षेप—तरह तरह की दौड़ें, कूदें, और हथौड़ा, गोला, भाला, और चक्र फेकने के तरीके बतलाये गये हैं। मूल्य १)

भारतीय क्रिकेट — मूल्य १)

पता—'दीदी' कार्यालय इलाहाबाद-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल पत्रिका

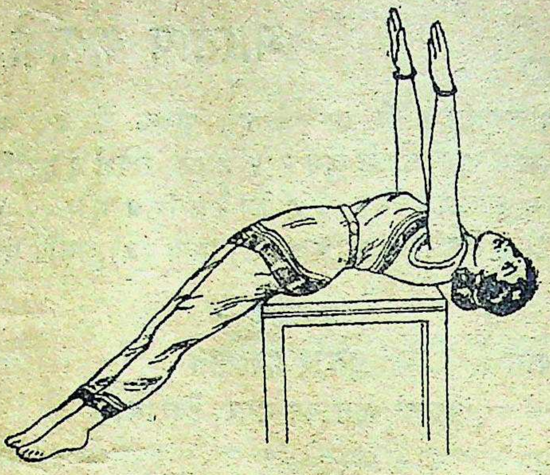

स्वास्थ्य और सौंदर्य ।।)

इस पुस्तक में चित्रों सहित वे सब व्यायाम बताए गए हैं जिनको अपने एकान्त कमरे में ५ से १५ मिनट तक रोज करके स्त्रियाँ पूर्ण स्वस्थ और सुन्दरी बन सकती हैं। इसके अलावा इसमें सौंदर्य वृद्धि की और भी ऐसी बहुमुल्य सलाहें दी गई हैं जो आपको अन्यत्र न मिलेंगी।

केश विन्यास ।।)

यदि कोई कहे कि बालों को धन्नी में बाँध कर झूलने से बाल बढ़ेंगे तो स्त्रियाँ अपने बालों को बढ़ाने के लिए यह कष्टकर उपाय करने को तैयार हो जायेंगी। जैसा कि नार्वे की यह स्त्री कर रही है। परन्तु यदि आप यह पुस्तक पढ़ें तो सहज ही केश रहस्य समझ जायेंगी और आपके केश सघन, सुचिक्कन और दीर्घ हो जायेंगे।

१) मनिआर्डर से भेज कर दोनों पुस्तकें घर बैठे मँगाइए। वी० पी० नहीं भेजी जायगी।

पता—'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीदी के संरक्षक

१	श्रीमती राजकुमारी ठोलिया, उज्जैन	२००)
२	श्री मुकुटबिहारीलाल श्रीवास्तव, बिरलापुर	"
३	कुमारी कमल सहाय, आरा	"
४	श्रीमती रतनदेवी सुखानी कुमरी तलैया	"
५	श्रीमती आकाश कामिनी अग्रवाल आगरा	"
६	श्री हेमप्रभादेवी तापड़िया, जसवन्तगढ़	१५०)
७	श्रीमती सरलादेवी वृ० नागर बनारस	१२८)
८	श्री सेठ बल्देवदास मूँधड़ा, कलकत्ता	१००)
९	श्रीमती स्नेहलता नेवाटिया, बम्बई	"
१०	श्रीमती चन्द्रावती एस० कानोडिया, बम्बई	"
११	श्रीमती सरलादेवी डागा, कलकत्ता	"
१२	श्रीमती निर्मला गोविल, आगरा	"
१३	श्री रानी लक्ष्मीकुमारी चूड़ावत, रावतसर	"
१४	श्रीमती सावित्री बाँगड़, कलकत्ता	"
१५	श्री विन्दुवासिनीदेवी सकलानी, देहरादून	"
१६	श्रीमती कृष्णादेवी मन्त्री, बम्बई	"
१७	श्रीमती मोहिनी तापुड़िया, बम्बई	"
१८	कु० अरुणा कुमारी जायसवाल, हैदराबाद	"
१९	श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी करहल	"

'दीदी' के नियम

(१) 'दीदी' मासिक पत्रिका है। इसका वार्षिक मूल्य ६) और एक प्रति का।।) है। वार्षिक मूल्य कार्यालय में पहुँचते ही ग्राहक का नाम रजिस्टर में दर्ज हो जाता है और पत्रिका जानी शुरू हो जाती है।

(२) रुपया पैसा, वार्षिक मूल्य और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र आदि प्रेमलता देवी संचालिका 'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद-२ के पते से भेजना चाहिये।

(३) पत्र-व्यवहार करते समय ग्राहकों को अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये। पत्र-व्यवहार का पता यह है—संचालिका 'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद-२।

(४) 'दीदी' हर महीने में पहली तारीख को प्रकाशित हो जाती है। पहली तारीख के आस पास यदि 'दीदी' आपको न मिले तो आपको तुरन्त अपने डाक घर से पूछना चायिये। अगर पता न लगे तो १५ तारीख के भीतर संचालिका 'दीदी' इलाहाबाद को लिखना चाहिये।

(५) यदि एक-दो मास के लिये पता बदलवाना हो तो डाकखाने से प्रबन्ध कर लेना चाहिये। यदि साल भर या अधिक काल के लिये पता बदलवाना हो तो उसकी सूचना मय ग्राहक नम्बर के हमें देनी चाहिये।

(६) लेख, फोटो, बदले के पत्र, समालोचना के लिये पुस्तकें सम्पादक 'दीदी' इलाहाबाद के पते से भेजना चाहिये।

(७) न छपने की हालत में वे ही लेख वापस किये जायगे जिनके साथ आवश्यक स्टाम्प होगा।

(८) 'दीदी' में विज्ञापन छपाना हो तो उसके नियम अलग से मँगावे। पर यह ध्यान रखें, 'दीदी' में अश्लील व झूठे विज्ञापन नहीं छापे जाते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

DIDI -/8/- July 1954 Regd. No. A—691

'दीदी' मुझे क्यों प्रिय है—

पिछले कई वर्षों से मैं दीदी की ग्राहिका हूँ। परिवार के व्यय को आय के अन्दर रखने के लिये मुझे कुछ भी क्यों न करना पड़े, पर मैं अपनी इस प्यारी पत्रिका से नाता नहीं तोड़ूँगी। इसका मूल्य तो इसके विशेषज्ञों की उन सलाहों में ही वसूल हो जाता है जो इसमें आती रहती हैं। यह 'दीदी' पढ़ते रहने का ही फल है कि मेरा घर आनन्द-दायक, मेरी रसोंई रुचिकर, मेरा शृङ्गार आकर्षक और मेरा शिशु स्वस्थ दीखता है।

'दीदी' ने मुझे प्रिय पत्नी, आदरणीय माता और एक अच्छी सहेली बना दिया है। 'दीदी' का वार्षिक मूल्य ६) रुपया है। इतनी उपयोगी पत्रिका केलिए यह मूल्य कुछ नहीं है।

पता—मैनेजर 'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद—२

अपने प्यारे बच्चे के लिये

बा ल बो ध

मँगाइये !

यह बालक-बालिकाओं का सबसे सस्ता और अच्छा मासिक पत्र है। इसकी अधिकांश कहानियाँ श्री श्रीनाथसिंह लिखते हैं, जिनकी सरल और रोचक शैली बच्चों को बहुत पसन्द है। वार्षिक मूल्य सिर्फ ३) रुपया है।

मैनेजर—'बालबोध', इलाहाबाद—२

मुद्रक और प्रकाशक श्रीनाथसिंह 'दीदी' प्रेस, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीदी

प्रधान सम्पादिका
श्रीमती यशोवती तिवारी

सम्पादिका-समिति
महा माननीया श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित
रानी लक्ष्मीकुमारी रावतसर
श्रीमती रत्नकुमारी एम० ए०
श्रीमती कमला शिवपुरी बी० ए०, बी० टी०
श्रीमती चन्द्रकान्ता जेरथ बी० ए०
श्रीमती रजनी पनिकर एम० ए०
कुमारी विद्यावती साहित्य रत्न

प्रबन्ध सम्पादक—श्री श्रीनाथसिंह

पत्र व्यवहार का पता—
प्रेमलता देवी संचालिका 'दीदी' कार्यालय
इलाहाबाद नं० २

विषय-सूची

कहानियाँ

१—कवि जी की र[illegible] भारतीय एम० ए० ... ... ६३०
२—धर्म की बहिन [श्री 'शि[illegible]न्दरम्' बी० एस० सी०] ६४०
३—[illegible] पिया [श्री निशीथकुमार राय बी० ए० एल-एल० बी०] ६४४
४—स्मृति [श्री प्रभा उपाध्याय] ... ६५१
[illegible]न्त[illegible]न्द [कुमारी कमला मिश्रा] ... ६५८
६—ऋषि-पत्नी [श्री प्रेमेन्द्र श्रीवास्तव] ... ६६२
७—चकोरी [श्री सुन्दरलाल श्रीवास्तव 'प्यासा'] ६६८

लेख

१—आ[illegible]-सम्बल [आचार्य श्री विद्यानन्द 'विदेह'] ६२६
२—कढ़ाई की कला सीखिये-७ [कुमारी सुशीला कुमारी] ६२८
३—आपके सपनों का अर्थ ... ६३३
४—पति का स्वभाव कैसे बदलें [श्रीमती इन्दुमती परिहार] ... ६४८
५—कमला चाची [श्रीमती रजनी पनिकर] ६५५
६—संस्कृत नाट्य-परम्परा ... ६६७
७—चाय [डाक्टर एम० पी० रञ्जन, आसनसोली] ६६६

कविताएँ

१—गीत [कुमारी पुष्पलता अस्थाना एम० ए०] ६२५
२—गीत [श्री यु० सी० पेड़ीवाल, रतनगढ़] ६५४
३—गीत [श्री 'पुष्प' बी० ए० साहित्य रत्न] ६५६

फुटकर

१—नये चीन में सुखी मातृत्व ... ६२७
२—प्रदर रोग ६३६
३—तीन खोपड़ियाँ ६४२
४—दहेज प्रथा का निषेध... ... ६४७
५—महिलाओं के लिये कार्यक्षेत्र ... ६५०
६—घरेलू इलाज ६६१

स्तम्भ

१—रसोई ६५७
२—आपको कुछ पूछना है ?... ... ६६६
३—सामयिक साहित्य ६७३
४—अपने विचार ६७६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

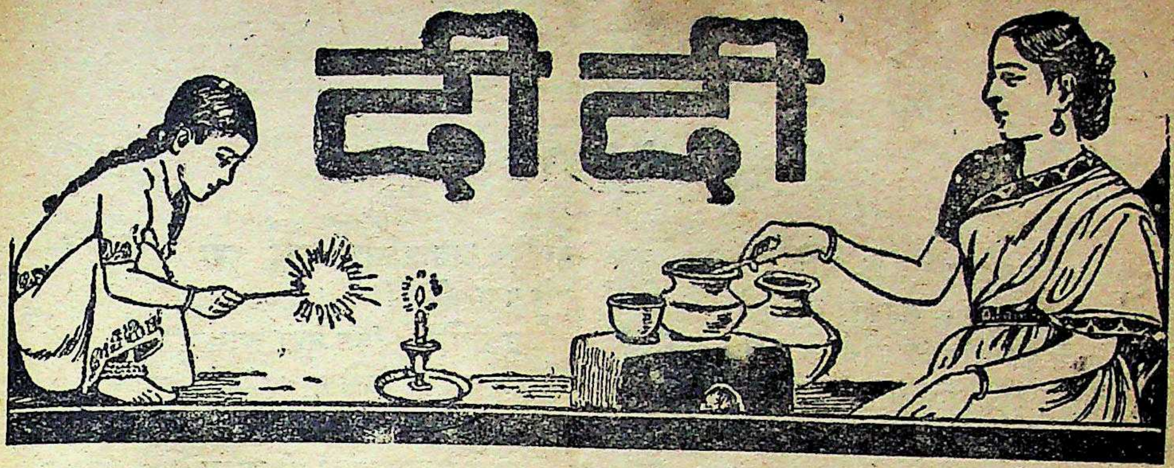

भारतीय स्त्रियों और कन्याओं की सचित्र मासिक पत्रिका
उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार और अन्य राज्यों द्वारा कन्याशालाओं के लिये स्वीकृत

साल १५ } इलाहाबाद, दिसम्बर १९५४ { संख्या १२

गीत

लेखिका, कुमारी पुष्पलता अस्थाना एम० ए०

अतीत के सितार में सचेत एक तार है !

प्रभात पंथ में थकी
उदास रात भर रही।
अशेष दीप वर्तिका
उसांस साथ भर रही।
पतङ्ग मौन ज्योति पर समीप एक जल रहा,
सुप्राण दे प्रदीप को उठा रहा अङ्गार है।

विलास मय विभावरी
विशुद्ध प्रीति पा रही।
विमुग्ध चन्द्र आरती
विशाल धार गा रही।
समुद्र द्वार खोल आज चन्द्र को बुला रहा,
प्रगाढ़ प्यार ज्वार बन हिला रहा कगार है।

सुदूर भाव - तूलिका
विचित्र चित्र खींचती।
अटूट पी पुकार को
अजस्र बूँद सींचती।
निदान अश्रु बांधकर निरीह कण्ठ गा रहा,
मल्हार तान अलापता अधीर एक प्यार है।

—०—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्म-सम्बल

लेखक, आचार्य श्री विद्यानन्द 'विदेह'

भगवान् बुद्ध एक वृक्ष के नीचे ध्यानावस्थित बैठे हुए थे। सहसा जोर-जोर से रोने और चिल्लाने की आवाज कानों में पड़ी। तथागत ने नेत्र खोले। देखा, एक आदमी बदहवास चिल्लाता हुआ उनकी ओर भागा चला आ रहा है। बुद्ध देखते रहे, वह आता रहा। बिलकुल निकट आने पर भगवान् ने पूछा—'इतने विकल क्यों हो?'

'भगवन्! मैं बरबाद हो गया।'

'कैसे?'

'भगवन्! मैं सपरिवार एक उत्सव में सम्मिलित होने जा रहा हूँ। वह देखिये, डाकू मेरे परिवार को लूट रहे हैं। लाखों के रत्न-भूषण छीन लिये, आप चलकर उन्हें उपदेश दीजिये कि ऐसा पापकर्म वे न करें।

बुद्ध बोले—'भद्र! तुम ऐसे धन के लिये इतने विकल हो रहे हो? यह धन ऐसा धन है जिसे तुमने कमाया था। इसके बरबाद होने पर तुम इस से भी कहीं अधिक धन फिर प्राप्त कर सकते हो। परन्तु तुम्हारा एक ऐसा धन है, जो सच्चा और वास्तविक धन है। तुम्हारे उस धन को डाकू रात-दिन प्रतिक्षण लूट रहे हैं। तुम उसके लिये तनिक भी विकलता प्रकट नहीं करते।'

धनिक ने बात काट कर कहा—'भगवन्! पहिले मेरे परिवार और धन की रक्षा कीजिये। फिर मैं आपके चरणों में बैठ कर विशेष ज्ञान प्राप्त करूँगा।'

बुद्ध गये। डाकुओं को उपदेश किया और उन्होंने सब लूटी हुई सम्पत्ति धनिक को लौटा दी। धनिक सपरिवार उस वृक्ष के नीचे आकर बैठ गया और पूछने लगा—'देव! मेरा वह कौन-सा धन है जो दिन-रात प्रतिक्षण लुट रहा है और जिसका मुझे पता भी नहीं है।'

बुद्ध बोले—'वह तेरा आत्मधन है। वही तेरा असली धन है, जिसे तू अनवरत खो रहा है और जिसका तुझे तनिक भी भान नहीं है।'

सारे मानव-जगत् की आज यही अवस्था है। मकड़ी के जाले की तरह वह माया का जाल फैलाता है और स्वयम् फँसता जाता है। मायाग्नि से झुलसता जाता है और उसी पर मंडराता जाता है। भोग उसे रोगी और क्लेशित करते हैं, परन्तु वह उन्हीं में लिप्त रहा आता है। माया तथा भोग के छिनने पर वह बड़ा बेचैन होता है, परन्तु अपने आत्म-सम्बल की उसे तनिक भी चिन्ता नहीं है।

मनुष्य अपने आपे को खो बैठा है और जीवन-पथ से भ्रष्ट हो गया है। वह तत्व को भुला बैठा है और धूल फांक रहा है।

जीवन का क्रम था—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। आज है धन पहले, धन ही पीछे, धन ही अब, धन ही तब। धर्म कभी नहीं धन सर्वदा। सोते-जागते धन ही धर्म, धन की ही धुन, यह जानते हुए भी कि इससे आत्महनन हो रहा है, यह मानते हुए भी कि जीवन जटिल और अशान्त होता जा रहा है।

गाड़ी के आगे अश्व जोड़ने से यात्रा तय होती है अश्व के मुख के आगे गाड़ी धरने से नहीं। आत्मत्व से ही जीवन सफल होता है, शरीरत्व से नहीं। आत्मा के अनुशासन में शरीर के रखने से कल्याण होगा शरीर के आधीन आत्मा के होने से नहीं।

जिस प्रकार स्त्री चावल अथवा धान को साफ करते हुए रेत और कंकड़ियों के कण एक-एक करके निकाल कर फेंकती जाती है, उसी प्रकार आत्म-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये चीन में सुखी मातृत्व

चीन में अब ३०,००० से भी ज्यादा ऐसे स्थल हैं जहाँ युवती मातायें शिशु जन्म से पूर्व की स्थिति में डाक्टरी जांच और परामर्श, शिशु जन्म के समय सहायता और अपने छोटे बच्चों के स्वास्थ्य की देख-भाल सम्बन्धी सुविधायें प्राप्त कर सकती है। बड़े नगरों में और साथ ही दूर स्थित गाँवों तक में ये मौजूद हैं और पूर्णतया सुरक्षित आधुनिक अस्पतालों से लेकर एक कमरे के छोटे केन्द्रों तक के रूप में उन्हें देखा जा सकता है।

मुक्ति के बाद के साढ़े चार सालों में २७०,००० दाइयों को प्रशिक्षित किया गया है। इनमें काफी बड़ी संख्या पुराने ढङ्ग की दाइयों की है जिन्हें सुरक्षित और वैज्ञानिक प्रणाली सिखाई गई। शेष नगर और देहात की युवती स्त्रियां हैं जिन्होंने इस काम के लिए अपना जीवन अर्पित करने का निश्चय किया है।

जच्चा बच्चा सम्बन्धी सेवाओं की कारगरता में यह वृद्धि वस्तुतः ऊपर दिये गये आंकड़ों से कहीं अधिक है। उदाहरण के लिए प्रत्येक नगर में सरकार ने जच्चा और बच्चा के स्वास्थ्य की देख-भाल में संलग्न सार्वजनिक और व्यक्तिगत दोनों ही प्रकार के अस्पतालों और क्लिनिकों के सभी कर्मचारियों को एक बद्ध प्रणाली में संगठित कर दिया है। फलतः अब यह कभी नहीं होगा कि एक पर तो काम का अत्यधिक बोझ हो और दूसरा खाली हाथ बैठा रहे।

जच्चा बच्चा सम्बन्धी आधुनिकतम सेवाओं का विस्तार अब उन दूर स्थित क्षेत्रों में भी पहुँच गया है जिनमें अल्पसंख्यक जातियां बसती हैं। चिंघाई के उत्तर पश्चिमी प्रान्त में जहाँ बहुत से लोग चरागाहों में खानाबदोशों का जीवन बिताते हैं, ग्यारह जच्चा बच्चा स्वास्थ्य स्टेशन और दो सौ शिशु-जन्म स्टेशन खोले गये हैं। इनके अलावा तिब्बती हुई, मङ्गोलियन तथा अन्य अल्पसंख्यक जातियों में से करीब दो हजार दाइयाँ प्रशिक्षित की गयी हैं।

शिशुजन्म सम्बन्धी सेवाओं के लिये स्त्रियों को बहुत ही कम या कुछ भी नहीं देना पड़ता। मजदूर और सरकारी कर्मचारी, क्रमशः, श्रम सुरक्षा तथा निःशुल्क डाक्टरी सेवा प्रणाली के अन्तर्गत निःशुल्क सेवा प्राप्त करते हैं। अकेले १९५२ में ही सरकार ने शिशुजन्म के २०००००० केसों को शुल्क देने से पूर्णतया मुक्त कर दिया था।

पुराने चीन में शिशुओं की मृत्यु संख्या का स्तर बहुत ऊँचा था। अब वह बहुत कम हो गया है। पीकिंग और डैरेन में, १९५२ के समूचे वर्ष में शिशु टेटानस से मृत्यु होने की एक भी घटना नहीं हुई। इनिंग, सिंक्याङ्ग प्रान्त में, एक उदास गीत प्रचलित था जिसका भाव यह था। स्त्रियां शिशु को जन्म देती हैं, लेकिन बच्चे उन्हें मां पुकारने के लिये कभी जीवित नहीं रहते। यहाँ अब जच्चा और बच्चा स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापना होने के बाद के नौ महीनों में, १४८ बच्चों का जन्म हुआ और सबके सब, केवल दो को छोड़ कर जो मरे ही जन्मे थे, बहुत अच्छी तरह से बढ़ और पनप रहे हैं।

सम्बल के विरोधी कारणों को सतर्कता और सावधानी के साथ सदा दूर करते रहो। सोते-जागते, खाते-पीते, व्यवसाय व्यापार करते; पदे-पदे यह ध्यान रखो कि किसी भी मूल्य, प्रलोभन या आकर्षण-पर आत्म सम्बलकी क्षीणता न होने पाये। यदि स्वास्थ्य खोया; तो कुछ हानि नहीं हुई; । यदि आत्महानि हुई तो बहुत बड़ी हानि है। इस भावना से जीने वाले ऐसे सुदृढ़ जीवन दुर्ग में प्रविष्ट हो जाते हैं, जहाँ मनुष्य आत्म सम्बल को सर्वथा सुरक्षित रखता हुआ उत्तरोत्तर विभूति और उत्कर्षको प्राप्त होता है उसी दुर्ग में और उसी सुदृढ़ जीवन में आत्मानन्द और सच्चा शरीर-सुख प्राप्त होता है।

अपने जीवन-दुर्ग की सर्वतः ऐसी सुव्यवस्था रखो कि उसमें आत्मरिपु प्रहार न करने पायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कढ़ाई की कला सीखिये–७

लेखिका, कुमारी सुशीला कुमारी

इस लेख माला का अन्तिम और सबसे सुन्दर लेख जनवरी सन् १९५५ के विशेषाङ्क में प्रकाशित होगा। उसके बाद कढ़ाई-कला की अन्य बारीकियों के बारे में ज्ञातव्य लेख छपेंगे।

साटन स्टिच

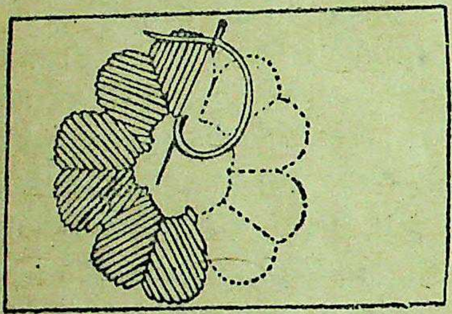

चित्र नं० १

यह स्टिच यद्यपि कढ़ाई की समस्त स्टिचों से सरल प्रतीत होती है तथापि इसको ठीक-ठीक और सफाई के साथ काढ़ना अत्यन्त कठिन है। अतएव इसमें पूर्ण दक्षता प्राप्त करना आवश्यक है।

साटन स्टिच जिस स्थान को भरना हो, उस के ऊपर से ले जाई जाती है और कपड़े के नीचे से लौटाकर जहाँ से शुरू की जाती है वहाँ से वस्त्र का एक तागा छोड़ कर निकाली जाती है। वहीं से दूसरी स्टिच चलती है। ये स्टिचें इस तरह काढ़ी जायें कि एक दूसरे से मिली हुई और बराबर धरातल बनाती हुई प्रतीत हों और जिस स्थान को इनके द्वारा भरना हो उसके किनारे आकृति के अनुसार दृढ़ और साफ प्रतीत हों। साटन स्टिचें किसी भी दिशा में और किसी भी लम्बाई में काढ़ी जा सकती हैं परन्तु बहुत लम्बी स्टिचें भद्दी प्रतीत होती हैं। यदि किसी बड़ी जगह को भरना हो तो समूचे स्थान को खण्डों में विभक्त कर देना चाहिए (देखिये चित्र नम्बर १ में फूल की पंखुरियाँ) छोटी जगहों को स्टिचों की दिशा को बदल कर भरने से और भी सुन्दरता आती है। इससे धागे के एक ही रङ्ग के होते हुए भी कढ़ाई पर एक सुन्दर प्रकाश और छाया प्रतीत होती है। इसी कारण इस स्टिच का नाम साटन स्टिच पड़ा है।

एकहरी साटन स्टिच

यह किफायत के साथ साटन स्टिच बनाने की एक सुन्दर कला है। क्योंकि इसमें तागा सर्वथा वस्त्र के ऊपर ही रहता है। इसमें तागा पूरी लम्बाई तक वस्त्र के नीचे से नहीं ले जाया जाता बल्कि वस्त्र में एक या दो सूत लेकर यह स्टिच ऊपर ही दूसरी तरफ से लौटा दी जाती है। (देखिये चित्र नं० २) यह तरीका बहुत सन्तोष जनक परिणाम नहीं देता,

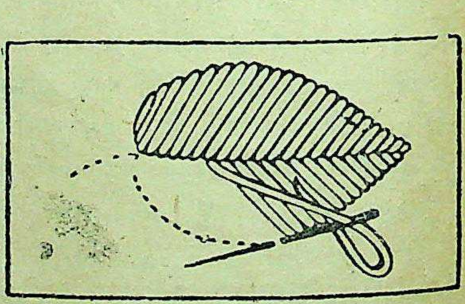

चित्र नं० २

क्योंकि इसमें स्टिचों को एक दूसरे से मिला कर रखना बहुत कठिन होता है। इसके लिए स्टिचों के बीच में एक तागे भर की जगह छोड़ते जाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए और फिर लौट कर इसी नियमानुसार उस को भर लेना चाहिए।

उभरी हुई साटन स्टिच

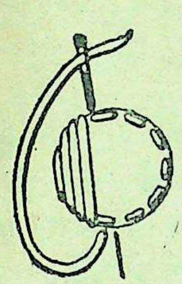

चित्र नं० ३

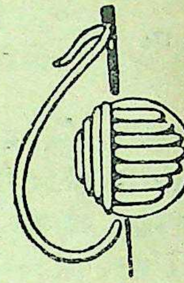

चित्र नं० ४

साटन स्टिच से छोटी आकृतियों को भरना हो तब वे और भी सुन्दर प्रतीत होती हैं यदि पहले उनकी बाह्य रेखा को 'रनिङ्ग स्टिच' से स्पष्ट कर दें और फिर साटन स्टिच से उसे ढक दें। (देखिये चित्र नं० ३) इस प्रकार आकृति थोड़ा उभरी हुई प्रतीत होती है। यदि आकृति को और भी उभरी हुई दिखाना तो इस तरह काढ़िये जैसा (चित्र नं० ४) में दिखाया गया है। इसमें आकृति को पहले;उसके भीतर ही साटन स्टिचों से भरा जाता है और फिर उन साटन स्टिचों को आकृति के बाहर से साटन स्टिचों से ढका जाता है। यह ढङ्ग अनेक प्रकार की कढ़ाइयों में बर्ता जाता है।

लपेटुआ साटन स्टिच

किसी भराव को या साटन स्टिच द्वारा की गई किसी साधारण कढ़ाई को भी लपेटुआ स्टिचों द्वारा और भी उभरा हुआ दिखाया जा सकता है। इसमें साटन स्टिचों को तिरछा काढ़ा जाता है और लपेटुआ स्टिचें उनके ऊपर से समकोण बनाते हुए ले जायी जाती है। पर बीच में थोड़ी जगह छोड़ी जाती है (चत्र नं० ५) यह स्टिचें पत्तियों की भराई या भारी डंठलों की आकृति उभारने में प्रयुक्त होती हैं।

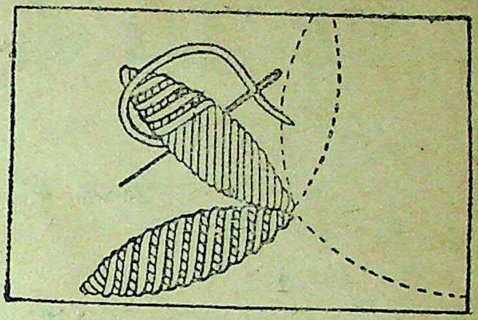

चित्र नं० ५

लम्बी छोटी स्टिच

लम्बी और छोटी स्टिचें साधारण साटन स्टिच की तरह काढ़ी जाती हैं। परन्तु यह इस तरह काढ़ी जाती है कि स्टिचें क्रमशः एक बड़ी एक छोटी पड़ती जाती हैं। जैसा कि (चित्र नम्बर ६) में A पर दिखाया गया है। इस प्रकार आकृति की बाह्य रेखा को पूर्ण कर लेने पर जो स्थान खाली रह जाते हैं उनको समान लम्बाई की स्टिचों से भरा जाता है और फिर जो स्थान खाली रह जाते हैं उनको भी उसी तरह भरा जाता है जब तक कि आकृति पूरी

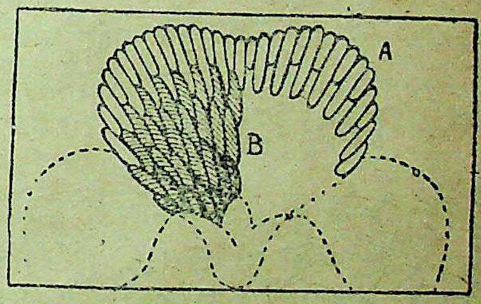

चित्र नं० ६

तौर से भर नहीं जाती जैसा कि स्थान B पर दिखाया गया है। इसमें स्टिचों की लम्बाई एक ही रहती है केवल प्रारम्भ को छोड़ कर।

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क हास्यपूर्ण कहानी

कवि जी की रसिकता

लेखक, श्री भारतीय एम० ए०

[१]

कवि जी की रसिकता का पता लड़कों ने तभी पा लिया था, जब वे कालेज के कवि-सम्मेलन में पधारे थे और उनकी कविता का तो क्या कहना! श्रोताओं से अधिक तो वे स्वयम् उस का आनन्द लेते थे! कालेज के लड़के ऐसे दिलचस्प कवि को कब छोड़ने लगे। यारों ने चाय-पार्टी दी, कविता सुनी, उसकी व्याख्या सुनी और उस पर हजारों आचार्यों और प्रोफेसरों की सम्मति का पुलिन्दा देखा। इस प्रकार जब घनिष्टता बढ़ी तो वे कवि के हृदय के कन्दराओं में छिपी अनेक मौलिक भावनाओं के अतिरिक्त उनकी निजी कमजोरियों का भी दर्शन कर पाये। अब क्या था। कवि जी यों ही मनोरञ्जन की सामग्री थे, अब विनोद के उपकरण भी बन गये।

कवि जी विधुर हैं या अविवाहित अथवा पत्नी-परित्यक्त या परित्यक्त-पत्नी—हम नहीं जानते। परन्तु कालेज में रहते हुए हमने ऐसा अनुभव किया कि कवि जी विवाह के इच्छुक हैं—परिणय के प्रेमी हैं।

सुना था कि यदि कोई पढ़ी-लिखी सुशिक्षित सभ्य विदुषी महिला हो तो वे सहर्ष उसे स्वीकार कर सकते हैं—चाहे वह गैर जाति की कन्या ही क्यों न हो।

क्लास में मिस प्रभा बहुत चुपचाप रहती। जब प्रोफेसर साहब विहारी के दोहे की व्याख्या करते हुए शर्माने लगते तब मिस प्रभा जैसे गूँगी-बहरी, निर्विचार बनी बैठी रहती। लड़के उन्हें देखते—इस आशा से कि शायद विहारी के दोहों का प्रभाव मिस प्रभा पर पड़ा हो। पर वहाँ तो चिकना घड़ा था—ज्यों-का-त्यों, मानों पानी ही नहीं देखा। लड़के निराश होकर मिस प्रभा को, 'बनी हुई' कहते और उसका भण्डाफोड़ करने की कसम खाते। आखिर एक दिन किसी को सूझ ही गयी।

[२]

कवि जी को पत्र मिला। लिखा था—'हमारे कालेज की एक कुमारी छात्रा महाशया आपकी कविता पर लट्टू हैं। व्याख्या सुनती हैं तो आपे से बाहर हो जाती हैं। मैंने उनसे बातें की तो मुझे ऐसा स्पष्ट हो गया कि वे आप ही जैसे कवि से विवाह करने की इच्छा रखती हैं। यदि आप उनसे मिल सकें तो कदाचित् आपको सफलता मिले···।'

अब क्या था? कवि जी की खुशी का ठिकाना नहीं! किसी तरह दो घण्टे काटे। तुरन्त अपनी पुस्तकों का बण्डल बना कर डाक से मिस साहबा को भेजा—दो एक दिन बाद पुस्तकों के उपहार के लिये 'धन्यवाद' लिख कर आ पहुँचा। कुछ ही दिन बाद कवि जी मिस साहबा से मिलने जा पहुँचे। ताँगे से उनके उतरते ही मिस के बूढ़े पिता मिस्टर मुकर्जी ने देखा कि एक व्यक्ति ताँगे से उतरा है और ताँगे वाला एक डाली उतार रहा है। मिस्टर मुकर्जी अपने बरामदे में बैठे छुट्टी के दिन बिता रहे थे। यह दृश्य देख उन्हें अपने 'सर्विस' के दिनों का स्मरण हो आया जब उनके घर डालियाँ पहुँचती थीं। उन्होंने सोचा, कोई पुराना भक्त अपने 'रिटायर्ड' अफसर को अब भी नहीं भूला है। वे स्वागत के लिये खड़े हो गये। कवि जी ने बरामदे के जीने पर पैर रखते हुए पूछा—'क्या यही मिस्टर मुकर्जी का बँगला है?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हाँ-हाँ, आइये ! आइये !'—वृद्ध मुकर्जी ने हाथ बढ़ाते हुए स्वागत किया—'आपका शुभ नाम पूछ सकता हूँ ?'

'मेरा—? मैं कवि हूँ। मुझे लोग 'रसिक जी' कहते हैं ! मैंने कुछ पुस्तकें भेजी थीं. . .।'

'हाँ-हाँ—ठीक, आप ही ने भेजी थीं ?' मुकर्जी महाशय ने कुर्सी बढ़ा दी।

कवि जी बैठ गये। डाली—फूलों-फलों और मिठाइयों से भरी हुई सामने रखी हुई थी। मुकर्जी महोदय उसे देख प्रसन्न हो रहे थे। कहने लगे—'इसकी क्या जरूरत थी ?'

कवि जी बोले—'आपकी सेवा के लिये यह कुछ भी नहीं है ?'

मुकर्जी ने पुकारा—'प्रभा !'

मिस प्रभा बगल के कमरे में बैठी परीक्षा की तैयारियाँ कर रही थीं। कमरे से कुछ धीमी आवाज आई जैसे किसी ने यों ही उत्तर दिया हो और वह व्यस्त हो।

मुकर्जी महाशय ने पुकारा—'बेटी, इधर तो आना।'

प्रभा के उठने से कुर्सी की खड़खड़ाहट हुई। कवि जी प्रतीक्षा के शिकार हो उठे। क्षण भर में बगल के कमरे का पर्दा हटा। एक साधारण सुन्दरी कुमारी, अपने ढङ्ग से, कमरे से निकली। एक अपरिचित व्यक्ति को देख उसने अपने अस्त-व्यस्त अंचल को ठीक किया और सामने जा खड़ी हुई। कवि जी उसकी तरफ देख रहे थे और वह पिता की ओर !

पिता ने कहा—'यही महाशय हैं जिन्होंने पुस्तकें भेजी थीं।' और कवि जी की ओर देख कर वे बोले—'यह मेरी एक मात्र कन्या प्रभा है—यह बी० ए० में पढ़ती है। इसने हिन्दी लिया है।'

कवि जी खिल उठे; प्रभा लज्जा से कुछ लाल हो उठी और मुकर्जी डाली की ओर देख कर बोले, 'इसे नौकर से लिवा जा बेटी—आपके लिये चाय-चाय का प्रबन्ध कर।'

चाय आई, डाली भीतर पहुँची, कवि जी प्रसन्न हुए और मिस्टर मुकर्जी अतिथि के आवभगत में लगे।

चाय पी गई, पान के कितने बीड़े चबाये गये—जाने कहाँ कहाँ की कितनी बातें हुई, पर कवि जी जहाँ के तहाँ बैठे रहे। उनके लिए समय की गति मानो बन्द थी। अन्त में भोजन का समय आया। मुकर्जी महाशय ने भोजन के लिये कहा। कवि जी को कोई एतराज न था। कवि जी को खिलाने का भार प्रभा पर पड़ा। भोजन की समाप्ति तक कवि जी ने पता लगा लिया कि मिस प्रभा को हिन्दी साहित्य का ज्ञान है—कवियों के नाम जानती हैं, हिन्दी का उत्पत्तिकाल जानती हैं, आधुनिक हिन्दी की दशा जानती हैं, मौलिकता की कमी जानती हैं और हिन्दी की दशा सुधार के पक्ष में हैं। इससे अधिक कवि जी को जानने का अवसर न मिला पर वे निश्चन्त थे कि उनकी इच्छा पूरी होगी।

भोजन हो गया। मिस्टर मुकर्जी कवि जी का मनोरंजन करने लगे। इधर-उधर की बातें आरम्भ हुई, "आप विवाहित हैं ? आप की क्या स्थिति है आप क्या करते हैं ?"—इत्यादि प्रश्नों का उत्तर कवि जी ने संतोषजनक दिया।

कवि जी को विश्वास हो गया कि प्रभा उनकी भावी भार्या है। वे अब अधिक व्यग्र नहीं थे। परन्तु मन में एक शंका थी जिसका वे 'हाँ' कराके निवारण कर लेना चाहते थे। पर ऐसी बातें इस तरह पूछना ठीक नहीं। कवि जी ने तरकीब सोच ली। एक घण्टे की छुट्टी ले वे शहर चले।

[३]

तीसरे पहर कवि जी को लिए हुए एक मोटर टैक्सी मिस्टर मुकर्जी के बँगले में दाखिल हुई। यह तै पाई की सैर के लिए चला जाय। कवि जी का आग्रह न तो मुकर्जी महाशय टाल सके और न पिता का आग्रह उनकी कन्या टाल सकी। अन्त में पिता-पुत्री को ले कवि जी मोटर पर सैर करने निकले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घूमते-घामते संध्या हो गई, पर कवि जी को कोई ऐसा स्थान न मिला ऐसा अवसर न मिला कि वे पिता या पुत्री से विवाह की बात चीत चलाते। अन्त में संध्या समय चाँद के निकलते-निकलते कवि जी नदी तट की ओर घूम पड़े। पूर्णिमा का चाँद अपनी पूरी प्रभा के साथ निकल रहा था—उसके अनुराग की लालिमा दिशाओं को रंजित करती हुई कवि जी की रसिकता को रंग रही थी। घाट पर पहुँचते ही उन्होंने प्रस्ताव किया—'आइए मुकर्जी महोदय, जरा नाव पर सैर कर आवें, क्यों मिस प्रभा ?'

उन्होंने बड़े प्रेम और उल्लास से प्रभा की ओर प्रश्नात्मक भूमिका के उपरांत देखा था। मिस प्रभा के कपोलों पर की लालिमा निकलते हुए चाँद की लालिमा में मिल रही थी।

नाव आई—मुकर्जी मिस प्रभा के साथ अतिथि का आग्रह न टाल सके। घाट से धीरे-धीरे नाव बिदा हुई। अब वह नदी के प्रशांत वक्षस्थल पर गुदगुदी की भांति रेंगने लगी। इसी के साथ कवि जी के हृदय में किलोलें उठने लगीं। मिस प्रभा को लक्ष्य कर मुकर्जी महोदय को सम्बोधन कर अपनी कविता सुनाने लगे।

मुकर्जी महोदय सुनते थे—मिस प्रभा कुछ समझने की चेष्टा कर रही थी। कवि जी समझाने के लिए अनेक प्रकार के भाव भंगी कर रहे थे और नाव कर्ण-धार अपने डांड लगाये जा रहा था नाव काशी के घाटों की रमणीय शोभा दिखाती हुई आगे बढ़ रही थी। कवि जी की कविता चल रही थी—उनकी तन्मयता बढ़ रही थी। मुकर्जी कुछ निश्चिन्त से सुन रहे थे, मिस प्रभा कुछ वाचाल हो रही थीं, कुछ साहित्यिक जिज्ञासा का शिकार हो रही थीं। कवि अपना अवसर पाकर अपनी कविता, अपने हृदय के अव्यक्त भाव उंडेल देने के लिए आतुर हो रहा था। जब ऐसी परिस्थिति हो तो कवि क्यों न अपने को भूल जाय!

[४]

नाव लौटने लगी उसी के साथ, अवधि घाट पर लगने वाली थी। कवि जी अब एकाएक व्याव-हारिक बन गये—उनका सीधा सा प्रश्न हुआ—'हाँ, तो महाशय अपने मिस प्रभा के विषय में क्या निश्चय किया?' मुकर्जी महाशय चौंक कर बोले, 'कैसी बात?'

'यही उनके विवाह के विषय में।'

'देखा जायगा।'

'अब देखने के लिए समय कहां है। मैं तो उस में बिलम्ब नहीं करना चाहता?' कवि जी बोले।

मिस्टर मुकर्जी कवि जी का रहस्यवाद न समझ सके, बोले तो कुछ नहीं केवल खिन्न!

कवि का साहस बढ़ा। उन्होंने मिस प्रभा को सम्बोधन कर पूछा, 'कहिए' आप चुप क्यों हैं? क्या आप अभी विवाह टालना चाहती हैं?'

प्रभा क्या उत्तर देतीं? वह कुछ झेंप सी रही थी। कवि ने दृढ़ हो कहा—'मुकर्जी महाशय! जब हम दोनों राजी हैं—तो अब शादी टालना ठीक नहीं! आप मुझ-सा अच्छा दामाद न पावेंगे।'

नाव घाट पर लगने वाली थी। मुकर्जी का मोह छूटा। अब वे अपने को संभाल न सके। सर्विस जीवन की चिर अभ्यस्त पुलीस की शब्दावली का प्रयोग कर उन्होंने कवि को गरदनियां देते हुए कहा, 'क्या बकता है? साला! बदमाश! गुण्डा! क्या बकता है, उतर नाव से!'

कवि अपने को सँभालता हुआ, मिस प्रभा की तरफ न्याय की आशा से देखने लगा। पुत्री अपने पिता के आचरण का समर्थन करती हुई हतबुद्धि खड़ी थी! कवि के आंखों के सामने निराशा का अन्धकार छा गया। वह धक्के को न सम्भाल कर घाट के जीने पर लड़खड़ा कर बैठ गया। मुकर्जी अपनी पुत्री का हाथ पकड़े कवि को अपभ्रंश, देशी अङ्गरेजी और बङ्गला की शब्दावली में अनेक दुर्वचन कहते हुए घर की ओर लपके।

कवि जी जब सँभल कर उठे तो अपनी मूर्खता पर क्रोध आ रहा था पर वे अब किस पर अपना क्रोध उतारे। उन्हें इसी में संतोष हुआ कि आस-पास कोई परिचित व्यक्ति उन्हें देख नहीं रहा था!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

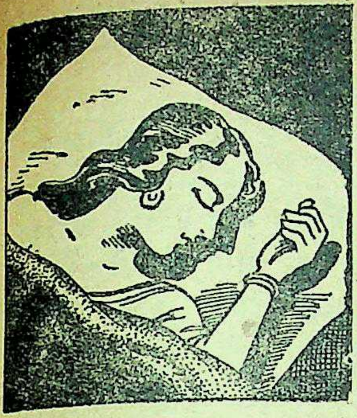

आपके सपनों का अर्थ

आप जो भी सपना देखते हैं उनका कोई न कोई अर्थ होता है। उनमें आपके लिए कोई न कोई चेतावनी या कोई न कोई सन्देश निहित रहता है। आप उन्हें समझने की चेष्टा करें। यह लेख सपनों के एक विशेषज्ञ ने लिखा है, जिसने पिछले २० वर्षों से सपनों का वैज्ञानिक रीति से अध्ययन किया है।

भूमिका

मानव शरीर पाँच तत्वों से बना हुआ है। पृथ्वी, जल, आकाश, अग्नि और वायु। स्वप्न में यही तत्व प्रकट होकर जीवन की गतिविधि का निर्देश करते हैं। पृथ्वी का कोई भाग सूखा स्वच्छ देखें तो जीवन सुखद, भीगा दलदली देखें तो दुःख का परिचायक है। जल स्वच्छ देखें तो जीवन में सफलता मिलेगी। पानी में सरलता पूर्वक तैरना इस बात का सूचक है कि आप कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करेंगे। डूबना अशुभ स्वप्न है। आकाश में सूर्य देखें तो अपने को शक्तिशाली समझें। पूर्ण चन्द्रमा देखें तो समझें कि यश मिलेगा। तारे देखें तो आपके जीवन का कार्य क्षेत्र विस्तृत होगा। अग्नि का स्वप्न बहुअर्थी होता है। उसका मन पर जैसा भला बुरा प्रभाव पड़े वैसा ही अर्थ समझना चाहिए। मन्द पवन सुख शान्ति का सूचक है। पर आंधी या तूफान आने वाली कठिनाइयों का परिचायक है। प्रत्येक प्रकार के स्वच्छ दृश्य सफलता और मलिन दृश्य असफलता के परिचायक होते हैं।

इन मूल सिद्धान्तों पर ध्यान रखते हुए आप अपने सपनों पर विचार कर सकते हैं। स्वप्न बहुत जल्द भूल जाते हैं अतएव जब देखें तभी नोट कर लें और उनका फल मिलान करें। कुछ स्वप्नों के फलाफल संक्षेप में नीचे देते हैं:—

अर्थ

अकेलापन—यदि आप देखें कि किसी स्थान पर आप अकेले रह गये हैं और सब सङ्गी-साथी आपको छोड़ कर चले गये हैं तो इसका अर्थ है कि आप अपने भविष्य के लिये कोई योजना बना रहे हैं जिसके पूर्ण करने में आपको कठिनाई होगी।

अनाज—अपने को अनाज के खेत के बीच में चलता देखें तो धनी होंगे।

आग—आग जलती देखें तो सामने नयी-समस्या है शुभ है। धुआं भी हो तो अशुभ है। यदि घर में आग लगी देखें तो संकेत है कि जो बीत गया है उसको भूल जायें। आतिशबाजी देखें तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उड़ता हाथी शुभ है। सांप अशुभ।

निराशा होगी। दीपक जलता देखें तो आशा पूर्ण होगी।

इम्तहान—में फेल हों तो शुभ !

इन्द्र धनुष—स्वच्छ आकाश में स्पष्ट और चमकीला देखना सर्वोत्तम स्वप्न है। इसका अर्थ है आपके जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन होगा। यदि अविवाहित हैं तो बहुत ही अच्छी जगह विवाह होगा।

उड़ना—उड़ना या दीवालें, पेड़ों के ऊपर से कूद जाना आने वाले सङ्कटों की सूचना है। पर यदि आप आसानी से उड़ या कूद रहे हैं तो उनको पार कर लेंगे।

ऊँट—देखें तो धीरज और शक्ति से काम लेने की आवश्यकता है।

ऐनक—काला चश्मा नैराश्य की निशानी है। टेढ़ा अविवेक की। यदि देखें कि आप किसी दूसरे का चश्मा लगाये हैं तो दूसरों को राय से आप बहुत प्रभावित हैं।

ओखली—में अन्न कुटता देखना शुभ है।

अंग—शरीर के अलग-अलग अङ्गों के देखने का अलग-अलग प्रभाव होता है। यदि देखें कि आपका सिर ठीक जगह पर नहीं है या आप बिना सिर के हैं तो यह इस की सूचना है कि आप कोई काम बिना विचारे कर बैठेंगे। आपका सिर जानवर का-सा हो तो शत्रु पर विजय प्राप्त करेंगे। चिड़िया का-सा हो तो यात्रा करेंगे। घने बाल शक्ति, बिखरे कमजोरी की सूचक हैं। देखें कि दाँत उखड़ गया तो आपके प्रति दूसरों का प्रेम घटेगा। आप स्वयम् अपना दाँत उखाड़ें तो यह शुभ है। देखें कि आपका हाथ छोटा है तो आपको घाटा होगा। मैला हाथ देखें तो धोखा खायेंगे। यदि मजबूत हाथ देखें तो जिस काम में पड़ेंगे वही पूरा होगा।

कमरा—अपरिचित कमरे में अपने को देखें तो इच्छा पूरी होगी।

काढ़ना—स्वयम् को या किसी को वस्त्र पर कुछ काढ़ते देखें तो प्रेम या व्यापार में सफलता मिलेगी।

किताबें—सपने में कोई किताब देखें तो उस का नाम नोट कर लें क्योंकि वही आपके लिये संकेत है।

कौआ—सपने में कौआ बोलता जान पड़े तो आप कोई अच्छा या बुरा समाचार सुनेंगे।

खोदना—सपने में मिट्टी खोदते हुए देखें तो बहुत ही शुभ है। पर मिट्टी गीली हो और मेहनत जान पड़े तो अशुभ है।

खोजना—सपने में देखें कि आपकी कोई चीज खो गयी है और ढूँढ़ने से नहीं मिलती तो इसका अर्थ है कि कोई आपको प्यार करता है पर बदला नहीं पाता। यदि खोई चीज मिल जाय तो आपका प्रेम भी जागेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरीब—स्वयम् को या किसी को भी गरीब देखें तो शुभ है।

गलीचा—शुभ है।

गाय—देखना बहुत ही शुभ है।

गाली—यदि स्वप्न में देखें कि आप किसी को गाली दे रहे हैं तो यह आपकी धन या प्रेम की हानि होने की सूचना है। दूसरा आपको गाली दे तो यह संकेत है कि आपका कोई शत्रु बन गया है।

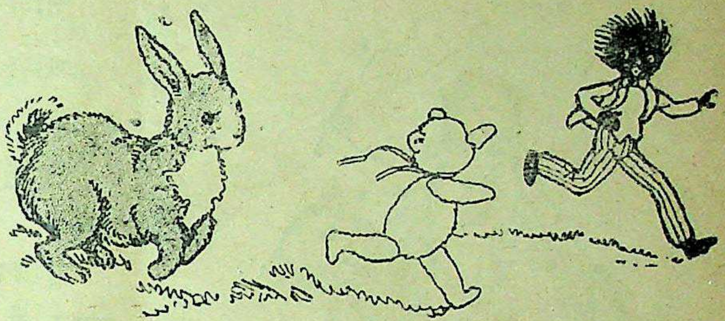

कोई पीछा करता जान पड़े तो वैरी आपसे मेल करना चाहता है।

गेंद—गेंद खेलते देखना धन मिलने का लक्षण है। गेंद आपसे दूर जाता दिखाई पड़े तो धन हानि होगी।

घर—आपके जीवन का प्रतीक है। अच्छा बुरा, कच्चा पक्का, सजा, उजड़ा जैसा घर देखें वैसा ही अपने जीवन के बारे में अच्छी या बुरी सूचना समझें। नये घर की नींव खुदती देखें तो आप वर्तमान काम छोड़ कर दूसरा करेंगे।

चिट्ठी—इसका स्वप्न सदैव प्रेम से सम्बन्धित रहता है। अविवाहितों के लिए यह अच्छा या बुरा जैसा प्रतीत हो वैसा ही फलदायक होता है। चिट्ठी-रसा देखें तो नया समाचार सुनेंगे।

चिड़ियाँ—आत्मा या विचार की स्वरूप हैं। घायल चिड़िया आन्तरिक दुःख की सूचना है। कमरे में बन्द चिड़िया देखें तो अर्थ है कि आपने जो वादा किया है उससे बच नहीं सकते। कौआ मुसीबत की सूचना है। उसे स्वप्न में उड़ावें तो मुसीबत से बचेंगे। मोर देखें तो धन व मान बढ़ेगा।

चींटी—स्वप्न में चींटी देखें तो समझें कि छोटी-छोटी बातों पर दुःखी होते हैं।

चेचक—देखें कि आपको चेचक निकली है तो निश्चय ही आपको धन मिलेगा। दूसरों के निकली देखें तो शुभ समाचार सुनेंगे।

चौराहा—देखने का अर्थ है, आप दुविधा में हैं। सोचकर काम करें।

चूहा—धन आने का द्योतक है।

चूल्हा—चूल्हा जलता हो और आप रोटी बना रहे हों तो सुख-समाचार पावेंगे।

छज्जा—छज्जे से झांकना आपके या किसी निकट सम्बन्धी के विवाहित प्रेम की सूचना है। कुमारी कन्यायें छज्जा देखें तो शुभ है।

जानवर—शेर कटघरे के बाहर देखें तो प्रबल शत्रु की सूचना है। कटघरे के भीतर देखें तो मानों शत्रु से आप बचेंगे। खरहा देखें तो शुभ है। सांड़ देखें तो आपका बल बढ़ेगा। घोड़ा देखें तो बल और बुद्धि दोनों का लाभ उठावेंगे। यदि देखें कि घोड़े पर चढ़े जा रहे हैं तो सफल होंगे। यदि देखें कि घोड़े से गिर गये तो असफल। कुत्ता देखें तो इरादों पर विजय प्राप्त करेंगे। पर कुत्ते से डरें तो इरादों के कच्चे होने की सूचना है।

झण्डा—किसी भी प्रकार का स्वच्छ आकाश में उड़ता देखें तो आप शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। यदि झंडा फटा या कीचड़ में सना देखें तो आपको छोटी-मोटी मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोड़े पर चढ़े जा रहे हैं तो सफल होंगे

टोपी—देखें तो कहीं से धन या न्योता पायेंगे या देखें कि सिर पर टोपी नहीं है तो आपके विवाह का संकेत है। आप विवाहित हैं तो परिवार में विवाह की सूचना है।

ठूँठ—किसी पेड़ का ठूँठ या पेड़ जड़ से उखड़ा देखें तो किसी न किसी की मृत्यु का समाचार सुनेंगे।

डरना या घबराना—शुभ-समाचार पाने की सूचना है। यदि कोई पीछा करता जान पड़े तो यह संकेत है कि बैरी आपसे मेल करना चाहता है। बोझा लिये देखें तो जो कठिन काम कर रहे हैं वह पूर्ण होगा। रोवें तो कोई सुखदायक घटना घटेगी।

ढोल—बजता देखें या सुनें तो जीवन में सफल होंगे।

• **तम्बू**—देखें तो नया काम करेंगे या नया देश देखेंगे।

ताला—का सपना देखें तो समझें कि रास्ते में रुकावटें हैं। टूटा ताला देखना शुभ है।

तार—च न वें तो जिस काम में हाथ लगावेंगे उसी में सफल होंगे।

ताश—इच्छा पूरी होने की सूचना है।

थाल—भोजन से भरी थाल शुभ। खाली अशुभ है।

दफ्तर—में बैठे हैं तो सुख। हटाये जायँ तो दुख।

दीपक—देखना शुभ है। यदि आप किसी सङ्कट में हैं तो आशा करें कि उसका अन्त निकट है।

दौड़ना—अपने को दौड़ते हुए देखें तो जिन के साथ व्यापार करते हैं उनसे सावधान रहें। दौड़ हो रही हो और आप जीत रहे हों तो शुभ। पिछड़ रहे हों या दौड़ा न जाता हो तो अशुभ।

धन—पाना शुभ है। धन का खोना अशुभ। चाँदी के बजाय ताम्र का सिक्का पाना अधिक शुभ होता है।

नाच—शुभ है।

नीलाम—देखें कि बहुतेरी वस्तुएँ नीलाम हो रही हैं तो आपका व्यापार बढ़ेगा। बोली बोलें तो और भी शुभ है। पर कोई वस्तु खरीद कर पछता रहे हों तो व्यापार में घाटा होगा।

नंगे पाँव—अपने को नंगे पाँव चलता देखें तो मुसीबत में पड़ेंगे। दूसरों का नंगे पांव देखें तो यह इस बात का संकेत है कि उन्हें आपकी सहायता चाहिए।

पर्दा—किसी प्रकार का देखें तो अप्रिय लोगों के आने का योग है।

प्राकृतिक दृश्य—सुखद या दुखद जैसा देखें वैसा ही फल मिलता है। दृश्य आकर्षक हो, धूप निकली हो तो धन और सुख मिलेगा बादल छाये हों तो आप चिन्ताग्रस्त हैं

पानी बरसना—शुभ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैर गाड़ी—पैर गाड़ी पर ऊँचाई पर चढ़ें या दूसरों को चढ़ता देखें तो आने वाला समय अच्छा होगा। यदि नीचे आ रहे हों तो बदनामी होने का अन्देशा है।

पजड़ा—पिंजड़े में पक्षी देखें तो सुखी होंगे, शेर आदि देखें तो शत्रु को दबा लेंगे। खुद को पिंजड़े में देखें तो शत्रु का भय है।

फेल होना—स्वप्न में फेल हों चाहे इम्तहान में, चाहे प्रेम या व्यापार में तो यह पास होने की सूचना है।

बाजा—बाजा बजता सुनें या गाना सुनें तो पारिवारिक सुख बढ़ेगा। सरङ्गी बजती सुनें तो आपका किसी से प्रेम होगा। स्वयम् बजावें तो प्रेम टूटेगा।

बीमारी—का स्वप्न देखें तो समझें कि अच्छे दिन आने वाले हैं। कड़वी दवा पियें तो जीवन के मार्ग में रुकावटें आने वाली हैं। डाक्टर से बात करो तो कठिनाई से निकलने का उपाय सोच रहे हैं।

बोझा—भारी बोझा लेकर चलते हुए स्वप्न में देखें तो इसका अर्थ है आप बहुत ही अधिक चिन्ताग्रस्त हैं।

बूढ़े लोग—बूढ़े लोग दिखाई पड़ें तो शुभ है।

भीख—देना या पाना दोनों देखना शुभ है।

भीड़—देखना परिवार या मित्र बढ़ने की सूचना है।

भोजन—स्वप्न में अकेले भोजन करना स्वार्थी होने की निशानी है। दूसरों के साथ खाना मान बढ़ने की सूचना है। भोजन का न मिलना कठिनाई की सूचना है।

मछली—स्वप्न में मछली पकड़ें या किसी को पकड़ते देखें तो शुभ होगा। यह व्यापार में सफलता का संदेश है।

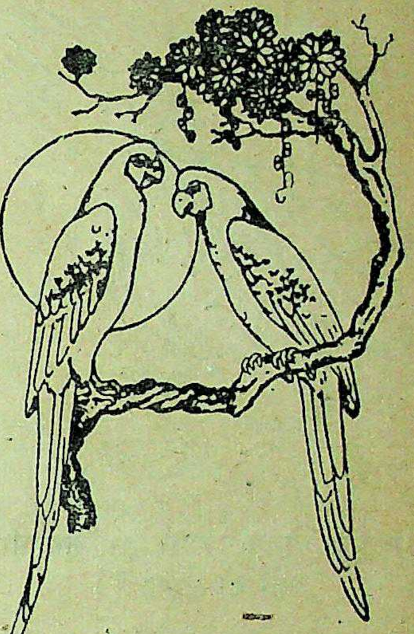

तोता देखें तो समझें कि कोई चुगली कर रहा है।

मार्ग-रुका—यदि आप देखें कि कोई आपका मार्ग रोक रहा है और आगे बढ़ने नहीं देता तो आपके लिये यह चेतावनी है कि अपने मित्रों की बात मानें। यदि चाँदनी रात में कोई मार्ग रोके तो आर्थिक हानि की सम्भावना है।

माला—अपने को माला जपते देखें तो भाग्योदय होगा। माला गुहते देखें तो धन पाएंगे।

मधुमक्खी—देखें तो व्यापार चमकेगा।

मक्खन या घी—खाने का सपना देखें तो स्वस्थ रहेंगे। यदि बीमार हैं तो अच्छे होंगे।

मन्दिर या मूर्ति—देखना आपकी धर्म में आस्था प्रकट करता है।

मृतक-व्यक्ति—मरे हुए लोगों को देखना शुभ है। अचानक सहायता मिलेगी या चिरवाञ्छित इच्छा पूर्ण होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वप्न में भोजन पकाना शुभ समाचार पाने का लक्षण है।

मोटर चलाते हुए—देखें तो चाहे आप मोटर चलाना न भी जानते हों तो आपको बहुत बड़ा अवसर मिलने वाला है और आपकी इच्छा की पूर्ति होगी।

महान् पुरुष—देखने का अर्थ है आपको निकट भविष्य में सफलता मिलने वाली है।

योग्यता—आप देखें कि आप में कोई असाधारण योग्यता आ गई है यानी आप नाच, गा या भाषण दे रहे हैं और सैकड़ों आपकी प्रशंसा कर रहे हैं तो यह इस बात की चेतावनी है कि आपको मित्रों से धोखा होगा।

यात्रा—करें तो जीवन में नया परिवर्तन होगा। देखें कि स्टेशन पर पहुँचे हैं और गाड़ी छूट गई तो यह अवसर खो देने की सूचना है।

रुपया—यदि आप देखें रुपया दूसरों को मिल रहा है और आपको नहीं तो इसका अर्थ है, आप असावधान हैं और हानि उठाएँगे। यदि देखें कि स्वयम् रुपया पा रहे हैं तो यह बहुत अच्छा है। यदि गड़ा रुपया पावें तो स्वास्थ्य बढ़ेगा।

रत्न—परन्तु रत्न स्वयम् पावें तो अशुभ है। कोई दे तो शुभ है।

लोहा—लाल और घन से पीटा जाता देखें तो शुभ है, खास कर स्त्रियों के लिये।

लँगड़ा—आदमी व्यापारिक कठिनाइयों का प्रतीक है। पर यदि लँगड़ा प्रसन्न दीखे तो कठिनाइयाँ काबू में रहेंगी।

वस्त्र—आपके वस्त्र नये हैं तो धन मिलेगा। फटे-पुराने हैं तो गरीबी बढ़ेगी।

विदेशी भाषा—यदि आप स्वप्न में कोई विदेशी भाषा बोलें या सुनें तो आपके लिये यात्रा का योग है। घर से दूर जाने पर आपको सफलता मिलेगी।

विवाह—यदि आप अविवाहित हैं और अपना या किसी का विवाह होते देखें तो यह केवल इच्छा का स्वप्न है। परन्तु यदि स्त्रियां देखें कि विवाह के बाद दूल्हा गायब हो गया या पुरुष देखें कि दुलहिन गायब हो गई तो यह विवाह सम्बन्ध टूटने की सूचना है।

वियोग—यदि आप देखें कि किसी मित्र या स्वजन के वियोग के कारण आप दुखी हो रहे हैं तो इसका अर्थ है कि क्रोध में आकर आपने जो बातें की हैं उनके लिये आपको पछताना पड़ेगा।

शिशु—अज्ञात शिशु देखें तो आपके जीवन में परिवर्तन की सूचना है। या तो पुरानी उलझनों पर विजय प्राप्त करेंगे या नया काम करेंगे। पर रोगी या रोता शिशु देखें तो अशुभ। स्त्री यदि देखें कि उसके बच्चा होने वाला है तो उसकी किसी बड़ी इच्छा की पूर्ति होगी।

शङ्ख की आवाज—सुनें तो शीघ्र ही अच्छा समाचार सुनेंगे।

शहर—नया देखें तो यात्रा का योग है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौंदर्य—किसी भी प्रकार का सौंदर्य देखना शुभ है। अपने को सुन्दर देखें तो सबके प्यारे बनेंगे। सुन्दरी स्त्री देखें तो काम या व्यापार में सफल होंगे।

सड़क—सड़क जीवन मार्ग का प्रतीक है। स्वप्न में सड़क पर चलते हुए अच्छा या बुरा जैसा देखें वैसा ही जीवन के लिये फलदायक समझें। चौड़ी सीधी सड़क सफलता की सूचक है। टेढ़ी-मेढ़ी या दलदली असफलता की।

सन्दूक खोलें—और जो ढूँढ़ रहे हों पा जायं तो बहुत ही शुभ है। आपकी इच्छा पूरी होगी। सन्दूक खाली देखें तो निराशा होगी।

स्वर्ण या मुद्रा—देखना या पाना उत्तम है आपके कार्य पूर्ण होंगे। स्वर्ण देना भी अच्छा है। यह इस बात का संकेत है कि आप अपनी वर्तमान मुसीबतों से बचेंगे। स्वर्ण खो जाना मित्रों से धोखा खाने की निशानी है। स्वर्ण के आभूषणों से अपने को या किसी को सजा देखना बहुत ही शुभ है।

साँप या घड़ियाल—शत्रु का सूचक है।

हल—शुभ है, प्रेम और धन प्राप्त होगा। आपकी तरफ आता जान पड़े तो और अच्छा है।

हवाई जहाज—ज़मीन पर या उड़ता देखें तो शुभ है, सफल होंगे।

हंस—सपने में स्वच्छ पानी में हंस तैरता देखे तो धन मिलने की सूचना है। स्त्रियां देखें तो पति की तरक्की होगी।

हँसना—स्वप्न में हँसना बहुत ही शुभ है। यह प्रत्येक कार्य में सफलता का सूचक है।

हार—अपने को या किसी को हार पहने देखें तो यह शुभ है। यदि यों ही कहीं रखा हुआ हार देखें तो समझें कि कोई आपसे ईर्ष्या कर रहा है।

प्रदर रोग

प्रदर के नाम से ही स्त्रियाँ भय खाती हैं। अड़ोस-पड़ोस वाले भी झूठ-सच कह कर डरा दिया करते हैं।

प्रदर रोग तो सर्दी खांसी से कुछ दूसरा नहीं, सर्दी खांसी में जो तकलीफ होती है क्या प्रदर में भी वही नहीं रहता। दोनों में फर्क ही क्या है? वही रोग पदार्थ नाक मुँह से न निकल कर एक अन्य विशेष अङ्ग को बाहर आने का रास्ता चुनता है। इसलिये दोनों या कहो सभी रोगों का कारण एक ही है और चिकित्सा भी वही एक ही। हाँ स्थानीय तात्कालिक फायदा पहुँचाने के लिये प्रदर में कपड़े की गीली पट्टी दर्द के स्थान पर रखने से लाभ होगा। पर प्रमुख बात भोजन सुधार और नियमित शरीर श्रम ही है।

प्रदर का मुख्य कारण शरीर श्रम की कमी या बिल्कुल न होना ही है। देहात में काम करने वाली स्त्रियों को यह रोग कम होता है। शहरों में रहने वाली स्त्रियों के लिये अब काम ही क्या रह गया है? चावल मिल से पालिस होकर आता है, गेहूँ पीसने की चक्की कोने-कोने में हैं कपड़ा साफ करने को धोबी रहता है, बाकी बचे कामों को नौकर से करवाने का रिवाज हो गया है। नहीं तो इज्जत में बट्टा लगता है।

अगर श्रम चाहे वह उत्पादक हो या अनुत्पादक बढ़ा दिया जाय या करने को शुरू कर दिया जाय, साथ में भोजन से श्लेष्मा कारक पदार्थों को घटा कर या निकाल कर भाजी-सब्जी फल आदि की मात्रा बढ़ा दी जाये, प्रदाह पैदा करने वाली चीजें मिर्च मसाला का बहिष्कार कर दिया जाय, और गरिष्ट खाद्य पदार्थों से बचा जाय तो यह बड़ा कहाने वाला रोग बड़ी आसानी से चला जाता है बिना किसी अड़चन के।

—देवेन्द्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक स्त्री की कहानी जिसने एक चोर को अपने घर में छिपाया।

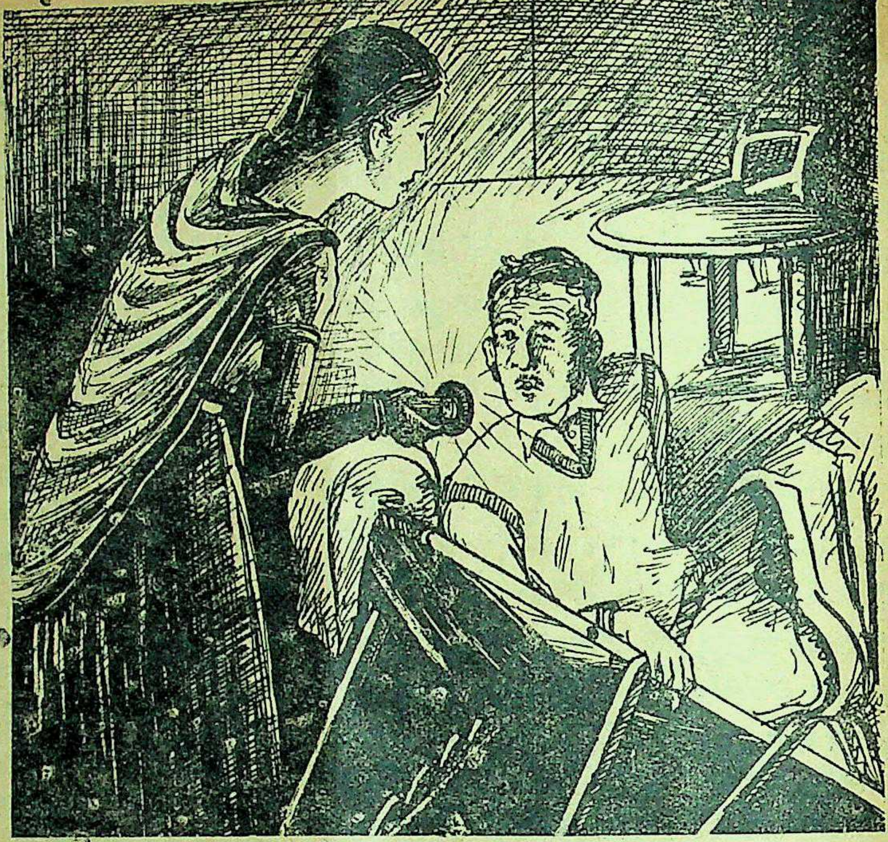

चोर ने कहा—'आज से मैं आपको अपनी धर्म की बहन समझूँगा।'

धर्म की बहिन

मूल लेखक, श्री 'शिवं सुन्दरम्' बी० एस० सी०
अनुवादक, श्री श्याम गणात्रा, बी० एस० सी०, कोविद

[१]

जन्म से कोई भी मनुष्य पापी नहीं होता। परिस्थिति ही मनुष्य को पाप के रास्ते पर चलने के लिये मजबूर बना देती है। दुर्गा बहिन ने इसी सूत्र को अपना जीवन-सिद्धांत माना था। उन्होंने स्वप्न में भी कभी यह ख्याल नहीं किया था कि अपनी इस अधेड़ वय में अपने जीवन-सिद्धान्त की कसौटी होगी।

दुर्गा बहिन यूँ तो बड़ी निडर स्त्री थीं। मैट्रिक का इम्तहान खत्म करके वे कालेज में दाखिल हुईं। ज्ञान के साथ-साथ उनकी वीरता का भी पूर्ण विकास हो रहा था। बड़े-बड़े गुनहगारों पर भी भरोसा रखना, यह बात उनके पति रमणीकलाल को जरा भी पसन्द न थी। कभी-कभी तो तङ्ग आकर उन्हें दो-चार बातें सुनाते हुए कहते—'लफंगे चोर-डाकू पर जो तुम विश्वास करती हो यह बात मुझे जरा भी पसन्द नहीं। यदि यही नीति जारी रही तो कोई न कोई दिन पछताने का समय आवेगा। मनुष्य कितने बेवफा होते हैं, यह बात तुम जैसी स्त्रियाँ भला क्या समझोगी? हम पुरुषों ने तो घाट-घाट के पानी पिये हैं.....!'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूँ समझाने पर भी दुर्गा बहिन अपने जीवन सिद्धान्त पर अटल रहीं। ईश्वर कृपा से '४२०' मनुष्य के सम्पर्क में आने के बावजूद भी उनके जीवन में ऐसी कोई भी घटना न घटी थी जिसके लिये उन्हें पश्चात्ताप के आँसू बहाने का समय आया हो।

[२]

लेकिन एक दिन अनुपेक्षित घटना घट गई। हाल ही में रमणीकलाल की नियुक्ति बैंक में एकाउन्टेन्ट की जगह पर की गई थी। मास के अन्त में हिसाब ठीक-ठाक करने के लिये वे रात को बड़ी देर तक बैंक में ठहरते। ऐसे समय में वे घर से टिफिन मँगवा लेते और साथ-साथ यह भी कहलवा भेजते कि वे आज रात को देर से आवेंगे। एक दिन इसी तरह का सन्देशा मिलते ही दुर्गा बहिन निश्चिन्त होकर अपने दस साल के एकलौते बेटे अनिल को साथ लेकर सो रही थीं। इतने में रात को ११ बजे के करीब किसी ने आकर द्वार खटखटाये। कोई दबे पाँव, भयभीत आवाज में धीरे से बोल रहा था—'जरा द्वार खोलो न! ईश्वर तुम्हारा भला करेगा।'

अपने स्वाभावानुसार शरण में आये हुए की रक्षा करने के हेतु से उन्होंने द्वार खोला। देखा तो एक दुबला-पतला आदमी, जिसके कपड़ों में से बदबू आ रही थी, एक चोर की भाँति सिहर रहा था। दुर्गा बहिन अभी तो कुछ सोच विचार करे इसके पहले ही वह नवजवान बोल उठा—'बड़ी बहिन, मैं सचमुच ही उसके घर में चोरी करने के इरादे से घुसा था लेकिन घर वाले सजग हो जाने के कारण मुझे भागना पड़ा। मुझे देखते ही वे मेरा पीछा करने निकल पड़े। मेरी माँ बीमार है। उसके लिये दवाइयाँ खरीदने के लिये मेरे पास चोरी करने के सिवा और कोई रास्ता न था, इसलिये चोरी करने निकल पड़ा। लेकिन कमनसीबी के कारण मैं चोरी करते पकड़ा गया। बड़ी बहिन मुझे कहीं भी छिपा दो। आइन्दा कभी भी ऐसा बुरा काम न करूँगा और यदि ऐसा बुरा काम करते हुए आप मुझे देख लें तो मुझे कड़ी से कड़ी सजा देना। लेकिन इस समय तो कहीं पर भी छिपा कर मेरी रक्षा करो, बहिन!......

परिस्थिति का सही ख्याल दुर्गा बहिन की समझ में आ गया। उन्होंने चोर को टार्च दिखाते हुए अपने बेटे अनिल के साथ सो जाने के लिये कहा। खुद चारपाई पर सचेत होकर लेटी पड़ी रही।

इतने में मोहल्ले के लोग चोर का पीछा करते हुए उनके घर में घुस आये। घर के अन्दर एक भी कदम आगे बढ़ाये कि उससे पहले ही दुर्गा बहिन चारपाई पर से उठ कर खड़ी हो गयीं और एक अनजान की तरह पूछने लगीं—'क्या हुआ?... क्या हुआ?'

दुर्गा बहिन यह बात अच्छी तरह से जानती थीं कि मोहल्ले वाले छोटी-सी चोरी के लिये भी चोर को मार-मार कर उसका होश-हवाश उड़ा देते थे। इसी कारण उस नव जवान पर तरस खाकर उन्होंने अनजान बनकर इसी तरह से सवाल पूछा।

लोगों ने कहा—'दुर्गा बहन अपने पड़ोसी नारायण भाई के घर में अभी-अभी एक चोर घुस आया था। शोर-गुल होते ही वह वहाँ से फरार होकर इस ओर कहीं भाग आया है। आपके घर में तो कहीं घुस नहीं आया है?......'

दुर्गा बहिन ने दबी आवाज में जवाब दिया—'नहीं-नहीं। भला किसके दिन भर आये हैं जो मेरे घर में पाँव तक रखने की हिम्मत कर सके। मैं तो कब की जाग रही हूँ।' दुर्गा बहिन की बड़ी बहिन का लड़का रमेश, जो उस मानव-समूह में था, उसने घर के अन्दर नजर करते हुए पूछा—'लेकिन मौसी, यह अनिल के साथ कौन सो रहा है? क्या मेरे मौसा बैंक से लौट आये?'

दुर्गा बहिन की छाती की धड़कन की गति तीव्र बन गई फिर भी चेहरे पर किसी प्रकार के घबरा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छूट के भाव प्रदर्शित किये बिना बड़ी हिम्मत के साथ रमेश को जवाब देते हुए कहा—'हाँ रमेश, तुम्हारे मौसा जी तो कब के घर वापस लौट आये हैं और अनिल को अपने साथ लेकर सो रहे हैं।

दुर्गा बहिन की ओर से इस प्रकार का जवाब सुनते ही वे सभी वापस लौट गये और चोर सुरक्षित रहा।

[३]

जब सारा मामला ठंडा पड़ गया तब वह नवजवान चोर चारपाई से खड़ा हो कर दुर्गा बहिन के चरणों में झुक कर कहने लगा—'बड़ी बहिन आपने मुझे नया-जीवन दिया है। आज से मैं आपको अपनी धर्म की बहन समझूँगा और आप जो भी आदेश देंगी उनका मैं पूर्णतया पालन करूंगा।'

चोर के जीवन में यह क्रान्तिकारी परिवर्तन देख कर दुर्गा बहिन को बड़ा हर्ष हुआ। वे बोलीं, 'भाई कुछ मेहनत करके अपना पेट भरना। तुमने आज से मुझे अपनी बहिन बनाया है तो फिर ऐसा कोई काम न करना जिससे तुम्हारी बहिन के नाम पर बट्टा लग जाय।

यदि तुम्हारी इच्छा कुछ छोटा-मोटा पेशा कर के अपनी रोजी कमाने की हो तो मैं तुम्हें जो दो-चार पैसे मुझे मिल जाते हैं वे तुम्हें दे दूँगी। बोल, तुम्हें और क्या चाहिए?

नव जवान चोर को दुर्गा बहिन पर पूर्णतया विश्वास हो गया। उसे तो दुर्गा बहिन के रूप में साक्षात् देवी के दर्शन हुए थे। वह ऐसा महसूस करने लगा, जैसे कि देवी उस पर प्रसन्न हुई थीं। नवजवान चोर ने कहा—'मुझे और कुछ भी नहीं चाहिए, सिर्फ पच्चीस रुपया उधार दे दें। उनमें से पाँच रुपयों की मैं दवाइयाँ खरीदूँगा और बाकी के रुपयों से फेरी करूँगा। भगवान ने चाहा तो बहुत ही जल्द मैं आपके पैसे लौटा दूंगा। बहिन का पैसा हड़प करके मैं नरक में जाना नहीं चाहता। दुर्गा बहिन तो हमेशा योग्य आदमी को दान करती थीं। आज यह नव जवान चोर भी उसे योग्य आदमी लगा, इसीलिये उन्होंने पच्चीस रुपये आँचल से निकाल कर उसे दे दिये। वह चोर तो रुपया लेकर अपने रास्ते चल पड़ा।

दुर्गा बहिन कभी भी किसी बात को अपने पतिदेव से नहीं छिपाती। अपने जीवन में घटी हुई आज की घटना का वर्णन अपने पतिदेव रमणीकलाल के पास किया। अपने स्वाभावानुसार रमणीकलाल मौन खड़े रहे। सिर्फ इतना ही कहा—'तुम जो भी मुनासिब समझो वही सही।'

[४]

इस घटना के छः-सात साल बाद रमणीकलाल सह कुटुम्ब यात्रा करने निकल पड़े। जब सभी यात्रा-स्थलों की मुलाकात लेकर घर वापस लौट रहे थे तब किसी जेब कतरू ने उनके जेब से पर्स चुरा लिया। परिणाम स्वरूप रमणीकलाल के सिर पर आफत का बड़ा भारी पहाड़ टूट पड़ा। लेकिन जिस तरह अमावस्या की घोर रात्रि के बाद उषा का नया प्रकाश फैलता है ठीक इसी तरह जिस धर्मशाला में वे ठहरे थे वहाँ से गुजरता हुआ वह नव जवान चोर खिलौने की गाड़ी हँकारते हुए आ पहुँचा। अब तो उसके जीवन में महा परिवर्तन आ चुका था। ईश्वर कृपा से वह अपना पेट अच्छी तरह से पाल सकता था। सर्व प्रथम दुर्गा बहिन तो उसे पहचान न सकी, लेकिन उस नवजवान चोर ने उन्हें फौरन पहचान लिया। अत्यन्त मधुर स्वर में वह बोल उठा—

'बड़ी बहिन, आप यहाँ कैसे? यात्रा को निकले हैं क्या? मैं तो उसी दिन से यहाँ आकर ठहरा हूँ। आपकी दया से अब मैं ईमानदारी से दो-चार पैसे बड़ी आसानी से कमा लेता हूँ। आप इसी धमशाला में ठहरे हुए हैं न? तो फिर थोड़ी देर और ठहर जाइये। मेरी गाड़ी का ध्यान रखिये, मैं अभी वापस आया।'

यूँ कहते हुए वह नव जवान चोर अपनी गाड़ी उनके भरोसे पर छोड़ कर गाँव की बाजार की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लघु-कथा

तीन खोपड़ियाँ

राजा विक्रमादित्य के दरबार में एक राक्षस आया। उसके पास तीन खोपड़ियाँ थीं। उसने कहा—'हे राजन, अपने दरबार के पण्डितों को कहिये कि इन तीनों में से किसी एक सुन्दर और अच्छी खोपड़ी को छांट लें। यदि उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर यह काय न कर पाया तो मैं उनके प्राण हर लूँगा।'

विक्रमादित्य ने इस चुनौती को स्वीकार किया, अपने दरबार के सभी पण्डितों को बुलाया, राक्षस की चुनौती दुहराई गयी। पण्डितों ने यह सब सुना तो डर के मारे बेहोश-से हो गये। भाग्यवशात् उन में एक चतुर पण्डित था। उसका नाम राजाराम था। राजाराम पण्डित ने सभी को धीरज दिया और यह आश्वासन देते हुए कहा कि वह अवश्य उत्तम खोपड़ी को छांट सकेगा।

सातवें दिन राक्षस पुनः दरबार में प्रकट हुआ; राजाराम पण्डित ने मञ्च पर से कहा—'जिस खोपड़ी में एक कान से दूसरे कान तक लोहे की शलाका निकल सकती है, वह निकृष्ट है। उसका मूल्य एक कौड़ी भी नहीं। जिस खोपड़ी में शलाका एक कान से प्रविष्ट होकर दूसरे कान से नहीं निकलती, पर मुँह के रास्ते से निकल जाती है, वह मध्यम कोटि का है, और जिस खोपड़ी में लोहे की शलाका एक कान से अन्दर जाकर हृदय तक पहुँच जाती है, वही खोपड़ी इन तीनों में सर्वोत्तम है।

परीक्षण और प्रयोग कर उसने उत्तम खोपड़ी राक्षस के हवाले कर दी। राक्षस ने पण्डित की चतुराई को सराहा और अन्तर्ध्यान हो गया। राजा ने पण्डित को धनादि से सम्मानित किया।

इसी प्रकार जो लोग एक कान से धर्म की बातें सुनते तथा दूसरे से निकाल देते हैं, वे निकृष्ट कोटि के हैं। जो लोग धर्म की बातें एक कान से सुनकर मुँह से बक देते हैं, वे मध्यम कोटि के हैं। किन्तु जो व्यक्ति एक कान से धर्म की बातें सुन उसे अपने हृदय में अंकित कर लेता है, उन्हें समझ जाता है, वह उत्तम कोटि का है, क्योंकि ऐसा व्यक्ति ही उन पर व्यवहार-परायण भी होगा।

अभिप्राय यह कि केवल पढ़ना और बोलना जीवन की सफलता के लिए उपयोगी नहीं सिद्ध होंगे और न आत्म-दर्शन की सम्भावना ही होगी। आवश्यकता है कि तुम प्रत्येक बात को सुन कर अमल भी करो। यही मार्ग है जीवन की सफलता और आत्म-दर्शन के रहस्य को समझने का भी।

(स्वामी शिवानन्द लिखित जीवन में सफलता के रहस्य से) ——

चल पड़ा। क्षण भर में ही वह किसी की दुकान से कुछ खरीद कर ले आया।

दुर्गा बहिन के नजदीक आकर उनके हाथ में सौ रुपयों की एक नोट रखते हुए कहा—'बड़ी बहिन, यह लीजिये आपके दिये हुए रुपये। इनमें से मुझे एक भी पाई नहीं चाहिए। भाई का दिया हुआ अस्वीकार न करना।'

अकाल के समय में यकायक जोरदार बारिश होने पर जिस तरह से किसान लोगों को आनन्द होता है ठीक उसी तरह सौ रुपयों की नोट देखकर दुर्गा बहिन को भी इतना ही आनन्द हुआ। बिना पैसे घर कैसे पहुँचना यही सवाल उन्हें बुरी तरह से परेशान कर रहा था। उन्होंने अपने धर्म के भाई के आगे अपने पैसे की चोरी हो जाने की घटना का सविस्तार वर्णन करते हुए कहा—'भाई इस समय तो तुम्हारे दिये हुए रुपयों को स्वीकार करना ही होगा, लेकिन तुम मुझे अपना पता-ठिकाना बता दो ताकि मैं घर पहुँचते ही तुम्हारे पैसे लौटा सकूँ।'

बड़ी देर तक समझाने के बावजूद भी उस नवजवान चोर ने अपना पता न बताया। सारी घटना का हाल जान कर रमणीकलाल ने आनन्द एवम् शोक मिश्रित भावना का अनुभव किया।

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जासूसी कहानी

बहुरूपिया

लेखक,
श्री निशीथकुमार राय बी० ए० एल-एल० बी०

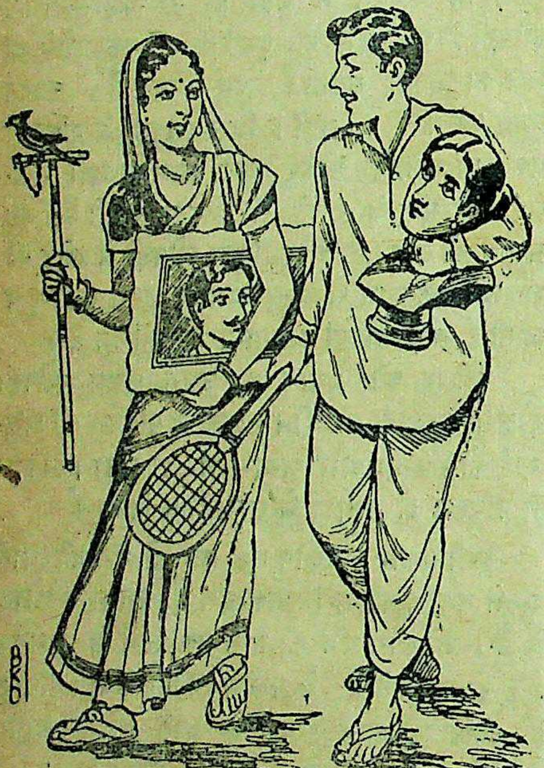

कुन्तला ने कहा—'मैंने अभी-अभी तुम्हारे जैसा एक आदमी पिछले स्टाल पर देखा था।'

अपने पति को शायद ही कोई स्त्री न पहचाने। पर उस बहुरूपिया ने कुन्तला को बहुत त्रस्त किया। और अन्त में प्रसिद्ध जासूस उदय ने उसकी रक्षा की। कैसे? यह कहानी पढ़िये!

कुन्तला अपटूडेट महिला थी और क्यों न होती? उसका शौहर मुकेश जैसा अपटूडेट आदमी शायद शहर भर में न मिलता। कुन्तला, मुकेश के हर कपड़े को बहुत अच्छी तरह पहिचानती थी और मुकेश को कुन्तला के एक-एक कपड़े का वर्णन कण्ठस्थ था। इसका प्रधान कारण यह था कि कुन्तला मुकेश के कपड़ों को खरीदती और सिलवाती थी। मुकेश कुन्तला का। दोनों एक दूसरे को सजाकर आनन्द प्राप्त करते थे। मुकेश के पिता जो कुछ छोड़ गये थे उससे उसका खर्च आसानी से चल रहा था। मुकेश फिर भी इन्श्योरेंस की एजेन्सी लिये हुए था। इन्श्योरेंस से जो कुछ उसे मिल जाता था उससे कुन्तला के नये कपड़े खूब बना करते थे।

कुन्तला अपनी सहेली कामिनी के साथ 'नुमायश' देखने गई थी। मुकेश कहीं गया हुआ था। तै था कि वह देर होने से, सीधे नुमायश पर पहुँचेगा कुन्तला उसके लिये इन्तजार न करे। कुन्तला सोच रही थी कि मुकेश से वह अब हरगिज नहीं बोलेगी क्योंकि वह अपने काम के आगे उसकी जरा भी परवाह नहीं करता!

इतने में एक 'स्टाल' के आगे भीड़ में मुकेश दिखाई पड़ा। कुन्तला जरा रूठी हुई आवाज में बोली—'तो अब आप अकेले स्टाल पर खरीददारी कर रहे हैं?' मुकेश के मुंह पर कुन्तला को पहिचानने का कोई भाव प्रगट नहीं हुआ बल्कि विस्मय का भाव दिखाई दिया। वह बोला—'श्रीमती जी, आपको शायद भ्रम हो गया है! मैं आपको नहीं जानता। शायद मुझे आपने अपना परिचित समझ लिया है।'

उसकी बातें खतम होने से पहिले ही कुन्तला ने उस व्यक्ति के कोट को देख लिया था। यद्यपि वह कोट बिलकुल मुकेश जैसा था—फिर भी कुन्तला जानती थी कि उस कपड़े को उसने कभी नहीं खरीदा था।...इस कपड़े और कुन्तला के खरीदे हुए कपड़े में इतना कम फर्क था कि और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी के लिये उन दोनों में पार्थक्य समझना आसान न होता—मगर कुन्तला को तो मुकेश के एक-एक कपड़े की पहिचान मालूम थी।

जल्द वहाँ से हट कर कुन्तला अपनी सहेली के पास आयी और आश्चर्यान्वित स्वर में बोली—'आज मैं उन्हें नहीं पहिचान सकी, कामिनी—ताज्जुब की बात है! शक्ल, आवाज वगैरह में तनिक भी फर्क नहीं—हाँ कोट दूसरा था। मगर शक्ल इतनी मिल सकती है कि मैं अपने पति को न पहिचान सकूँ?'

कामिनी हँस कर बोली—'अपने पति को कोई स्त्री नहीं पहिचानेगी—यह असम्भव है मगर उन्होंने तुमसे मजाक किया होगा।'

'मजाक? कभी नहीं। दस आदमियों के सामने वे मुझसे ऐसा भद्दा मजाक करेंगे यह असम्भव है? और फिर वह कोट? मैंने उनके लिये उस कोट को कभी नहीं बनवाया था।'

'मगर यह कैसे हो सकता है कि तुम मुकेश जी को गलत पहिचानती?······भला अपने शौहर को कोई स्त्री पहिचानने में भूल कर सकती है?' कामिनी बोली।

'नहीं कामिनी, चाहे कितनी भी मिलती-जुलती शक्ल हो, अब याद आता है मुझे कि उसका स्वर भी दूसरा था।'···बातें करती हुई दोनों कुछ दूर निकल आयी थीं कि एकाएक मुकेश आया। हसकर कुन्तला से बोला—'जरा देर हो गयी। क्या करूँ, काम में फँस गया था?···तुम गुस्सा गयीं क्या? मुँह क्यों लटकाये हो?' और तभी कामिनी की ओर मुड़कर ब ा—'देखिये तो! इतनी छोटी-छोटी-सी बातों में अगर यह मुँह लटकाने लगीं—तो भला कैसे काम चलेगा?'

'मैंने अभी तुम जैसा एक आदमी को पिछले 'स्टाल' पर देख कर तुम्हारी गलतफहमी में उससे बातें करने लगी थी, मगर उसके कहने से पता चला कि वह कोई और था।' सूखे स्वर में कुन्तला बोली। विस्मय का धक्का तब तक उसे विमूढ़ किये था।

'क्या पागल जैसी बातें करती हो कुन्तल! इस के माने यह है कि तुम मुझे प्यार नहीं करती हो? वर्ना किसी गैर शख्स को मेरी जगह कैसे समझ लिया तुमने? मुझे कोई तुम्हारी जगह धोखा देना चाहे तो चाहे कितनी भी मिलती-जुलती शक्ल हो, लेकिन धोखा नहीं दे सकता।'

'मैं क्या कहूँ समझ में नहीं आता। मगर वह आदमी बिलकुल तुम्हारी शक्ल का-सा था।'

[२]

मुकेश ने तो उस घटना को हँस कर उड़ा दिया मगर कुन्तला के दिल से वह बात नहीं गयी और वह तो कभी-कभी यह भी सोचने बैठती थी कि कौन जाने किसी बदमाश के दिल में क्या है। जब कभी काम पर से मुकेश लौटता था तो शुरू में वह उसे संशय की निगाह से देखा करती। मुकेश भी इस नयी परिस्थिति से परेशान था। मगर क्या करता? उसे कोई राह नहीं सूझती थी।

उस दिन जब मुकेश को 'तार' मिला कि उस का चाचा परतावगढ़ जिले में बीमार है तो कुन्तला चिन्तित हुई। मुकेश की अनुपस्थिति में जाने क्या हो। मगर चाचा जी ने अगर इतने दिनों बाद याद किया है और सो भी मृत्यु शय्या पर! न जाना बड़ी भारी बेवकूफी होगी।

इसका भी इतिहास था। मुकेश के चाचा राय बहादुर रमेशचन्द्र बड़े रईस थे और लावल्द थे। वे बड़े भारी दानी थे...इसी दान ध्यान के मामले में बाधा देने की कोशिश करने के अपराध पर मुकेश से उन्होंने कुल नाता तोड़ लिया था।···इस प्रकार चाचा के ऐश्वर्य से बञ्चित होने का अफसोस मुकेश और कुन्तला दोनों को था।

मुकेश की गाड़ी छूट गई. इसलिये वह मजबूरन घर लौटा। दूसरी गाड़ी जाने वाली थी रात के वक्त! इसलिये उनका स्टेशन पर पड़े रहना बेवकूफी थी।·····

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने बाग के गेट को पार करते ही देखा, कुन्तला बाग में टहल रही है। उसे आते देख कर कुन्तला का चेहरा फक पड़ गया। उसकी निगाहों में आतङ्क की छाया स्पष्ट नजर आ रही थी। कुन्तला हकला कर बोली—'आप कौन हैं ?'

'कुन्तला, क्या हो गया है, तुम्हें ? मैं मुकेश हूँ...गाड़ी छूट गई, शाम वाली गाड़ी से जाऊँगा।' मुकेश ने हँसने की कोशिश की मगर मुँह विकृत हुआ। हँसी नहीं आयी।

'नहीं-नहीं ! मैं घबरा गई थी। अच्छा आओ घर में चलें।' कुन्तला लज्जित होकर बोली। फिर भी उसके मन में दुविधा और संशय था। वह कभी तो अपने आपको इस प्रकार हीन मनोभाव के लिये कोसती और कभी उसका नारीत्व संशय की तीव्र वेदना से कराह उठता।...

इसी प्रकार मानसिक द्वन्द में उसने नहीं सुना उसे मुकेश क्या कह रहा था। इसीलिये जब दोनों मकान के बरामदे में जा बैठे तो मुकेश की बातें उसे असंलग्न लगीं...उसने एक बार कनखियों से मुकेश की ओर ताक कर देखा। उसे जाने क्यों इस व्यक्ति की शक्ल पर मुकेश का वह स्नेह-भाव दिखाई नहीं दिया और उसकी नशों में बर्फ की धार बहते उसने अनुभव किया। वह सिहर उठी। उसके सिहरन रूप को मुकेश ने लक्ष्य किया। अब की उसे मौका न देकर एकाएक कुन्तला पूछ बैठी—'अच्छा अगर तुम मुकेश हो तो बताओ सोहाग रात के दिन सबसे अधिक याद रखने वाली घटना क्या थी ?'

मुकेश बड़ी मुसीबत में पड़ा। अर्सा हुए शादी किये ! आज कैसे वह सब बात याद रखता ? उसने जरा रूखी आवाज में कहा—'आजकल तुम्हें हो क्या गया है कुन्तल ? मुझे पगपग पर सुबूत देना पड़ेगा कि मैं तुम्हारा पति हूँ ? इस प्रकार बर्ताव का पागलपना जरा सोच कर तो देखो।'

अब कुन्तला का सन्देह और भी दृढ़ हो गया। सोहाग रात को उसे बर्रे ने काट लिया था। यह बात असल मुकेश कभी भूल नहीं सकता था।...यह व्यक्ति जरूर वही आदमी है; मुकेश की गैर हाजरी का फायदा उठा कर उसे धोखा देने आया है। उसने सोचा पुलिस को इत्तिला कर दे !...फिर सोचा, कहीं असली मुकेश हो तो ?...इसलिये उसने परताबगढ़ के पते से 'अर्जेन्ट तार' कर दिया।

मुकेश या उसका बहुरूपिया चला गया था। रात के वक्त 'तार' का जवाब आया मुकेश परताब गढ़ में ही है ! ×× अब कुन्तला ने पुलिस को कुल हाल कह सुनाया।...पुलिस ने रिपोर्ट लिख लिया और पर्चा दरयाफ्त हाल रखा।

[३]

उदय से कुन्तला का परिचय थोड़ा-बहुत था। उसे जब कुल हाल कुन्तला ने सुनाया तो वह जरा हसा और फिर गम्भीर होकर बोला—'आज शाम को मैं आपको जवाब दूँगा।'

शाम को जब कुन्तला उदय के पास गई तो उदय चन्द 'वायरलस' सम्वाद को अपने सामने रखे बैठा था।.. उसने कुन्तला को एक पत्र दिया और कहा—'इसको मुकेश के लौट आने के बाद पढ़ कर सुना देना। सब भेद हल हो जायगा।'

मुकेश लौटा तो उसका चेहरा उतरा हुआ था। वह अपराधी-सा लग रहा था।

कुन्तला ने उदय की चिट्ठी निकाल कर पढ़ना शुरू किया। उसमें लिखा था—'कुन्तला तुम्हारा पति मुकेश लालच में पड़ कर जिस अपराध को करने जा रहा है उसका फल बड़ा भयानक होगा। अबकी मेरी वजह से उसकी इच्छा पूरी नहीं हुई और उसके इस भयङ्कर अपराध करने से बच जाने का श्रेय तुम्हें है। अगर मेरे पास तुम जरा देर से आई होतीं तो मुकेश आज के दिन राय बहादुर रमेशचन्द्र की हत्या के अपराध में गिरफ्तार दिखाई देता। तुम्हें धोखे में रख कर अपने जैसा एक दूसरे काल्पनिक आदमी का अस्तित्व प्रमाण करने के बाद, स्वयम् ही राय बहादुर के नाम से अपने लिये तार द्वारा बुलौवा भेज कर मुकेश पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताबगढ़ जाकर अपने लावल्द चाचा को मार डालने का प्लैन कर रहा था। राय बहादुर के अलावा कोई उनके यहाँ कोई ऐसा आदमी रह नहीं जाता जो बाद में बताता कि उन्होंने मुकेश को बुलाया था या नहीं। मगर ट्रेन फेल करने के बाद जब वह प्लैन जरा गड़बड़ा गया तो मुकेश ने उस घटना का भी उपभोग करना चाहा तुम्हारे सन्देह को और दृढ़ बना कर ताकि जितनी तुम्हारी यह गलतफहमी मजबूत होती जाती उतनी ही उसकी सफाई मजबूत होती।...परताबगढ़ से तुम्हें जो तार मिला है उसके 'फार्म' पर मुकेश के दस्तखत फर्जी हैं... इस काम में उसे दो बहुत पुराने बदमाशों की सहायता मिल रही थी।......

मेरी राय में तुम मुकेश को किसी सङ्गठन मूलक काम में लगा दो ताकि उसके अलस मस्तिष्क में ऐसी खुराफात की बातें न आ सकें। यह सारा 'प्लैन' इसलिये मुकेश के दिमाग में आया, कि राय बहादुर ने हाल में ही अनाथालय बनवाने के लिये एक लाख रुपये देने का वादा किया है। इस वादे को पूरा करने से पहिले मुकेश उन्हें मार डालना चाहता था।......

मुकेश को कह देना उसके इस नीच प्लैन के बारे में प्रमाणादि मेरे पास है और राय बहादुर यदि मार डाले गये तो मैं मुकेश को फाँसी पर टँगवाने में नहीं चूकूँगा। अबकी बार तुम्हारी ओर ताक कर मैं उसे छोड़े दे रहा हूँ।...आशा है तुम मुकेश को सही राह पर ला सकोगी।...पति को सही राह पर लाने में पत्नी की बड़ी भारी जिम्मेदारी रहती है...आशा है तुम हमारे देश की आदर्श ललनाओं जैसी मुकेश को सुधारने में सफल रहोगी यही मेरा आशीर्वाद !

शुभ चिन्तक
उदय

मुकेश ने आँखें नहीं उठायीं। मृदु स्वर में कहा, 'मुझे माफ करो कुन्तल ! मगर अब मेरे विरुद्ध कभी ऐसी बात नहीं सुनोगी। उदय जी जादूगर हैं। सारी बातें सही लिखी हैं।

दहेज प्रथा का निषेध

यदि उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के पिछले अधिवेशन में प्रस्तुत किया गया एक विधेयक पारित हो जाता है तो राज्य में वर और कन्या की आयु में २१ बर्ष से अधिक का अन्तर होने की दशा में उनके विवाह का निषेध हो जायगा।

विधान परिषद् के उक्त अधिवेशन में ही श्री प्रताप चन्द्र आजाद ने उत्तर प्रदेशीय दहेज निषेध तथा विवाह सुधार व्यवस्था विधेयक प्रस्तुत किया था, जिसके अनुसार बधू के माता पिता पर दहेज का अनुचित दबाव डालने और विवाह के अवसर पर लम्बी पार्टियाँ देन का निषेध हो जायगा।

असमान विवाह विधेयक में व्यवस्था की गई है कि जहाँ कोई असमान विवाह होने वाला हो वहाँ कम से कम उस जगह के बारह व्यक्तियों द्वारा किसी मजिस्ट्रेट के पास जिसका पद प्रथम श्रेणी से कम न हो, आवेदन करने पर मजिस्ट्रेट विवाह करने वाले पक्षों का विवाह रोकने की नोटिस दे सकता है। इस निषेधाज्ञा का अतिक्रमण करने वाले व्यक्ति को १००० रु० तक का जुर्माने का दण्ड दिया जा सकता है। ऐसे विवाह को सम्पन्न कराने वाले पुरोहित को भी १०० रु० का जुर्माना तक का दण्ड दिया जा सकता है।

दहेज निषेध तथा विवाह सुधार विधेयक के अधिनियम का रूप ले लेने पर कोई भी व्यक्ति अपनी या अपने आश्रित किसी लड़के का विवाह के अवसर पर दहेज के रूप में न तो कोई नगदी या सम्पत्ति की माँग कर सकेगा और न ही उसे स्वीकार कर सकेगा। इस विधेयक के अनुसार बरात में अधिक से अधिक ५० व्यक्ति ले जाये जा सकेंगे। और उनका बधू के घर पर एक बार से अधिक भोजन न दिया जा सकेगा। इन व्यवस्थाओं का उल्लंघन करने वाले व्यक्तियों को जो दण्ड दिया जायगा उसको राज्य सरकार निश्चित करेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

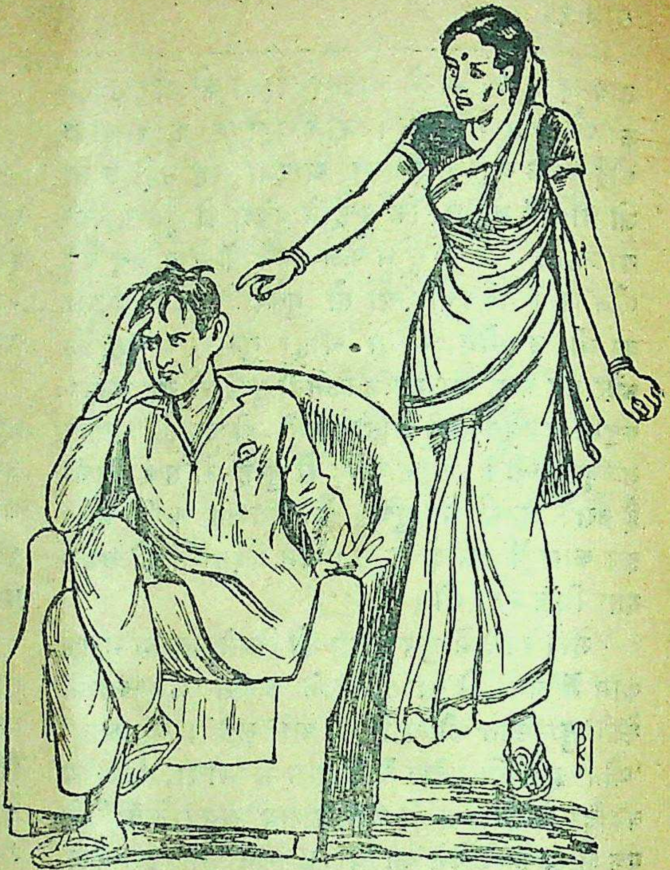

पति का स्वभाव कैसे बदलें ?

यदि आपके पति का स्वभाव चिड़-चिड़ा है तो लड़-झगड़ कर आप उसे बदल नहीं सकतीं। इसके लिए अन्य उपाय करने होंगे। यह लेख पढ़िये।

लेखिका, श्रीमती इन्दुमती परिहार

गृहस्थी की उलझनों में एक सबसे विचित्र और कभी-कभी जिस पर घर का सुख ही निर्भर रहता है, ऐसी उलझन है…पति का स्वभाव। पति-स्वभाव जानना, समझना और उसके अनोखेपन और वैचित्र्य का निर्वाह करते हुए घर का सुख बनाये रखना, स्त्री का एक बहुत बड़ा कर्तव्य है। आये दिन हमने अनेक घर बिगड़ते देखे हैं। केवल इसी बात पर कि पति और पत्नी में पटती नहीं। अमेरिका और योरप में तो पति का स्वभाव ही गृहस्थ जीवन का सुख बनाने बिगाड़ने में बड़ा हिस्सा लेने लगा है। हम अखबारों में पढ़ते हैं, यहाँ तक रोज की घटना हो चली है कि पति जोर से बोलता है या रात में देर से लौटता है। या नाच घरों में स्त्री का साथ नहीं दे सकता… कि बस इतनी सी बात पर और इसी तरह की बीसियों छोटी-मोटी बातों पर तलाक हो जाते हैं। किसी को पति का ठहाके लगा कर हँसना पसन्द नहीं, तो किसी को पति का मोटे अल्हड़ स्वर में बाथ रूम में गाना पसन्द नहीं। और भी ऐसे ही सैकड़ों उदाहरण हैं कि गृहस्थ जीवन का सुख, पति के स्वभाव रूपी चट्टान पर टकरा कर चूर-चूर हुआ जाता है। पश्चिम के प्रगतिशील कहलाने वाले देशों में, सब में, आज यह एक सबसे बड़ी समस्या बनती जा रही है। उस हवा से हम भी बिलकुल बच नहीं सके हैं। और यद्यपि हमारी संस्कृति में इस समस्या का एक सुन्दर सुलझाव पहले से ही है, फिर भी विशेषकर हमारी पढ़ी-लिखी बहिनों के सामने थोड़े बहुत पैमाने में यह उलझन आ खड़ी होती है।

समस्या को सरल शब्दों में कहें तो बात यों है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि दो अनजान व्यक्तित्व का गृहस्थी के प्रांगण में सम्मिलित होता है। दोनों के व्यक्तित्व का अपना-अपना गठन होता है, पूर्व जीवन होता है, इच्छा अनिच्छा होती है, आशा आकांक्षा होती है।... पसन्दगी गैर पसन्दगी होती है और अच्छाई-बुराई होती है। इस अनमेल का मेल कर उन्हें एक ऐसा मार्ग निकालना होता है कि जिससे घर का सुख बना रहे और गृहस्थी सार्थक हो। जहाँ ऐसा मार्ग नहीं निकल पाता, वहाँ घर कलह का अखाड़ा हो जाता है और बच्चों का भविष्य अन्धकारमय हो जाता है। अर्थात् यह बताने की आवश्यकता नहीं कि यह समस्या कितनी मूलभूत है और समाज के सुख और भविष्य का उससे कितना गहरा सम्बन्ध है।

स्वभाव-दोष बहुत स्वाभाविक ही है। अनेक अच्छाइयों से भरे पुरुष में भी कुछ न कुछ दोष होते हैं...जैसे सब गुण सम्पन्न नारी में भी दोष होते हैं। गृहस्थ जीवन में हमें इस वास्तविकता का ध्यान रख कर ही चलना चाहिए और जहाँ यह हुआ कि हमारी समस्या सुलझ गई। स्वभाव की समस्या जितनी ही दुरूह और विचित्र मालूम होती है, सच में उतनी ही सरल भी है। स्वभाव कोई एकाएक उत्पन्न होने वाली स्थिति नहीं है। उसका तो एक इतिहास होता है। आप तो मानेंगीं कि मनुष्य के स्वभाव के निर्माण में जीवन की परिस्थितियों का बड़ा हाथ रहता है और प्रत्येक बार यदि हम उसके स्वभाव के सम्बन्ध में धारणा बनाने के पहले उसकी परिस्थितियों पर विचार करने लग जायें तो हमें मालूम होता है। पर यह सब समझने के लिये चाहिये सूझ-बूझ। एक अन्तरदृष्टि और सहानुभूति से ही इसका अत्यउत्तम हल है। एक गहरी आन्तरिक सहानुभूति से ही गृहस्थी के नित छोटे बड़े तूफानों पर काबू पाया जा सकता है। कभी ऐसा दिन भी आता है कि बात-बात पर पति महाशय बिगड़ने लग जाते हैं, घर की अच्छी से अच्छी चीज उन्हें बुरी लगने लगती है। जरा नमक कम पड़ जाय तो दाल एक दम फीकी बन जाती है। और जरा ज्यादा तो एक दम खारी। न खाने लायक।...नाश्ते का कहीं रङ्ग भद्दा मालूम होने लगता है तो कहीं सब्जी बे स्वाद। घर में चारों तरफ सफाई की कमी दीख पड़ती है। कोई व्यवस्था ठीक नहीं जान पड़ती। बच्चों की किलकारी, रेडियो संगीत सब शोर-गुल जान पड़ता है। ऐसी स्थिति में समझदार स्त्री अपना धीरज न खोयेगी। सच में तो यहीं उसकी सहानुभूति की सबसे अधिक आवश्यकता है। पति के अनोखे व्यवहार की तह तक जाने का भी प्रयत्न करेगी। हो सकता है कि उसके पति का स्वास्थ्य भीतर से ठीक नहीं, या काम में कोई बड़ी उलझन या परेशानी आ खड़ी हुई हो। इसी तरह की कोई परिस्थिति हो, जिससे उनका मन बेचैन हो रहा हो। कारण तक पहुँच कर समझदार स्त्री को हो सके तो कोई हल निकालने का प्रयत्न करेगी। न हल निकाल सके तो कम से कम पति को ढाढ़स और सांत्वना तो दे ही सकती है। पुरुष के हजार जख्मों के लिये नारी का ढाढ़स मरहम का काम देता है। और इसकी जगह ना समझी हुई तो जीवन ही दूभर हो जाता है।

हमें देखने में आता है, शाम को थका मादा आफिस की परेशानियों के बाद घर का आश्रय और शान्ति ढूँढ़ने पति वापस आता है। पर क्या पाता है कि देवी जी किसी जेवर या कपड़े का पुराना दुखड़ा लिये बैठी हैं। जहाँ आवश्यकता होती है कि पति के दिन भर की थकान को स्त्री का अपनत्व और उसकी व्यापक सहानुभूति हर ले, यहाँ उसे मिलते हैं...ताने और उलाहने। तब क्या यह स्वाभाविक नहीं कि शांत से शांत पति भी खीझ उठे? दिन प्रति दिन यदि ऐसी ही दशा रही, तो कोई आश्चर्य नहीं, कि पति का स्वभाव सदा के लिये चिड़चिड़ा बन जाय, या घर के अशान्त रुखे वातावरण से भाग खड़े होने के लिये वह कोई और मार्ग का सहारा ढूँढ़ने लग जाये। अनेक पतियों के शराब, जुये और इसी तरह की लतों के पीछे ऐसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही टूटे घर का कोई न कोई भेद रहता है...और सच कहा जाये, तो ऐसे लोगों के पतन में बहुत हद तक उनकी नासमझ और मूढ़ स्त्री का ही हाथ रहता है।

समझदार और सहृदय स्त्री के लिये तो पति का स्वाभाव परिवर्तन एक मोहक साधना है। दुनिया की दृष्टि में बिगड़े और आवारे पति को दिन प्रति दिन कदम-कदम खींचे, ठीक राह पर लगाना। इससे बड़ा सुख उसके लिये और क्या हो सकता है......इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं कि बड़ी से बड़ी कठिनाइयों के रहते हुये भी अपनी लगन, सहानुभूति और परिश्रम से स्त्रियाँ अपने खोये हुये पतियों को ठीक मार्ग पर ले आई हैं। प्रत्येक मनुष्य, चाहे वह कितना भी गिरा हुआ क्यों न हो, एक बार उठ सकता है। अँग्रेजी में एक कहावत है कि, हर साधू के पीछे जैसे उसके कर्त्तव्य का इतिहास होता है, उसी तरह हर पापी के लिये भी आशामय भविष्य होता है। और यह नारी की शक्ति है कि अपनी अन्तर दृष्टि और सहानुभूति से गिरे से गिरे मनुष्य का मनुष्यत्व जगा दे और उसका जीवन योग्य और सफल बना दे। स्त्री को प्रकृति ने मां का रूप दिया है, वह अपने हाड़ मांस से बालक का निर्माण करती है और अपनी ममता से उसका पोषण। यही स्त्री की विशेषता है और शायद प्रकृति के स्त्री तत्व की रचना के पीछे यही रहस्य है। माँ का विशाल हृदय और सहानुभूति का अक्षय भंडार...यही नारी का सबसे बड़ा अस्त्र है।...इसी के द्वारा वह पति को उसकी हर मानसिक स्थिति में उसकी हर विषम परिस्थिति में समझ सकती है और उन्हें आत्म-धिक्कार की भावना से बचा व पतन से रोक सकती है। यह बड़े साहस और लगन का काम है और यही सफल नारीत्व की परीक्षा भी है।

(आल इन्डिया रेडियो नागपुर के सौजन्य से)

महिलाओं के लिये कार्यक्षेत्र

श्रीमती लीलावती मुन्शी ने हाल ही में सरोजनी नगर में महिला समाज-सेवा शिक्षण शिविर का औपचारिक रूप से उद्घाटन करते हुए महिला सेविकाओं को देहात में जाकर ग्रामीण स्त्रियों के बीच उत्साह और लगन के साथ काम करने की सलाह दी।

आपने कहा कि हमारी पढ़ी-लिखी बहनें देहात में जाकर काम करना कम पसन्द करती हैं। नगरों की तड़क-भड़क, सिनेमा, होटल, दावतों आदि की टीमटाम से वे इस कदर चिपकी हुई हैं कि गाँवों की अशिक्षित महिलाओं के बीच उनका जी नहीं लगता। इस मनोवृत्ति को दूर करना होगा। महिला कार्यकर्त्रियों के लिए वास्तविक कार्यक्षेत्र देहात ही है। हमारे देश की अधिकतर जनता देहातों में ही रहती हैं, इसलिए देहात में जाकर काम किये बिना देश का उद्धार नहीं हो सकता।

आपने कहा कि स्त्रियाँ पुरुषों से डरें नहीं, वे पुरुषों से किसी भी अर्थ में हीन नहीं हैं। स्त्री निर्भय होकर एक महान् शक्ति सिद्ध हो सकती है। श्रीमती मुन्शी ने कुमारी कञ्चनलता सब्बरवाल के नेतृत्व और सहयोग की प्रशंसा की। अन्त में श्रीमती मुन्शी ने इस बात पर हर्ष प्रकट किया कि हमारी सरकार इन कार्यों में विशेष रुचि ले रही है और आवश्यक सहायता भी दे रही है।

श्रीमती मुन्शी द्वारा शिक्षण शिविर का उद्घाटन करने के पूर्व महिला विद्यालय कालेज की प्रिंसिपल कुमारी कञ्चनलता सब्बरवाल ने सरोजिनी नगर की भूमिशाला तथा महिला समाज-सेवा शिक्षण शिविर के कार्यों का संक्षिप्त परिचय दिया और कहा कि निकट भविष्य में सेविकाओं को अन्य आवश्यक विषयों की भी शिक्षा देने की व्यवस्था की जायगी। आपने बताया कि राष्ट्रीय प्रसार सेवा के अन्तर्गत इस केन्द्र से कुल १०३ गाँव सम्बद्ध हैं जहाँ हमारी सेविकाएँ जाकर काम करेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लज्जा स्त्री का गुण है—परन्तु उसकी अति मात्रा से कभी-कभी लाभ के बदले हानि पहुँच जाती है जैसा कि इस कहानी में हुआ।

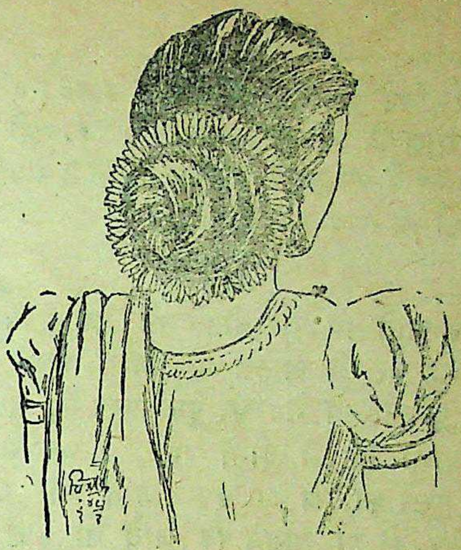

स्मृति

लेखिका, श्री प्रभा उपाध्याय

[१]

संध्या का अन्धकार अब सघनता में परिणत होने लगा था, तभी निशा ने अपने कमरे की खिड़की खोल दी। वायु का शीतल स्पर्श पाकर उसकी सारी थकान क्षण भर में मिट गई। और अनायास ही उसके रक्तिम अधर मधुर स्मित से भर उठे। खिड़की का नीला परदा हटा कर उसने बाहर की ओर झांका कि तभी दृष्टि बगल वाले मकान पर अटक गई। वहाँ कोई खड़ा था। नीली कमीज और......लेकिन इसके आगे वह कुछ न देख सकी, पीछे अन्धकार में वह छाया विलीन हो चुकी थी। कौन था वह? निशा स्वयं से ही प्रश्न कर उठी, इस मकान में कौन आया है, यह तो विगत दो वर्षों से खाली पड़ा है। तब क्या नया किरायेदार........

...लेकिन विचारों का प्रवाह यहीं तक सीमित रहा, क्योंकि मां ने नीचे से पुकार लिया था।

निशा को देखते ही माँ बोली—'बेटा आज बगल के वर्मा जी के यहाँ चाय पार्टी है, तू चलने के लिये जल्दी से तैयार हो जा।'

'कौन वर्मा जी माँ?'

'अरे तू नहीं जानती, बगल के मकाल में नये किरायेदार है।'

× × ×

मेज पर झुकी निशा चाय पी रही थी, पास ही में वर्मा जी की हमउम्र लड़की रञ्जना भी बैठी थी। बाते करते-करते निशा चौंक पड़ी। ऊपर से कोई उतर रहा था, दृष्टि सीढ़ी पर जाकर रुक गई। पहले पांव दिखाई पड़े फिर आने वाला और नीली कमीज......।

क्षण भर को दोनों की आखें अनायास ही मिल गई और फिर अपने ही आप झुक गई। अनिल बाहर चला गया।

ये हमारे अनिल भैया हैं 'निशा' रंजना ने कहा, 'अच्छा' निशा हौले से बोली, न जाने उसको कैसा लग रहा था। जना ने बात आगे बढ़ाई—यहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारी युनिवर्सिटी में पढ़ने जायेगें, एम० ए० का पहला साल है' 'लेकिन विद्यालय मेरा ही नहीं वह तो सब का है रंजना।' सुनकर रञ्जना हँस पड़ी। निशा को भी साथ देना ही पड़ा।

[२]

दिन आते गये और बीतते गये। एक ही विद्यालय में रह कर भी अनिल और निशा कोसों दूर लगते। युनिवर्सिटी 'गेट' पर पुस्तकालय में, नाटक खेल तमाशा हर में दोनों रहते, लेकिन सदैव ही एक दूसरे को देख कर कतरा जाते और कभी अनायास ही जो सामने पड़ जाते तो हौले से नमस्ते कह कर आगे बढ़ जाते थे।

देखने में वे दूर लगते, अवश्य लेकिन दोनों का मन एक-दूसरे के आस पास ही घूमा करता था। इधर निशा सोचती—कैसा है अनिल, कभी भूलकर नहीं बोलता। और उधर अनिल मन ही मन सुलगता—अजीब लड़की है निशा, इसी उम्र में इतनी गंभीरता देखती है तो दूर ही से भागती है, लगता है मैं इन्सान नहीं, हैवान हूँ। कभी आंखें उठाकर देखती भी नहीं। मैं तो उसे...नहीं नहीं वह मुझे नहीं... और अनिल यूंही सोचता रह जाता। क्या मैं ही आगे बढ़ूँ...दूसरा विचार उठता, पर उस तरफ से तो बिलकुल निराशा है। वह तो अपनी ओर से.......खीझकर अनिल पुस्तकों में खो जाता।

एक दिन दोपहर को क्लासरूम से निकलते ही नीना ने निशा का हाथ पकड़ा और फिर हौले से बोली—'तुमसे एक बात कहनी है' और फिर वह कुछ इस तरह मुस्कराई कि निशा को उसकी यह मुस्कान रहस्यमयी प्रतीत हुई। नीना उसे घसीटती हुई ले गई और फिर लान पर बैठती हुई बोली—'जो तुम्हारे अनिल जी है न।'

'मेरे अनिल जी' चौंक कर बोल पड़ी निशा।

'अरे वही रंजना के भाई, उनसे और मेरे राजू भइया से बड़ी गहरी दोस्ती है। कल वे मेरे यहाँ आये थे, कमरे में वे बैठे बातें कर कर रहे थे कि तभी 'काफी' का प्याला लेकर मैं पहुँची और अनिल के मुँह से तुम्हारा नाम सुन कर मैं वहीं दरवाजे पर ठिठक कर उनकी बातें सुनने लगी। जानती है तेरे विषय में अनिल क्या कह रहे थे।'

नीना ने निशा के भावों को पढ़ने के हेतु उसके मुख की ओर देखा लेकिन वहाँ चञ्चलता, चपलता, उत्सुकता की जगह अथाह गम्भीरता थी। निशा सामने खिले हुये गुलाब के फूलों को देख रही थी।

'मेरी बात भी सुन रही है या फूलों को ही गिन रही है।'

'कहे जाओ सब सुन रही हूँ' अत्यन्त शान्त स्वर था। नीना आगे बढ़ी—'कह रहे थे कि मेरी समझ में नहीं आता कि कैसी है निशा। हमेशा चुप रहती है, उसकी ओर से ऐसी कोई बात नहीं देखता जिससे मैं कुछ आगे बढ़ूँ कभी आंखें उठा कर भी तो नहीं देखती। सच कहता हूँ राजू बस उसी पहले दिन क्षण भर को उसने मेरी ओर देखा था और बस उसके बाद।'......

बात यहीं समाप्त हो गई क्योंकि मैं अन्दर पहुँच गई थी।

'तो मैं क्या करूँ नीना मुझसे यह सब नहीं होता।'

'क्या सब।'

'यही जो कह रही हो।'

'तुम पागल हो निशा।'

नीना खीझ उठी और निशा के ओठों पर एक फीकी मुस्कान उभर आई। क्षण भर बाद जब नीना ने निशा की ओर देखा तो पाया उसके गालों पर दो बूँदें चमक रही थीं।

'निशा' लेकिन निशा जा चुकी थी। नीना उसी ओर फटी-फटी आंखों से देखती रही।

[३]

लायब्रेरी के पास खड़ी थी निशा, चार-पाँच लड़कियाँ और थीं। प्रोफेसर साहब से निशा बड़े दुखित स्वर से कह रही थी—'क्या करूँ प्रोफेसर साहब, शहर की एक-एक दूकान छान डाली पर कहीं भी 'प्रसाद जी की तितली' नहीं मिली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी समझ में नहीं आता कि क्या करूँ। लायब्रेरी में लड़कियाँ पहले ही से ले चुकी हैं, परीक्षा निकट होने से कोई देता नहीं, किताब क्या हो गई पूरी आफत हो गई। निशा ने बुरा-सा मुँह बना लिया। प्रोफेसर साहब ने हँसते हुये निशा की पीठ थपथपाई फिर बोले—'अच्छी बात है, मैं भी कोशिश करूँगा।' प्रोफेसर के जाने के पश्चात जब निशा जाने के लिये मुड़ी तो अनिल को देखकर उसे बड़ी झेंप लगी, सारी बातें उसने सुनी होगी। जल्दी से निशा आगे बढ़ गई।

दूसरे दिन सुबह गेट पर पहुँचते ही निशा ने देखा, अनिल खड़ा है। वह आगे बढ़ी कि तभी 'ठहरिये' निशा ठिठक गई।

'नमस्ते' निशा ने भी अपनी हथेलियाँ मिला दीं।

'आपको इसकी जरूरत थी न।' सामने प्रसाद जी की 'तितली' थी।

निशा धक रह गई, इन्हें कैसे पता चल गया।

'मैंने कल सुन लिया था जब आप मि० कश्यप से कह रही थीं। मेरे पास थी इसलिये मैंने आपको देना उचित समझा, हालांकि आपने कभी भूल कर भी न पूछा।'

आक्षेप सही था; निशा कट कर रह गई। 'अच्छा तो अब चलता हूँ।'

'जी' चौंककर निशा ने दृष्टि उठाई तो पाया अनिल उसी को देख रहा था। दृष्टि मिल गई। किताब पर ही दृष्टि गड़ाये-गड़ाये निशा बोली—'आपको बहुत-बहुत धन्यवाद.....' आगे शब्द गले ही में अटक गये।

अनिल चला गया था और निशा हाथों में किताब थामे निर्वाक भाव से उसी ओर देख रही।

[४]

निशा जैसे ही आई वैसे ही घर की नौकरानी पास आकर बोली—'बिटिया माँ जी तो काफी देर से वर्मा जी के यहाँ गई है। और आपको वहीं आने के लिये कह गई है।'

'अच्छा' छोटा-सा उत्तर था। क्या काम है, रंजना भी आज पढ़ने नहीं गई थी और अनिल भी आज नहीं दिखाई पड़ा क्या बात हो सकती है भला—निशा सोच रही।

रञ्जना के यहाँ जब निशा पहुँची तो हाथों में चाय की 'ट्रे' लिये रञ्जना ऊपर को जा रही थी। 'रञ्जना' निशा ने आवाज दी। 'अरे निशी तू है आओ मौके से आई हो, चल ऊपर चाय पीयेंगे और वहीं पर बातें भी करेंगे। दोनों ऊपर को चल दी। कमरे में पहुँच कर निशा ने देखा अनिल खिड़की के समीप खड़ा होकर बाहर दूर-दूर तक न जाने क्या देख रहा है। 'भइया चलो चाय पीने' अनिल घूम पड़ा पर निशा को देखा तो चौंक कर बोला—निशा तुम...नमस्ते।' निशा ने भी नत नयन किये उत्तर दे दिया।

एक कुर्सी पर धम से बैठती हुई रञ्जना बोली—'निशा आज चाय न बनायेगी।' निशा चाय बनाने लगी कि तभी रञ्जना ताली पीट कर बोली—'जानती है निशा आज मेहमान क्यों आये हैं और घर में क्यों इतना हल्ला-गुल्ला है ?'

निशा ने अपनी प्रश्नसूचक दृष्टि रञ्जना की ओर उठा दी।

'अनिल भइया का ब्याह तय हो गया है और आज ब्याह की अँगूठी पहनाई जायेगी इसीलिये...

हाथ से झन-झन करती हुई प्लेट निशा के हाथ से छूट कर जमीन पर जा गिरी। अनिल ने देखा, निशा के मुँह पर व्यथा की गहरी छाया घिर आई थी। आंखें कुछ सजल हो उठी थीं अनिल ने देखा, समझा पर अब समझने से क्या होता। समय हाथ से निकल चुका था।

'यह क्या हो गया निशा ?'

'कुछ नहीं हाथ से फिसल पड़ी' अपने को सँभालती हुई निशा बोली।'

'ऐसी टूटी है कि अगर जोड़ना चाहें तो जुटे भी न।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'टूटी हुई चीज कभी नहीं जुटती रञ्जना' रोकते रोकते भी एक ठण्डी साँस निकल गई कि तभी रञ्जना ने अनजाने ही दूसरा आघात पहुँचाया।'

'अगूँठी देखेगी जो बहू को भइया पहनायेंगे' और दौड़कर वह मेज पर से केस उठा लाई, अँगूठी निशा के हाथ में देती हुई बोली—'बता कैसी है ?' निशा देखती रही, चमकती हुई नगीने की अँगूठी जिसकी सुन्दरता अनुपम थी। और तभी रञ्जना बोल उठी—'जरा तू पहन। निशा तेरी उँगलियों में बड़ी सुन्दर लगेगी सच कहती हूँ।'

'नहीं, नहीं' निशा घबड़ाकर बोली।'

'अरे पहन तब नखरे दिखाना' रञ्जना ने जबरन उसकी उंगुलियों में अँगूठी पहना दी।

'यह क्या किया रञ्जना मेरी इस उँगली में यह कितनी कसी है, अरे अब यह उतरेगी कैसे।' बहुत कोशिश करने पर भी जब अगूठी न उतरी तो रञ्जना उठती हुई बोली—'अभी नींचे से साबुन लाती हूँ, उससे उतर जायगी।'

कुछ देर बाद सामने बैठे अनिल ने मेज पर रखे उन सुकुमार हाथों को अपने हाथों के बीच ले बोला—'मैं उतार दूँ निशा।'

निशा ने दृष्टि उठाई, क्षण भर वे एक दूसरे की आँखों में न जाने क्या देखते रहे और फिर एक साथ ही पलकें झुका लीं। अनिल ने जब अँगूठी उतार ही दी तो निशा की आंखों से कुछ बूंदें ढुलक कर अनिल की हथेलियों पर गिर पड़ीं। 'निशा' अनिल चीख पड़ा। मूक निशा ने अपनी जलती आँखें हथेलियों से ढाँप लीं।

'ओह तो तुम···पहले क्यों नहीं यह सब······ अनिल चुप हो गया, निशा उठ कर घर की ओर चल दी। अपने कमरे में पहुँच कर निशा तकिये में मुँह छुपा कर अपनी विवशता पर रो उठी। अनिल को उसने पाया और फिर खो भी दिया, अगर अनिल उसका···नहीं···नहीं वह तो अब दूसरे का हो चुका है। निशा सिसकती रही।

गीत

लेखक, श्री यु० सी० पेड़ीवाल, रतनगढ़

उठते तरह तरह के छविमय
सबके दिल में प्यार प्रिये।
उठने दो हम दोनों का तो
एक अलग संसार प्रिये।

सुनें कहाँ तक जग की बातें
समझ लिया सब सार प्रिये।
कर लें जो करना है आखिर
चलना है उस पार प्रिये।

क्या कर लेगा जगत उदय की
है जब सच्ची राह प्रिये।
एक प्रेम के हम दीवाने
एक हमारी चाह प्रिये।

[५]

दो साल बाद—

लाल चूनर पहने सिमटी-सिमटाई निशा पति नीरज के सामने खड़ी थी। नीरज ने उसकी उंगलियों में अँगूठी पहनाते हुए कहा—'निशा यह मेरा प्रथम उपहार है संभाल कर रखना।'

अगूँठी देख कर निशा चौंक पड़ी, एक टीस-सी मन में उठी। आँखों से कुछ जल की बूंदें निकल कर धरती में विलीन हो गईं। एक साथ ही बीते दिनों की स्मृति सजीव हो गयी। बिलकुल ऐसी ही थी वह अगूठा जो कि क्षण भर को उसने पहनी थी। सब कुछ याद आ गया था। पर उन बीते हुए दिनों की स्मृति से अब क्या लाभ ?···

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमला चाची

लेखिका, श्रीमती रजनी पनिकर

कमला चाची मझोले कद, दोहरे शरीर और गोरे रङ्ग की हँस-मुख स्त्री है। वह रेणु और विनोद की चाची है, बेबी और लाल की माँ। कमला चाची के मुख में सदा पान रहता है। एक पान समाप्त नहीं होता तो दूसरा मुख में रख लेती हैं। पान-दान सदैव उनके हाथ में रहता है। कमला के व्याह के समय रेणु और विनोद छोटे-छोटे थे, इसलिये कमला शादी होते ही चाची बन गई। एक दिन के लिये भी बहू नहीं कहलाई।

कमला छोटे घर की लड़की बड़े में व्याही थी। इसलिये शादी के बाद उसे घर नहीं भेजा गया। कमला के पति अपने दो बड़े भाइयों के साथ रहते हैं। घर की जमीन जायदाद का बटवारा नहीं हुआ। व्याह को पन्द्रह वर्ष हो चुके हैं, परन्तु किसी ने कमला को लड़ते-झगड़ते नहीं देखा। महरी से लेकर जेठानी तक कमला से प्रसन्न हैं। कमला भी सबसे मुस्करा कर बात करती। मुँह पान से भरा रहता है, परन्तु फिर भी चेहरे पर मुस्कराहट रहती वह हसती तो आंखें भी साथ में हँसती हैं। मुख का रङ्ग ऐसे चमकता है जैसे लट्ठे के थान व तस्वीर चमकती है। कमला चाची सदैव सूती किनारे की बारीक मलमल या वायल की साड़ी पहनती है। ब्लाउज जिसे वह चोली की तरह बनाती, सदैव छींट का रहता। फूलदार छींट या चेकदार छींट। माथे पर आँख भवों तक वह बाल ले जाती फिर कानों के ऊपर ले जाकर पीछे जूड़ा बाँधती। गोरे मुख पर सिन्दूर का बड़ा सा टीका, उसके व्यक्तित्व का एक झण्डा बन गया था।

कमला को घर के बड़े बूढ़े सभी चाची कहते। महरी और महराज भी छोटी बहू की जगह चाची ही कहते। बेबी और लाल भी अम्मां न कह कर माँ को कमला चाची ही पुकारते। अपने पेट के बच्चों के इस सम्बोधन से उसका मन प्रसन्न होता या दुखी, इस विषय में कमला चाची ने अपने हृदय की बात किसी से न कही थी। उसके पति रामनाथ ने दो तीन बार कहा भी, 'यह बच्चे तुम्हें चाची क्यों बुलाते हैं, मुझे तो यह पसन्द नहीं। इन्हें माँ कहना चाहिये।'

कमला चाची ने धीमे स्वर में हर बार यही उत्तर दिया था—'बड़े हो जायेंगे तो अपने आप माँ कहने लगेंगे। और फिर माँ न कहेंगे तो कौन-सी हानि ही हुई जाती है। आखिर इनकी माँ, मैं ही तो हूँ और कौन हो सकता है।'

कमला चाची का जिस समय व्याह हुआ था, उस समय सास की मृत्यु हो चुकी थी। ससुराल पहुँच कर घर की एक पुरानी महरी ने बतलाया कि कमला को बड़ी बहू ने बहुत कम सोने के आभूषण दिये हैं। उसकी सास बहुत से गहने रख गई थी। कमला ने सुना, उत्तर नहीं दिया। केवल मुँह में पान का बीड़ा रख लिया। महरी ने बड़े अचंम्भे से कमला चाची की ओर देखा, मानो उसके लिये कोई बात ही न थी। वह विशाल हृदय की स्त्री थीं।

घर में सबसे छोटी होने के नाते रसोई में काम भी अधिकतर कमला चाची करती। रेणु इतिहास और हिन्दी लेकर बी० ए० कर रही थी। विनोद डाक्टरी के अन्तिम वर्ष में पढ़ता था। उन की माँ को अब चौके जाने की आवश्यकता न थी। मँझली बहू के पाँच-छः बच्चे थे, वह अधिकतर पति के साथ उनकी नौकरी पर बाहर रहती थी। छुट्टियों में वह कभी-कभी घर पर आती तो रसोई में जाने के लिए उससे कोई न कहता।

भंडार की चाबी भी कमला चाची के पास ही रहती। रेणु के पिता को भी यदि कोई चीज मँगवानी होती तो वह भी नौकर से कहते, कमला चाची से कहते, इतने गज कपड़ा इन्हें दे दे। नौकर चाकर पहले तो यह सुन कर मुस्कराते थे, परन्तु अब वह यह सब सुनने के अभ्यस्त हो चुके थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकाएक कमला चाची के मकान के ऊपर वाले एक भाग में नये किरायेदार आ गये। मँझले भाई ने अपना हिस्सा खाली कर दिया। खन्ना की पत्नी और साथ में दो छोटे-छोटे बच्चे थे। सुन्दर गोल-गोल गुलाबी गालों वाली दो नन्हीं-सी लड़कियाँ।

घर भर में वह लड़लियाँ खेलने लगीं। प्रमिला बड़ी लड़की पाँच वर्ष की थी। वह कमला को रसोई में काम करते देखती...तो वहीं बैठ जाती। खाना भी वहीं खाती। दूसरे बच्चों की देखा देखी वह भी कमला को, चाची ही पुकारती।

समय असमय, उसे वहाँ बैठा देख कर उसकी माँ उसे ऊपर बुलाती तो वह कमजा रसोई घर से ही आवाज देती—'आती हूँ माँ। अभी आती हूँ।'

धीरे-धीरे प्रमिला स्वयं ही न आती, साथ में पड़ोस का एक लड़का भी लाने लगी। एक दिन कमला की तबीयत कुछ भरी थी यह अपने कमरे में लेटी थीं बेबी और लाल स्कूल गये थे।

प्रमिला और वह पड़ोस का मुन्ना कमला के पास आये। मुन्ने ने धीरे से कमला के ऊपर का कम्बल खींच कर अपनी तुतली भाषा में कहा—'अम्माँ।'

प्रमिला झट बोली—'अम्माँ नहीं चाची। बालक ने एक बार प्रयत्न किया। उससे नहीं बना। उसने फिर कहा—'अम्मां।'

कमला ने कम्बल हटा दिया, बिस्तर पर उठ कर बैठ गयी।

बालक फिर बोला—'अम्मां तेला (केला)।'

कमला ने झपट कर मुन्ने को हृदय से लगा लिया। रुँधे कण्ठ से बोली—'हाँ मेरे बेटे केला अभी देती हूँ।'

कमला ने उसे उठ कर केला दिया। अब वह बालक प्रमिला के साथ बहुत बार अकेला ही कमला के पास आ बैठता—'अम्मां तेला।' और कमला रसोई में भी केले की डलिया पास रख कर बैठती।

गीत

लेखक, श्री 'पुष्प' बी० ए० साहित्य रत्न

मत छिपो घन मेघमाला,
मैं किरण-सी छवि दिखाकर
रूप की सौन्दर्य सुषमा,
दीप वसना-सी लजा कर।
आज मुझको देख लेने,
दो सरल संसार सुन्दर,
कौन जाने कल इसे फिर,
देख पाये या न पाये?

स्वप्न रह कर भी अधूरा,
सत्य छलता जा रहा है,
देखता हूँ, मैं नया ही,
विश्व बनता जा रहा है।
आज गा लेने मुझे दो,
नव जगत के गीत जी भर,
कौन जाने कौन मेरे
गीत फिर गाये न गाये?

हों सुखी सब स्वर्ग भी आकर
रहे इस भूमि तल पर,
विश्व की करुणा मनुज की,
बंधुता ममता अचल कर।
आज करने दो मुझे
उत्सर्ग जीवन दूसरों पर,
कौन जाने कल किसी के
काम यह आये न आये?

इधर कमला के पति रामनाथ ने देखा उनकी पत्नी ने पान खाने छोड़ दिये हैं। पानदान का स्थान अब केले की डलिया ने ले लिया था।

'अरे कमला, तुमने पान खाना छोड़ दिया?'

कमला ने अधेड़ अवस्था में भी नवोढ़ा की तरह शरमाते हुए कहा—'हाँ।'

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसोई

नारियल की बर्फी

सामान—१ सेर खोवा, १ सेर चीनी, दो छ० इलायची, दो नारियल।

विधि—नारियल के ऊपर का काला छिलका छील कर निकाल दीजिये। और कद्दूकश पर लच्छे बारीक बनाइये। धीमे आंच पर खोवे को बदामी रङ्ग का भून कर रख लीजिये। अब चीनी की कुछ कड़ी चासनी बनाइये। चासनी बना कर कड़ाही नीचे उतार लीजिये और नारियल, खोवा, इलायची डाल कर पल्टे से खूब मिलाइये। मिला कर थाली पर फैला दीजिये। कुछ देर बाद जम जायेगा तो चाकू से काट लीजिये। बर्फी बहुत ही स्वादिष्ट होगी।

—शकुन्तला शाही

तहरी

चावल चुन कर खूब साफ कर लो।

लौंग, मिर्च, इलायची, हल्दी, धनिया, लाल मिर्च और आपके घर लहसुन, प्याज खाया जाता हो तो इन्हें भी मिला कर पीस लो।

हरी मटर, हरे चने मिलते हों तो इन्हें भी अलग दरदरे पीस कर रख लो।

आलुओं को छील कर कतरे काट कर रखो।

कुछ बड़ियाँ या कुम्हड़ौरियाँ तोड़ कर जितना घी खिचड़ी के साथ खाना मन्जूर हो, उतने घी के साथ पतीली में चढ़ा दो। जब भुन जाय तब मसाला डाल कर उसी घी में भूनो। फिर आलू के कतरे गोभी के कतरे हरी मटर या चने दरदराये हुए और पानी के धोये चावल सब एक साथ उसी पतीली में छोड़ दो और खूब भूनो। इसी समय नमक भी छोड़ दो।

उधर दूसरी पतीली में पानी खौलता रहे। जब सारी खिचड़ी खूब भुन जाय। तब खौलता पानी उस पर इतना छोड़ दो कि सब चीजों के ऊपर चार पाँच अँगुल पानी रहे। अब ढक दो। आँच भी ठीक रहे।

—प्रेम सक्सेना

दोशा

सामान—एक पाव उर्द की दाल, एक पाव चावल, आधा पाव दही (बहुत खट्टा न हो), एक पाव मटर, थोड़ी-सी गोभी, एक पाव गाजर, एक मूली, चार-पाँच हरी मिर्च, थोड़ी-सी अदरक और हरा धनिया (इन सब्जियों का इच्छानुसार भी प्रयोग कर सकते हैं।)

विधि—रात को दाल और चावल भिगो कर रख दो फिर सुबह अच्छी तरह साफ धोकर खूब महीन पीस लो। पीसते समय जरा-सी हींग भी डाल दो। अब इस पिट्ठी को (चाहे मिला कर ही) किसी कलई वाले बर्तन में उठा कर रख दो।

फिर शाम को आलू उबाल कर घिया-कस में घिस लो। गोभी, मूली और गाजर भी घिस लो। इसी में हरी मिर्च, अदरक और धनिया भी काट कर छिले हुए मटर मिला लो। अब कढ़ाई में एक छटांक घी डाल कर हींग जीरा डाल कर छौंक दो। मसाले—नमक, मिर्च, गर्म मसाला और खटाई अपने अन्दाज से डाल कर भून लो। जब भुन जाये तब उतार कर एक तरफ रख लो।

अब जब भी तुम्हें खाना हो तब मन्दी आँच पर तवा रख कर जो पिट्ठी सुबह उठा कर रखी है उसमें दही और नमक मिला कर चीले बनाने लायक पतली करके खूब फेंट कर चीले की तरह फैला दो। इस चीले को सिर्फ एक तरफ से सेंकना चाहिए। अतः उलटने की जरूरत नहीं। जब यह निचली तरफ से लाल हो जाये तब वह भुनी हुई सब्जी बीच में रख कर (सारी नहीं थोड़ी-सी जिससे चीला डबल हो सके) गुझिया की तरह मोड़ दो। इसी प्रकार सब पिट्ठी के दोशे बना कर चाय के साथ यदि चटनी से खाये जायें तो बहुत ही स्वादिष्ट लगते हैं।

—विजय 'शमा' देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

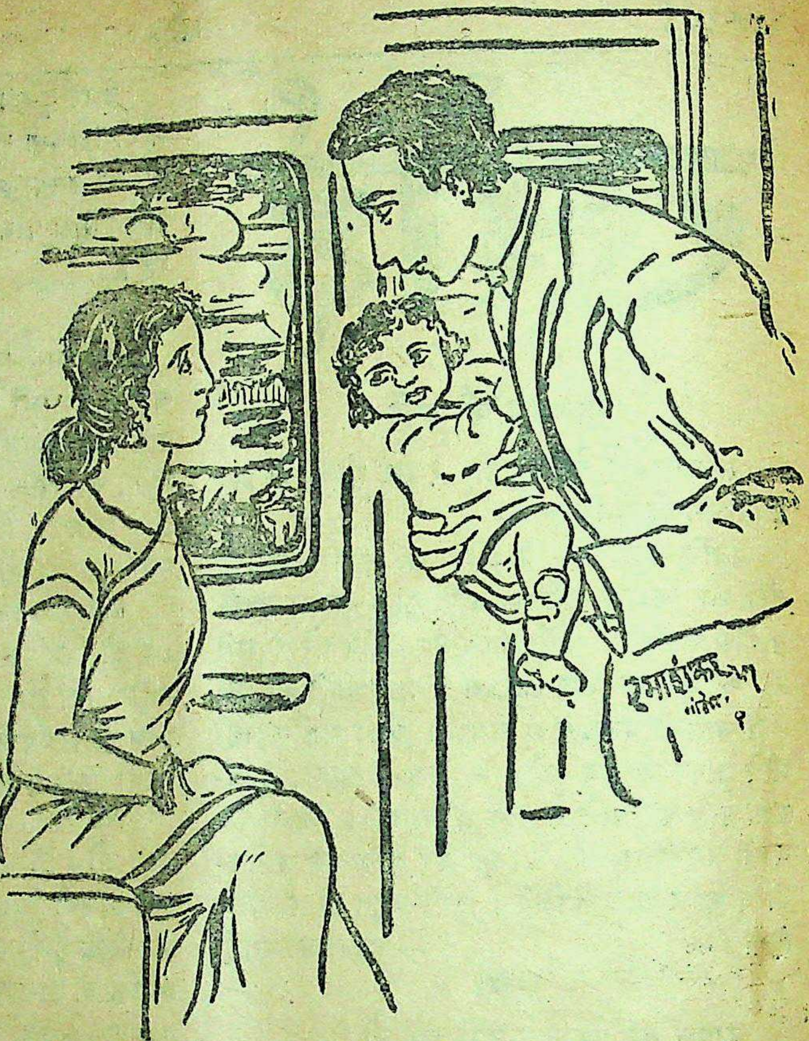

अन्तर्द्वन्द

लेखिका,
कुमारी कमला मिश्रा

[१]

'बीबी जी, चाय ठंडी हो रही है।' नौकर छोकरे की आवाज सुन कर विचारों में खोयी शशि चौंक पड़ी। 'हाँ राजू यह चाय तो ठंडी हो गई। ले जाओ।' विचारों की तल्लीनता में उसे पता ही न चला था कि राजू कब चाय रख गया था। राजू ट्रे लेकर चला गया। शशि ने हाथ की पुस्तक में से लिफाफे में रखा कागज निकाल कर पढ़ा—'शेखर की हालत खराब है। शीघ्र आओ—सुरेश।'

'शेखर की हालत खराब है तो मैं क्या करूँ? क्या मैं डाक्टर हूँ?' ओठों ही ओठों में बड़बड़ाई शशि।

मेज पर कई लिफाफे पड़े थे। शशि ने उठाकर देखे—उसकी सहेलियों, मित्रों एवम् परिचितों के बधाई के पत्र थे। इस साल उसकी थीसिस कंप्लीट होकर सबमिट हो गयी है। परसों कानवोकेशन है जिसमें उसे डाक्टर आफ लिट्लेचर की डिग्री मिलेगी। दूसरे दिन उसकी विदाई के उपलक्ष में एक डिनर का आयोजन किया गया है।

क्योंकि··· यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर के पद के लिये उसे नियुक्ति पत्र प्राप्त हो चुका है और एक हफ्ते बाद उसे चार्ज लेना था। टेलीफोन व पत्रों के द्वारा बधाइयों का तांता लगा है। सामने उसका उज्ज्वल भविष्य मुस्करा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्तु...इस सबके विपरीत आज सुबह आये हुए तार ने शशि के हृदय में हलचल मचा दी है। एक ओर जगमगाता भविष्य एक प्रोफेसर का सम्मान पूर्ण जीवन उसका आवाहन कर रहा है और दूसरी ओर कर्तव्य पुकार रहा है। अर्न्तद्वन्द, इस विकट स्थिति में वह निश्चय नहीं कर पाती कि क्या करे?

यदि वह शेखर के पास जाती है तो वह किसी भी हालत में परसों कानवोकेशन में, डिनर में शामिल न हो सकेगी और यूनिवर्सिटी पहुँच कर काय भार सम्भालना तो और भी मुश्किल है। इस तरह शेखर के पास जाकर वह एक सुनहला अवसर खो देगी।

शेखर बीमार है तो वह क्या करे—शशि के मन में आया—वह क्यों शेखर के लिये अपना भविष्य बिगाड़े। माना कि दुनिया की नजरों में शेखर उसका पति है किन्तु क्या वास्तव में शेखर ने उसे पत्नी जैसा प्यार व आदर दिया है? अपमान और तिरस्कार के सिवाय उसने शेखर से क्या पाया है? परिणय के प्रथम दिवस से ही वह परित्यक्ता है? उसे याद आये वे दिन—

[२]

आज से छः वर्ष पूर्व वह बी० ए० प्रथम वर्ष की छात्रा थी तब शेखर से उसका परिचय हुआ था। शेखर धनी का बेटा था साथ ही बुद्धिमान व प्रतिभाशाली छात्र था। कालेज के तमाम खेलों व उत्सवों में शेखर व शशि का समान भाग होता था फलस्वरूप उन्हें बार-बार मिलने का अवसर प्राप्त होता। समान रुचि व स्वभाव के कारण दोनों में खूब पटने लगी। धीरे-धीरे परिचय घनिष्ठता और फिर मैत्री में परिवर्तित होता गया।

जैसी दुनिया की रीति है, इन दोनों का मेल-जोल भी दुनिया की आँखों में खटक उठा। कालेज में अफवाहें उड़ने लगीं। लड़के शेखर पर आवाजें कसते और लड़कियाँ शशि को बनातीं। शशि ऐसी बातों को नजरन्दाज कर घुमा देती।

एक दिन शेखर ने बातों ही बातों में शशि से कहा—'जानती हो शशि, आजकल कालेज में कैसी अफवाहें उड़ रही हैं?'

'हाँ।' शशि ने जवाब दिया—'लड़कियों के बीच भी हमारी चर्चा है किन्तु मैं इन सबकी परवाह नहीं करती। अफवाह उड़ाने वालों ने स्त्री पुरुष की मैत्री को स्वच्छ एवम् पवित्र दृष्टिकोण से देखना नहीं सीखा। जब तक हमारे बीच कोई कुत्सित भावना नहीं आती, तब तक हमें इनकी चिन्ता क्यों हो?'

'तुम ठीक कहती हो शशि! किन्तु फिर भी चिन्ता करनी पड़ती है। मैंने सोचा है कि इनका मुँह बन्द करने का एक उपाय है।' कहा शेखर ने और फिर कुछ क्षण रुक कर बोला—'और वह है हमारी शादी।'

'ऐं शादी' चौंक पड़ी शशि! नहीं-नहीं ऐसा नहीं हो सकता। यह तो अफवाहों पर स्वीकृति की मोहर है।'

'तो क्या मैं समझ लूँ कि तुम्हें मुझसे बिलकुल प्रेम नहीं है। तुम्हारी आज तक की सहानुभूति दिखावा मात्र थी, कोरा शिष्टाचार।' पूछा शेखर ने।

प्रश्न बड़ा गम्भीर एवम् अप्रत्याशित था, अतः शशि अवाक् रह गयी।

'बोलो शशि, बोलो! चुप क्यों हो?' शेखर का स्वर काँप रहा था।

'क्या बोलूँ शेखर, तुमने बड़ा विचित्र प्रश्न किया है। तुम्हीं कहो, क्या प्रेम भी मुँह से कहने या दिखाने की चीज है?' शशि ने प्रश्न का उत्तर प्रश्न में ही दिया।

'तो फिर तुम्हें शादी में क्या आपत्ति है?' आतुरता एवम् उत्सुकता से परिपूर्ण था शेखर का स्वर।

'आपत्ति'! कुछ क्षण चुप रह कर बोली शशि, 'बड़ी भारी आपत्ति है। यदि जानना ही चाहते हो तो सुनो। हमारे बीच बड़ी भारी आर्थिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असमानता है। प्रथम तो तुम्हारे माता पिता राजी ही न होंगे और शायद तुम्हारी जिद के कारण मान भी गये तो सम्भवतः जीवन भर उनके मन में यह भाव बना रहेगा कि मैंने तुम्हें धन के कारण प्रेम-जाल में फँसा लिया। जीवन भर मैं उनकी नजरों में उपयुक्त स्थान न पा सकूँगी। तुम्हीं सोचो इतने बड़े अपमान व लाज का बोझ लेकर मैं कैसे रह सकूँगी ?'

'नहीं नहीं ऐसा नहीं हो सकता। फिर यदि तुम चाहोगी तो मैं सारी दौलत ठुकरा दूँगा। मुझे कुछ न चाहिये। हम अलग रहेंगे। मैं कमाऊँगा और........।'

'ठहरो, भावुक न बनो शेखर' बात काट कर शशि बोली, सारी कल्पना की अपेक्षा यथार्थ दुनिया अधिक कटु है। आवेश में यदि तुम ऐसा कर भी बैठे तो तुम्हें पछतावा होगा। मुझे तुमसे प्रेम अवश्य है किन्तु उसके लिये मैं तुम्हें सब की अवहेलना का पात्र नहीं बना सकती। प्रेम की आखिरी मंजिल शादी नहीं हैं। प्रेम तो आत्मा का सम्बन्ध है। क्या मित्र का मित्र के प्रति प्रेम, प्रेम नहीं है। हम मित्र ही बनें रहें। यही काफी है।'

बस, बन्द करो अपनी फिलासफी। शायद तुम अपने सौंदर्य और विद्या बुद्धि के अभिमान में मुझे अपने योग्य नहीं समझती। मैंने समझ लिया कि तुम्हारा आज तक का व्यवहार बनावटी था। दिखावा था। तुम प्रवञ्चना की जीती जागती मूर्ति हो। क्रोध के आवेश में चिल्ला पड़ा शेखर।

'शशि की आँखें छलछला आई' मुझे गलत न समझो शेखर' कहा उसने और रोकते-रोकते भी आँसू ढुलक पड़े उसके कपोलों पर।

लेकिन शेखर ने उसे गलत ही समझा। यह धनी माँ बाप का एकलौता बेटा था। अपनी जिद का पूरा। शशि की अस्वीकृति को अपना अपमान समझा। इसके अहं को ठेस पहुँची।

'जी मैं सब कुछ समझ गया अब और कुछ समझाने की चेष्टा न कीजिये। इतना कह कर चल दिया था वह।

[३]

इसके बाद घटना क्रम बड़ी तेजी से बदला। कुछ दिनों में शशि ने सुना कि उसकी शादी हो रही है, हिन्दू घर की बेबस लड़की न अस्वीकार कर सकी और न स्वीकार। फिर तो जैसे सब कुछ अपने आप होता गया और इतनी शीघ्रता से कि वह अपने बर का नाम पता भी न जान सकी। और न बी० ए० ही कर पाई।

हिन्दू लड़कियों के व्याह में संयोग का कितना महत्वपूर्ण स्थान है इसका ज्ञान शशि को तब हुआ जब उसने व्याह मंडप में बर के स्थान में शेखर को देखा। यह था उसके जीवन का द्वितीय अङ्क।

तीसरा अङ्क दुःख पूर्ण था। शेखर उसे क्षमा न कर सका था। प्रथम मिलन में ही शेखर ने उसे ठुकरा दिया और कहाः—'तुम्हें बड़ा घमण्ड था शशि। तुमने अभिमान वश मेरे प्रेम को ठुकराया था किन्तु क्या अब भी ठुकरा सकोगी ? शेखर जिस चीज को चाहता है उससे वंचित रखने की सामर्थ किसी में नहीं है। तुम्हें इस घर में सब कुछ प्राप्त होगा और यदि किसी चीज से बंचित रहोगी, तो मुझसे, मेरे प्रेम से। कभी तुमसे बड़ा प्रेम था मुझे किन्तु अब तो जैसे प्रेम पर ही विश्वास नहीं है। इतना कह कर पुरुषत्व के गर्व में इठलाता कमरे से निकल गया था शेखर।

फिर जितने दिन भी शशि वहाँ रही, एक घर में रह कर भी दोनों अजनबियों की तरह रहे। उसे किसी चीज की कमी न थी। उसकी सेवा को दासियाँ थीं। किसी चीज की इच्छा होते ही वह सामने हाजिर हो जाती थी। उसकी स्थिति एक अधिकार-च्युत महारानी जैसी थी। तिरस्कार और मौन अपमान की वेदना उसे सदैव दग्ध करती रहती। यह वेदना जब दिन प्रति दिन तीव्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती गई तो शशि ने वह घर छोड़ दिया। चलते समय शेखर ने कहा था—'मित्र की तरह मैं सदा ही तुम्हारे पास आऊँगा। मेरे घर का दरवाजा तुम्हारे लिये हमेशा खुला रहेगा।'

'ईश्वर न करे, मुझे कभी तुम्हारी जरूरत पड़े।' उत्तर दिया था शशि ने।

'ओह इतना मान लेकर जा रही हो। तब तो शायद तुम मुझे मृत्युशय्या पर देख सकोगी।'

[४]

साल भर के भीतर ही शेखर ने दूसरी शादी कर ली। कुछ समय बाद शशि ने सुना कि शेखर की द्वितीय पत्नी का स्वर्गवास हो गया। मृत्यु के समय वह एक पुत्र की माँ बन चुकी थी।

शेखर के पास से आकर शशि ने बी० ए० ज्वाइन कर लिया और अब उसे डाक्टर आॅफ लिटलेटर की डिग्री मिलनी है। वह एक प्रोफेसर का जीवन बिताने जा रही है। सम्भव है कि कुछ दिनों में इतनी उन्नति कर ले। कि विदेश जा सके। ऐसे समय में यह तार...नहीं नहीं, वह नहीं जायगी। शेखर ने उसका तिरस्कार किया तो वह क्यों उसके लिये अपना भविष्य बिगाड़े। किन्तु शेखर ने कहा था तुम मुझे मृत्युशय्या पर ही देख सकोगी। तो क्या शेखर......नहीं वह जायगी। शेखर बीमार है। अकेला है। उसके शेखर को उसकी आवश्यकता है। हृदय ने मस्तिष्क पर प्यार ने मान पर कर्तव्य ने प्रलोभन पर विजय पाई।

'राजू राजू' पुकार उठी शशि। सामान बाँधो बाहर जाना है। पैड और पेन उठा कर डिनर के लिये क्षमा पत्र लिखा और उठ कर यात्रा की तैयारी करने लगी।

ट्रेन ने जब स्टेशन छोड़ा तो शशि सोच रही थी। 'कैसा होगा शेखर। सुना है उसके एक पुत्र है। शेखर का बेटा यानी मेरा बेटा। न जाने कैसा रहता होगा। बेचारा माँ के रहते हुये भी मातृ प्रेम से वंचित।' और शशि को लगा जैसे गाड़ी

घरेलू इलाज

जुकाम लगने पर—जलते हुए कोयले में पिसी हुई हल्दी डाल कर सूंघिये। ऊपर की श्वांस लेने पर गले का दर्द, नाक का बहना आदि शिकायतें दूर हो जाती हैं। एक दिन में ३-४ बार अवश्य करिये।

गले में दर्द होने पर—उपले की गर्म राख एक कपड़े में लपेट कर रात को सोते समय बाँध कर सो जाइये। ३-४ दिन लगातार करिये। इससे दर्द, आवाज का बैठ जाना आदि शिकायतें दूर हो जाती हैं।

आँखों में दर्द या खुजली होने पर—सोते समय सरसों के तेल के दिये में किसी मिट्टी के बर्तन अथवा कांसे के बर्तन में काजल बनाइये और उसी समय गरम-गरम लगाइये।

दो प्रकार की खांसी—एक तर, दूसरी खुश्क, तर जिसमें कफ, पित्त आदि निकलता है। खुश्क जिसमें कुछ नहीं निकलता और बड़ी तकलीफ देती है। यह खांसी यदि किसी को हो जाती है तो ३-४ महीने में हट जाती है, नहीं तो इसके लिये काफी तादात में घी डाल कर गर्म-गर्म हलवा खाना चाहिए।

—विद्यावती, ऋषिकेश

की रफ्तार धीमी है। बहुत धीमी। गाड़ी चली जा रही थी और शशि सोच रही थी 'कहाँ गया मेरा मान? प्यार की एक ही पुकार में साफ हो गया। नारी का प्यार ही उसकी सबसे बड़ी कमजोरी है। नारी अपने हृदय से ही हारी है।

सचमुच ही उसकी आँखें भर आईं। जब शेखर ने उस दुध मुँहे बच्चे को उसे सौंपा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पौराणिक युग की एक कहानी

ऋषि-पत्नी

लेखक, श्री प्रेमेन्द्र श्रीवास्तव

रात काली थी, ऋषि-पत्नी के काले उलझे केशों की नाईं बादल अम्बर में अटके थे, ऋषि कुटी की दीपशिखा-की लौ वायु के प्रबल झकोरों के साथ डगमगा उठती थी—ठीक मृत्युमुखी ऋषि कल्कि की प्राणों की डगमगाती नैया की तरह, वायु हिम मिश्रित थी, ठंड तेज थी, लगता था आज की रात शरीर गल कर हिम पाषाण की प्रतिमाओं में परिणत हो जायेंगे और आने वाला युग उन्हें 'सत-युग' की प्रतिमा मानकर देखेगा।

भोर हुआ... धीमे शोर के साथ, सुबह हुआ—वेद मन्त्रों की ध्वनियाँ गूँजी, हवन-क्रिया में महर्षि कल्कि के अतिरिक्त सभी ऋषिगण सम्मिलित थे। शाम सुनहरी थी, किसी राजरानी की सिन्दूरी माँग सी सुन्दर। सूरज सो गया, चाँद रोया और वायु ने सिसकियाँ लीं, महानद ब्रह्मपुत्र का प्रवाह घर्र-घर्र की विषम ध्वनि के साथ बढ़ता गया। तपोवन शांत था, वेदी के अंगारे शान्त हो चुके थे—बिलकुल बूढ़े ऋषि के प्यार की तरह और रात उदास थी ठीक ऋषि पत्नी 'उषा' के टूटे दिल की तरह।

'उषे!'

'महर्षि!!'

'आह...! जीवन के वे क्षण कितने सुन्दरतम थे जब 'वह'...वह...!' कहते हुए कल्कि ने मुट्ठियाँ बाँध कर छोड़ दीं—विवेक दौड़ कर कमण्डलु में पानी लाया। कल्कि शांत थे, बिलकुल शांत, सभी महर्षिगण उदास चेहरे लिये रुग्ण-शैया की ओर निहार रहे थे।

...उषा सुन्दर है—देवी की नाईं, किसी सुर किन्नर-सा मदमाता—उठता उफनता उसका उन्मादित यौवन उस कली की नाईं मुरझा चुका था, जिसे बरबस ही तोड़ कर तपती शिला पर सूखने फेंक दिया गया हो।

कल्कि-आश्रम में उस दिन मृत्यु-सा मातम था, महर्षि कल्कि जिसे युग का अष्टवक्रम्‌ऋषि कह पुकारा जाता था, मृत्यु-शैया पर पड़ा अपने जीवन की अन्तिम साँसें संजो रहा था। कल्कि ने अपने जीवन के पूरे १०० वसन्त देखे थे। उसके ८ अङ्ग भङ्ग थे, हाथ-पैर टेढ़े थे, बाँया हाथ टेढ़ा था। दांयीं आँख की भौं टूटी थी, इस प्रकार कल्कि एक विकलांत प्रतिमा था। राज्य में ऋषि का मान था, राजा ने उन्हें राजर्षि की उपाधि से विभूषित किया था... अष्ठ-अङ्ग भङ्ग होना युग में उनकी विशेषता का माध्यम बना हुआ था, किन्तु सम्भवतः कोई नहीं जानता था कि उनके अङ्ग क्यों भङ्ग हुए। उन्हें जन्म जात तो कहा नहीं जा सकता, माना जाता था कि किसी विशेष योग-क्रिया के खंडन हो जाने के फलस्वरूप उनके अङ्ग भङ्ग हो गये।

विवाद में बढ़ती बातों की नाईं प्रहर बढ़ते गये और मातम में बढ़ती उदासी की नाईं रात छाती गयी। वायु तीक्ष्ण थी, साथ-साथ हिम मिश्रित और भारी, काली रात उषा के भविष्य की नाईं गम्भीर और भयङ्कर थी। एक-एक कर सभी ऋषिगण तथा ऋषि-पत्नियाँ अपनी कुटियों की ओर चले गये—ऋषि-कन्याएँ उषा को बादलों की नाईं घेरे थीं धीरे धीरे सभी चली गयीं—किन्तु उषा शांत प्रस्तर-प्रतिमा-सी बैठी रही। वह कल्कि की स्त्री है, नवयौवना किसी कुमुदनी के खिले फूल-सी सुन्दर और कोमल...किन्तु कल्कि!...बेरी के सूखे ठूँठ की तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूखा, कर्कश, वृद्ध और बेडौल...वह मौन थी, किन्तु उसके हृदय में दावानल-सा भयावह उन्माद सुलग रहा था। घृणा, विषाद और उपेक्षा से वह जली जा रही थी 'ऋषि !...ऋषि !...ऋषि-पत्नी !' मानो उसके लिये अभिशाप था।

'आह-आह ! वेदने—उषा !' कल्कि कराहे—बाहर व्याधशारी 'ऊ आ' 'ऊ आ' की भयानक ध्वनि कर रो उठी।

'मृत्यु...मृत्यु ? किन्तु इसके पूर्व में तुमसे कुछ कहूँगा उषे !'

उषा मौन थी—उस बलि-पशु की नाईं, जिस का क्षण-पश्चात् बलिदान होने जा रहा हो।

'आज मैं तुम्हें अपना अन्तिम उपदेश दूँगा—उषे !...आह !' उठने का प्रयास करते हुए कल्कि पुनः सिरहाने का सहारा लिये लुढ़क गये।

'ऋषि ?' उषा हड़बड़ा कर उठ बैठी।

'नहीं भद्रे ! मैं स-शक्त हूँ, मैं स्वयम् बैठ जाऊँगा।' कहते हुए वे अधमरी मछली की तरह तड़फ कर ऊपर खिसक गये। धीरे-धीरे बुदबुदाना आरम्भ किया—

मैं पापी हूँ देवि !...तुम दुग्ध-सी निष्कलंक, निष्छल, निर्विकार और निर्मल हो। मैंने पुनः जब तुम्हें उपमन्यु ऋषि के आश्रम में देखा, उस समय तुम्हारे सौन्दर्य और यौवन ने मेरे मानस में असह्य काम-पीड़ा उत्पन्न कर दी और मैंने ऋषि से तुम्हारे लग्न का प्रसङ्ग छेड़ा किन्तु वे तैयार नहीं हुए। इसी कारण मेरे हृदय में प्रतिशोधाग्नि का समावेश हो गया और मैं उपमन्यु का शत्रु बन गया। मैंने उस का आश्रम जलवाया—उसे सरोवर में डुबो दिया और राजा आरुणि को तुम्हारे लिये उकसाया। मैं जानता हूँ देवि ! मैं जानता हूँ भद्रे ! तुमने बूढ़े आरुणि को ठुकराया—अपमानित किया-आह ! और इसके फलस्वरूप राजा ने तुम्हें वेश्यावृत्ति का दण्ड दिया। मैं जानता हूँ वह मेरा पाप था। मैंने तुम्हें माँगा और पा गया, तुम ऋषि-कन्या से राजरानी बनने के बजाय ऋषि-पत्नी बन गयीं। आह ! आह !...पानी ! मैं पापी हूँ—उषे ! मैं पापी हूँ, मुझे क्षमा कर दो देवि !'

उषा उस ओर देखना भी नहीं चाहती थी कि सहसा उसके कानों में—

'दुःशीलो दुर्भगो वृद्धो जड़ो रोग्यधनोऽपि वा।
पतिः स्त्रीभिर्नहातव्यो लोकेप्सुभिर पातकी॥

मन्त्र-ध्वनि गूँज उठी। वह चीख उठी—'प्राणेश्वर !' और धीरे-धीरे कल्कि के कर्कश-जीर्ण शरीर को सहलाने लगी। उसके अश्रु झलक रहे थे, किन्तु पति-निधन के शोक में अथवा किसी की याद में, कल्कि का शरीर जीर्ण काष्ठाकार और बेतुका था और शालिनी ..? शालिनी का शरीर गुदगुदे भेड़े-सा मुलायम और गर्म, सम्भवतः वह अन्तर नाप रही थी। 'कितना अन्तर है शालिनी और कल्कि में ?' जब उसने उसे देखा था—उसे पाया था, तो लगा था मानों वे एक दूसरे को युगयुगों से जानते हों। देव-सा सुदृढ़-सुडौल शरीर, उलझे-इठलाते अस्त व्यस्त केश, लगा था मानों वह साक्षात देवावतार था। वह उससे प्रेम करता है, वह भी उसके सैनिक से चौड़े सुन्दर वक्षस्थल के कोने में अपना एक स्थान चाहती है। एक दिन ग्रीष्म की लजीली शाम को संसार-यात्रा से थका-मांदा मार्तण्ड पश्चिमी अङ्क में सोने चला गया था; उसने उसे महानद के तट पर देखा था। कमंडलु भरते हुए जब वह गिर पड़ी तो उसने उसे अपने सुडौल बाहुओं का सहारा दे उठाया। वह कह रहा था—'देवि ! सुरबाले ! तुम कौन हो ?' उत्तर में वह कुछ न कह सकी—कुछ न कह सकी। लगता था वह उसे सदा अपने बाहुओं में बांधे रहे और वह कुछ न कहे। वह प्रथम मिलन था। तत्पश्चात् वह प्रतिदिन ही उसे महानद के सूने तट पर मिलता, वे पहरों एक दूसरे में अपना अस्तित्व खोजने का प्रयास करते। आह ! वे कितने मधुर क्षण थे ? जब अर्ध-रात्रि को कल्कि कुशासन पर प्रगाढ़ निद्रा में निमग्न हो जाता और वह दही से श्वेत चाँद की शीतल चाँदनी में शालिनी के साथ प्रकृति माता की गोद में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचरण करती। वे क्षण वह न भुला सकेंगी। किन्तु जब कभी शालिनी कह उठता—'देवि! मैं तुम्हारे कुल पति के समक्ष लग्न-प्रस्ताव रखूँगा। मुझे आशा है वे आज्ञा दे ही देंगे—हो सकता है पूज्य पितामह से उनका शत्रुत्व था; किन्तु उन्हें मरे तो आज वर्षों गुजर गयीं।'

तो उसका हृदय भयभीत खरगोश के मासूम बच्चे-सा धड़क उठता और उसके रुई से कोमल शरीर पर कड़े कांटे उभर पड़ते।

'आह! उषे!!...' ऋषि लड़खड़ाते शब्दों में बर्राया। उषा की विचार-शृङ्खला टूटी।

'उषे!...उषे! तुम जाग रही हो उषे!...धन्य उषे! तुम साक्षात् अनुसुइया की अवतार हो।'

उषा का हृदय जोर से धड़का मानों बादल कड़के, बिजली चमकी और गिर गई। अनुसुइया? और वे पत्नियाँ!...

दुःशीलो दुर्भगो वृद्धो जड़ो रोगयाधनोऽपि वा।
पतिः स्त्रीभिर्नहातव्यो लोकोसुर पातकी॥

उसका सतीत्व रो उठा, नारीत्व के प्रति उसका हृदय चीत्कार कर उठा। ऋषि कह रहे थे—

'विश्व मुझे अष्टवक्रम् मुनि के नाम से विभूषित करता है, मेरे अष्टांग भङ्ग हैं। किन्तु कोई नहीं जानता यह मेरे पापों का प्रायश्चित है। उषे! इसे कोई नहीं जानता...कोई नहीं जानता उषे! मैंने एक नारी का सतीत्व छीनना चाहा और इसी के परिणाम स्वरूप मुझे यह फल मिला। आः देवि! वे आ गये महर्षि राघव के साथ काली आकृतियाँ यमदूतों की ही हैं। देखो देवि ये महर्षि राघव हैं। इनके चरण-स्पर्श करो देवि, ये तुम्हारे पूज्य पिता हैं देवि! देवि! राघव महर्षि तुम्हारे पिता हैं.. महर्षि राघव तुम्हारे पिता और मेरे शत्रु...' कहते हुए वे चीत्कार के साथ उठ बैठे, अन्य ऋषिगण तथा ऋषि-पत्नियाँ सभी दौड़े आये, किन्तु ऋषि ने पुनः नेत्र खोले और सभी को चले जाने का संकेत किया। सभी निराश उल्टे पैरों लौट गये। कल्कि ने गहरी साँस ली और उषा ने उसास खींची।

उसके हृदय में कई विचार टकरा कर खो रहे थे। अपने चिर अपरिचित पिता का नाम सुनकर वह आश्चर्य में पड़ गई...कौन राघव? कैसे उसके पिता? फिर पुरुष और नारी का जटिल प्रश्न एक प्रश्न था, बड़ी समस्या थी, कल्कि पापी है—दुराचारी है—ढोंगी है। उसे विश्व 'महात्मा' कह पूजता है? तो उसने क्या पाप किया है? उसे भी तृप्ति चाहिए, प्यार चाहिए। शालिनी उसके योग्य था, उसने उसे अपना सब कुछ समर्पित कर दिया तो क्या पाप था।

सम्भवतः शास्त्रानुसार एवम् समाजानुसार हो, किन्तु उसका अन्त?...प्रायश्चित् केवल प्रायश्चित् किन्तु क्यों? वह इससे प्रेम करेगी। कल्कि की मृत्यु-शैया पर उसकी डोली सजेगी...तत्पश्चात्...इसके बात...संसार नारी को धिक्कारेगा।

कल्कि कराहे और पुनः कहना आरम्भ किया, लगा पुनः कुछ कहने को लौट आये।

'मैं कुलपति राघव का शत्रु था, इसलिए कि तुम्हारी माता 'मेघवती' उससे प्रेम करती थी, वह राज कन्या थी, मैं उसका प्रेम प्राप्त करना चाहता था। राघव ने उससे गुप्त प्रेम किया और जब तुम्हारे जन्म ने आकर उस अपराध का अन्त कर भेद खोलना चाहा तो उसने तुम्हें 'उपमन्यु महर्षि' के आश्रम में फेंक दिया। मैंने तुम्हारी माता से बलात्कार करना चाहा किन्तु उसने मुझे धोखे से रोक, ऊँची उपत्यका से धकेल दिया और मेरा शरीर चूर-चूर हो गया। किन्तु इस पर भी दुर्दैव ने मुझ दुराचारी को जीवित रखा, कुलपति बना दिया और मैंने राघव को मौत के घाट उतारा। मैं तुम्हारा पितृ-भक्षक हूँ। तुम्हारी माता ने विषपान कर लिया।'

उषा मानों भयङ्कर देवी बन गयी, 'प्रतिशोध! उसका पति उसका पितृ-भक्षक पापी, दुराचारी कल्कि'! उसे लगा मानों तपोवन जल उठेगा और वह ऋषि का गला घोंट देगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी मृत्यु अब निकट आ पहुँची है देवि ! तुम अपने बड़े भ्राता कुलपति 'शालिनी' के पास चली जाना। वही तुम्हारा सहोदर भाई है। ..कुलपति राघव-पुत्र शालिनी।

वायु का प्रबल झकोरा आया, श्वान रो उठे और उषा चीख उठी—भयानक चीत्कार...आँधी थम-सी गयी। शालिनी उसका भ्राता ! सहोदर भ्राता ! हा दैव ! यह क्या ? अपराध, भयानक अपराध ! और इसका अन्त प्रायश्चित् मृत्यु ! वह मूर्च्छित हो गयी।

ऋषि-गण दौड़े, 'कल्कि' का शव पड़ा था, बाजू में उषा मूर्च्छित पड़ी थी। अम्बर मेघाच्छादित था किन्तु बाहर नूतन उषा खिल उठी थी। महर्षि 'कल्कि' का निधन...फिर उषा नहीं जागी।

राज्याधिकारी एवम् अन्य ऋषि कुलपतियों के साथ राजा हवन कर रहा था। वेद-मन्त्रों की ध्वनि धरातल से उठ अम्बर में छा मेघों के पार गूँजती थी, सभी ऋषि शोकातुर एवम् मौन थे। सभी के सभी के नेत्र धरा चूम रहे थे, केवल युवक कुलपति 'शालिनी' ऋषि-कन्याओं के समूह में किसी को खोज रहा था। धीरे-धीरे संध्या नियराई, सभी कल्कि ऋषि के जलदाह की क्रिया हेतु व्यस्त थे। ऋषि-पत्नियाँ उषा को घेरे बैठी थीं। उषा अभी भी मूर्च्छित थी। ऋषि की अर्थी उठी, जन-समूह उसके साथ चला, पावन ब्रह्मपुत्र में उस दिन भयानक बाढ़ आयी थी। नद शङ्खनाद-ध्वनि से गरज कर बह रहा था, कूल टूटे जा रहे थे।

ऋषि की अर्थी तट पर आ पहुँची। क्षितिज के पार भगवान् भास्कर अस्ताचल को जा रहे थे। इसी तिथि को इसी समय उषा ने शालिनी से इसी तट पर मिलन निश्चित किया था।

वेद-मन्त्रों से पुनः अम्बर एक बार गूँजा और शव बहा दिया गया। ऊंचे टीले से साथ ही एक भयानक स्त्री-कण्ठ की चीत्कार गूँजी...हा दैव ! हा हन्त ! कोई धक् से जल प्रवाह में कूद गया। ऋषि-पत्नियाँ दौड़ी आयीं देखा कि उषा मूर्च्छा जागते ही झपट कर दौड़ी और नद में कूद गयी।

सभी ने खोजा, किन्तु उषा न मिली। तपोवन में मृत्यु-सा सूनापन था, तत्पश्चात् उषा के आदर्श त्याग एवम् आत्म-हत्या की चर्चा।

'उषा साध्वी थी, सच्ची सती थी। अपने पति के साथ उसने प्राण त्याग दिये।'

यही किंवदन्ति आज भी पहाड़ी ग्रामों में प्रचलित है, किन्तु कोई नहीं जानता कि वहीं एक अपराध का अन्त था।

(वीणा से)

प्रचार और पुरस्कार

दीदी की ग्राहिकाओं से निवेदन है कि वे 'दीदी' के प्रचार में हाथ बटाएँ और पुरस्कार प्राप्त करें। नियम ये हैं :—

(१) जब कभी कार्यालय को पत्र लिखें उसमें अपनी किसी ऐसी प्रिय सहेली का पता भी लिख दें जो 'दीदी' की ग्राहक बन सकती हों।

(२) पता प्राप्त होने पर आपकी सहेली के पास 'दीदी' का नवीनतम अङ्क अवलोकनार्थ भेजा जायगा और उनसे ग्राहक बनने की प्रार्थना की जायगी।

(३) यदि वे ग्राहक बन गयीं तो आपकी सेवा में १।) नकद या २) मूल्य का उपन्यास (दो में से एक जो भी आप चाहेंगी) उपहार स्वरूप भेजा जायगा।

निवेदिका—प्रेमलता देवी,
सञ्चालिका 'दीदी' कार्यालय
इलाहाबाद–२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'दीदी' का ध्येय प्रत्येक मामले में पाठिकाओं को व्यक्तिगत सलाह देना भी है। इसलिये पाठिकाओं से निवेदन है कि यदि आपके सामने कोई ऐसी समस्या हो तो उत्तर के लिये =) के स्टाम्प से युक्त अपने पते का लिफाफा भेजें। इस सम्बन्ध में समस्त पत्र व्यवहार गुप्त रखे जाते हैं। श्यामाबाई मार्फत 'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद—२।

आपको कुछ पूछना है?

नीच मनोवृत्ति

प्रश्न—मैं एक बड़ी संस्था में नौकर हो गई हूँ और अपने काम से बहुत खुश हूँ। पर मुझे एक बात का बहुत दुःख है। वह यह कि जो महाशय इस विभाग के अध्यक्ष हैं, अकारण मुझे अपने कमरे में बुलाते रहते हैं। वे विवाहित पुरुष हैं और कई लड़कों के पिता हैं। पर उनकी नीच मनोवृत्ति पर मुझे रोष आता है। क्या करूँ?

उत्तर—पहला तो यह काम कीजिये कि इन महाशय को आपके व्यवहारों से यह आभास मिल जाय कि उनकी यह मनोवृत्ति आपको पसन्द नहीं है। इस तरह न मानें तो उनसे स्पष्ट कहिये कि वे अपने आपको हास्यास्पद बना रहे हैं। सम्भव है, इससे काम चल जाय। इतने पर भी वे अपनी आदत से बाज न आवें तो अपने माँ-बाप से कहिये और उनकी सहायता लीजिये या फिर मामले को ऊँचे अधिकारियों तक पहुँचाइये। अच्छा यह होगा कि आप यह नौकरी छोड़ दें या अन्य विभाग में अपनी बदली करा लें।

स्तनों में फोड़ा

प्रश्न—जब मेरा पहला बच्चा हुआ था। मेरे स्तन में उसे दूध पिलाते-पिलाते फोड़ा हो गया था मुझे दो बार आपरेशन कराना पड़ा। अब मेरा दूसरा बच्चा होने वाला है। मैं डर रही हूँ कि कहीं फिर मेरे स्तन में फोड़ा न हो जाय?

उत्तर—कोई आवश्यक नहीं कि शिशु को दूध पिलाने में स्तन में फोड़ा हो ही। बच्चे को पहले दिन दूध पिलाते समय प्रत्येक स्तन में १ मिनट से अधिक न लगाएँ; बारी-बारी से उसे बदलती रहें। इस समय को क्रमशः बढ़ावें और पहले सप्ताह के अन्त में प्रत्येक स्तन में बारी-बारी से ५ या ६ मिनट तक दूध पिलावें। स्तन में फोड़ा इसलिये होता है कि दूध पिलाने में दबाव पड़ने से स्तन की घुन्डी फट जाती है। क्रमशः अभ्यास बढ़ाने से स्तन की घुन्डियों के फटने का डर नहीं रहता। यदि स्तन की घुन्डी न फटने पाये तो फोड़ा हो ही नहीं सकता। बस इसी बात का ध्यान रखें।

यह भी ध्यान रखें कि स्तन में दूध पड़ा रह जाता है तो उससे छूत उत्पन्न होकर फोड़ा हो जाता है। अतएव प्रत्येक बार बच्चे को दूध पिलाने के बाद अगर स्तन में दूध रह जाय तो उसे निचोड़ कर निकाल दें। स्तन की घुन्डियों पर कोई औषधि या मलहम आदि न लगावें, हाँ उन्हें साफ रखें। इस तरह सावधानी बरतने से आप निश्चिन्त होकर अपने शिशु को दूध पिला सकेंगी और इस रोग से बची रहेंगी।

—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत नाट्य-परम्परा

नयी दिल्ली में कालिदास के अमर संस्कृत नाटक शकुन्तला से राष्ट्रीय नाटक समारोह का श्रीगणेश हुआ। यह समारोह भारतीय नाट्य-परम्परा के इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है।

सन् १७८६ में सर विलियम जोन्स ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया था जिससे यूरोप वालों को कालिदास की इस अद्वितीय रचना के सौंदर्य का परिचय मिला। इस नाटक का गेटे पर गहरा प्रभाव पड़ा और सम्भवतः शकुन्तला की प्रस्तावना से ही उन्हें 'फाउस्ट' प्रस्तावना लिखने की प्रेरणा मिली। आज 'शकुन्तला' की गणना विश्व के महान् नाटकों में होती है।

संस्कृत नाट्य-परम्परा में केवल कालिदास के ही नाटक सब कुछ हों, यह बात नहीं है। कालिदास ने स्वयम् 'मालविकाग्नि मित्र' की प्रस्तावना में 'भास', सौमिल्ल और 'कविपुत्र' जैसे प्रथित यश नाटककारों का उल्लेख किया है।

संस्कृत में नाटक की परम्परा के आरम्भ के बारे में निश्चित् कुछ नहीं कहा जा सकता। ऋग्वेद की ऋचाओं में हमें कथोपकथन के रूप में नाटक के तत्व मिलते हैं। यज्ञ, उत्सव, नृत्य और कथा आदि भी नाटक के श्रोत हैं।

चीनी तुर्किस्तान में पुरातत्व वेत्ताओं को ताड़-पत्रों पर लिखे तीन नाटकों के कुछ खण्ड मिले। इन में से एक रचना अश्वघोष की है जिसे बौद्ध परम्परा कनिष्क का दरबारी कवि मानती है। यह नाटक बड़ी प्रौढ़ रचना है। और इससे पता चलता है कि नाटकों की रचना इसके बहुत पहले से होती आ रही थी। भास, भवभूति, शूद्रक, विशाखदत्त और श्री हर्ष संस्कृत के अन्य प्रख्यात नाटककार हैं।

संस्कृत नाटकों और यूरोप के नाटकों में अनेक समानतायें मिलती हैं। जैसे संस्कृत के विदूषक और एलिजाबेथ कालीन नाटकों के 'फूल' (मूर्ख) में अधिक अन्तर नहीं है।

अन्य भाषाओं के नाटकों की तुलना में संस्कृत नाटकों की एक विशेषता यह भी है कि ये दुखान्त नहीं होते। ११ वीं शताब्दी के नाट्य-शास्त्री धनन्जय का मत है कि नाटक का उद्देश्य लोगों को आनन्द देना है और यह बात है भी ठीक। एक बात और भी है. पश्चिमी आलोचकों का कहना है कि भारतीय दर्शन निराशावादी और ससार से विमुख है। परन्तु संस्कृत के कुछ नाटकों में ऐसी मस्ती है जो यूरोप के सबसे मजेदार नाटकों से टक्कर ले सकती है। शूद्रक के 'मृच्छकटिक' नाटक में तो कुछ स्थल ऐसे हैं कि दर्शक हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाते हैं। मसलन जहाँ हारा हुआ जुआरी कर्जदारों से बचने के लिए मन्दिर में मूर्ति बन कर खड़ा हो जाता है और कर्जदार यह देखने के लिए उसे चिकोटी काटते हैं कि मूर्ति सचमुच की है या नहीं। जब वह इस पर भी हिलता-डुलता नहीं, तो वे बैठकर जुआ खेलने लगते हैं और मूर्ति बने हुए जुआरी राम जुये का आकर्षण न रोक सकने के कारण बोल उठते हैं।

संस्कृत नाटकों में दुख की ओर से आंखें नहीं मूँदी गयी हैं, पर हमारे साहित्यिकों का विश्वास है कि अन्त में सत्य या सुख की ही विजय होती है। यूनानी नाटककार इस समस्या को नहीं सुलझा सके। यूनानी नाटकों के पात्र नियति के हाथों में कठपुतली के समान हैं और नियति के आदेश से हत्या करते हैं. इस प्रकार हिंसा का क्रम चलता है और नाटक दुखांत हो जाता है। संस्कृत नाटककार भी भाग्य को मानते हैं, साथ ही कर्म को भी, जिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चकोरी

लेखक, श्री सुन्दरलाल श्रीवास्तव 'प्यासा'

चकोरी अपने स्वप्निल दृग के जल से अर्घ्य चढ़ाती रही। चढ़ाती रही, पर निशापति उन स्नेहासिक्त मुक्ताओं को सँजो कर न रख सका, ओस रूप में धरती पर बिखेर दिया।

चकोरी की प्यार भरी नादानी देख कर धरती हँसती रही। चकोरी आहों और अङ्गारों से नित्य अपने आपको जलाती रही। वह अपनी व्यथा, दारुण निराशा किसे व्यक्त करती?

उसके प्राण जलते रहे, साँसें सुलगती रहीं, आहों का धुआं निकलता रहा, पर चन्द्र? वह निर्मम जो ठहरा !!

प्रकृति को आखिर चकोरी के प्रति हमदर्दी हुई स्वप्न लोक से उड़ कर काली-काली घटायें भूपर छा गयीं। परिवर्तन ने करवट बदला। करवट बदला कि चकोरी में भी परिवर्तन होने लगा। काली-काली घटायें नन्हीं-नन्हीं बूँदें बरसाने लगीं। चकोरी का दग्ध हृदय कुछ शांत हुआ। विस्मृति के घटाटोप में चाँद छिपने लगा। चकोरी के कर्ण कुहरों में बाँसुरी की मादक तान हिलोरें लेने लगी। स्वर लहरी उसके चिर वियोगी चकोर के हृदय वीणा की करुणा झङ्कार थी।

चकोरी की नन्हीं-सी नेह नगरिया उस अनादि एवम् अव्यक्त सङ्गीत से खिल कर नाच उठी। श्रद्धा के अर्द्ध विकसित सुमन ले वह तन्मयता पूर्वक वह रागिनी सुनती रही। सुनती रह कि किसी ने उसे पुकारा—'चकोरी...च...को...री!'

निस्तब्धता भङ्ग हुई। चकोरी चौंक पड़ी।

'कौन हो तुम? चन्द्र...?'

'चन्द्र नहीं...तुम भूलती हो चकोरी! बावरी हो गई हो। क्या नहीं जानती कि चन्द्र निर्मोही है? यह तो मैं हूँ...मैं...तुम्हारा चिर वियोगी चकोर।'

'चकोर! मेरे चकोर!! कहाँ हो तुम?' उसकी स्वर लहरी प्रस्तरों व वायु के झोंकों से टकराने लगी।

'चकोरी...मैं यहाँ हूँ...!'

'च...को...र!'

उड़ चली वह सुदूर प्रान्त की ओर अपने चकोर की टोह में।

रजनी खिलखिला उठी उसके मिलन प्रयास पर।

से मनुष्य अपने प्रारब्ध का निर्माण करता है। 'शकुन्तला' में ऐसे प्रेम की कथा है जो प्रकृति के शान्त वातावरण में पला। वह प्रेम मधुर था, साथ ही अपरिपक्व भी। क्योंकि उसे जीवन के उतार-चढ़ाव का सामना नहीं करना पड़ा था। विरह की अग्नि में तप कर यह प्रेम पुष्ट और पवित्र हो गया। दुख से सुख, मनुष्य के जीवन में उसकी समस्या का यही समाधान है।

दीदी के ग्राहकों को

बालबोध केवल २) में

बालबोध छोटे बच्चों का सरल और सुन्दर कहानियों का मासिक पत्र है। इसका वार्षिक मूल्य ३) है। परन्तु 'दीदी' की १६ वीं वर्षगांठ के उपलक्ष में ग्राहकों को यह केवल २) वार्षिक मूल्य में भेजा जायगा। 'दीदी' के समस्त ग्राहकों से निवेदन है कि जिनके घर में छोटे बच्चे हैं वे इस रियायत से लाभ उठावें। बालबोध वी० पी० से नहीं भेजा जायगा। वार्षिक मूल्य मनिआर्डर से आना चाहिए।

पता—मैनेजर 'बालबोध' दीदी कार्यालय
इलाहाबाद—२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाय

लेखक, डाक्टर एम० पी० रञ्जन, आसनसोली

चाय का कब और कैसे चलन हुआ? इसमें क्या तत्व हैं, इसके पीने से क्या लाभ या हानि है? चाय कैसे बनाना चाहिए? कब न पीना चाहिए आदि बातें विद्वान लेखक ने बड़े ही सुन्दर ढङ्ग से बताई हैं।

पेय पदार्थों में चाय का स्थान यदि सर्वोपरि कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। आज की दुनिया में, चाय का पीना, पिलाना फैशन ही नहीं रह गया बल्कि मानव-सभ्यता का एक अंग बन गया। अब तो हम भारतीयों के घरों और सामाजिक उत्सवों में इसे महत्वपूर्ण स्थान मिल गया है। अभ्यागत के स्वागत में मिठाई और निमकीन के साथ चाय का प्याला पेश किया जाना सामाजिक शिष्टाचार में शामिल किया जाता है।

संक्षेप में, इसका प्रवेश और प्रभाव सर्वत्र व्यापक है। सभी देश और जलवायु के निवासी, बड़े से छोटे (धनी से गरीब तक) सभी क्रमशः इसके उपासक बनते जा रहे हैं। इसकी खपत, हाल ही में, गरीबों में अधिक होने लगी है—एक ही कारण है—आर्थिक दुरवस्था! अनुमान किया गया है कि आज संसार के एक ही तिहाई लोग चाय पीते हैं और बुद्धिजीवी वर्ग ही इसका सब से जबर्दस्त गुलाम है। मानसिक कार्य में पर्याप्त सहायता पहुँचाने के कारण ही यह दिमागी काम करने वालों का परम प्रिय पेय बन गया है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

सन् ३५० ई०—चाय के बारे में चीनी पुस्तकों में सर्वप्रथम उल्लेख। सन् ७८० ई०-चाय के सम्बन्ध में प्रथम चीनी पुस्तक का प्रकाशन। सन् १६१० ई० डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा सारे यूरोप में चाय का प्रचार। सन् १६६४ ई०- ईस्ट इण्डियन कम्पनी द्वारा इङ्गलैण्ड के बादशाह चार्ल्स द्वितीय को चाय का उपहार समर्पण। सन् १६६६ ई०-यूरोप में चाय के फैशन की आंधी। १८३२ ई०-चीन से सारे संसार के लिए चाय का निर्यात। सन् १८८० ई०-भारत वर्ष में चाय का सर्वप्रथम अनुसन्धान, कुछ तितलियों का इङ्गलैण्ड भेजा जाना। ज्ञात हुआ कि ये तितलियाँ अपना जीवन-निर्वाह चाय की पत्तियों पर करतीं थीं, अतः इसकी खोज आरम्भ, भारत तथा लंका में चाय की बागवानी का श्रीगणेश।

विश्लेषण

१—पानी	५.०	से ८.०	प्रतिशत।
२—कैफिन	२.५	से ५.०	,,
३—नाइट्रोजेन	४.७५	से ५.५	,,
४—टैनिन	७.०	से १४.०	,,
५—क्षार	५.०	से ५.७८	,,
६—घुलनीय पदार्थ	३८.०	से ४५.०	,,

प्रभाव

१—'थीन' या 'कैफिन' (२ प्रतिशत):—चाय में पाई जाने वाली सब से तीव्र वस्तु—कैफिन से मिलता-जुलता पदार्थ, उत्तेजना शान्ति और स्फूर्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संचारक, स्नायु तथा स्नायु मण्डल पर विशेष प्रभाव, ताजगी और नवीन उमंग का प्रदाता।

२—टैनिन (१५ प्रतिशत):—शक्तिशाली मलावरोधक, 'पेप्सिन' नामक पाचक रस पर प्रभाव, 'अल्ब्युमेन' जमाने वाला, भूख मिटाने वाला, अंतड़ियों की गति विधि में रुकावट पहुँचाने वाला, कब्ज पैदा करने वाला। अत्यधिक तथा लगातार सेवन से पाचन शक्ति का ह्रास, पेट में जलन तथा स्नायविक दुर्बलता।

३—उड़नशील तैल (४ प्रतिशत):—सुगन्धित तैलीय पदार्थ जिसके कारण चाय में सुगन्ध और स्वाद का अनुभव, चाय में पहले से तो मौजूद नहीं मगर चाय सुखाते समय मिलाया जाता है, 'डिजिटेलिस' नामक दवा की तरह हृद्गति को स्थिर करने वाली वस्तु, मानसिक चेतना तथा जागृति पैदा करने वाला मगर अत्यधिक सेवन से पक्षाघात (लकवा) होने का भय।

४—साधारणतया:—काफी यानी कहवे की भाँति व्यवहृत, पीने के बाद ही शरीर में स्फूर्ति का संचार, पक्वाशय के स्नायुओं में उत्तेजना, मस्तिष्क में इस उत्तेजना का पहुँचना फलतः हृदय की गति में वृद्धि, कुछ देर को सारे शरीर में स्फूर्ति तथा उत्साह का संचार, कार्य करने की क्षमता में क्षणिक वृद्धि, थोड़ी देर बाद आलस्य का आगमन और सुस्ती का छा जाना।

कड़ी चाय का नियमित और अत्यधिक सेवन करने से पक्वाशय की कलाओं (झिल्लियों) में प्रदाह की उत्पत्ति हो कर इनका कड़ा हो जाना, फलतः पाचक रसों में कमी, पाचन क्रिया में बाधा, दीर्घ काल तक सेवन करने से मलबन्ध (कोष्ठबद्धता) की शिकायत।

लाभ

१—उत्तेजक पदार्थ—शारीरिक परिश्रम करने में क्षमता की वृद्धि, शारीरिक एवं मानसिक शक्ति का विकास, थकावट दूर, विश्रान्ति का अनुभव, श्वास तथा रक्त का संचालक केन्द्रों का उत्तेजित होना, फलतः 'कारोनरी आर्टरी' (हृदय की धमनी) का विस्तार

२—स्नायुओं पर प्रभाव, मस्तिष्क की सफाई, चिन्ता का नाश, विचारों में तीव्रता, मानसिक जागृति।

३—गुर्दों पर प्रभाव पड़ने के कारण रक्त संचालन सुचारू रूप से होना, पेशाब का अधिक होना। मूत्र-प्रणाली की सफाई।

४—फुफ्फुसों द्वारा 'कार्बोनिक एसिड गैस' का तेजी से निकलना, फलस्वरूप श्वेत सार एवं स्नेह के पाचन में सुविधा।

५—शारीरिक और मानसिक थकावट को दूर करता है।

६—उचित मात्रा में सेवन करने से न तो नुकसानदेह, न आदत डालने वाली और न कोई बुरा प्रभाव छोड़ने वाली।

अत्यधिक सेवन से हानि

(क) स्नायु मण्डल—१ बेचैनी और घबड़ाहट, २ मानसिक उत्तेजना तथा दिमाग की चंचलता (अस्थिरता) ३ स्पर्श-ज्ञान का नाश, ४ मांस फड़फड़ाना, ५ चक्कर और सुस्ती, ६ सर दर्द, ७ मानसिक चिन्ता, ८ कंपकंपी, ९ कलेजे की धड़कन में वृद्धि, १० अनिद्रा, ११ लकवा, १२ पागलपन।

(ख) पाचक संस्थान—१ मन्दाग्नि, २ कब्जियत, ३ नशा, ४ बेचैनी, ५ अपच तथा कमजोरी, ६ तन्द्रा, चमड़े का कान्तिहीन हो जाना, झुर्री पड़ जाना, स्वास्थ्य भंग (कार्य शक्ति का ह्रास, शारीरिक गठन का नाश, जवानी का अन्त तथा समय से पूर्व ही बुढ़ापे का आगमन)

उपद्रव

(क) साधारणतः—मधुमेह, अनिद्रा, गठिया, फोड़े, फुंसी, बर्रे, नामर्दी।

(ख) रक्त सम्बन्धी:—कलेजे की धड़धड़ाहट, नाड़ी की गति वृद्धि हृद्रोग, कलेजे में दर्द, रक्ताल्पता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ग) पाचन सम्बन्धी—पक्वाशय प्रदाह मन्दाग्नि परिणाम शूल (पेट में घाव) कब्ज 'औक्जेलूरिया' यानी पेशाब में बालू दाने का जाना।

चाय बनाने की विधि

(क) साधारणतः—सच पूछिये तो चाय को सिझाना चाहिए। सब से पहले पानी को खूब उबाल लें। खूब खौल जाने पर उसे चाय की पत्तियों पर उड़ेल दीजिये। पांच मिनट तक वर्तन ढक कर सीझने का मौका दीजिये। नियम के अनुसार, प्रति व्यक्ति के लिये एक चम्मच और वर्तन के लिये एक चम्मच अधिक चाय लीजिये। आवश्यकतानुसार दूध और चीनी डालकर गरमा गरम पीजिये।

(ख) आमिष टी—पाव भर मांस लेकर उसके खूब छोटे २ टुकड़े बना लीजिये। एक वर्तन में दो सेर पानी में उसे डाल कर मन्द आंच पर चढ़ा दीजिये। वर्तन का मुह हमेशा ढंका रहे। ४-५ घंटे तक सीझने दीजिये। उतार कर दो घंटे रख दीजिये। बाद में खूब मथ कर और पानी निथार कर पीने दीजिये।

(ग) मूली की चायः—एक पाव मूली ले कर उसे दो सेर पानी में खूब खौलाइये। चाय की भाँति दो घन्टे तक मन्द आंच पर सीझने दीजिये, बाद में उतार कर छान लें। ठंडा या गर्म पियें।

(घ) आयुर्वेदिक चायः—थोड़ी सी अदरख, काली मिर्च, तुलसी की पत्ती, गुलबनफशा, अगियाखर, लौंग आदि को महीन कूट, पीस कर चाय की भाँति तैयार कर लें। बड़ा ही स्वादिष्ट तथा कफ-खांसी में हित कर होगा।

मत पीजिये

चाय उस समय हर्गिज न पीजिये जब कि आप को कब्जियत, मन्दाग्नि, पक्वाशय प्रदाह, रक्ताल्पता अनिद्रा तथा कलेजे की धड़धड़ाहट की शिकायत हो।

आयुर्वेद का मत

'चाय पहाड़ी प्रदेशों में उत्पन्न होती है। इस की पत्तियां काली सी होती हैं। यह अवसाद मिटाती है, बल बढ़ाती है, ज्वर का नाश करती है, कफ और खांसी दूर करती है आलस्य हटाती है, पसीना लाती है, अतः गर्मियों में सब से ज्यादा ठंढक देने वाला पेय है। यह दूध और चीनी के साथ पी जा सकती है।'

उपसंहार

अन्त में, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि:—

संसार के प्रचलित पेयों में चाय, पानी को छोड़ कर, सब से सस्ती है।

चाय पीने, पिलाने से मित्रतापूर्ण वातावरण पैदा होता है।

यह एक स्वदेशी अध्यवसाय है। भारतवर्ष में प्रति वर्ष लगभग ५० करोड़ पौएड चाय पैदा होती है जिसमें १० करोड़ पौएड के करीब इसी देश में खप जाती है शेष ४० करोड़ पौएड चाय अन्य देशों को निर्यात् किया जाता है। स्व पीने के बजाय यदि हम अधिक मात्रा में इसका निर्यात् कर सकें तो आर्थिक सुधार में पर्याप्त सहायता मिल सकती है।

चाय पीने से मानसिक स्फूर्ति के साथ साथ आनन्द भी मिलता है।

जिसके पास भरपूर खाने को हो उनके लिये उनके लिये यह पेय पदार्थ ठीक है।

नशीली और उत्तेजक वस्तु होने के कारण, इसके नियमित सेवक से, स्वास्थ्य भंग हो जाता है, मनुष्य का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक पतन हो जाता है।

चाय के बहुत से लाभकारी गुण वर्तन के पेंदे में जमी पत्तियों में रह जाते हैं। मनुष्य के शरीर पर चाय का वनस्पतिजन्य प्रभाव पत्तियों की तेजी के कारण होता है। इसलिये जापानी अपने चाय रसे (झोल) में इन महत्वपूर्ण खाद्यसारों का उपयोग करते हैं।

गर्मी के मौसम में 'स्वेद' ग्रन्थियों को चाय ठीक ठीक काम करने लायक बनाती है और जरा सा पसीना ला कर सारे शरीर को ठंढा करती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घरेलू दस्तकारियों तथा इन्डस्ट्रियल सम्बन्धी पुस्तकें

कटाई सिलाई शिक्षा ३॥), अपटूडेट फैशन बुक २॥), एम्ब्राइडरी (कढ़ाई) शिक्षा ४), बुनाई शिक्षा (स्वेटर आदि) ४), सिलाई मशीन मरम्मत ३), नवीन पाक शास्त्र ४), अचार चटनी मुरब्बा बनाना ३।), रंगाई धुलाई व ड्राई क्लीनिंग शिक्षा ३।), गृह उद्योग (२५० घरेलू धन्धे) ४), आधुनिक साबुन शिक्षा ३॥), एलोपैथिक इन्जेक्शन बुक ५), पशु चिकित्सा ३), घर में वैद्य २॥), सचित्र बूटी प्रचार वैद्यक ३), आयुर्वेद चिकित्सा सागर ४॥), कम्पाउडरी शिक्षा ३॥), एलोपैथिक डाक्टरी गाइड ५), आधुनिक एलोपैथिक गाइड १०), असली पुराना इन्द्रजाल ३), दक्षिण का सच्चा जादू ३), सावरी तन्त्र (सेवड़े का जादू) २॥), असली पुराना कोक शास्त्र ४), पहली सुहाग रात २॥), लव लैटर्स २॥), रति रहस्य (काम कला) ४), जादू मिस्मरेजम ३), हर प्रकार की स्याहियाँ बनाना ३।), पिंगल प्रवेशिका ३), हर प्रकार की बूट पालिस बनाना ३।), सुगन्धित तेल व इत्र बनाना ३।), मुँह देखने के शीशे बनाना ३।), बेकरी बिस्कुट आदि बनाना ३।), रंग-बिरंगी आतिश बाजियां बनाना ३।), खेती बागबानी शिक्षा ३), पति पत्नी पथ-प्रदर्शक ३), मोटर मिकैनिक गाइड ६), साइकिल मरम्मत गाइड ३), इलैक्ट्रिक गाइड ६), इलैक्ट्रिक वायरिंग ५), आयल इञ्जन गाइड ६), क्रूड आयल इञ्जन गाइड ६), ट्रैक्टर गाइड ६), हर प्रकार के रेडियो बनाना ८॥), वर्क शाप गाइड फिटर ट्रेनिंग ४), खराद शिक्षा टर्नर गाइड ३), कारपेन्टरी शिक्षा मिमारी सहित १०), लोको मोटो इञ्जन गाइड १२॥), तबला सितार बांसुरी गाइड ३), क्रूस्टल रेडियो सेट बनाना २), फोटो ग्राफी शिक्षा ३), असली तेजी मन्दी सट्टा ५), ज्योतिष शास्त्र ६), पामिस्ट्री (हस्तरेखा ज्ञान) ६), सरल हिन्दी इङ्गलिश टीचर २॥), सरल हिन्दी उर्दू टीचर २॥), बृहद चित्रकारी शिक्षा ४॥), सिनेमा मशीन आपरेटर गाइड ५), राधेश्याम रामायण ५॥), राम यश तुलसी कृत १२), अकबर बीरबल विनोद २॥), फिल्म एक्टर बन जाओ २॥), भूतनाथ २१ भाग २१), फिल्मी हारमोनियम गाइड ३), महाभारत सम्पूर्ण १२), श्री मदभागवत गीता ३), माधव निधान ७), श्री प्रेम सागर ४), गोपी चन्द ३॥), भक्त पूरणमल ३॥), चन्द्रकान्ता (२४ भाग) २१), चन्द्रकान्ता उपन्यास ३), फिल्मी अप्सराएँ २॥), स्त्री सुबोधनी ७), आरमेचर वाइडिंग ६), बंगाली मिठाइयां बनाना ३।)

पुस्तकें वी० पी० द्वारा मँगाने का पता :— ❀प्रत्येक पुस्तक का डाक-व्यय पृथक् होगा❀

काटेज इण्डस्ट्री (DA-12) पी० बी० १२६२ अंगूरी बाग, देहली—६

इन बातों को दृष्टिकोण में रखते हुए, उचित तो यह है कि चाय का व्यवहार पेय पदार्थ के रूप में सिर्फ उसी समय किया जाय जब कि उसकी आवश्यकता हो, नित्य सेवन तथा इसकी आदत का गुलाम बनना ठीक नहीं, उचित मात्रा में सेवन करने से दिमागी काम करने वालों को यह काम करने की क्षमता तथा ताजगी देती है किन्तु नियमित और अत्यधिक सेवन से बड़ा अनिष्ट होता है।

पसीना आ गया है

एक साहब निहायत काले थे, रात को धोके में उनके कपड़ों में स्याही लग गई पर उन्हें मालूम न हुआ। जब वह दोस्तों में बैठे तो एक दोस्त ने कपड़ों पर काले दाग देख कर पूछा कि लाला ! यह क्या ? एक मसखरे ने जवाब दिया—कुछ नहीं, जरा पसीना आ गया है।

—बनारसीदास, खोरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामयिक साहित्य

ग्रामों में नये जीवन का संचार

सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने पुस्तिकाओं की एक नयी माला का प्रकाशन आरम्भ किया है, जिसका उद्देश्य भारत के विशाल ग्रामीण जन-समूह में देश की एकता की भावना पैदा करना और भविष्य के निर्माण के लिए उत्साह उत्पन्न करना है। यह पुस्तिका भारत के हरेक ग्राम में पहुँचायी जायगी। इस माला की पहली पुस्तिका नवम्बर १४, १९५४ को निकाली गई है। इसमें आचार्य विनोबा भावेकी सरल और स्पष्ट वाणी में ग्राम धर्म के पांच सिद्धांत बताये गए हैं, जिनका उद्देश्य गांवों में नयी जिन्दगी पैदा करना है।

आचार्य विनोबा भावे का कहना है कि हरेक ग्रामवासी को धरती की सेवा का व्रत लेना होगा। धरती की सेवा में खेती ही नहीं, अन्य सभी देहाती धन्धे आ जाते है, जैसे कपड़े की बुनाई, अनाज की कुटाई, तेल की घानी आदि। गावों के इस्तेमाल की हरेक चीज गाँव की बनी होनी चाहिए। गाँव में कोई भी निजी दुकान न होनी चाहिए। जो दुकान होगी, उसमें हरेक का साझा होगा। जो गरीब होंगे, वे श्रम देंगे। आठ घंटे काम करने पर एक रुपए का शेयर माना जायगा। ग्राम धर्म के अन्य सिद्धांत ये हैं:—गांव के झगड़े आपस में ही निबटाये जायं, अदालत में न जायें। जब कोई बीमार हो तो उसे दवा दी जाये। सभी बच्चों की पढ़ाई का प्रबन्ध हो।

पंत जी का लड़कियों को उपदेश

सीतापुर के लड़कियों के कालेज में उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री पन्त जी ने मां के रूप में महिलाओं के महान कर्तव्यों की ओर लड़कियों का ध्यान दिलाते हुए कहा कि उनके जीवन का उद्देश्य हर प्रकार की कुरूपता का मिटाना होना चाहिए। और पुरुषों को अपने कर्तव्यों का समुचित ढंग से पालन करने के लिये प्रेरित करना चाहिए। उन्हें जीवन को अधिक सुखी और आकर्षक बनाना चाहिए।

महिला हितकारी केन्द्र में भाषण करते हुए पं० पन्त ने प्रशिक्षार्थियों का देहाती क्षेत्रों की महिलाओं से निकट संपर्क स्थापित करने की सलाह दी। आप ने बताया कि ग्राम वासियों का विश्वास प्राप्त करना उनके लिए अत्यन्त आवश्यक है। गाँवों में ग्राम सेविकायें ग्रहविज्ञान, परिवार नियोजन, सफाई तथा स्वास्थ्य रक्षा के सम्बन्ध में विशेष ध्यान दें।

सेविंग बैंक में जालसजी कम करने के उपाय

डाकखाने के सेविंग बैंक के हिसाब में जालसाजी की मात्रा कम करने के लिए, डाक और तार के महानिर्देशकने रुपया जमा करने वालों से कहा है कि वे अपनी पासबुकों को सावधानी से अपने पास रखें और अधिक दिनों तक डाकखाने में न रहने दें। रुपया जमा करने वालों को चाहिए कि वे रुपया जमा करने के बाद रसीद की प्रतीक्षा करें और यदि डाकखाने से रसीद उनके पास न पहुँचे, तो उसकी सूचना तुरन्त ही सम्बन्धित सुपरिन्टेन्डेंट या हैड पोस्टमास्टर को दें।

महिला मंत्रिणी के लिये बधाई

राज स्थान की प्रसिद्ध महिला कार्यत्री श्रीमती कमला कुमारी श्रोत्रिय ने अपने वक्तव्य में राजस्थान सरकार के नव निर्मित मंत्री-मंडल में श्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमला बहिन बैनीवाल को उपमंत्रिणी की भाँति मंत्री मंडल में लेने के लिए प्रान्त के प्रधान मंत्री उदारमना भाई मोहनलाल जी सुखाड़िया और उनके मंत्री मंडल को हार्दिक बधाई दी।

भारत को स्वतन्त्र हुए ८ वर्ष हो रहे हैं, तब से राजस्थान में और अन्य राज्यों में लोकप्रिय मंत्री मन्डल बनते रहे हैं। उसने महिलाओं के अधिकारों का कतई ध्यान नहीं दिया गया। यहीं नहीं जान-बूझ कर उपेक्षा वृति रक्खी गई। देर से ही सही अब श्री कमला बहिन बैनीवाल उपमंत्रणी बनाई गई है। अपनी योग्यता, काय कुशलता और निष्पक्षता से प्रान्त की सेवा कर सदा के लिये स्मरणीय छाप छोड़ जायगी।

उत्तर प्रदेश में महिला हितकारी योजना

इस योजन के अधीन प्रसूतिका की सेवा रेख तथा बच्चे के स्कूल जाने से पहले की अवस्था में उपयोगी कार्य करना है। महिला हितकारी योजना के अधीन १ हजार से अधिक महिला और लड़कियों को गृह दस्तकारियों जैसे दर्जीगीरी, पढ़ाई, बुनाई आदि के सम्बन्ध में ६२ केन्द्रों में ट्रेनिंग दी गई। लगभग ३२ हजार रोगियों की चिकित्सा की गई और लगभग ३ हजार प्रसूतिकाओं की प्रशिक्षित ग्राम सेविकाओं द्वारा परिचर्या की गयी।

राज्य में महिला हितकारी कार्य को बढ़ावा देने के लिए केन्द्रीय सरकार ने भी राज्य में दो गृह-विज्ञान प्रशिक्षण एवम् प्रसार केन्द्र खोलने का निश्चय किया है।

रेलवे टाइम टेबिल हिन्दी में

लोक सभा में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए, रेलवे उपमन्त्री श्री अलगेसन ने कहा कि रेलवे का अखिल भारतीय समय-विभाग (रेलवे टाइम टेबिल) हिन्दी में प्रकाशित हो गया है और उसकी प्रतियां बिक्री के लिए रेलों को १५ नवम्बर को भेज दी गई हैं।

नेहरू जी की वर्षगांठ पर चीनी प्रधान मंत्री की ओर से भारतीय बच्चों को उपहार

भारतीय प्रधान मंत्री की ६५वीं वर्षगांठ पर, प्रधान मन्त्री चाउ एन-लाइ ने, १३ नवम्बर को, भारतीय प्रधान मन्त्री जवाहर लाल नेहरू को बधाई का सन्देश और भारतीय बच्चों के लिए उपहार भेजे हैं। सन्देश इस प्रकार है :

प्रिय प्रधान मन्त्री जी,

आप की ६५वीं वर्षगांठ पर मैं भारतीय बच्चों के लिए ये सुप्रसिद्ध चीनी वस्तुएँ भेज रहा हूँ—चितकबरे हिरणों का जोड़ा, लाल कलगी वाले सारसों का जोड़ा और बीस प्रकार की १०० सुनहरी मछलियां, कृपया इन्हें स्वीकार कीजिए। मुझे आशा है कि ये उपहार, जो हमारे दोनों देशों के लोगों की मित्रता के प्रतीक हैं, उन्हें उसी प्रकार पसन्द आएँगे जिस प्रकार कि चीनी बच्चों को आशा (प्रधान मन्त्री नेहरू द्वारा चीनी बच्चों को भेंट की गई हथिनी—सम्पादक) पसन्द है।

लंठ के पद्य

आजमगढ़ के लोक प्रिय हास्यकलाकार श्री 'लंठ' का परिचय 'कर्मयोगी' में छपा है। ये पद्य उसी से लिए गए हैं :—

सरे बाजार में साड़ी
फिसलती रहती है इनकी;
यही भारत की ललनाओं
में योरप की निशानी है।

× × ×

पाउडर की कसम ! क्या कहूँ—
इन देशी 'मिसों' ने,
पालिश लगा के काला तवा,
'मून' कर दिया।

× × ×

जो पूछा मुंहासों से
चेहरा भरा है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो बोलीं बिलायत
की है य' मिठाई।

× × ×

पाँव उनका अब नहीं
धरती पर पड़ता है जनाब!
'कोर्टशिप' जब से हुआ है
उनका 'एरोप्लेन' में।

× × ×

दस की दुलहिन है तो हैं
दूल्हा महाशय साठ के।
आँख के अन्धे हैं तो—
पूरे हैं अपनी गाँठ के।

ठूँठ को अपने बनाना
चाहते हैं कल्प—वृक्ष,
है कली वह तो ये हैं,
मशहूर उल्लू काठ के।

श्रम-बिन्दु

सन्त ने श्रोताओं से पूछा, 'सर्वोत्तम जल कौन-सा है?' एक ने कहा, 'गङ्गा-जल।'

सन्त ने फिर पूछा, 'उससे भी बढ़कर?'

दूसरे ने कहा, 'भूमि पर गिरने से पहले का वर्षा जल।'

सन्त ने फिर पूछा, 'उससे भी बढ़कर?'

तीसरे ने कहा, 'प्रभात में तरु-पत्र पर चमकने वाला ओस-जल।'

सन्त ने फिर पूछा, 'उससे भी बढ़कर?'

चौथे ने कहा, 'बिछुड़े हुए पुत्र से मिलकर माता की आँखों से निकलने वाला अश्रु जल!'

सन्त ने फिर पूछा, 'नहीं उससे भी बढ़कर?'

छठे ने कहा, 'सारा दिन परिश्रम करके अपने आश्रित प्रियजनों के लिए भोजन-सग्रह करने वाले मजदूर का श्रम-बिन्दु।'

इस व्यक्ति को सन्त ने धन्यवाद दिया।

(जीवन साहित्य से)

नेलपालिश छुड़ाने का तरल

नेल पालिश एक बार लगा लेने पर प्रायः शीघ्र नहीं छुटता और यदि शीघ्र छुड़ाने की आवश्यकता हो तो एक आफत हो जाती है। नेल पालिश छुड़ाने का एक तरल निम्न बिधिसे बनाया जा सकता है।

अमाइल एसिटेट	१ औंस
एसिटोन	१ औंस

दोनों को मिलाकर और मजबूत कार्कवाली सन्करे मुंह की शीशी में भर कर रख दें।

यह तरलब्रश से नाखून पर लगायें और सूखने के पूर्व कपड़े से पोंछ डालें। इससे लगाया हुआ नेल पेंट निकल जाकेगा।

(उद्योग भारती से)

एक भोजपुरी गीत!

झार लेलों केसियां सँवार लेलों पटिया
साट लेलों रे सखी लाल बिंदुलिया!
साट लेलों रे सखी लाल बिंदुलिया!
दही बेंचे गइलां मैं ओही मधुबनवा,
भेंटी भइले रे, बृज-मोहन रासया,
दही मोर खइले मटुक सिर फोरले
बाँधल रे; कान्हा केस अझुरवले॥

ओरहन देवे गइला मैं जसोदा अँगनवाँ;
बरजहु रे, मैया अपनो बेटवना॥

बाबा खाऊ भइया खाऊं तोहरी बदुअवा,
मोर कान्हा रे; बाड़े लारका गदेलवा॥

घरवा में होले कान्हा लरिका गदेलवा,
बाहर रे, कान्हा हो लेबटवरवा॥

बाहर रे कान्हा होले बटवरवा।

(योगी से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri 077 690

अपने विचार

सन् १९५४ को बिदाई

सन् १९५४ का वर्ष जो पतझड़ के निर्मम ऋतु के समान 'दीदी' के उपवन में छा गया था, आशा और उमङ्ग के नव अंकुर देता हुआ इस अङ्क के साथ विदा हो रहा है। 'दीदी' की नौका सङ्कट के तूफानी सागर के पार लग गयी है और आज, जब कि हम इस अङ्क को छपने के लिये प्रेस में भेज रहे हैं, थोड़ी शान्ति और विश्राम का अनुभव करते हैं। आज हमारे हर्ष का ठिकाना नहीं है।

सङ्कट के इस वर्ष के दुर्गम पथों को हमने किस प्रकार पार किया उनका वर्णन हम करें तो वह एक तिलिस्मी कहानी से कम रोचक नहीं प्रतीत होगा। पर उनका वर्णन करके हम अपने मुँह मिया मिट्ठू नहीं बनना चाहते। जिन मुसीबतों को हम झेल आये हैं, उनका दुखड़ा रोने बैठ जायें तो 'दीदी' का यह अङ्क उन्हीं से भर जायगा और पाठकों के मन में गहरी समवेदना उत्पन्न होगी। परन्तु यह हमारा ध्येय नहीं है।

पर तो भी इस अवसर पर हमें रामायण की जो चौपाइयाँ याद आ रही हैं, उन्हें हम अपने पाठकों को सुनाना चाहते हैं। वे हैं:—

अमिय गरल रिपु करै मिताई।
गोपद सिन्धु अनल सितलाई॥
गरुड़ सुमेरु रेणु सम ताही।
राम कृपा करि चितवहि जाही॥

पाठकों से हमारी प्रार्थना है कि वे इन पंक्तियों को नोट कर लें और सङ्कट, निराशा, हार के क्षणों में इन्हें बार-बार पढ़ें। उन्हें शक्ति मिलेगी, निराश मन में नवीन आशा सञ्चरित होगी और अन्त में जीवन संग्राम में उन्हें विजय प्राप्त होगी।

तुलसीदास की इन्हीं चौपाइयों के सहारे हम 'दीदी' की बोझिल नौका यहाँ तक खे लाये और आगे का समय सहज और सुखकर प्रतीत हो रहा है।

इस अवसर पर हम 'दीदी' के पाठक-पाठिकाओं, संरक्षकों, कर्जदाताओं और लेखक-लेखिकाओं के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हैं। उन सबके सहयोग का ही यह परिणाम है कि 'दीदी' स्वस्थकर सामाजिक साहित्य एक अखिल भारतीय सङ्गठन के रूप में प्रकट हो रही है।

सन् १९५४! तुम हमारी हार और थकान लेकर जा रहे हो, जाओ। हम तुम्हें धन्यवाद सहित विदा देते हैं।

आगामी वर्ष के आकर्षण

जनवरी सन् १९५५ से 'दीदी' अपने १९ वें वर्ष में प्रवेश करने जा रही है। कठिनाइयों पर वह बहुत कुछ विजय प्राप्त कर चुकी है और नये वर्ष से उसको नये-नये आकर्षणों से युक्त करने में हम अभी से लग गये हैं। इसका कुछ आभास पाठकों को इस अङ्क के आवरण पृष्ठ पर छपी विज्ञप्ति से हो जायगा। जनवरी सन् ५५ का विशेषांक घोषणा के अनुसार परम उपयोगी होगा ही। सन् १९५५ में प्रकाशित होने वाले अन्य सभी अङ्क पाठकों को अत्यन्त रुचिकर प्रतीत होंगे। सन् ५५ का सबसे बड़ा आकर्षण है जनवरी अङ्क से ही श्री राधारानी नामक धारावाहिक उपन्यास का प्रकाशित होना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

077690

विश्व पर युद्ध के बादल

तीसरे महायुद्ध के बादल विश्व के ऊपर घिरने लगे हैं और आज जब कि हम ये पंक्तियाँ लिख रहे हैं, वे अत्यन्त सघन होते प्रतीत होते हैं। लगता है कि इस बार अमरीका और कतिपय योरोपीय राष्ट्र मिलकर रूस और चीन से लड़ेंगे। यह महायुद्ध पिछले दोनों महायुद्धों से कहीं अधिक व्यापक और विध्वंसकारी होगा।

हमारे प्रधान मन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इस युद्ध को रोकने का दृढ़ कदम उठाया है। संसार की माताओं, बहनों और बेटियों की आँखें उनकी ओर लगी हुई हैं। उन्हीं सबके आँसुओं में निहित तीव्र पीड़ा का अनुभव करके वे भारत में प्रधान मन्त्री का पद ६ महीने के लिए किसी और को देकर विश्व का भ्रमण करना चाहते हैं। एक तरफ युद्ध की राक्षसी पुकार है दूसरी तरफ नेहरू की अकेली आवाज। आगामी वर्ष में इसका परीक्षण होगा कि कौन किसको दबा लेता है।

पंत जी निश्चिन्त होकर दिल्ली जायँ

उत्तर प्रदेश में कुछ लोग ऐसे हैं जो जब तब श्रद्धेय पंत जी के हितैषी बनने का ढोंक रचते रहते हैं। जब-जब पंत जी के केन्द्रीय सरकार में जाने का प्रश्न उठता है, ये हितैषी चिल्ला उठते हैं—'नहीं! नहीं! पन्त जी को उत्तर प्रदेश में ही रहने दो, नहीं तो इतना बड़ा राज्य किसी के सम्भाले न सम्भलेगा इस बार तो इन चाटुकारों ने गजब कर डाला। डाक्टरों तक से सार्टिफिकेट ले लिया—'पंत जी बीमार हैं। उत्तर प्रदेश में काम कम है। दिल्ली उनके स्वास्थ्य के माफिक नहीं है। सो हे नेहरू जी! पन्त जी को दिल्ली में बुलाकर मत मारो, उन्हें यहीं लखनऊ में ही रहने दो।' परन्तु नेहरू जी पन्त जी के सच्चे हितैषी हैं। वे कहते हैं—'दिल्ली में काम और भी हलका है। यहाँ की आबहवा भी पन्त जी के माफिक पड़ेगी।'

श्रद्धेय पन्त जी जैसे सुयोग्य व्यक्ति की केन्द्र से माँग आवे, यह स्वाभाविक ही है। इसको पूरी करने में उत्तर प्रदेश को हिचक नहीं गर्व का अनुभव करना चाहिए और फिर उत्तर प्रदेशीय सरकार में श्री सम्पूर्णानन्द जी जैसे सुयोग्य और वैसे ही मँजे हुए साधक पुरुष हैं ही। श्री सम्पूर्णानन्द जी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश और भी चमक उठेगा, ऐसी लोगों की धारणा है। सो श्रद्धेय पन्त जी से हमारी प्रार्थना है कि वे निश्चिन्त होकर दिल्ली जाय और इन चाटुकारों के चक्कर में न पड़ें।

सपने और चाय

इस युग के सर्व श्रेष्ठ दो आनन्द माने गये हैं। सुप्तावस्था में सपने देखना और जागृतावस्था में चाय पीना। इस प्रकार सपने और चाय दोनों आधुनिक जीवन को प्रभावित करते हैं। इसी ध्येय से 'दीदी' के इस वर्ष की सुख समाप्ति पर इस अङ्क में हम सपनों और चाय पर पृथक्-पृथक् दो लेख पाठकों को भेंट कर रहे हैं। पहले से ज्ञात होगा कि जो सपने आप देखते हैं उनका क्या अर्थ है और दूसरे से चाय का सम्पूर्ण रहस्य प्रकट होगा। पाठक इन दोनों लेखों को अवश्य पढ़ें।

ग्राहकों से निवेदन

जिन ग्राहकों का वार्षिक मूल्य इस अङ्क से समाप्त हो रहा है, उनसे हमारा निवेदन है कि वे आगामी वर्ष का मूल्य ६) इस मास के अन्दर ही मनिआर्डर से भेज दें और वी० पी० की प्रतीक्षा न करें। वी० पी० भेजने में उन्हें।≈) डाक व्यय के अधिक देने पड़ेंगे और वी० पी० से अङ्क पहुँचने में देर भी लगेगी। अक्सर लोग वी० पी० वापस कर देते हैं जिससे कार्यालय को डाक व्यय की व्यर्थ हानि होती है। जो ग्राहक न रहना चाहें वे हमें अभी से सूचित कर दें जिससे हम उनकी सेवा में वी० पी० भेजने की व्यर्थ की झंझट और हानि से बचें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

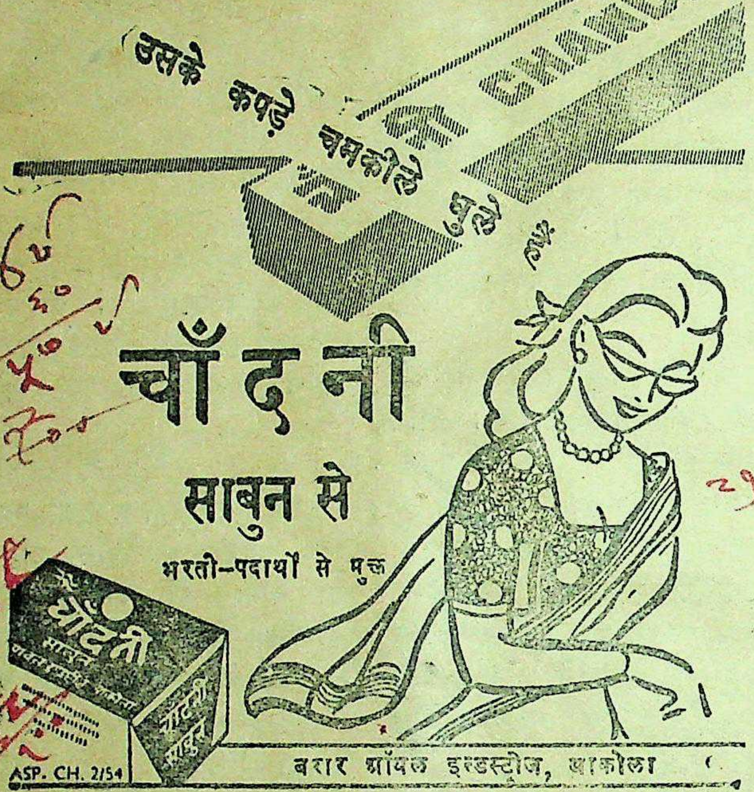

नये क्षेत्रों के लिए स्टाकिस्टों की आवश्यकता है।

दीदी की फाइल

दीदी की सन् १९५३-१९५४ की बारहों मास की पूर्ण फाइलें

प्रत्येक ६) रुपये में प्राप्त कीजिये।

मैनेजर दीदी कार्यालय

इलाहाबाद—२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफेद कोढ़

की पेटेंट दवा
मूल्य ५) रुपया
विवरण पत्र मुफ्त मँगावें।
वैद्य बी० आर० बोरकर, आयुर्वेद भवन
मु० पोस्ट मँगरूलपीर, जिला—अकोला
(बेरार) मध्य प्रदेश

सुख-दुःख का झमेला

लेखक, श्री हरिचरण लाल वर्मा शास्त्री

प्रस्तुत पुस्तक में देश के प्रतिष्ठित सन्त महात्माओं और विद्वान् पुरुषों के भिन्न-भिन्न विषयों पर विचारणीय लेखों का उपयोगी सङ्कलन है जो जीवन में उत्कर्ष तथा सामञ्जस्य लाने के लिये, मानव हृदय में मानवता के विचार उद्बुध करने के लिए गिरते हुए नैतिक स्तर में चारित्र्य बल लाने के लिये लोक हित की पावन भावनाओं से ओत-प्रोत सुखद बल-प्रद प्रेरक भावनाओं से युक्त है! पुस्तक सभी के काम की चीज है। मूल्य १) पता—साधना कार्यालय, इलाहाबाद नं०-२

विवाह विज्ञापन

चाहिए, पुनर्विवाह या विधवा-विवाहेच्छु सुशिक्षित ससंस्कृत पदवी धारी (शिक्षिका डाक्टर या समाज सेविका) आयु २५–३० तक सभ्रांत उच्च परिवार से सम्बन्धित सुस्वरूप हिन्दी भाषी, तथा तन्दरुस्त महिला। वर नवयुवक, शिक्षा सार्वजनिक सेवा कार्य में संलग्न, आयु ३६ वर्ष मासिक २००) आय, कट्टर सुधारक राष्ट्रीय विचारधारी, जाति प्रांत, आर्थिक परिस्थिति अनावश्यक। सम्पूर्ण विवरण तथा आधुनिकतम फोटो के साथ शीघ्र पत्र-व्यवहार करें।

पता—सी० ए० मार्फत 'दीदी' कार्यालय
प्रयाग उ० प्रदेश०

वर की आवश्यकता

एक २१ वर्ष आयु की गृहकार्य में सुयोग्य, विद्याविनोदिनी परीक्षा पास जैन कन्या के लिये सुशिक्षित, सज्जन-स्वभाव और स्वावलम्बी वर की आवश्यकता है। जात-पाँत और रूढ़ियों का बन्धन नहीं, अतः स्वतन्त्र विचारों के व्यक्ति ही पत्र व्यवहार करें।

पता—सतयुग प्रेस, बहादुरगंज,
इलाहाबाद।

आवश्यकता है !

निः सन्तान विधवा गृह कार्य सम्भालने और छोटे बच्चों को पढ़ाने के लिये मासिक वेतन पर चाहिए। लिखे—पो० बा० नं० ५८, मार्फत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीनाथसिंह-लिखित पुस्तकें

उपन्यास और कहानियाँ

नयन तारा १।)

अनेक समालोचकों की राय है कि हिन्दी में श्रेष्ठ और रोचक कहानियाँ लिखने में श्री श्रीनाथ सिंह बेजोड़ हैं। यह उन्हीं की १६ चुनी हुई कहानियों का संग्रह है। प्रत्येक कहानी ऐसी है कि आप शुरू करने पर बिना पढ़े न छोड़ेंगे।

अपहृता ॥)

इस पुस्तक में उन वीर नारियों की साहसपूर्ण कहानियाँ हैं जिन्हें पाकिस्तानी अपने अधीन नहीं कर सके और जो अन्त में भारत पहुँचने में समर्थ हुईं।

प्रजामण्डल २)

यह अनोखी घटनाओं से भरा एक उपन्यास है जिसमें दो स्त्रियों के अद्भुत साहस की कहानी है जिन्होंने कि एक भारतीय महाराजा से अपनी रक्षा ही नहीं की, सम्पूर्ण प्रजाजनों को भी बन्धनमुक्त किया। सन् १६४२ में बिहार की सरकार ने यू० पी० की सरकार से इस पुस्तक को जब्त करने की सिफारिश की थी। परन्तु यू० पी० के एक सहृदय अधिकारी ने इसकी रक्षा की। यह बहुत ही रोचक उपन्यास है।

'दीदी' के ग्राहकों को डाक व्यय माफ

पता—मैनेजर 'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद-२

बालोपयोगी

खेल घर ... ... १)

अनोखी कविताओं, मजेदार कहानियों दिल लुभाने वाले चित्रों और बहुतेरी अन्य रचनाओं का खजाना।

बालगीत ... ... ।)

बहुत ही छोटे बच्चों के लिये मोटे टाइप में छपी मजेदार सचित्र तुकबन्दियाँ। प्रत्येक पृष्ठ सचित्र है।

तीन दुमकटों की कहानी ... ।)

शिक्षाप्रद और हँसाने वाली कहानियाँ।

गाँधी जी ... ... ≡)

इसमें महात्मा गाँधी की संक्षिप्त जीवनी, बहुत ही सरल छन्दों में वर्णित है।

अनोखी यात्रायें ... ... ।-)

ज्ञान वर्धक मजेदार सचित्र कहानियाँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीदी के संरक्षक

१—श्रीमती राजकुमारी ठोलिया, उज्जैन २००)
२—श्री मुकुटविहारीलाल श्रीवास्तव, बिरलापुर ,,
३—कुमारी कमल सहाय, आरा ,,
४—श्रीमती रतनदेवी सुखानी झुमरी तलैया ,,
५—श्रीमती आकाश कामिनी अग्रवाल आगरा ,,
६—श्रीमती कमला देवी गोयनका शिलांग ,,
७—श्री हेमप्रभादेवी तापड़िया, जसवन्तगढ़ १५०)
८—श्रीमती सरलादेवी वृ० नागर बनारस १२८)
९—श्री सेठ बलदेवदास मूँधड़ा, कलकत्ता १००)
१०—श्रीमती स्नेहलता नेवाटिया, बम्बई ,,
११—श्रीमती चन्द्रावती एस० कानोडिया, बम्बई ,,
१२—श्रीमती सरलादेवी डागा, कलकत्ता ,,
१३—श्रीमती निर्मला गोविल, आगरा ,,
१४—श्री रानी लक्ष्मीकुमारी चूड़ावत, रावतसर ,,
१५—श्रीमती सावित्री बाँगड़, कलकत्ता ,,
१६—श्री विन्दुवासिनीदेवी सकलानी, देहरादून ,,
१७—श्रीमती कृष्णादेवी मन्त्री, बम्बई ,,
१८—श्रीमती मोहिनी तापुड़िया, बम्बई ,,
१९—कु० अरुणा कुमारी जायसवाल, हैदराबाद ,,
२०—श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी करहल ,,
२१—श्रीमती मुन्नीदेवी जैन देहरादून ,,
२२—श्रीमती शकुन्तला देवी कसेरा कलकत्ता ,,

दीदी कर्ज कोष

दीदी के कर्जदाताओं की सूची सन् १९५४ के ब्याज के विवरण सहित जनवरी के विशेषांक में छपेगी। इस सम्बन्ध की अन्य सूचनाएं भी जनवरी के अङ्क में ही छपेंगी।

—संयोजक,
कर्ज कोष

'दीदी' के नियम

(१) 'दीदी' मासिक पत्रिका है। इसका वार्षिक मूल्य ६) और एक प्रति का ॥) है। वार्षिक मूल्य कार्यालय में पहुँचते ही ग्राहक का नाम रजिस्टर में दर्ज हो जाता है और पत्रिका जानी शुरू हो जाती है।

(२) रुपया पैसा, वार्षिक मूल्य और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र आदि प्रेमलता देवी संचालिका 'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद-२ के पते से भेजना चाहिये।

(३) पत्र-व्यवहार करते समय ग्राहकों को अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये। पत्र-व्यवहार का पता यह है—संचालिका 'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद-२।

(४) 'दीदी' हर महीने में पहली तारीख को प्रकाशित हो जाती है। पहली तारीख के आस पास यदि 'दीदी' आपको न मिले तो आपको तुरन्त अपने डाक घर से पूछना चाहिये। अगर पता न लगे तो १५ तारीख के भीतर संचालिका 'दीदी' इलाहाबाद को लिखना चाहिये।

(५) यदि एक-दो मास के लिये पता बदलवाना हो तो डाकखाने से प्रबन्ध कर लेना चाहिये। यदि साल भर या अधिक काल के लिये पता बदलवाना हो तो उसकी सूचना मय ग्राहक नम्बर के हमें देनी चाहिये।

(६) लेख, फोटो, बदले के पत्र, समालोचना के लिये पुस्तकें सम्पादक 'दीदी' इलाहाबाद के पते से भेजना चाहिये।

(७) न छपने की हालत में वे ही लेख वापस किये जायगे जिनके साथ आवश्यक स्टाम्प होगा।

(८) 'दीदी' में विज्ञापन छपाना हो तो उसके नियम अलग से मंगावे। पर यह ध्यान रखें, 'दीदी' में अश्लील व झूठे विज्ञापन नहीं छापे जाते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीदी का नववर्षाङ्क

आज की गृहिणी के लिए परम प्रिय प्रकाशन

दीदी का यह नववर्षांक आज की गृहिणी की आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर प्रकाशित किया जा रहा है। आधुनिक शृङ्गार प्रणाली, स्त्रियों के रोग (जिन्हें वे लज्जावश अपनी सहेलियों पर भी प्रकट नहीं करतीं) की चिकित्सा, बालरोग-चिकित्सा, कष्ट रहित शिशु-जन्म, गृह-व्यवस्था, विवाह योग्य कुमारियों को खास उपदेश, पत्र-लेखन और सम्भाषण की कला आदि विषयों पर इस विशेषांक में अनुभवी महिलाओं और विद्वानों के लेख रहेंगे।

इसके अतिरिक्त दीदी के इस नववर्षाङ्क से ब्रह्मवैवर्त पुराण में वर्णित श्री राधा रानी की रहस्यमयी कथा के आधार पर लिखा गया—

श्री राधारानी नामक धारावाहिक उपन्यास

भी छपना शुरू होगा जिसमें पाठकों को राधा की उत्पत्ति, राधाकृष्ण की प्रेम लीला और उस पर आधारित हिन्दू-धर्म, दर्शन और नारीत्व का परिचय मिलेगा। श्री राधारानी की ऐसी ज्ञान वर्द्धक और रोचक कथा अब तक कहीं प्रकाशित नहीं हुई।

अन्य आकर्षण

कढ़ाई-बुनाई, सिलाई, रसोई पर विशेष लेख, श्रेष्ठ कहानियाँ, चित्र और अन्य बहुतेरे आकर्षण जो 'दीदी' की विशेषताएँ हैं, इस अङ्क में भी रहेंगे। यदि आप दीदी के ग्राहक नहीं हैं तो ६) वार्षिक मूल्य भेजकर इस अङ्क से अवश्य बनें।

निवेदिका—
प्रेमलता देवी
'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद—२

मुद्रक और प्रकाशक श्रीनाथसिंह 'दीदी' प्रेस, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar